दज्जाल

दज्जाली दस्तावेज़, दज्जाल के हमनवा, दज्जाली अलामात

3

इस्राईल की कहानी,

मशरिक़ व मग़रिब के लखारियों की ज़बानी

मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

दज्जाल (३)

दज्जाली दस्तावेज़, दज्जाल के हमनवा, दज्जाली अलामात

इस्राईल की कहानी, मश्रिक़ व मग़रिब के लिखारियों की ज़बानी

मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

दज्जाल (3)

अज़: मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर

बएहतिमाम: मुहम्मद नासिर ख़ान

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड

FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2

Phones: 23289786, 23289159, Fax:23279998

DAJJAL (3)

Aalami Dajjali Riyasat, Ibtida Se Intiha Tak

By: Mufti Abu Lubaba Shah Mansoor

Pages: 367 Hindi Edition: 2012

Our Branches:

Delhi: FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd

422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Ph.:23256590

Mumbai :FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd

216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan.

Dongri, Mumbai-400009, Ph.:022-23731786, 23774786

Printed at: Farid Enterprises, Delhi

फ़ेहरिस्त

पुरअस्रार दज्जाली अलामात....222

मुक़द्दमा

दज्जाल 3, तीन पहलू

दज्जाली फ़ित्ने के तीन मराहिल हैं:

पहलेः हक़ व बातिल और सच व झूट में फ़र्क़ और पहचान ख़त्म हो जाएगी।

फिरः बातिल को हक़ और झूट को सच बावर करवाया जाएगा।

फिरः बातिल पर बिलजब्र अमल और हक़ पर अमल से बिलजब्र मना किया जाएगा।

फ़ित्ने के यह तीन मराहिल तो इससे पहले भी इंसानी दुनिया ने महदूद और जुज़्वी तौर पर देखे हैं, लेकिन यह तीनों मरहले यकजा होकर पूरे कुर्रहये अर्ज़ को लपेट में ले लें, और पूरी शिद्दत के साथ ले लें, यह इससे पहले काइनात में, इंसानी तारीख़ में नहीं हुआ।

एक और पहलू भी ग़ौर कीजिये!

बातिल के ग़ल्बे के लिये तागूती कुव्वतें हर क़िस्म का हर्बा इस्तेमाल करती चली आई हैं। इन हथकंडों में सरे फ़ेहरिस्त चार चीज़ें हैं जो सूरए कहफ़ में बयान कर्दा चार वाक़िआत का मर्कज़ी नुक्ता हैं: (1) हुकूमत व इक़्तिदारः अस्हाबे कहफ़ को साहिबाने इक़्तिदार ने जब्री आज़माइश में मुब्तला किया। (2) माल व दौलतः अस्हाबुल जन्ना का क़िस्सा सरमायादारी व माद्दियत परस्ती और इसके बुरे अंजाम की बेहतरीन तमसील पेश करता है। (3) अक़्ल व ज़ाहिर परस्तीः हज़रत मूसा व ख़िज़्र अलै0 के क़िस्से में इसी की नफ़ी

सिखाई गई है। (4) फ़ित्री तौर पर दी गई ग़ैर मामूली कुव्वतों का ग़लत इस्तेमाल: ज़ुलक़रनैन इंसानी वसाइल के बेहतरीन इस्तेमाल और सालेह क़्यादत का इस्तेआरा और याजूज माजूज ग़ैर मामूली कुव्वतों के ग़लत इस्तेमाल और फ़ासिद ताक़त का इज़्हार हैं।

यह चारों चीज़ें (इक़्तिदार, दौलत, अक़ल्लियत, ग़ैर मामूली ताक़त) तारीख़ के मुख़्तलिफ़ अदवार में एक एक करके अह्ले हक़ के रास्ते में रुकावट बनती रही हैं, लेकिन चारों मिल कर आलमी सतह पर अह्ले हक़ का घिराव करें, "अद्दज्जालुल अक्बर" के दौर में ही होगा।

एक और ज़ावियए नज़र भी मुलाहज़ा हो!

"साइंस" माद्दे में छिपी फ़ित्री कुव्वतों के इंकिशाफ़ का नाम है। जादू ग़ैर माद्दी फ़ित्री कुव्वतों के नाजाइज़ इस्तेमाल का नाम है। इंसानी नफ़्सी कुव्वतें (कुव्वते ख़्याल और बातिनी तसर्रुफ़ात) भी एक ग़ैर मरई मुअस्सिर ताक़त की हैसियत रखती हैं। शर के नुमाइंदगान इन तीनों को अपनी अपनी हुदूद में तो इस्तेमाल करते रहे हैं, लेकिन तीनों मिलकर, यक्जान होकर, हक़ को मिटाने और बातिल को ग़ल्बा देने पर तुल जाएं, ऐसा उसी दौर में होगा जब फ़ित्नों का सरबराह और बातिल का देवता ख़ुरूज करेगा।

दज्जाल 3 क्यों?

इन तीन ज़ाविया हाए नज़र से फ़ित्नए दज्जाल में पोशीदा वह ख़तरनाक मुज़्मरात की क़दर समझ में आने चाहियें जिनसे अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम आगाह करते चले आए हैं। इन ख़तरात से आगाही जो तफ़सील चाहती है, इसके लिये दज्जाल 1 और 2 के बाद "दज्जाल 3" पेशे ख़िदमत है। कुछ लोग दज्जाल का नाम सुन कर नाक भौं चढ़ाते हैं लेकिन समझ नहीं आता कि उम्मत को इस

फ़ित्ने का शिकार होने से बचाने के लिये इस फ़ित्ने से वाक़िफ़ करवाने के अलावा और कौनसा ज़रीआ मुअस्सिर हो सकता है? अस्रे हाज़िर में जो मअ़दूदे चंद लोग मुआसिर फ़ित्नों पर काम कर रहे हैं, यह किताबी सिलसिला इंशा अल्लाह उनके लिये सोच व फ़िक्र के नए ज़ाविये और तहक़ीक़ व जुस्तजू के नए दरीचे खोलने का सबब होगा। जो क़ारईन इसके सुतूर और बैनुस्सुतूर को ग़ौर से पढ़ेंगे, उन्हें इंशा अल्लाह बातिल के ख़िलाफ़ मज़ाहमत की हिम्मत और हक़ की हिमायत का हौसला अपने अंदर परवान चढ़ता महसूस होगा।

इस जिल्द के दो गुतों के दर्मियानः

इस जिल्द की इब्तिदा दज्जाली रियासत के क़याम की इस दस्तावेज़ के ज़िक्र से की गई है जो डेढ़ सदी क़ब्ल तरतीब दी गई थी। इसके बाद दज्जाली रियासत के मेहरबान व नामेहरबान हमनवाओं का ज़िक्र है कि कुछ लोग शऊरी तौर पर और कुछ लाशुऊरी तौर पर दज्जाली कुव्वतों का आलाकार बन जाते हैं। इन हमनवाओं का तज़किरा उनके नक़्शे क़दम पर रहने से बाज़ रखेगा। इसके बाद एक मश्रिक़ी तहक़ीक़ कार के क़लम से "इस्राईल की कहानी" और एक मग़रिबी सहाफ़ी की जानिब से "दज्जाली रियासत का मुशाहदा" पेश किया गया है। कुछ लोग दज्जालियात के तज़किरे को ग़ैर ज़रूरी समझते हैं। उन्हें इल्म होना चाहिये कि मश्रिक़ व मग़रिब के संजीदा और फ़हीम साहिबाने इल्म व तहक़ीक़ इस मौज़ूअ़ को किस नज़र से देखते हैं? ख़ुसूसन केनेडियन मुसन्निफ़ की तहरीर तो चूंकि इस्राईल के ख़ुफ़िया दौरे के बाद लिखी गई है, इसलिये वह......दज्जाली अलामात के बाद......इस जिल्द का ज़ोरदार तरीन हिस्सा है। आख़िर में दज्जाली अलामात का मुफ़स्सिल तज़किरा मुकम्मल करके यह जिल्द ख़त्म करने का इरादा था कि दो और

मज़मून भी "इशारती ज़बान" में क़लम की नोक पर आ गए, लिहाज़ा क़ाराईन के सवालात के जवाबात से पहले उनको को लगा दिया गया है। इन जवाबात में 2012 ई० की हक़ीक़त पर भी तफ़सीली वज़ाहती बहस की गई है। दज्जाल 1 और 2 की तरह "दज्जाल 3" के आख़िर में भी किताब के मंदरजात की तसदीक़ के तौर पर तस्वीरी शवाहिद पेश किये गए हैं और सच यह है कि इन पर पहली दो जिल्दों से ज़्यादा मेहनत की गई है। अल्लाह करे कि यह मेहनत क़ारईन को फ़ित्नों के ख़िलाफ़ खड़ा होने और अज्रे अज़ीम के हुसूल के लिये अज़्म व हिम्मत पैदा करने का ज़रीए बने।

दज्जाल 4 या कुछ और?

वाक़िआ यह है कि दज्जालियात के कुछ पहलू अभी भी (तीन जिल्दें मुकम्मल होने के बाद भी) तिशनए तकमील हैं और राक़िमुल हुरूफ़ से काम जारी रखने का तक़ाज़ा करते हैं। ऐन मुम्किन है कि यह तक़ाज़ा दज्जाल चहारुम की ख़ाका साज़ी का ज़रीआ हो और यह भी हो सकता है कि किसी और नाम से तकमील पाए। यह फ़ैसला हम अल्लाह की रज़ा पर छोड़ते हैं।

या अल्लाह! जिस चीज़ में तेरे बंदों का फ़ाएदा हो, वही हमें सुझा और जिस चीज़ में दुनिया या आख़िरत की भलाई न हो उससे महफ़ूज़ फ़रमा। किसी भी दीनी ख़िदमत की तौफ़ीक़ और उसकी नाफ़इयत तेरे ही क़ब्ज़ए क़ुदरत में है।

शाह मंसूर

रबीउल अव्वल: 1432 हि0, फ़रवरी:2011 ई0

दज्जाली निज़ाम के क़्याम की दस्तावेज़

"हमें ग़ैर यहूदियों की तालीम व तरबियत इस तरह करनी चाहिये कि अगर वह ऐसा काम करने लगें जिसमें पेशक़दमी की ज़रूरत हो तो वह मायूस होकर इसको छोड़ दें। अमल की आज़ादी से पैदा होने वाला तनाव जब किसी और की आज़ादी से टकराता है तो कुव्वतों को ख़त्म कर देता है। इस टकराव से सख़्त अख़्लाक़ी मायूसी और नाकामी पैदा होती है। इन तमाम हीलों से हम ग़ैर यहूदियों को कमज़ोर कर देंगे और वह हमें ऐसी बैनुल अक़्वामी ताक़त बनाने पर मजबूर हो जाएंगे कि दुनिया की तमाम कुव्वतें तशद्दुद की राह अपनाए बग़ैर आहिस्ता आहिस्ता हमारे अंधर ज़म हो जाएंगी। हमारी कुव्वत सुपर ताक़त बन जाएगी। आज के हुक्मरानों के बजाए हम एक ऐसा हव्वा क़ाइम करेंगे जो सुपर गवर्नमेंट ऐडमिनिस्ट्रेशन कहलाएगी। उसके हाथ अतराफ़े आलम में चिमटे की तरह फैले होंगें। उसकी तन्ज़ीम इतनी बड़ी होगी कि अक़वामे आलम को ज़ेर करके ही दम लेगी।"

(दस्तावेज़ नम्बर4: एक इंतिहाई या इख़्तियार मरकज़ी हुकूमत का इर्तिक़ा, स0:203)

"हमारी सरगर्मियों पर निगरानी और उन्हें महदूद करना किसी के बस की बात नहीं है। हमारी सुपर गवर्नमेंट (आला हुकूमत, मावरा हुकूमत) इन ग़ैर क़ानूनी हालात में भी क़ाइम व दाइम रहती है जिनको "मुतलकुल इनानी" जैसे तसलीम शुदा क़वी लफ़्ज़ के ज़रीए बयान किया जाता है। मैं इस पोज़ीशन में हूं कि आप को साफ़ तौर पर बता सकूं कि एक मुनासिब वक़्त पर हम क़ानून देने वाले होंगे। हम फ़ैसले व सज़ाएं नाफ़िज़ करेंगे। हम फांसियां देंगे

और मुआफ़ नहीं करेंगे। हम अपने सिपाहियों के सिपहसालार के तौर पर क़ाइद के मक़ाम तक पहुंचे हुए हैं। हम कुव्वते इरादी के बल बूते पर हुक्मरानी करते हैं क्योंकि हमारे पास दौरे माज़ी की एक ऐसी ताक़तवर पार्टी के हिस्से बिखरे हैं जिसे अब हमसे छीन लिया गया है।"

(दस्तावेज़ नम्बर8:सहीवनियत की मुतलकुल इनानी, स0:218)

यह दो इक़्तिबास जिस किताब से लिये गए हैं, उसके बहुत से नाम हैं। इसका मशहूर नाम "प्रोटोकोल्ज़" है। उर्दू में इस लफ़्ज़ का तर्जुमा "दस्तावेज़" के लफ्ज़ से किया गया है। दरअसल "Protocols" अरफ़ आम में उस सिफ़ारती दस्तावेज़ के मुस्वद्दा को कहते हैं जो किसी कांफ़्रेंस में तय किये गए निकात पर मुशतमिल हो और इस पर तसदीकी दस्तख़त सब्त किये गए हों। चूंकि उर्दू में इसका कोई सिक्का बंद मुतबादिल लफ्ज़ नहीं है, इसलिये तर्जुमा निगारों ने सहूलत के लिये इसके क़रीबतरीन मअ़नी में "दस्तावेज़" का लफ्ज़ इस्तेमाल किया है। इस किताब का मुकम्मल नाम "ज़ुअ़माए सहीवन के मंसूबों की दस्तावेज़ात" है। कुछ मुतरजिमीन इसे "सहीवन के दाना बुर्ज़ुगों की याददाश्तें" का उन्वान देते हैं। हमने इसे "दज्जाली रियासत के क़्याम का दस्तावेज़ी मंसूबा" का नाम दिया है। इसकी दो वुज़ूहात हैं:

(1) एक तो यह कि इसमें जगह जगह "सुपर गवर्नमेंट" का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है। इसको "मुतलकुल इनान हुकूमत", "मुस्तक़िल बाइख़्तियार हुकूमत" या "मावरा हुकूमत" का नाम भी दिया गया है। कुछ मुहक़्क़िक़ीन इससे अक़वामे मुत्तहिदा मुराद लेते थे......लेकिन दरहक़ीक़त इससे "आलमी दज्जाली रियासत" मुराद है जिसका पायए तख़्त यरोशलम में सहीवन नामी पहाड़ी के क़रीब

मुक़द्दस चट्टान के गिर्द होगा।

(2) दूसरे इसलिये कि इसमें जाबजा "मुतलक़ुल इनान बादशाह" का तज़किरा मिलता है। कहीं इसे "शाहे दाऊद" कहा गया है, कहीं "इस्राईल का बादशाह" या "ख़ुदा का महबूब बादशाह" और कहीं तमाम दुनिया का हुक्मरान और बाप जो "इंतिहाई बारुसूख़ तरीन शख़्सियत और इंतिहाई बाइख़्तियार मुक़द्दरे आला" होगा। यह तमाम अलफ़ाज़ दरअसल "दज्जाले अक्बर" के लिये इस्तेमाल किये गए हैं जो हैकल सुलैमानी के वस्त में बिछे "तख़्ते दाऊदी" पर बैठ कर पूरी दुनिया पर हुक्मरानी का "पैदाइशी हक़" इस्तेमाल करेगा।

इस आजिज़ के एक मज़मून में वाज़ेह किया जा चुका है कि "तख़्ते दाऊदी" वह पत्थर है जिस पर हज़रत दाऊद अलै0 बैठ कर इबादत करते और मुनाजात पढ़ते थे। आजकल यह तख़्त मलिका बर्तानिया ने अपनी शाही कुर्सी की नशिस्त में लगाया हुआ है। अंग्रेज़ क़ौम अपनी तमाम तर जिद्दत पसंदी और रौशन ख़्याली के बावजूद "बर्तानिपया अज़्मा" की सलतनते किब्रा का राज़ इसमें समझती है जबकि क़ौमे यहूद अंग्रेज़ को अपना मुहसिन मानने के बावजूद इसकी सलतनत के इस राज़ को उससे छीन छिपा कर इस्राईल मुंतक़िल करना चाहती है।

"सुपर गवर्नमेंट" के मुतअ़ल्लिक़ आप ऊपर इक़्तिबासात मुलाहज़ा फ़रमा चुके हैं। अब एक और इक़्तिबास रख लीजिये जिससे बात कुछ और खुल जाएगी।

प्रोटोकोल नम्बर 4 में हमें एक "आलमी हुकूमत" का ज़िक्रे ख़ैर कुछ यूं लिखा हुआ मिलता है:

"जहां मिल्लत व मज़हब के लिये वसीउल मशरब अक़ाइद ने

एहसासात ख़त्म कर दिये हों, उन तबकों पर मुतलकुल इनान नहीं तो किस क़िस्म की हुकूमत होनी चाहिये जो मैं बाद में बयान करूंगा। हम इसके लिये एक निहायत बाइख़्तियार हुकूमत क़ाइम करेंगे, ताकि तमाम तबक़ों पर हमारी गिरफ़्त मज़बूत हो। हम अपनी रिआया की सियासी ज़िंदगी के लिये नए क़वानीन मुरत्तब करेंगे और तमाम उमूर इन्ही के मुताबिक़ तय करेंगे। इन क़वानीन के ज़रीए ग़ैर यहूदियों की दी हुई ख़ुद मुख़्तारियां और आयतें एक एक करके छीन ली जाएंगी और हमारी बादशाहत की मुतलकुल इनानी का तुर्रहये इम्तियाज़ यह होगा कि हम किसी वक़्त और किसी भी जगह ग़ैर यहूदी मुख़ालिफ़ को कुचलने की सलाहियत रखते हैं।"

(दस्तावेज़4, क़ौमे यहूद के मुक़द्दर की रियासत, स0:199)

यह कुल तीन इक़्तिबासात हो गए। इसके बाद "मुतलकुल इनान बादशाह" के मुतअ़ल्लिक़ भी तीन इक़्तिबासात मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये। फिर हम आगे चलेंगे और इस बात को समझने की कोशिश करेंगे कि हमने आम मुतरजिमीन और मुहक़्क़िक़ीन से हट कर इस किताब को एक अलग नाम क्यों दिया है?

"अब मैं दुनिया भर में "शाह दाऊद" के ख़ानदान की हुकूमत की जड़ों की मज़बूती का तरीक़ा कार बयान करूंगा। इस मक़सद के लिये सबसे पहले इस फ़लसफ़े की तरफ़ रुजूअ़ करना पड़ेगा जिस दुनिया में "क़दामत परस्ती की रिवायात" को क़ाइम रखने के लिये हमारे "फ़ाज़िल राहनुमाओं" ने अपनाया और यह वह फ़ल्सफ़ा है जिससे इंसानी फ़िक्र की राहें मुतअ़य्यन की जाएंगी। दाऊद की नस्ल से कुछ अफ़राद मिल कर बादशाहों और उनके वर्सा का इंतिख़ाब करेंगे, मगर इस इंतिख़ाब का मेअ़यार आबाई वरासत का हक़ नहीं होगा। इन बादशाहों को सियासत और निज़ाम मम्लिकत के तमाम

रुमूज़ बताए जाएंगे, लेकिन इस बात को पेशे नज़र रखा जाएगा कि कोई और शख़्स इन रुमूज़ से आगाह न हो सके। इस तर्ज़े अमल का मंशा व मक़्सद यह है कि सब लोगों को यह इल्म हो जाए हुकूमत का कारोबार उनके सिपुर्द नहीं किया जा सकता जिन्हें "दुनियाए फ़न के खुफ़िया मक़ामात" की सैर नहीं कराई गई।"

(दस्तावेज़ 24, शाह दाऊद की हुकूमत का इस्तेहकाम, स0:307)

इस इक़्तिबास में "क़दामत परस्ती की रिवायात", "फ़ाज़िल राहनुमाओं का इख़्तियार कर्दा फ़ल्सफ़ा", "दाऊद की नस्ल के कुछ अफ़राद" और "दुनियाए फ़न के खुफ़िया मक़ामात की सैर" जैसी खुफ़िया यहूदी इस्तिलाहात इस्तेमाल की गई हैं। बिलखुसूस आख़िरी इस्तिलाह तो इंतिहाई जूमअ़नी है और यहूदी सर्री उलूम यअ़नी खुफ़िया रूहानी उलूम जो नीम जादूई और नीम शैतानी होते हैं, से वाक़फ़ियत या तआरुफ़ के बग़ैर इसका मफ़हूम समझा नहीं जा सकता। बहरहाल इक़्बिास का मर्कज़ी ख़्याल "शाह दाऊद" की हुकूमत की जड़ें मज़बूत करने के गिर्द घूमता है। अगले इक़्तिबास में हम मुतालआ़ करेंगे कि इंसानों की एक मख़्सूस नस्ल से तअ़ल्लुक़ रखने वाला यह "मुतलकुल इनान बादशाह" अपनी नस्ल के अलावा दूसरे इंसानों से क्या सुलूक करेगा?

मौजूदा खुदा शनास और शरपसंद मुआशरों के हुक्मरानों (जिन्हें हम पस्त हिम्मत बना चुके होंगे) की जगह लेने के लिये जो शख़्स हमारा बादशाह बनेगा, इसका सबसे पहला क़दम इस खुदा शनासी और शर पसंदी की आग को हमेशा के लिये ठंडा करना होगा। इस मक़्सद के लिये इन मौजूदा मुआशरों को मुकम्मल तौर पर तबाह करना होगा ख़्वाह इस मक़्सद के लिये उसे कितना खून ख़राबा करना पड़े। सिर्फ़ इसी सूरत में इसके लिये इन मुआशरों को नए सिरे

से मुनज़्ज़म करना मुम्किन होगा जिसके बाद वह हमारी रियासत के ख़िलाफ़ उठने वाले हर हाथ को काट देने के लिये शुऊरी तौर पर तैयार होंगे। ख़ुदा का यह महबूब (यअ्नी बादशाह) इसलिये चुना गया है कि वह तमाम अंधी, बहरी व तशद्दुद, डाकाज़नी और आज़ादी व हुकूक़ के नक़ाब में पोशीदा होकर तमाम दुनिया पर छाई हुई हैं। इन कुव्वतों ने हर क़िस्म के समाजी नज़्म व ज़ब्त का ख़ातिमा कर दिया है जिससे यहूदी शहंशाह के तख़्ते हुकूमत पर मुतमक्किन होने की राहें हमवार हो गई हैं, लेकिन जूंही बादशाह अपनी सलतनत में दाख़िल होगा यह कुव्वतें अपना काम दिखा कर बज़ाते ख़ुद ख़त्म हो चुकी होंगी। तब उन्हें शहंशाह के रास्ते से हटाना होगा। वह रास्ता जिस पर कोई गढ़ा या पत्थर नहीं होना चाहिये।"

(दस्तावेज़:23, ख़ुदा का महबूब बादशाह, स0:304)

यह था ख़ुदा के महबूब बादशाह का "ख़ुदा की अंधी, बहरी और बहीमाना मख़्लूक़" के साथ वह सुलूक जिसकी बिना पर वह "ख़ुदापरस्ती की आग" को हमेशा के लिये ठंडा करेगा और अपने रस्ते से हर गढ़ा और पत्थर हटा कर "रियासत" के ख़िलाफ़ उठने वाला हर हाथ काट कर रख देगा और इंसानी मुआशरों को बर्बाद करके नए सिरे से मुनज़्ज़म करेगा, चाहे उसे इसके लिये कितना ही ख़ून ख़राबा करना पड़े। अब हम देखते हैं कि इन "आला इंसानी मक़ासिद" के हुसूल के लिये की जाने वाली जिद्द व जिहद कि रुख़ पर हमारे गिर्द व पेश में जारी है? इसके लिये हम दूसरे इक़्तिबास का मुतालआ करते हैं जिसमें क़ौमे यहूद ने अपने पैदाइशी हक़्क़ हुक्मरानी के हुसूल का तरीक़े कार खुल कर और लगी लिपटी रखे बग़ैर बयान किया है।

"जब हम अपने हुकूक़ की बाज़याबी के लिये जिद्द व जिहद करते हैं तो हम मजबूर होते हैं कि हम रियासतों के आईनों में ऐसी बातें दाख़िल कर दें कि वह ग़ैर महसूस तरीक़े से आहिस्ता आहिस्ता उनको तबाही के रास्ते की तरफ़ धकेल दें और फिर इसी तरह एक वक़्त में हर तरह की हुकूमत हमारे क़हर व जब्र का शिकार हो जाएगी। हमारे डिक्टेटर पहचान आईन की तबाही से पहले भी हो सकती है। यह लम्हा उस वक़्त आएगा जब दुनिया की अक़वाम हुक्मरानों की नाअहलियों और बदउन्वानियों के सबब बदहाल हो चुकी होंगी और यह सब कुछ हमारी मंसूबा बंदियों की वजह से ही होगा। उस वक़्त लोग चिल्लाएंगे: "उनको (हमारे हुक्मरानों को) दफ़ा करो और हमें पूरी दुनिया पर एक ऐसा बादशाह दो जो हमें मुत्तहिद करे और हुकूमती क़र्ज़े, सरहदों, अक़वाम, मज़ाहिब की वजह से पैदा होने वाले झगड़ों को ख़त्म कर दे। जो हमें अमन व शांती मुहय्या करे जो हमें हमारे हुक्मरान नहीं दे सकते हैं।"......लेकिन आप यह बेहतर तौर पन जानते हैं कि तमाम अक़वाम की तरफ़ से ऐसी ख़्वाहिशात का इज़हार पैदा करने के लिये यह इंतिहाई ज़रूरी है कि अवाम और हुकूमतों के दर्मियान तअ़ल्लुक़ात को बिगाड़ा जाए। इंसानियत को इख़्तिलाफ़े राए, नफ़रत, जिद्द व जिहद, मन्फ़ी रद्दे अमल हत्ता कि तशद्दुद के इस्तेमाल, भूक व अफ़लास, बीमारियों के फैलाव, ख़्वाहिशात की कसरत के ज़रीए तबाह कर दिया जाए ताकि ग़ैर यहूदी अवाम हमारी दौलत और दीगर ज़राए की बालादस्ती तसलीम करने के अलावा कोई और पनाहगाह ही न पाएं, लेकिन अगर हम अक़वामे आलम को सांस लेने का मौक़ा दे दें तो फिर हमारी हाकिमियत की बालादस्ती का लम्हा मुश्किल ही से आएगा।"

(दस्तावेज़:9,पूरी दुनिया के मुक़तदिरे आला की हुकूमत के क़्याम के एलान का लम्हा, स0:231)

दुनिया पर अपनी हाकिमियत और बालादस्ती के लम्हे के जल्द आने के लिये कौमे यहूद पूरी दुनिया को जिस तरह जहन्नम बनाए हुए है, इसका सबब उस दस्तावेज़ी मंसूबे में और इसकी झलक आप आलमी मंज़रनामे पर देख सकते हैं। इस मंज़र नामे की पेशानी पर झिलमिलाते मसाइब व आफ़ात, कुर्रहये अर्ज़ के बासियों को चार तरफ़ से घेरे में लेने वाली अलमअंगेज़ मुश्किलात असल में उस क़ौम की कारसतानियां हैं जो खुद को खुदा महबूब और खुदा की बक़िया मख़्लूक़ को अपना महकूम समझती है और अपने इस "बुन्यादी हक़" के हुसूल के लिये हर तरह के जाइज़ व नाजाइज़ हर्बे रवा रखती है।

अब क़ब्ल इसके कि इन दस्तावेज़ात की तारीख़ी हैसियत व इस्तिनाद पर कुछ तब्सिरा करें, उनकी एक मख़्सूस इंफ़िरादियत का ज़िक्र करते हैं जिससे बआसानी मालूम होगा कि मुस्तक़बिल क़रीब में जिस "आलमी दज्जाली रियासत" के क़्याम की आहटें सुनाई दे रही हैं, यह किसी दीवाने की बड़िया ख़ब्ती का वह्म नहीं, एक ख़ौफ़नाक हक़ीक़त है जिसके ख़िलाफ़ जिहाद में हिस्सा लेना नेक बख़्ती की अलामत और नजात की ज़मानत है।

(जारी है)

अनोखी दस्तावेज़

देखने में तो वह महज़ एक आम सी किताब लगती है, मगर वाक़िआ यह है यह कई एतिबार से मुंफ़रिद और अनोखी किताब है।

☆......एक तो इस वजह से कि आम तौर पर किसी किताब को एक या दो तीन फ़र्द लिखते हैं। इस किताब को पूरी जमाअत ने लिखा है। और यह जमाअत ऐसी थी कि दुनिया भर से मुंतख़ब की कई थी और अपने फ़न यअ़नी ख़ुफ़िया मंसूबा बंदी, मक्कारी, अय्याराना फ़रेब कारी, संगदिली, बेरहमी और अख़्लाक़ियात से आरी पन में इतनी नुमायां और मुम्ताज़ थी कि उसके इन औसाफ़ को दोस्त दुशमन सब मानते हैं और इस किताब में भी उन्होंने जाबजा अपने इन फ़ित्री औसाफ़ का भरपूर मुज़ाहरा किया है।

☆......इस किताब को इस एतिबार से भी मुंफ़रिद व क़रार दिया जाएगा कि इसमें दुनिया के लिये ख़ैर की कोई बात नहीं थी। इसमें जो कुछ था वह बनी नोअ़ इंसान के लिये शर ही शर था। शर की हर सतह पर तरवीज से लेकर शर के नुमाइंदा आज़म के ख़ुरूज तक इस में शर की तरवीज के अलावा कुछ न था।

☆......आम तौर पर मुसन्निफ़ अपने पढ़ने वालों के भले के लिये कोई बात लिखता है। इसमें मुसन्निफ़ीन ने अपने तब्क़े के लिये तो सब कुछ सोच समझ कर तरतीब दिया था, लेकिन क़ारईन के लिये इन कम ज़र्फ़ों के पास सिवाए शर, बदी और बद ख़्वाही के कुछ न था।

☆......आम तौर पर पेशगोइयां अपने वक़्त पर ग़लत साबित होने के लिये होती हैं और कुछ वक़्त तजस्सुस और सनसनी ख़ेज़ी

पैदा करके अपने पीछे ग़ैर मुहतात बयानात और ग़ैर मुसद्दिक़ा इत्तिलाआत के अलावा कोई तअस्सुर नहीं छोड़तीं......लेकिन इस किताब की पेशगोइयां हमें अपने गिर्द व पेश में इलाक़ाई और आलमी मंज़रनामे पर अपना वजूद मनवाती और हक़ीक़त के पर्दे पर वाज़ेह झलक दिखलाती नज़र आती हैं। जो कुछ मंसूबे इसमें पेश किये गए थे, जो पेशगोइयां की गई थीं, जो साज़िशें तरतीब दी गई थीं, वह हैरत अंगेज़ तौर पर पूरी रहीं। आज की दुनिया का मंज़रनामा हर्फ़ बा हर्फ़ इन पेशबंदियों के मुताबिक़ है जो इस किताब के मुसन्निफ़ीन ने तरतीब दी थीं।

☆......आम तौर पर किताबें छपने के लिये लिखी जाती हैं। इस किताब के मुसन्निफ़ीन की पहली और आख़िरी कोशिश यह थी कि यह किसी तरह मंज़रे आम पर न आने पाए। चंद सरफिरे ऐडवेंचर पसंदों ने इसे दुनिया तक पहुंचाने की कोशिश की तो उन्हें यके बाद दीगरे हैरत अंगेज़ तौर पर पुरइसरार मौत का शिकार होना पड़ा।

☆......किताब नामी कोई चीज़ वजूद में आती है तो इसका ख़रीदार मुसन्निफ़ नहीं, आम लोग होते हैं, लेकिन यह ऐसी किताब है जब छप कर बाज़ार में आती है तो ख़ुद मुसन्निफ़ीन के हरकारे इसे ख़रीद ख़रीद कर ग़ायब कर देते हैं।

☆......दुनिया में कम ही किताबें ऐसी होती हैं जिनके मुसन्निफ़ीन नामालूम हैं। हर मुसन्निफ़ अपनी मेहनत अपने नाम से मुतआरिफ़ करवाता और इसे अपने लिये बाइसे इफ़्तिख़ार समझता है। यह ऐसी किताब है जिस पर बतौरे मुसन्निफ़ किसी शख़्स या अशख़ास का नाम नहीं। न इसके हुक़ूक़ महफ़ूज़ करवाए गए हैं न कोई इसे अपनी तरफ़ मंसूब करता है बल्कि उल्टा जिनके लिये लिखी

गई है यअ़नी क़ौमे यहूद और जिन्होंने इसे लिखा है यअ़नी सहीवनियत के चोटी के दिमाग़, वह सब इसे जअ़ली और मनघड़त क़रार दे करे इसकी नफ़ी करते और इसकी सदाक़त को मशकूक क़रार देने की कोशिश करते हैं।

☆.....हर किताब के मुसन्निफ़ की ख़्वाहिश होती है कि उसकी किताब को कबूलियते आम और शोहरते दवाम नसीब हो, उसकी अहमियत और इफ़ादियत को तसलीम कर लिया जाए, लेकिन यह ऐसी अजीब किताब है कि इसके मुसन्निफ़ीन इसकी अहमियत को तसलीम करने या करवाने के बजाए इसे अफ़साना क़रार देते हैं और सिरे से इसके वजूद को तसलीम करने से ही इंकारी हैं।

अलग़र्ज़ इस किताब में बहुत सी मुंफ़रिद ख़ुसूसियात हैं। बशर्ते कि उसे किताब तसलीम कर लिया जाए.....वर्ना हक़ीक़त में तो यह तजावीज़, मंसूबों, मुस्तक़बिल की पेश बंदियों और पेशगोइयों का मज्मूआ है। जिन्हें एक मख़्सूस हद्फ़ हासिल करने के लिये दुनिया के चोटी के दिमाग़ों ने सालहा साल की अर्क़ रेज़ी के बाद तरतीब दिया था। वह हद्फ़ क्या था? जिस कांफ़्रेंस में यह तजावीज़ पेश की गई उसके इख़्तिताम पर जब कांफ़्रेंस के सरबराह सहीवनियत के बानी और मुआसिर यहूदियत के बाबाए क़ौम डाक्टर थ्योडोर हैटज़ल से इन तजावीज़ और मंसूबों का ख़ुलासा पूछा गया तो उसने एक जुम्ले में अपने अह्दाफ़ समेटते हुए कहाः "मैं ज़्यादा तो कुछ नहीं कहता। बस इतना है कि आज से पचास साल के अंदर दुनिया रूए अर्ज़ पर यहूदी रियासत क़ाइम होता अपनी आंखों से देखेगी।"

यह इन तजावीज़ का आख़िरी नहीं, पहला हद्फ़ था जो पूरा हो चुका है। दूसरा हद्फ़ इस यहूदी रियासत की उन हुदूद तक तौसीअ़

है जो "मिनी इस्राईल" को "ग्रेटर इस्राईल" में तबदील कर देगी......और तीसरा और आख़िरी हद्फ़......इस ग्रेटर इस्राईल के सरबराह, बनी दाऊद की नस्ल से आने वाले नाम निहाद मसीहा, यहूदियत के नजात दहिंदा यअ्नी अलमलऊन अलअक्बर, अलफ़ित्नतुल कब्रा, "दज्जाले आज़म" की सरबराही में "आलमी दज्जाली रियासत" का क्याम है जो ज़मीन पर रहमानी निज़ाम (यअ्नी इस्लाम) और उसकी हर शक्ल व निशान को मिटा कर शैतानी और दज्जाली निज़ाम को बरपा करने की अलमबरदार होगी।

राक़िमुल हुरूफ़ ने सबसे पहले यह किताब उस वक़्त पढ़ी जब उसकी मसें भी न भीगी थीं। बंदा के बड़े भाई को कहीं से उसका पुराना और बोसीदा नुस्ख़ा हाथ लगा गया। वह इसका मुतालआ़ बड़े शौक़ से करते थे। उनकी ग़ैर मौजूदगी में बंदा ने एक दिन उसे उठा कर औराक़ पलटना शुरू किये। हैरत का एक जहां था जो बंदा पर खुलता गया। तजस्सुस और सनसनी ख़ेज़ मालूमात का एक सेल रवां था जो अपने साथ बहाए ले जा रहा था। किताब ख़्वानी का असर ज़ह्न पर एक अर्से तक क़ाइम रहा। राक़िम यह सोच कर हैरान थ कि जिस क़ौम ने ऐसे आलमगीर मंसूबे बनाए हैं, इतना ज़बरदस्त ख़ुफ़िया निज़ाम तरतीब दिया है, ज़िंदगी के हर शोअ़्बे पर गिरफ़्त क़ाइम करने के लिये इतनी ज़बरदस्त मंसूबाबंदी की है, वह इस पर अमल भी कर सकी या नहीं? यह फ़र्ज़ी ख़्याल बंदी थी या हक़ीक़ी ख़ाकासाज़ी? अगर हक़ीक़ी थी तो इतनी ज़हीन, मुनज़्ज़म और वसाइल से मालामाल क़ौम आज तक अपने मक़्सद में कामियाब क्यों नहीं हुई? दुनिया की हर चीज़ उसके पास मौजूद है, हर मैदान के माहिरीन की ख़िदमात उसे हासिल हैं, वह वसाइल की भरमार और

आलमी कुव्वतों की हिमायत के बावजूद इतनी रुसवाई इतनी ज़लील व ख़्वार क्यों है? इतना दिमाग़, इतनी दौलत, इतनी सियासत, इतनी दूर अंदेशी अगर किसी और क़ौम को मिल जाती तो वह एक दहाई में दुनिया को तसख़ीर कर लेती। यहूद का "तसख़ीरे आलम का मंसूबा" उनके लिये सामाने रुसवाई क्यों न बना हुआ है? या तो इस किताब के मुंदरजात मुबालग़ा पर मब्नी और झूट का पुलिंदा हैं या फिर कोई और बात है। वह और बात कौनसी है? इसकी तलाश में मारे मारे फिरते और सर खुजा खुजा कर मुतालआ करते करते हम जहां तक पहुंच सके, वह पेशे ख़िदमत करना मक़्सूद है......लेकिन पहले इस किताब की असलियत के हवाले से चंद हक़ाइक़ सामने आ जाने चाहियें ताकि आगे कही गई बातें वसूक़ और एतिमाद की बुन्याद पर बयान किये गए हक़ाइक़ हों न कि क़्यास और अंदाज़े के सहारे उड़ाए गए मफ़रूदात। नुसरते इलाही और ताईदे रब्बानी शामिले हाल रही तो इंशा अल्लाह हम इस मौज़ूअ़ से इतना कुछ इंसाफ़ ज़रूर कर लेंगे कि हमारे क़ारईन की तशफ़्फ़ी हो सके।

प्रोटोकोल के लफ़्ज़ का मतलब है कोई मस्वद्दा, दस्तावेज़ या किसी इजलास की रूदाद। दूसरे लफ़्ज़ों में किसी दस्तावेज़ के सरनामे पर इसका खुलासा चस्पां कर दिया जाए। इस एतिबार से इसका मफ़हूम होगाः "सहीवनियों के फ़ाज़िल बुर्ज़ुगों के इजलास की कार्रवाई की मुकम्मल रूदाद।" इन्हें पढ़कर अंदाज़ा होता है कि सहीवनी हुक्मरानों के अंदरूनी हल्क़ों से ख़िताब किया जा रहा है। इसी बुन्याद पर हमने शुरू में ही कह दिया यह दरहक़ीक़त आलमी सतह पर "दज्जाली रियासत के क़्याम के लिये यहूदी क़ौम का लाइहा अमल" है जो सदियों के दौरान मुरत्तब हुआ और जिसे इस

क़ौम के चोटी के दिमाग़ों और दानिश्वरों ने कांट छांट कर आख़िरी शक्ल दी। इन दस्तावेज़ात में मौजूद मंसूबों और खुलासों की तैारी और तरतीब वक़्तन फ़ौक़तन कई सदियों से जारी थी।

(जारी है)

☆☆☆

"प्लाटो"

यह किताब ग़ैर यहूद के हाथ कैसे लगी? जिस चीज़ को सात पर्दों में छिपा कर रखा गया था, वह बिलआख़िर मंज़रे आम पर कैसे आ गई? यह दासतान बड़ी दिलचस्प है। इस मौज़ूअ़ पर हमें सबसे अहम हवाला एक यूरपी मुसन्निफ़ा Mrs. Fry की किताब "Waters Flourig Eastward" से मिलता है। उन्होंने इस पर सैर हासिले बहस की है। वह लिखती हैं कि दुनिया की यह ख़ुफ़िया तरीन दस्तावेज़ात यअ़नी "प्रोटोकोल्ज़" दो मुख़्तलिफ़ ज़राए से हासिल किये गए थेः

(1) रूसी ख़ुफ़िया इदारे की एक एजंट जस्टाईन जिलिंका (Justine Glinka) फ़्रांस में काम कर रही थी। इसे मुख़्तलिफ़ ज़राए से प्रोटोकोल्ज़ का पता चला और यह भी कि इस दस्तावेज़ की कापियां फ़्रांस के "मिज़राईम लाज" (Mizraim Lodge) में जो पैरिस में था, मौजूद हैं। यह लाज फ़्रांस में फ़्रीमैसन का हेडक्वाटर था। बज़ाहिर इस का निगरान The Rite of Mizraim नामी एक गिरोह था, लेकिन दरहक़ीक़त यह फ़्रीमैसनरी की एक ज़ेली ख़ुफ़िया तन्ज़ीम थी जिसका मर्कज़ क़ाहिरा में था जबकि इसकी शाख़ें तमाम यूरप में थीं। जिलिंका (Glinka) इन दस्तावेज़ात के पीछे पड़ गई। उसने लाज के एक मुलाज़िम जोज़फ़ स्कॉर्स्ट (Joseph Schorst) का ताड़ा जिससे काम निकल सकता था। इस मुलाज़िम को इंतिहाई छान फटक के बाद रखा गया था और इससे हस्बे रिवायत मख़्सूस रुसूमात की अदाइगी के साथ वफ़ादारी का हलफ़ लिया गया था, लेकिन हर मज़बूत हिसार का कोई कमज़ोर

गोशा ज़रूर होता है। एक दिन उसको रक़म की ज़रूरत पड़ी। जिलिंका ऐसे मौक़ा की तलाश में थी। उसने फ़ौरन 5,000 फ़्रांक की भारी रिश्वत पेश कर दी। इतनी छोटी चीज़ की इतनी बड़ी रक़म मिलते देख कर उसने कुछ सोचे बग़ैर उसकी एक कापी जिलिंका को दे दी। उसने कापी हाथ में आते ही ताख़ीर किये बग़ैर उस वक़्त के रूसी दारुल हुकूमत "सेंट पीर्टज़ बर्ग" पहुंचा दी। फ़्रांस के पुलिस रिर्काड के मुताबिक़ स्कॉर्स्ट को इस वाक़िए के चंद दिनों बाद क़त्ल कर दिया गया। "बिरादरी" इस अहम तरीन राज़ की चोरी पर उसको कहां मुआफ़ कर सकती थी।

(2) दूसरी तरफ़ जब पहला आलमी सहीवनी इत्तिला 1897 ई० में सुइटज़रलैंड के शहर "बासल" में मुन्अक़िद हुआ तो वहां भी रूसी ख़ुफ़िया इदारे के अफ़सरान कट्टर क़दामत परस्त यहूदियों के भेस में पहुच गए और इंतिहाई सख़्त राज़दारी और भरपूर एहतियात के बावजूद यही दस्तावेज़ात हासिल कर लें। रूसी बादशाह बहुत पहले ही से यहूदियों की सरगर्मियों पर कट्टरी नज़रें रखे हुए था क्योंकि 1870 ई० की दहाई में यहूद ने गहरी साज़िश के ज़रीए एक "ज़ारे रूस" का क़त्ल किया था। ("ज़ार" रूसी बादशाहों का लक़ब था)। लिहाज़ा उस वक़्त का रूसी बादशाह दस्तावेज़ात के हुसूल में ख़ुसूसी दिलचस्पी रखता था और उनके हुसूल के लिये कोई भी क़ीमत देने पर तैयार था। उसकी सरपरस्ती और हौसला अफ़्ज़ाई की बदौलत रूसी एजंटों ने बिलआख़िर यह कारनामा कर दिखाया। यहूदियों के चोटी के दानियवर एहतियाती तदबीरें करते रह गए और उनके दुशमन यह दस्तावेज़ात ले उड़े।

रूसी ख़ातून जासूस "जस्टाईन जिलिंका" ने इन प्रोटोकोल्ज़ की एक कापी अपने पास रखी और जब वह अपने आबाई घर रूस के

ज़िला Orel लौटी तो उसने एक सरकारी उहदेदार को भी इन दस्तावेज़ात की कापी दे दी। उसका नाम Alexis Sukhotin था। Alexis ने यह दस्तावेज़ अपने दो दोस्तों फ़िलिप स्टीपोनोर और सर्जी ऐ नाक्स को दी। अव्वलुज़्ज़िक्र (Steponor) ने इसकी कापियां करवाईं और उन्हें अपने क़रीबी दोस्तों में बांटा, जबकि मुअख़्ख़िरुज़्ज़िक्र (Nilus) ने पहली बार इन्हें किताबी शक्ल में 1901 ई० में छापा जिसका उन्वान थाः "The Great within the Small" (छोटे के अंदर सबसे बड़ी) बादशाहत के ज़माने में तो यह किताब ख़ुफ़िया चीज़ों में मक़बूल तरीन चीज़ थी......लेकिन रूस में कम्यूनिस्ट इंक़िलाब के बाद पैदा होने वाले यहूदी असर व रुसूख़ की बिना पर इस किताब को किसी के पास देखते ही गोली मारने का हुक्म था। Steponor इंक़िलाब के आते ही रूस से भाग गया और 1932 ई० में यूगोस्लाविया में उसका इंतेक़ाल हुआ।

Steponor के बेटे से जब एक यूरपी मुसन्निफ़ Gerald B. Winrod की मुलाक़ात 1935 ई० में हुई तो उसने अपने वालिद के दोस्त नाक्स के बारे में बहुत से इंकिशाफ़ात किये। वह नाक्स को अच्छी तरह जानता था क्योंकि उसका बाप और नाक्स एक ही कम्यूनिटी में रहते थे। उसने बताया कि नाक्स का तअ़ल्लुक़ मुतवस्सित तब्क़े से था। वह एक पुख़्ता अक़ीदे वाला ईसाई था और इंजील मुक़द्दस पर कामिल यक़ीन रखता था। जब उसने देखा कि क़ौमे यहूद के दानाओं ने यह मंसूबे ईसाइयत के ख़ातमे के लिये तैयार किये हैं तो उसने दुनियाए मसीहियत की आगाही के लिये ख़तरात मोल लिये और उन दस्तावेज़ात को शाए करने की ठान ली। यह दस्तावेज़ात अबरानी ज़बान से रूसी ज़बान में तर्जुमा की गई थीं। नाक्स के ख़्याल में यह मंसूबा ईसाइयत के ख़िलाफ़ साज़िश था

जिसे तश्ते अज़बाम करके उसने मिल्ली फ़रीज़ा अंजाम दिया, लेकिन इन दस्तावेज़ात के मुतालए से मालूम होता है कि यह साज़िश सिर्फ़ ईसाई मज़हब और तहज़ीब के ख़िलाफ़ नहीं, यह तमाम मज़ाहिब और तहज़ीबों के ख़िलाफ़ एक भयानक मंसूबा है।

जब रूस में इंक़िलाब आया और प्रोटोकोल्ज़ कापी रखना भी जुर्म हो गया तो नाक्स ने रूस से भागने की कोशिश की लेकिन बदक़िस्मती से वह रूस के सूबे यूकराइन के दारुल हुकूमत Kiev में 1924 ई0 में पकड़ा गया। उस पर बेपनाह तशद्दुद किया गया। इसके कुछ अर्से बाद उसका इंतेक़ाल हो गया।

यह तहरीर अगर्चे रूसी ज़बान में "ब्रिटिश म्यूज़ियम लाइब्रेरी" में 10/अगस्त 1905 ई0 को पहुंच गई थी लेकिन इसका अंग्रेज़ी तर्जुमा 1906 ई0 में "विक्टर ई मार्सडन" (Victor E. Marsden) ने किया था। मार्सडन रूस में इंक़िलाब के दौरान "मार्निंग पोस्ट" (Morning Post) नामी अख़्बार का नुमाइंदा था। इंक़लाब के बाद उसे भी गिरफ़तार कर लिया गया और सज़ाए मौत का फ़ैसला सुनाया गया, लेकिन बिलआख़िर बर्तानवी बाशिंदा होने के नाते उसे मुआफ़ कर दिया गया और रिहाई के बाद वापस बर्तानिया जाने की इजाज़त दे दी गई। बर्तानिया वापसी के बाद जब उसकी सिहत बहाल हुई तो उसने सबसे पहले इन दस्तावेज़ात के तर्जुमे पर काम शुरू किया। उसे इन ख़ुफ़िया दस्तावेज़ात की अहमियत का अंदाज़ा था और वह इन्हें जल्द अज़ जल्द दुनिया के सामने लाना चाहता था। चूंकि वह ख़ुद सहाफ़ी भी था और उसे रूसी और अंग्रेज़ी दोनों ज़बानें आती थी, इसलिये इसका तर्जुमा आज भी उतना ही मक़्बूल है जितना कि पहले दिन था।

बर्तानिया वापसी के बाद जब बर्तानिया का बादशाह अपनी

नोआबादियात के दौरे पर निकला तो मार्सटन उसके साथ जाने वाली टीम में शामिल था। इस दौरे के दौरान मार्सडन ने एक खुसूसी मुरासिला निगारी की हैसियत से एक मर्तबा फिर "मार्निंग पोस्ट" के लिये काम किया लेकिन बर्तानिया वापसी पर वह "अचानक" बीमार पड़ गया और "पुरइस्रार हालत" में इंतेक़ाल कर गया।

इस किताब से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मालूमात General D.B. winrod की किताब "The Truth About the Protocoles" (प्रोटोकोल्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ सच) में देखी जा सकती हैं।

यहां यह बात ग़ौर तलब है कि शुरू शुरू में यह किताब मार्किट में आते ही ग़ायब हो जाती थी। इसके मुतरजिम या नाशिर पुरइस्रार तौर पर "इत्तिफ़ाक़िया तबई मौत" का शिकार हो जाते थे। इस ज़माने में अगर आप किसी लाइब्रेरी में जाते और यह किताब तलाश करते तो आप से पहले कोई उसे निकलवा कर ले जा चुका होता या यह किताब बग़ैर किसी इत्तिला के अपने मुतअ़ल्लिक़ा ख़ाने से ग़ायब होती। आज भी अगर आप नेट पर इस किताब को सर्च करना चाहें तो आपको काफ़ी मुश्किल होगी। इस नाम से मिलती जुलती किताबें आपको दिखाई जाएंगी, मगर यह किताब कोशिश के बाद भी आपकी नज़रों से ओझल रहेगी।

इन तमाम बातों के तनाज़ुर में......जो यक़ीनन इत्तिफ़ाक़िया नहीं हैं......इस किताब के मुंदरजात की अहमियत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। इसको उर्दू में पहली बार कराची के एक जुर्अत मंद और साहिबे ईमान सहाफ़ी "मिस्बाहुल इस्लाम फ़ारूक़ी" ने तर्जुमे करके छपाया। इसके दो हिस्से थे। पहले हिस्से में इन दस्तावेज़ात का

तआरुफ़, पसमंज़र, यहूदी अज़ाइम वग़ैरा बयान किये गए थे और दूसरे में इन बदनाम ज़माना दस्तावेज़ात का सलीस तर्जुमा था। जब यह शाए हुई तो तहलका मच गया। किताब की बेपनाह मक़्बूलियत के बावजूद बअ़ज़ मख़्सूस तनख़्वाहदारों ने इसकी फ़र्ज़ी और जअ़ली होने की रट लगाना शुरू कर दी। उनका इस्रार था यह सारी दस्तावेज़ात शोहरत के तलबगार किसी क़लमकार के वह्म की पैदावार हैं। जबकि दूसरी तरफ़ किताब जल्द ही नापैद हो गई थी। तलाशे बिस्यार के बावजूद कहीं से एक आध नुस्ख़ा मिल जाना भी ख़ज़ाने की तलाश के मुतरादिफ़ था। तीसरी तरफ़ फ़ारूक़ी साहब यह महसूस करने लगे कि उनकी निगरानी शुरू कर दी गई है। उन्हें ऐसा लगा उनके आसपास पुरइस्रार नक़्ल व हर्कत हो रही है। कुछ लोग उनकी जान के दर पै हो गए हैं और वह मौक़ा मिलने की ताक में हैं। उन्होंने अपनी तमामतर तवज्जोह इसी मौज़ूअ़ पर मरकूज़ कर दी और सांसों ने उन्हें जितनी मुहलत दी उस दौरान उन्होंने यहूदियत पर एक शाहकार किताब "यहूदी साज़िश और दुनियाए इस्लाम" तसनीफ़ कर डाली। फ़ारूक़ी साहब कुछ अर्से बाद ख़ालिके हक़ीक़ी से जा मिले। जो कुव्वतें उनकी इस बेहतरीन काविश को वह्म क़रार देती रही थीं, उन्हें उनकी मौत से भी चैन न आया। यह किताब उनके बाद भी कहीं दस्तियाब न होती थी। कुछ अर्से बाद "तसख़ीरे आलम का यहूदी मंसूबा" के नाम से छपी। मुसन्निफ़ के तौर पर "अबुल हसन" का फ़र्ज़ी नाम सरे वर्क़ पर दर्ज था। नाशिर का नाम हस्बे रिवायत मौजूद था, न ही मिलने का पता दर्ज था। इशाअते आम की नौबत इस बार भी न आने पाई। अक्सर व बेशतर इसका फ़ोटो स्टेट नुस्ख़ा ही आगे चलता रहा। फ़ारूक़ी साहब के बाद एक

और मशहूर मुसन्निफ़ मुंशी अब्दुर्रहमान ख़ान ने इसका तर्जुमा किया। इसके बाद तो क़तार लग गई। बहुत से मुतरजिमीन ने तर्जुमा किया और नाशिरीन इसे छापते रहे। अब यह मुख़्तलिफ़ नामों से कहीं न कहीं मिल ही जाती है। ज़्यादा मशहूर नाम "यहूदी प्रोटोकोल्ज़" का है, लेकिन जैसा कि राक़िम ने इस मज़मून के शुरू में कहा सही मअ़नों में इसे "दज्जाली रियासत के क़याम का दस्तावेज़ी मंसूबा" कहना चाहिये, क्योंकि इसका असली हद्फ़ बदी के बदतरीन ज़ुहूर "दज्जाले आज़म" की आलमी रियासत का क़याम है जिसका मर्कज़ इस्राईल और पायए तख़्त यरोशलम होगा।

बअ़ज़ लोगों को इस पर तअ़ज्जुब होता है कि अगर इन दस्तावेज़ात का इंकिशाफ़ यहूदियत के लिये इतनी ही नुक़सानदेह था कि उन्होंने सर जी ऐ नाक्स और विक्टर ई मार्सडन से लेकर फ़ारूक़ी साहब तक को क़त्ल करना ज़रूरी समझा तो फ़ारूक़ी साहब के बाद बक़िया मुतरजिमीन व नाशिरीन उनके इंतेक़ाम की ज़द से क्योंकर महफ़ूज़ रहे? इस बात का जवाब समझना कुछ ज़्यादा मुश्किल नहीं। एक राज़ अपने इब्तिदाई इंकिशाफ़ के वक़्त जितना सनसनी ख़ेज़ होता हो, उतना ही मुतास्सिरा फ़रीक़ के लिये नुक़सानदेह होता है। इस वक़्त राज़ को आम करने वाले इंतेक़ाम के शदीद जज़्बे का निशाना बनते हैं। रफ़्ता रफ़्ता इस इंकिशाफ़ से मुतास्सिर होने वाला फ़रीक़ जब धक्के से संभल जाता है तो इस तहलका ख़ेज़ इंकिशाफ़ को अपने लिये ग़ैर अहम क़रार देकर उसे नज़र अंदाज़ करने की पालीसी अपना लेता है। गोया कि "प्लान2" पर अमल शुरू कर दिया जाता है और यह समझ लिया जाता है कि अच्छा है यह मालूमात दुशमन या मुख़ालिफ़ीन तक पहुंचें और उन्हें मरऊब करें

कि उसे इतने ज़हीन और दूरअंदेश फ़रीक़ से पाला पड़ा है। लेकिन इस मौक़ा पर भूल जाते हैं कि उनके ख़िलाफ़ काम करने वाले इन दस्तावेज़ात का हवाला देकर उन्हें रगीदते हैं कि और उनके ख़िलाफ़ ज़ह्न साज़ी करके दुनिया को इंसानियत के इन दुश्मनों से आगाही देने का फ़र्ज़ अदा करते रहेंगे।

(जारी है)

फ़ाश ग़लतियों का तक़ाबुली मुतालआ

जैसा कि पहले लिखा गया शुरू शुरू में क़ौमे यहूद के "बुज़ुर्ग दाना" इस किताब की किसी संजीदा हैसियत के ही सिरे से इंकारी थे। वह पुरइस्रारियत की दबीज़ तह तले छिपाए इन राज़ों के इंकिशाफ़ पर सख़्त बरहम और अपनी तरफ़ इसकी निस्बत को निरा झूट या ख़ालिस वह्म क़रार देते थे, लेकिन ग़ैर जानिबदार मुहक़्क़िक़ीन का कहना था......और आज भी उनका यही इस्रार है......कि एक से ज़्यादा ऐसी वुजूहात हैं जिनके होते हुए इन दस्तावेज़ात को फ़र्ज़ी क़रार नहीं दिया जा सकता। मसलनः

(1) उनके ख़्याली होने का वह्म इसलिये नहीं किया जा सकता कि दुनिया में पेश आने वाले बहुत से मुनज़्ज़म हादसात व वाक़िआत की फिर कोई तौजीह मुम्किन नहीं रहती। यहूदी थिन्क टैंक्स उनके जअ़ली या फ़र्ज़ी होने पर जितना भी ज़ोर दें और उनके अस्ली होने की जितनी भी तरदीद करें, इस बात का कोई जवाब नहीं दे सकते कि अगर यह बिल्कुल जअ़ली हैं तो इनमें बयान कर्दा तजावीज़ और मंसूबे तसलसुल के साथ आलमी हालात से मुताबिक़त क्यों रख रहे हैं? इस्राईल की कार्रवाइयों और यहूदियत की कारसतानियों में इन तमाम मंसूबों की वाज़ेह झलक क्यों दिखाई देती है? इस्राईल की तारीख़ और यहूदी राहनुमाओं का तर्ज़े अमल इन दस्तावेज़ात के अस्ल होने की चुग़ली खाता है और दुनिया को मजबूर करता है कि वह सोचें एक फ़र्ज़ी चीज़ की इतने एहतिमाम और ताकीद से तरदीद करने की ज़रूरत ही क्या थी? अगर दाल में काला नहीं है तो ऐसी किताब को दुनिया की नज़रों से ग़ायब करने में क्या हिक्मत थी?

मशहूर अमरीकी सरमायाकार और दानिश्वर "हन्री फ़ोर्ड" ने इसी दलील को इस्तेमाल करते हुए कहा था कि प्रोटोकोल्ज़ जअ़ली या फ़र्ज़ी नहीं, बल्कि अस्ली और हक़ीक़ी हैं। उन्होंने 17 फ़रवरी 1921 ई० को "न्यूयार्क वर्ल्ड" में शाए होने वाले अपने एक इंटरव्यू में सहाफ़ी से गुफ़्तगू करते हुए कहा:

"इन प्रोटोकोल्ज़ के बारे में सिर्फ़ इतना कहना काफ़ी समझता हूं कि आज दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, वह उनके मुताबिक़ हो रहा है। उन्हें मंज़रे आम पर आए सौलह बरस का अर्सा गुज़रा है। मंज़ूर 1897 ई० की कान्फ़्रेंस में हुए थे। इंकिशाफ़ 1905 ई० के आसपास हुआ। राक़िम आज तक आलमी हालात व वाक़िआत इन्ही अक़्वाल के मुताबिक़ रूनुमा होते चले आ रहे हैं। आज भी ऐसा ही हो रहा है।"

वाक़ई हुन्री फ़ोंड ने बिल्कुल सही कहा था। एक फ़र्ज़ी चीज़ किसी हक़ीक़ी वाक़िए से इत्तिफ़ाक़िया मुनासिबत तो रख सकती है, लेकिन फ़र्ज़ी ख़्यालात की हक़ीक़ी और आलमी वाक़िआत से तसलसुल के साथ मुवाफ़िक़त मुम्किन नहीं।

(2) एक बहुत मज़बूत दलील यह है कि बक़ौल यहूद यह दस्तावेज़ात अगर अस्ली नहीं, सरासर "जअ़ली" हैं तो फिर इन ज़हीन जअ़ल साज़ों ने इन दस्तावेज़ात को एलानिया तौर पर खुल कर यहूदी मुसन्नफ़ीन से क्यों मंसूब नहीं किया, जबकि वह बआसानी ऐसा करके उससे कई मक़ासिद हासिल कर सकते थे। मसलनः वह दुनिया भर के इंसानों और तहज़ीबों के ख़िलाफ़ तैयार किये गए इन मंसूबों पर यहूदी राहनुमाओं का लेबल लगा कर क़ौमे यहूद के ख़िलाफ़ नफ़रत और इश्तिआ़ल की ज़बरदस्त फ़ज़ा पैदा कर देते। इसके बरअक्स हम देखते हैं कि उनके दस्तावेज़ात में "यहूद" का

लफ़्ज़ सिर्फ दो बार इस्तेमाल हुआ है, जबकि वह मख़्सूस इस्तिलाहात जो यहूदी लिट्रेचर का ख़ास्सा हैं, और उन्हें ग़ैर यहूदी न समझते हैं न इस्तेमाल करते हैं, वह खुफ़िया और खुफ़िया तरीन इस्तिलाहात इन दस्तावेज़ात में जाबजा रवानी के साथ इस्तेमाल हुई हैं। आख़िर वह कौनसे अनोखे "जअ़लसाज़" थे जो एक तरफ़ तो इतने ज़हीन थे कि दुनिया भर के इंसानों और इंसानी मुआशरे के हर तब्क़े और शोअ़बे को गिरफ़्त में लेने का मंसूबा 24 दस्तावेज़ात के अंदर समेट कर रख गए और दूसरी तरफ़ इस आ़ला काविश क़ौमे यहूद के सर थौपने का कोई आसान तरीन तरीक़ा भी इस्तेमाल न कर सके जो आम राह चलता नोसरबाज़ भी बआसानी घड़ सकता है। वाक़िआ यह है कि इन दस्तावसेज़ात को बढ़ने के फ़ौरन बाद पहला तअस्सुर जो क़ारी के ज़ह्न पर मुरत्तब होता है, वह ज़हीन और क़ाबिल लोगों की तरफ़ से मुरत्तब कर्दा एक "मुतलकुल इनान आलमी हुकूमत" के क़्याम के मरबूत मंसूबे का है जो दज्जाल के हरावल दस्ते के तौर पर काम करने वाली क़ौमे यहूद की सालहा साल से जारी ज़ेरे ज़मीन जिद्द व जिह्द का मर्कज़ी हद्फ़ है और जिसकी सही तअ़बीर वही है जो हमने "आलमी दज्जाली रियासत" के नाम से की है।

(3) इन दस्तावेज़ात के हक़ीक़ी और अस्ली होने की एक बड़ी दलील कुछ ऐसे तक़ाबुली क़राइन हैं जो नाक़ाबिले तरदीद हैं। मसलन: हम यहां दो अलग अलग किताबों से लिये गए वह इक़्तिबासात का इन दस्तावेज़ात के मुतअ़ल्लिक़ा हिस्से से तक़ाबुली मुतालआ़ पेश करते हैं। यह दस्तावेज़ात जिन लोगों ने राज़दारी के भारी भरकम हलफ़ उठा कर तैयार की थीं, एक वक़्त ऐसा आया कि उनके मुंह से ऐसी बात निकल गई जिससे समझने वाले बिला तरद्दुद समझ गए कि यह अपनी तहरीर या गुफ़्तगू में खुफ़िया दस्तावेज़ात में

बयान कर्दा तजावीज़ का इज़हार कर गए हैं और बीच चौराहे भांडा फूट जाने के बाद अब लीपा पोती की कोई कोशिश कामियाब नहीं हो सकती। ज़ेल में सहीवनियत के दो चोटी के राहनुमओं से नादानिस्ता तौर पर हो जाने वाले दो फ़ाश ग़लतियों का तक़ाबुली मुतालए पर मब्नकी जाइज़ा मुलाहज़ा कीजिये:

(अलिफ़) इन प्रोटोकोल्ज़ के बारे में कहा जाता है कि उन्हें "पहली सहीवनी कांग्रेस" के इन्इक़ाद के मौक़ा पर जारी किया गया जो 1897 ई0 में बासल के मक़ाम पर हुई थी और जिसकी सदारत जदीद सहीवनियत के बानी थ्योडोर हर्टज़ल ने की थी। कुछ अर्से क़ब्ल "हर्टज़ल की डायरी" के उन्वान से एक किताब शाए हुई। इसमें से चंद इक़्तिबासात 14/जूलाई 1922 ई0 में यहूद के आलमी तर्जुमान "ज्यूश क्रानीकल" में शाए हुए थे। इन डायरियों में हर्टज़ल ने 1885 ई0 में अपने सफ़र इंगलिस्तान का ज़िक्र भी किया है जहां उसकी मुलाक़ात कर्नल गोल्ड इस्मिथ से हुई थी। वह इंगलिस्तान की फ़ौज में कर्नल के उहदे पर फ़ाइज़ था और दिल की गहराइयों से हमेशा एक यहूदी क़ौम परस्त ही रहा। उसने हर्टज़ल को तजवीज़ पेश की कि अंग्रेज़ अशराफ़िया को तह व बाला करने और यहूदी तसल्लुत से इंगलिस्तान के अवाम को महफ़ूज़ रखने की सलाहियत को तबाह व बर्बाद करने की ग़र्ज़ से यह निहायत ज़रूरी है कि उनकी अराज़ी पर इज़ाफ़ी महसूल आइद कर दिया है। हर्टज़ल को यह ख़्याल बहुत अच्छा लगा चुनांचे उसे अब सहीवनी दस्तावेज़ के प्रोटोकोल नम्बर 15 और प्रोटोकोल नम्बर 20 "मालियाती प्रोग्राम" में बआसानी देखा जा सकता है। मुलाहज़ा कीजिये:

"हमें हर तरह से अपनी "सुपर हुकूमत" की अहमियत को उजागर करना चाहिये क्योंकि वह अपनी तमाम फरमांबरदार रिआया

की मुहाफ़िज़ और मुहसिन है। ग़ैर यहूदियों के उमरा एक सियासी कुव्वत के एतिबार से तक़रीबन ख़त्म हो चुके हैं। हमें इस तज़किरे की ज़रूरत नहीं है, लेकिन ज़मीनदार होने की हैसियत से वह अब भी हमारे लिये नुक़सानदेह साबित हो सकते हैं, क्योंकि वह अपने वसाइल पर इंहिसार करते हैं। इसलिये यह ज़रूरी है कि हम उनकी ज़मीनें छीन लें। यह मक़्सद ज़मीनों पर टेक्स लगा कर हासिल किया जा सकता है। यअ़नी ज़मीनें क़र्ज़ों के बोझ तले दब जाएंगी। इन इक़्दामात से ज़मीनदाराना निज़ाम कम हो जाएगा और वह ग़ैर मशरूत तौर पर हमारे इताअत गुज़ार रहेंगे। ग़ैर यहूदी उमरा और रुऊसा चूंकि ख़ानदानी एतिबार से थोड़े पर गुज़ारा करने के आदी नहीं, बहुत तेज़ी से जल जाएंगे, नाकाम हो जाएंगे और उनका ख़ातिमा हो जाएगा।"

(प्रोटोकोलः5, मआशी ज़रूरियात के प्रोपेगंडे का ख़ुफ़िया बाब, स0:206)

"मौजूदा इंफ़िरादी या जाईदाद पर महसूल के बजाए बढ़ते हुए सरमाए पर फ़ीसद तनासुब से टेक्स आइद करने से बहुत ज़्यादा आमदनी हासिल होती है। मौजूदा इंफ़िरादी या जाईदाद पर महसूल के बजाए बढ़ते हुए सरमाए पर फ़ीसदी तनासुब से ग़ैर यहूद में बेचैनी और इज़्तिराब पैदा होता है। हमें अपने तयशुदा रास्ते पर चलने में आसानी रहती है।"

(दस्तावेज़ 20, मालियाती प्रोग्राम, स0:282)

हर्टज़ल की डायरी और मुंदरजा बाला इक़्तिबासात का तक़ाबुली मुतालआ़ इस बात का वाज़ेह सबूत है कि सहीवनी राहनुमाओं के ज़हन में "आलमी हुकूमत" के क़्याम का एक वाज़ेह मंसूबा मौजूद था और यह प्रोटोकोल्ज़ दरहक़ीक़त इसी मंसूबे का ख़ाका हैं। यही वजह है कि कोई भी ज़हीन क़ारी जिसे हालिया तारीख़ का ज़रा सा

भी इल्म है और जो क़ौमे यहूद के काम करने के अंदाज़े से थोड़ी बहुत वाक़फ़ियत रखता है, वह इन प्रोटोकोल्ज़ की हर सतर की असलियत महसूस करेगा। वह असलियत जिसके पीछे क़ौमे यहूद के दानाओं का मक्र वह दज्जाली चेहरा झलक रहा होगा। हम अपने तमाम क़ारईन को दावत देते हैं वह विक्टर ई मार्सडन के इस तर्जुमे का ज़रूर मुतालआ करें जो अब उर्दू ज़बान में मुख़्तलिफ़ नामों से मिल जाता है।

(ब) अब हम एक और वाक़िए का भी ज़िक्र करते हैं। इस तरह की एक ग़लती बानी सहीवनियत के जानशीन से भी होती थी। थ्योडोर हर्टज़ल के जानशीन और सहीवनी तहरीक के लीडर डाक्टर वाइज़मैन ने इन अक़वाल से एक इक़्तिबास उस वक़्त पेश किया था जब 6/अक्तूबर 1920 ई० को यहूदियों के एक "बड़े रिबाई" के एज़ाज़ में एक अलविदाई दावत दी जा रही थी। डाक्टर वाइज़ मैन ने अपनी इस तक़रीर में एक मशहूर सहीवनी क़ौल का हवाला दिया था जिसे यहूदियों के "रूहानी दानिश्वरों" से मंसूब किया जाता है और जिसके मुताबिक़: "ख़ुदा ने यहूदियों की ज़िंदगी में एक मुफ़ीद और सूदमंद तहफ़्फ़ुज़ का इंतेज़ाम कर रखा है और इसी मक़्सद की ग़र्ज़ से उन्हें (यहूदियों को) दुनिया में हर तरफ़ फैला दिया है।" इस तक़रीर का हवाला यहूद के एक और आलमी सतह के मुस्तनद तर्जुमान "ज्यूश गार्डेन" में 8/अक्तूबर 1920 ई० की इशाअत में मौजूद है। अब आप इस क़ौल का मुवाज़िना प्रोटोकोल नम्बर ग्यारह के आख़िरी हिस्से से करें जिसमें कहा गया है: "ख़ुदा ने हमें अपने मुन्तख़ब नुमाइंदों की हैसियत से दुनिया भर में फैल जाने का तोहफ़ा इनायत फ़रमाया है। बहुत से लोग हमारी इस बेवतनी और आवारगी को हमारी कमज़ोरी पर महमूल करते हैं, लेकिन वह यह बात नहीं

जानते हैं कि हमारी यही कमज़ोरी दरअसल हमारी तमाम तर ताक़त और कुव्वत का अस्ल सरचश्मा है जिसने हमें आज पूरी दुनिया पर हुकूमत करने के क़ाबिल बना दिया है।"

इन इक़्तिबासात के तवाफ़ुक़ से यह बात पायए सबूत को पहुंचती है कि सहीवनी फ़ाज़िल बुज़ुर्गों और उनकी मुरत्तबकर्दा दस्तावेज़ात का यक़ीनन वजूद था और चीदा चीदा सहीवनी राहनुमओं को इन दस्तावेज़ात के बारे में पूरी मालूमात हासिल थीं। नीज़ यह कि यहूदियों की क़वी रियासत या मादरे वतन के क़्याम की देरीना ख़्वाहिश का उनके हक़ीक़ी अज़ाइम और अहदाफ़ से गहरा तअल्लुक़ है और उनको यही वह अज़्म या हद्फ़ है जो उनके तमाम अज़ाइम और अहदाफ़ का महवर व मर्कज़ है, जिसकी ख़ातिर वह सदियों से हर ज़ुल्म व ज़्यादती को रवा समझते हुए इंसानियत कश जिद्द व जिहद करते चले आए हैं।

इन दस्तावेज़ात के अस्ल या नक़्ल होने की बहस हमने महज़ इसलिये छेड़ी है कि वह बज़ाहिर "लम्हा मौऊद" जिसकी उम्मीद पर क़ौमे यहूद एक "आलमी बादशाह" और "आलमी रियासत" का ख़्वाब देख रही है, इन दस्तावेज़ात की रू से अब इस दूध भरे छींके की तरह महसूस होता है जिसकी रस्सी इतनी कमज़ोर हो चुकी हो कि अब टूटी या तब टूटी। यह संगीन सूरहते हाल इसलिये पैदा हुई कि इस फ़ित्ना परवर क़ौम की तरफ़ से आख़िर ज़माने के "फ़ित्नए उज़्मा" के ख़ुरूज के लिये भरपूर तैयारियां जारी हैं, जबकि इन तैयारियों के मुतालअए और दिफ़ाई व अक़्दामी तदाबीर पर हमारी तरफ़ से बहुत कम तवज्जोह दी गई है। क़ौमे यहूद अगर अब तक इतनी मरबूत जिद्द व जिहद और इतनी ज़बरदस्त मंसूबाबंदी के बावजूद अपने मक़सद में कामियाब नहीं हो सकी तो इसकी वजह

ज़िल्लत व ख़्वारी की वह तिकोनी मुहर है जो उन पर अल्लाह रब्बुल आलमीन, अहकमुल हाकिमीन की तरफ़ से लगाई जा चुकी है। इसमें हमारी मक़ावमत या मुदाफ़िअत का कोई दख़ल नहीं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मर्ज़ी चूंकि यह है कि क़ौमे यहूद को उसकी नाफ़रमानियों और गुस्ताख़ियों का ज़िल्लत आमेज़ मज़ा चखाया जाए, इसलिये इन अनासिर की रुसवाई और ज़िल्लत व शिकस्त भी कुदरत का अटल फ़ैसला है जो इस रान्दए दरगाह क़ौम का साथ देंगे......जबकि इसके बिलमुक़ाबिल उस फ़र्द, इदारे, जमाअत या क़ौम की मदद व नुसरत और इज़्ज़त व सरबुलंदी नोशतए तक़दीर है जो ग़ज़बे इलाही का शिकार इस क़ौम के मुक़ाबिल खड़ा हो जाए या खड़ा होने वालों के साथ खड़ा हो जाए।

यह वही नुक्ता है जिसका हमने शुरू में क़ारईन से वादा किया था इस किताब के मुंदरजाते मुबालग़ा पर मब्नी नहीं न झूट का पुलिंदा हैं। यह इस क़ौम के ज़ीरक तरीन रहनुमओं की अक़रेज़ काविशें हैं जो इंसानी तारीख़ की ज़हीन तरीन लेकिन बदबख़्त तरीन क़ौम थी। जिसका दिमाग़ तो आला सलाहियतों का हामिल था लेकिन दिल ख़ैर की रमक़ से ख़ाली हो चुके थे। जिन्होंने खुदा परस्ती और रहम दिली को छोड़ कर लज़्ज़त परस्ती और संगदिली को अपना शआर बना लिया था। उन्होंने ख़ुदा तआला की महबूब हस्तियों की तौहीन को अपना शआर बना लिया तो रब्बुल इज़्ज़त ने उनकी तज़लील पे अब्दी मुहर सिब्त कर दी। लिहाज़ा उनके तरतीब दिये गए मंसूबों की मिसाल दुनिया में नहीं, लेकिन इन मंसूबों के लिये दरकार तमाम वसाइल की फ़रावानी के बावजूद उनकी नाकामी व नामुरादी की हद व हिसाब भी नहीं। उनका तरतीब दिया हुआ "तसख़ीरे आलम का मंसूबा" उनके फ़नाए कुल्ली और इज्तिमाई

बर्बादी के हौलनाक अंजाम में तबदील हो जाएगा......लेकिन......इससे पहले दुनिया एक बड़ी आज़माइश से गुज़रेगी और इस आज़माइश में सुर्ख़ुरू होने की ज़मानत है कि पैग़म्बरे इस्लाम, हादिये दो जहां हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 की शरीअ़त व सुन्नत से चिमट जाया जाए ताकि जब मेहदी आख़िरुज़्ज़मां (हज़रत मेहदी रज़ि0) का ज़ुहूर हो तो ज़ाती ज़िंदगी में "तहारत व तक़्वा" और इज्तिमाई ज़िंदगी में "दावत व जिहाद" को अपनी पहचान बनाने वाले ख़ुशनसीब लोग फ़ित्नों भरी इस दुनिया को अमन व अमान के गहवारे में तबदील करने के लिये क़ुर्बानियां दे सकें और इन क़ुर्बानियों का नतीजा दुनिया में भी देख सकें।

☆☆☆

दज्जाली रियासत के नामेहरबान हमनवा

ऐशपरस्ती में मुब्तला मालदार हुक्मरान व शुयूख़ः

दज्जाल का पायए तख़्त "इस्राईल" मुस्लिम मुमालिक के क़ल्ब में कैसे वजूद में आ गया जबकि इर्दगिर्द हज़ारों लाखों ग़ैरतमंद मुसलमान रहते थे? यह तारीख़ के तालिबे इल्म के लिये दिलचस्प सवाल है। आज हम इसी सवाल पर कुछ देर के लिये बहस करेंगे। तारीख़ के मुख़्तलिफ़ अदवार में मुसलमान अवाम की हमियत व ग़ैरत मुसल्लम रही है, अलबत्ता इक़्तिदार ऐसी चीज़ है हो हुक्मरानों को मफ़ादपरस्त, मौक़ा परस्त और [illegible]ूल व नज़रिया के बजाए लालच या ख़ौफ़ (गाजर या छड़ी) का ताबेअ़ कर देती है। हम ज़ेल में फ़लस्तीन अर्ज़े मुक़द्दस के इर्दगिर्द रहने वाले नाम निहाद मुस्लिम हुक्मरानों का तज़किरा करते हैं जिन्होंने अपनी चश्मपोशी और ज़मीर फ़रोशी......ज़्यादा सही लफ़्ज़ों में......इस्लाम और अह्ले इस्लाम से ग़द्दारी करते हुए यहूद की हमनवाई की और अलक़ुद्स पर शिकंजए यहूद के मज़बूत करने का सबब बन कर दुनिया व आख़िरत में रुसवाई कमाई। हमारे यहां भी ऐसे परवेज़ी हुक्मरान मौजूद हैं जो इस्राईल को तसलीम करने का ढोल गले में डाल कर वक़्तन फ़वक़्तन उसे पीटते रहते हैं। अल्लाह तआला इनके शर से पूरी उम्मत को महफ़ूज़ फ़रमाए।

इस सिलसिले में सबसे पहले और सबसे ऊपर उर्दुन के शाही ख़ानदान और इसके बाद फ़लस्तीन के मुजाहिदे आज़म जनाब यासिर अरफ़ात और उनके बाद मिस्री सदर अन्वर सादात का नाम आता है। यअ़नी एक (यासिर अरफ़ात) तो ख़ुद अलक़ुद्स में था, दूसरा

अलकुद्स की मश्रिकी सरहद (उर्दुन) पर और तीसरा उसके मग़रिबी सरहद (मिस्र) पर हुक्मरान था। उन्होंने अर्ज़े मुक़द्दस और उसके दाएं बाएं वाक़ेअ़ ख़ित्ते में दज्जाली मफ़ादात की हस्बे तौफ़ीक़ निगेहबानी की। ज़ेल में इन तीनों के कारनामे बयान किये जाते हैं। अव्वलुज़्ज़िक्र ख़ानदान के क़द्रे तफ़सील से और आख़िरी दो अफ़राद के इख़्तिसार के साथ।

(1) उर्दुन का शाही ख़ानदान

उर्दुन के मौजूदा शाही ख़ानदान ने तारीख़ के अहम तरीन मोड़ पर मुसलमानों से ग़द्दारी की। इसका आग़ाज़ ख़िलाफ़ते उस्मानिया के सुकूत से होता है। इस सिलसिले में पहले इस ख़ानदान के पहले ग़द्दार, शरीफ़े मक्का (गर्वनरे मक्का) और उसके बेटों को देखना होगा। बाद में हम इस ख़ानदान के हर फ़र्द को इंफ़िरादी हैसियत में देखेंगे।

शरीफ़े मक्का

दसवीं सदी के बाद से शरीफ़े मक्का की हैसियत मक्का मुकर्रमा के वाली के अलावा एक रूहानी पेशवा की सी होती थी और एक रिवायती मुआहदे के तहत इसका तअ़ल्लुक़ हमेशा बनी हाशिम से होता था। पहली जंगे अज़ीम से पहले जो शख़्सियत हिजाज़ के गर्वनर के तौर पर नामज़द थी यअ़नी उसका तअ़ल्लुक़ बनी हाशिम के क़बीले से था। उसका ख़िलाफ़ते उस्मानिया ने हिजाज़े मुक़द्दस की निगरानी सौंपी। काफ़ी अर्से से यह एक रिवायत थी कि अमीरे मक्का तक़र्रुरी मुतअद्दद उम्मीदवारों में से चुनाव के बाद की जाती थी। 1908 ई0 में यह ज़िम्मादारी हुसैन बिन अली को सौंपी गई, लेकिन उसने अपने आप को अपने सरपरस्त उस्मानी सलातीन के

काफ़ी हद तक ख़िलाफ़ पाया जब उसने इस बात की कोशिशें शुरू कीं कि उसके ख़ानदान को नस्ल दर नस्ल इमारत दी जाए। गवर्नरी के उहदे को अपने ख़ानदान में मुस्तकि़ल करवाने की ख़्वाहिश के एवज़ यह शख़्स अपना ईमान और मुसलमानों की अर्ज़े मुक़द्दस बैचने पर भी तैयार हो गया और ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन से ग़द्दारी करते हुए अंग्रेज़ों का ऐजंट बनना क़बूल किया। उसने न सिर्फ़ हिजाज़ का ख़िलाफ़ते उस्मानिया से छीनने में मुआविन ख़ादिम का किर्दार अदा किया बल्कि अलक़ुद्स को यहूद के क़ब्ज़े में जाने और हिंदुस्तान की अंग्रेज़ से आज़ादी में भी रुकावट बना। हज़रत शैख़ुल हिंद रहि0 की "तहरीफ़े तहफ़्फ़ुज़े ख़िलाफ़त" और "तहरीके रेशमी रूमाल" की नाकामी और माल्टा में उनकी असीरी में उसी शख़्स ने मरकज़ी किर्दार अदा किया। इस तरह उस शख़्स के जराइम हिजाज़ से अलक़ुद्स तक यअ़नी हरमैन से हरमे क़ुद्सी तक और हिंदुस्तान से अफ़ग़ानिस्तान तक फैले हुए हैं। अपने इक़्तिदार की ख़ातिर उसने अरब व अजम के मुसलमानों के सर से सायए ख़िलाफ़त छीनने, उनकी तहरीके आज़ादी को कुचलने और अर्ज़े इस्लाम के क़ब्ज़ए यहूद में जाने देने से भी दरेग़ नहीं किया। यहां उस शख़्स की दासताने जूर व जफ़ा बयान करने से ग़र्ज़ यह है कि आज भी मिल्लते इस्लामिया का सबसे बड़ा मस्ला इसी क़िस्म के परवेज़ी हुक्मरान हैं जो खाते हमारा लेकिन गाते किसी और का हैं। हुक्मरानों की यह जरासीम ज़दा नस्ल अलक़ुद्स के गिर्द भी है और अलक़ुद्स के निगेहबान अफ़ग़ानिस्तान व पाकिस्तान के गिर्द भी। उनकी पहचान उन लोगों के लिये बहुत ज़रूरी है जो ख़ुरासान (अफ़ग़ानिस्तान, शिमाल मग़रिबी पाकिस्तान) से आने वाले काले

झंडों तले आख़िरी वक़्त के अज़ीम तरीन जिहाद में बिलवास्ता या बिला वास्ता शिर्कत के ख़्वाहिशमंद हैं।

उसका पूरा नाम हुसैन बिन अली था। यह 1854 ई0 में इसतन्बूल में पैदा हुआ। यह हिजाज़ में ख़िलाफ़ते उस्मानिया का मुक़र्रर कर्दा आख़िरी अमीर था और इसने यह ख़िताब (Title) 1908 ई0 से 1917 ई0 तक अपने पास रखा। शुरू में यह ख़िलाफ़ते उस्मानिया के मातहत और तुर्की का इत्तिहादी था और तुर्की के जर्मनी और आस्ट्रिया के साथ जंग में उनके साथ था, लेकिन अंग्रेज़ों की जानिब से यह अफ़वाह मौसूल होनी शुरू हुई कि जंग के इख़्तिताम पर उसे मअ़ज़ूल करके उसकी जगह कोई और अमीरें मक्का बन जाएगा तो उसने जाह परस्ती में मुब्तला होकर बग़ावत का आग़ाज़ कर दिया और अरब बग़ावत की बाक़ाएदा सरबराही की।

ख़िलाफ़ते उस्मानिया से बग़ावत में इस ख़ानदान का किर्दार

शरीफ़े मक्का ने बग़ावत का एलान तो कर दिया लेकिन बग़ावत की अस्ल जंग उसने अपने बेटों के ज़रीए लड़ी। बग़ावत के सिले में शरीफ़े मक्का से मिस्र के अंग्रेज़ कमिश्नर ने शाम के साहिली इलाक़े और अदन के अलावा बहरे अहमर का सारा साहिली इलाक़ा तोहफ़े के तौर पर देने का वादा किया। यह वादा "हुसैन मेकमोहन मुआहदा" (HUSSEIN MCMAHON CORRESPONDENCE) के नाम से मशहूर हुआ। इसका नतीजा यह निकला कि जून 1916 ई0 का महीना शुरू होते ही अरब बग़ावत का आग़ाज़ हुआ जो ख़िलाफ़ते उस्मानिया के इख़्तिताम तक

जारी रहा। इस बग़ावत का मक़्सद सिर्फ़ शरीफ़े मक्का का यह दिमाग़ी आरिज़ा और हवस थी कि अलेप्पो (ALEPPO) जो कि शाम का शिमाली ज़िला था, से लेकर यमन तक की अरब सरज़मीन उसकी बादहशाहत में आ जाए। उसका यह ख़्वाब तो कभी पूरा न हुआ, अलबत्ता वह मुसलमानों के लिये ऐसे मसाइल पैदा कर गया जिनका ज़ख़्म सदियों तक बहता रहेगा और उसकी क़ब्र को जहन्नम का गढ़ा बनाए रखेगा।

शरीफ़े मक्का का बेटा बाप से कम न था। उसके बेटे फ़ैसल अव्वल ने बदनाम ज़माना अंग्रेज़ जासूस T.E LAWRENCE जिसको "लारंस आफ़ अरबिया" भी कहा जाता है, की मदद से बग़ावत के लिये दरकार जंगी व अस्करी तैयारियां जारी रखीं। फ़ैसल, शरीफ़े मक्का का तीसरा बेटा था जो ताइफ़ में 1883 ई0 में पैदा हुआ था। 1913 ई0 में उसको ख़िलाफ़ते उस्मानियाप की तरफ़ से जद्दा शहर का "वाली" बनाया गया था। फ़ैसल ने अंग्रेज़ों के साथ बाक़ाएदा मिल कर ख़िलाफ़ते उस्मानिया से जंगें लड़ीं और बग़ावत को मुनज़्ज़म किया, अल्लामा इक़बाल ने भी अपनी शाएरी में उसकी ग़द्दारी का तज़किरा किया है।

अगर्चे यह शख़्स अपना तअ़ल्लुक़ हुज़ूर सल्ल0 के ख़ानदान से जोड़ता था, लेकिन उसके अंदर अस्ल जज़्बा अरब क़ौमियत और ज़ाती मफ़ाद का था न कि इस्लाम और उसकी सर बुलंदी का। और बात यह है कि इस्लाम में अमले सालेह के बग़ैर नसब को कोई एतिबार ही नहीं।

मक्का की जंग

बग़ावत का बाक़ाएदा आग़ाज़ मक्का से हुआ। जून 1916 ई0 के आग़ाज़ में उस्मान फ़ौज अपने सिपहसालार ग़ालिब पाशा (जोकि

हिजाज़ का गर्वनर था) के साथ ताइफ़ चली गई, जबकि मक्का शहर में सिर्फ़ और सिर्फ़ 1400 के क़रीब उस्मानी मुजाहिद गए थे। 10 जून की एक गर्म रात जब ज़्यादा तर फ़ौजी अपनी बैरकों में सो रहे थे, शरीफ़े मक्का ने अपने हाशिमा महल की खिड़की से फ़ायर किया। यह बग़ावत के आग़ाज़ का इशारा (Signal) था। उसके साथ 5000 और ग़द्दार भी थे। उन्होंने हरम की हुदूद के क़रीब मौजूद तीन क़िलों और जद्दा की सड़कों पर मौजूद क़िले JIRWALI BARRACICS पर हमला कर दिया।

इस अचानक हमले की वजह से उस वक़्त के तुर्क कमांडिंग आफ़िसर को बग़ावत का पता ही न चल सका। शरीफ़े मक्का और उस्मानी फ़ौज के झंडे एक ही रंग के थे और तुर्क कमांडर को इसका फ़र्क़ नहीं दिखाई दे रहा था। जब उसने शरीफ़े मक्का को फ़ोन किया तो उसे बताया गया कि हथियार डाल दो लेकिन उसने साफ़ इंकार कर दिया।

शरीफ़े मक्का की अफ़वाज ने बाद में पेशक़दमी करके सफ़ा की पहाड़ी के क़रीब और मस्जिदे हराम के बराबर जबले अबू क़ुबैस पर क़ाइम "तुर्की क़िले" पर क़ब्ज़ा कर लिया। आज कल इस क़िला की जगह इंतिहाई बुलंद व बाला इमारत तअ़मीर की जा रही है जबकि बैतुल्लाह के गिर्द फ़लक बोस इमारतों की तअ़मीर क़यामत की निशानियों में से एक निशानी है। बग़ावत के तीसरे दिन "हमीदा" (HAMIDA) जो कि उस्मानी हुकूमत का दफ़्तर था, पर भी क़ब्ज़ा करके नाइब गर्वनर (DEPUTY GOVERNOR) को गिरफ़्तार कर लिया गया। अब दोबारा बाक़ी अफ़वाज को हथियार डालने को कहा गया तो लेकिन उन्होंने उस वक़्त भी इंकार कर दिया।

इस पर अंग्रेज़ कमांडर "SIR REGINAL WINGATE"

ने दोगूला बर्दार ब्रीगेड जद्दा शहर के रास्ते भेजी जिसमें वह मिस्री आफ़िसर भी शामिल थे जिनको इस मक़्सद के लिये ख़ास तौर पर तरबियत दी गई थी। इन ग़द्दारों ने तुर्क क़िलों की दीवारें तोड़ दीं और उनके मुहाफ़िज़ों को शहीद कर दिया। आख़िरकार 4 जूलाई 1916 ई0 को मक्का को उस्मानी फ़ौज से ख़ाली करवा लिया गया जबकि जद्दा की सड़क पर वाक़ेअ़ JIRWALL BARRACKS आग लगने की वजह से ज़मीन में बोस हो गया और वहां तुर्क फ़ौज की सख़्त मज़ाहमत को ख़त्म कर दिया गया। इस सिलसिले का एक अफ़सोसनाक पहलू यह है कि बहुत से मुसलमान हिंदुस्तानी फ़ौजियों ने भी अंग्रेज़ की इताअत करते हुए शरीफ़े मक्का के साथ मिल कर ख़िलाफ़ते उस्मानिया से बग़ावत में हिस्सा लिया। मसलन ख़ूशाब के एक गांव में ख़ंजर ख़ान रहता था, जिसके बारे में लोगों से मालूम हुआ कि उसने भी इस वक़्त ख़ाना कअ़बा पर गोली चलाई थी। वह उस वक़्त अंग्रेज़ों की Mercinnary (किराए की फ़ौज) में शामिल था।. उसके साथ और हिंदू आफ़िसर भी थे, लेकिन उन्होंने गोली चलाने की बजाए मैदान छोड़ने को तरजीह दी जबकि उस "ग़ैरतमंद" के साथ और भी मुसलमान फ़ौजियों ने शरीफ़े मक्का की मदद की और हरम पर गोला बारी में बाज़ाब्ता हिस्सा लिया। जिसकी तनख़्वाह उसको सौलह रूपये माहवार मिलती थी।

मुहासिरए मदीना

अरब बग़ावत का सबसे ज़्यादा अलमनाक और दिलसोज़ वाक़िआ मदीना मुनव्वरा की जंग थी। मदीना मुनव्वरा के एक तरफ़ तो पहाड़ है जबकि उस पर बक़िया तीन तरफ़ से शरीफ़ हुसैन के तीन बेटों की सरकर्दगी में हमला किया गया।

- मश्रिक़ की जानिब से अब्दुल्लाह बिन हुसैन की फ़ौज थी।

- जुनूब की जानिब से अली बिन हुसैन की फ़ौज थी।

- जबकि शिमाल की जानिब से फ़ैसल बिन हुसैन की अफ़वाज थीं।

इनके साथ अंग्रेज़ और फ़्रांसीसी आफ़िसरों के दस्ते भी थे जो तकनीकी मुशाविरनत के लिये मौजूद थे। इनमें लारंस आफ़ अरबिया नामी बदनाम ज़माना जासूस भी शामिल था।

मुहासिरए मदीना 1916 ई0 में शुरू हुआ जबकि 1919 ई0 के अवाइल तक जारी रहा। इसकी एक वजह तो उस्मानी मुजाहिदीन की ज़बरदस्त मज़ाहमत थी, दूसरी वजह यह थी कि अंग्रेज़ ने शरीफ़े मक्का को मदीना में दाख़िल होने से मना कर दिया था, क्योंकि मुसलमानों ख़ुसूसन हिंदुस्तान में अंग्रेज़ के ख़िलाफ़ तहरीके ख़िलाफ़त शुरू हो चुकी थी। इसके अलावा इस तरह से शरीफ़े मक्का के बारे में मन्फ़ी तस्वीरकशी से भी इज्तिनाब किया गया। इसके बजाए फ़िरंगी दज्जाल ने हिजाज़ रेलवे लाइन (Trans-Hejaz Railway Line) के ज़रीए कार्रवाइयां कीं और इसको बार बार उड़ाया गया। जब तुर्क अफ़वाज इसकी मरम्मत के लिये आतीं तो उन पर हमला किया जाता। इस लाइन के दिफ़ाअ़ और तअ़मीर में बहुत बड़ी तादाद में तुर्क फ़ौजी शहीद या गिरफ़्तार हुए।

मदीना शहर का दिफ़ाअ़ मशहूर उस्मानी सिपहसालार फ़ख़्री पाशा (Fakhri Pasha) के ज़ेरे निगरानी था। यह ऐसा ग़ैरत मंद शख़्स था कि उसने जंगे अज़ीम अव्वल के इख़्तिताम पर भी हथियार नहीं डाले। आख़िर में जब उस्मानी ख़लीफ़ा ने बहुत इसरार किया तो बड़ी मुश्किलों से उसने हथियार डाले।

उसकी दासतान इंतिहाई ईमान अफ़रोज़ है। जब 30 अक्तूबर 1918 ई0 में तुर्की और अंग्रेज़ अफ़वाज के दर्मियान "मदरूस का

मुआहदा" तय पाया गया तो उसे हथियार डालने का कहा गया, लेकिन उसने मुआहदे को तसलीम करने से इंकार कर दिया। यह शख़्स इंतिहाई दिलैर और साहिबे ईमान था। मदीना मुनव्वरा के बासी उसकी बहादुरी और हुस्ने इंतेज़ाम की बिना पर उसे बहुत पसंद करते थे।

एक तुर्क मुसन्निफ़ लिखता है:

"एक मर्तबा 1918 ई0 के मौसमे बहार में जुमा के दिन फ़ख़्री पाशा मस्जिदे नबवी में नमाज़ की इमामत से पहले खुत्बा देने के लिये मिंबर की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा तो आधे ही रास्ते में रुक गया और अपना चेहरा हुज़ूर अक़्दर सल्ल0 के रोज़े की तरफ़ करते हुए बुलंद आवाज़ में कहने लगा:

"ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आपको कभी नहीं छोडूंगा।"

इसके बाद उसने नमाज़ियों और मुजाहिदीन से वलवला अंगेज़ ख़िताब किया:

"मुसलमानो! मैं तुमसे हुज़ूर सल्ल0 का नाम लेकर जिहाद की अपील करता हूं जो इस वक़्त मेरे गवाह भी हैं। मैं तुम्हें यह हुक्म देता हूं कि दुशमन की ताक़त की परवा न करते हुए उनका (हुज़ूर सल्ल0) और उनके शहर का आख़िरी गोली तक दिफ़ाअ़ करो। अल्लाह तआला हमारा हामी व नासिर हो और हुज़ूर सल्ल0 की बरकत हमारे साथ हो।

तुर्क अफ़वाज के बहादुर अफ़सरो! ऐ झूटे मुहम्मदियो! आगे बढ़ो और मेरे साथ मिल कर अल्लाह और उसके रसूल के सामने वादा करो कि हम अपने ईमान की हिफ़ाज़त अपनी ज़िंदगियां लुटा कर करेंगे।"

इसके बाद फ़ख़्री पाशा ने कहा कि उसे ख़्वाब में हुज़ूर सल्ल0

की ज़ियारत नसीब हुई थी और हुज़ूर सल्ल0 ने उसको हुक्म दिया था कि वह अभी हथियार न डाले।

अगस्त के महीने 1918 ई0 में जब उसे शरीफ़े मक्का की तरफ़ से टेलीफ़ोन पर हथियार डालने को कहा गया तो उसने जवाब दिया वह उस्मानी अफ़वाज के कमांडरों की जराअते ईमानी और अल्लाह व रसूल सल्ल0 से शदीद मुहब्बत का आईनए दार है। उसने लिखाः

"फ़ख़री पाशा की तरफ़ से जो उस्मानी अफ़वाज का सिपहसालार और सबसे मुक़द्दस शहर मदीना का मुहाफ़िज़ और हुज़ूर सल्ल0 का अदना गुलाम है। उस अल्लाह के नाम से जो हर जगह मौजूद है। क्या मैं उसके सामने हथियार डालूं जिसने इस्लाम की ताक़त को तोड़ा, मुसलमानों के दर्मियान ख़ूरेज़ी की और अमीरुल मोमिनीन की ख़िलाफ़त पर ख़तरे का सवालिया निशान डाला और खुद को अंग्रेज़ के मातहत किया।

जुमेरात की रात 14 ज़िल हिज्जा को मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं थका हुा पैदल चल रहा था, इस ख़्याल में कि किस तरह मदीना का दिफ़ाअ़ किया जाए? अचानक मैंने एक जगह पर अपने आप को नामालूम अफ़राद के दर्मियान पाया जो कि काम कर रहे थे। फिर उनमें से एक बुर्ज़ुग शख़्सियत को देखा......वह हुज़ूर सल्ल0 थे। उन पर अल्लाह तआला की रहमत हो। उन्होंने अपना बायां हाथ मेरी पीठ पर रखा और मुझ से तहफ़्फ़ुज़ का एहसास दिलाने वाले अंदाज़ में कहाः "मेरे साथ चलो।" मैं उनके साथ तीन चार क़दमों तक चला और फिर बेदार हो गया। मैं फ़ौरन मस्जिदे नबवी गया और (उनके रोज़े के करीब) अपने रब के हुज़ूर सज्दे में गिर पड़ा और अल्लाह का शुक्र अदा किया।

अब मैं हुज़ूर सल्ल0 की पनाह में हूं जो मेरे सिपहसालारे आला

हैं। मैं मदीना की इमारतों, सड़कों और उसकी हुदूद के दिफ़ाअ में दिल व जान से मसरूफ़ हूं। अब मुझे इन बेबार पेशकशों से तंग न करो।"

फ़ख़्री पाशा ने ख़िलाफ़ते उस्मानिया के वज़ीरे जंग के बाज़ाब्ता हुक्म को जिसमें हथियार डालने कहा गया था, भी नज़र अंदाज़ कर दिया। इस पर उस्मानी हुकूमत बड़ी परेशान हुई और सुलतान मुहम्मद (शशम) ने उसको इस उहदे से बरतरफ़ कर दिया। फ़ख़्री पाशा ने इस पर भी हथियार डालने से इंकार कर दिया और जंग ख़त्म होने के 70 दिन बाद तक भी सुलतान का झंडा उठाए रखा। उस पर हर तरफ़ से दबाव पड़ रहा था लेकिन वह अपने अज़्म और अहद पर क़ाइम था।

बिलआख़िर उस्मानी ख़लीफ़ा की मन्नत समाजत के बाद उसने 9 जनवरी 1999 ई० को BIR DARWUSG के मक़ाम पर 456 आफ़िसरों और 9,364 जवानों के साथ न चाहते हुए हथियार सिर्पुद कर दिये। इसके बाद ही 2 फ़रवरी 1919 ई० को शरीफ़ हुसैन के ईमान फ़रोश लड़के अब्दुल्लाह और अली शहर में दाख़िल हो सके।

फ़ख़्री पाशा को गिरफ्तार कर लिया गया और उसने माल्टा में 1921 ई० तक असीरी के अय्याम गुज़ारे। उस्मानी ख़ुलफ़ा के नज़दीक उसकी सलाहियतों पर एतिमाद उसके जज़्बए जिहाद का अंदाज़ा इस बात से होता है कि 1921 ई० में जब उसे रिहाई मिली तो उसने तुर्क अफ़वाज के साथ मिलकर यूनान के ख़िलाफ़ जिहाद किया और अनातूलिया में फ़्रांसीसी और यूनानी अफ़वाज के ख़िलाफ़ दादे शुजाअत दी। जंगे आज़ादी के बाद उसने काबुल में बहैसियत तुर्क सफ़ीर फ़राइज़ अंजाम दिये और बाद में 1936 ई० में उसे एज़ाज़ देकर रिटायर कर दिया गया। इस मर्दे मुजाहिद का इंतेक़ाल

1948 ई0 में हुआ।

बाग़ी से बग़ावत

बाग़ी ही सबसे पहले बग़ावत का शिकार होता है। आइये! अब हम इन ग़द्दारों का अंजाम देखते हैं, जिन्होंने हरमैन शरीफ़ैन को ख़िलाफ़ते उस्मानिया के साए से अलग करने की साज़िश की। अरब बग़ावत के बाद जो सबसे ख़तरनाक और तौहीन आमेज़ चीज़ सामने आई वह थी "एलान बिलफ़ौर"। अह्द शिकन और यहूद नवाज़ अंग्रेज़ों की तरफ़ से 1916 ई0 में शरीफ़ हुसैन के ग़द्दार ख़ानदान से वादा किया गया था कि उसे सारी सरज़मीने अरब दी जाएगी, सिवाए चंद इलाक़ों के, तो दूसरी तरफ़ यहूदियों को फ़लस्तीन में "क़ौमी घर" देने का वादा 2 नवम्बर 1917 ई0 में किया गया, हालांकि 1916 ई0 के शुरू में ग़द्दारे मक्का से किया जा चुका था।

सितम ज़रीफ़ी और ग़दर दरग़दर मुलाहज़ा फ़रमाइये कि इसके कुछ ही अर्से बाद "SYKES PICOT" नामी मुआहदा मंज़रे आम पर आया। मुआहदए फ़्रांस और बर्तानिया के दर्मियान पहली जंगे अज़ीम मई 1916 ई0 के दौरान तै पाया था। इसमें रूसी हुकूमत का इक़रार भी शामिल था। मुआहदे के तहत अगर यह जंग इत्तिहादियों ने जीती तो शाम और लबनान फ़्रांस जबकि बाक़ी अरब इलाक़े बर्तानिया और अतातूलिया के रहम व करम पर छोड़ जाएंगे। यह मुआहदा अंग्रेज़ नुमाईंदे MARK SYKES और फ़्रांस के दर्मियान किया गया था।

रूस में बिल शवीक इंक़िलाब के बाद फ़्रांस और बर्तानिया ने रूस का हिस्सा कर दिया और अनातूलिया को अपने लिये मख़्सूस कर लिया। बाद में रूसी हुकूमत ने उसे 26 नवम्बर 1917 ई0 को एलान बिलफ़ौर के सिर्फ़ तीन हफ़्ते बाद मंज़रे आम पर लाया।

इसकी वजह से इत्तिहादियों को बहुत ज़्यादा शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा। 1916 ई0 मई और जून में ही शरीफ़ हुसैन से वादा किया गया, जबकि इसी महीने फ़्रांस से मुआहदा हुआ और फिर 2 नवम्बर 1917 ई0 को अर्ज़े फ़लस्तीन यहूद को भी देने के वादे किये गये। एक मुआहदे की सियाही खुश्क होने से पहले उससे मुतज़ाद दूसरा मुआहदा। यह है अंग्रेज़ का दोग़लापन। इसके नतीजे में अरब और सहीवनियों में बहुत ज़्यादा तशवीश पैदा हुई। शरीफ़ हुसैन के तो पैरों तले से ज़मीन निकल गई।

फ़ैसल वाइज़ मैन मुआहदा

फ़ैसल बिन हुसैन ने बढ़ चढ़ कर शाम और फ़लस्तीन में यहूद नवाज़ अंग्रेज़ से वफ़ादारी दिखाई और अर्ज़े मुक़द्दस के दुशमनों का भरपूर साथ दिया। बाद में दमिश्क़ और शाम की फ़तह के बाद उसने अपने आप को अरब मुमालिक का नुमाइंदा बना लिया। और 1919 ई0 में पैरिस1 "अमन कांफ्रेंस" में अरब वफ़्द की नुमाइंदगी की जिसमें उसने अंग्रेज़ों को "आज़ाद अरब इमारात" का वादा याद दिलाया। लेकिन नतीजा उल्टा निकला।

"SYKES PICOT" के बाद सहीवनियों को अरबों से यहूदी नक़्ल मकानी का इक़रारनामा चाहिये था ताकि एलान बिलफ़ौर पर अमल दरआमद हो सके। इस सिलसिले में अरबों के बारे में सहीवनी रहनुमा डाक्टर वाइज़ मैन कहता था: "अरब मक्कार, लालची, बदतमीज़ और जाहिल हैं।" और अंग्रेज़ के सामने अपने खुतूत में वावेला किया: "अंग्रेज़ ने अरब और यहूद में बुन्यादी फ़र्क़ को मद्दे नज़र नहीं रखा।"

जबकि अंग्रेज़ ने फ़ैसल को यह पट्टी पढ़ाई कि यहूद को अपना इत्तिहादी बनाओ, बजाए इसके कि "ताक़तवर, आलमी और

दबने वाले यहूदी" को अपना मुख़ालिफ़ बनाओ। यहूद नवाज़ अंग्रेज़ के झांसे में आ जाने के बाद फ़ैसल बिन हुसैन ने सहीवनी रहनुमाओं से मुआहदा कर लिया। उसे "फ़ैसल वाइज़ मैन मुआहदा" कहा जाता है। इस मुआहदे के तहत फ़ैसल ने तारीख़ी ग़लती करते हुए बड़े पैमाने पर यहूदी नक़्ल मकानी की इजाज़त दे दी, जबकि उसने बदले में यहूदियों से "वसीअ़ अरब क़ौम की तरक़्क़ी" के सिलसिले में यहूदी मुआविनत मांगी। कैसी अजीब बात थी? एक तरफ़ वह सरज़मीन अलकुद्स में यूहदी आबादकारी की राह हमवार कर रहा था और दूसरी तरफ़ अरब क़ौम की तरक़्क़ी की ख़्वाहिश रखता था।

दानिशमंदाना मुआहदे की अहमक़ाना शिर्कें

इस मुआहदे की चंद शिर्कें यह थीं:

1-मुसलमानों और यहूदियों के दर्मियान तअ़ल्लुक़ात बेहतर बनाए जाएंगे और बड़े पैमाने पर यहूदी नक़्ल मकानी में मदद की जाएगी, जबकि मुस्लिम इबादत के इलाक़े मुसलमानों के ज़ेरे निगरानी होंगे। अरब किसानों और दीगर बाशिंदों के हुक़ूक़ का भी ख़्याल रखा जाएगा।

2-सहीवनी तहरीक अरब रियासतों के मअ़दनी वसाइल और उनकी मईशत के क़्याम के लिये मदद करेगी। (सुब्हानल्लाह! इबलीसी सियासत तो देखिये कि अरब मुसलमानों की सरज़मीन क़ब्ज़ा करके उल्टा एहसान चढ़ाया जा रहा है!!)

3-हिजाज़ का बादशाह (KINGDOM OF HEJAZ) एलाने बिलफ़ौर की तौसीक़ करेगा ताकि फलस्तीन में यहूदी "कौमी घर" बनाया जा सके।

4-तमाम झगड़े सालिसी के लिये अंग्रेज़ हुकूमत के सामने पेश किये जाएंगे।

फ़ैसल ने मुआहदे के आख़िर में अपने हाथों से लिखाः

"अगर अरबों को आज़ादी मिल जाती है, मैं ऊपर दी गई तमाम शराइत को तसलीम करता हूं, लेकिन अगर इनमें ज़र्रा बराबर भी तबदीली की गई तो मैं इनमें से एक हर्फ़ का भी पाबंद नहीं हुंगा और मेरी इस सिलसिले में कोई ज़िम्मादारी नहीं होगी।"

सवाल यह पैदा होता है कि वह अरबों के लिये कौनसी आज़ादी चाहता था? किससे आज़ादी चाहता था? जब यहूद को एक मर्तबा नक़्ल मकानी और फ़लस्तीन में बसने की इजाज़त दे दी गई तो इसके बाद अरबों की आज़ादी का क्या इम्कान रह जाता है? नीज़ यह कि एक मर्तबा यहूदियों के पांव जम जाने के बाद उसकी तरफ़ से पाबंदी तस्लीम न करने से यहूदियों का क्या बिगड़ सकता था?

अब अगर ग़ौर किया जाए तो इस मुआहदे से अंग्रेज़ ने भी अपना मक़्सद पूरा किया, यहूदियों ने भी उसकी ग़द्दारी के बलबूते अपना मक़्सद पूरा किया, लेकिन उस बदनसीब ने दज्जाल और उसकी रियासत के लिये सब कुछ पेश कर दिया और उसे कुछ हासिल न हो सका। आज अंग्रेज़ भी है, यहूदी भी हैं, लेकिन फ़ैसल का नाम लेने वाला कोई नहीं।

अंग्रेज़ ने अपना मक़्सद अरब मुमालिक को टुक्ड़े टुक्ड़े करके पूरा किया, यहूद ने अपना मक़्सद फ़लस्तीन में एक यहूदी रियासत क़ाइम करके हासिल किया, जबकि उस अक़्लमंद के इस मुआहदे की वजह से यहूद की नक़्ल मकानी को जवाज़ मिला और एलान बिलफ़ौर की तन्फ़ीज़ का रास्ता साफ़ हुआ। बदले में उसे दुनिया व आख़िरत की रुसवाई के सिवा कुछ हाथ न आया।

ग़द्दारों का अंजाम

आइये अब देखते हैं कि मुसलमानों से इतनी बड़ी ग़द्दारी करने

वाले शख़्स और ख़ानदान का अंजाम क्या हुआ?

फ़ैसल बिन हुसैन

सबसे पहले फ़ैसल बिन हुसैन का हश्र देखते हैं। फ़ैसल न मदीना के मुहासिरे में अहम किर्दार अदा किया था जबकि लांस आफ़ अरबिया (T.F LAWRENCE) के साथ मिल कर सुकूते शाम और सुकूते दमिश्क़ में भी उसने कलीदी किर्दार अदा किया। जब शाम को अरब हुकूमत का हिस्सा बनाया गया तो उसकी ख़ुशी की इंतिहा न थी और यह ख़ुश व ख़ुर्रम होकर मम्लिकत हिजाज़ का नुमाइंदा बन कर पैरिस की अमन कान्फ़्रेंस में शिर्कत के लिये गया। वहां उसने बड़े फ़ख़्र व इतमीनान के साथ सहीवनी रहनुमाओं के साथ मुआहदा कर लिया। अब देखते हैं उसके साथ तमाशा क्या हुआ?

7 मार्च 1920 ई० को शाम की क़ौमी कांग्रेस ने उसे अपना बादशाह बनाने का एलान किया, जबकि अगले ही महीने "SAN ROMEO" की कान्फ़्रेंस में "SYKES PICOT" मुआहदे के तहत अरब सरज़मीन का बटवारा कर दिया गया। शाम और लबनान फ़्रांस के पास चले गए जबकि इराक़, उर्दुन, कुवैत और फ़लस्तीन बर्तानिया के हिस्से में आ गए।

जब शाम फ़्रांस के पास गया तो वह फ़ैसल को क्यों ताज पहनाता? वही फ़्रांसीसी अफ़्वाज जिनकी सरबराही करते हुए फ़ैसल ने ख़िलाफ़ते उस्मानिया के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी, आज उसके ख़िलाफ़ खड़ी थीं और 24 जूलाई 1920 ई० को मैसूलियन की जंग में फ़्रांसीसी अफ़्वाज से उसको ज़बरदस्त शिकस्त का सामना करना पड़ा। मुश्किल के इस वक़्त में उसके अपने सगे भाई अब्दुल्लाह बिन हुसैन ने भी उसको छोड़ दिया, क्योंकि उसको भी विन्सटन चर्चिल ने

जतला दिया था कि फ्रांस के ख़िलाफ़ जंग महंगी पड़ेगी और बर्तानिया इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहता। चाए की दावत में अब्दुल्लाह को ऐसी पट्टी पढ़ाई गई कि वह अपने भाई को छोड़ छाड़ कर अलग हो गया। मायूसी के इस दौर में फ़ैसल को फ्रांसीसी हुकूमत ने शाम से मुल्के बदर कर दिया और अगस्त 1920 ई० में वह बर्तानिया चला गया। अफ़सोसनाक यह है कि उस वक़्त भी उसे न ग़ैरत आई और न दुशमन को पहचानने की तौफ़ीक़ नसीब हो सकी। इतना ज़बरदस्त धोका खाने के बाद भी वह दग़ाबाज़ दोस्त के दर पे जा बैठा। अंग्रेज़ को भी अपने वफ़ादार अहमक़ को देखकर तरस आ गया और 1921 ई० के अवाख़िर में उसे एक राए शुमारी के ज़रीए इराक़ का बादशाह बना दिया गया। इधर फ़लस्तीन को उर्दुन से अलग कर दिया गया और यहां अब्दुल्लाह बिन हुसैन को बादशाह बना दिया गया। इस तरह से अंग्रेज़ की तरफ़ से अरब सरज़मीन के बटवारे का मुआमला खुश उस्लूबी से तै पा गया। मुस्लिम ताक़त तक़सीम हो गई और दज्जाल की नुमाइंदा यहूदी रियासत मुस्तहकम होती चली गई।

यह तो छोटे मियां का अंजाम था, अब ज़रा बड़े मियां शरीफ़ हुसैन का मुआमला देखते हैं। 1917 ई० ही में उसने अपने आप को "शाहे हिजाज़" कहलाना शुरू कर दिया था। बाद में अपने आप को "मलिकु बिलादिल अरब" (सरज़मीने अरब का बादशाह) का ख़िताब भी दिया जिसकी वजह से आले सऊद के साथ उसके इख़्तिलाफ़ात बढ़ना शुरू हो गए।

उसका सबसे पहला ख़्वाब उस वक़्त पाश पाश हो गया जब "अज़ीम अरब इमारत" के तसव्वुर को SAN ROMEO कान्फ्रेंस में मल्यामेट कर दिया गया। अरब मुसलमान जो पहले ख़िलाफ़त के

साए तले मुअ़ज़्ज़ज़ और मुनज़्ज़म थे, अब अंग्रेज़ की बंदूक़ की नाल पर मैनडेट (MANDATE) के सिस्टम के तहत फ़्रांस और बर्तानिया के नीचे दब कर रह गए।

इसके बावजूद भी उसकी हवस व लालच में कमी नहीं आई और ख़िलाफ़ते उस्मानिया और ख़िलाफ़त के इदारे (Institution) के ख़त्म होने के सिर्फ़ दो दिन के बाद (तुर्की की क़ौमी असम्बली ने 1 मार्च 1924 ई० को उसके ख़ातमे की क़रारदाद की तौसीक़ की थी) 3 मार्च 1924 ई० को शरीफ़े मक्का ने अपनी ख़िलाफ़त का एलान कर दिया, लेकिन अंग्रेज़ों ने उसकी नामं निहाद ख़िलाफ़त को भी बर्दाश्त न किया और उसके मुक़ाबले में आले सऊद को ले आए। कुछ ही अर्से बाद यह बैतुल्लाह शरीफ़ की ख़िदमत से महरूम कर दिया गया और आले सऊद के पास बैतुल्लाह और मदीना मुनव्वरा नीज़ हिजाज़ का ज़्यादातर इलाक़ा आ गया। अगर्चे अंग्रेज़ ने इस बदनसीब को "हुसैन मेकमोहन मुआहदा" (HUSSEIN - MCMOHAN COREES PONDENCE) में मदद की यक़ीन दिहानी करवाई थी लेकिन मतलब निकलने के बाद उसे अकेला छोड़ दिया। उसने जिस तरह ख़िलाफ़ते उस्मानिया को धोका दिया था उसी तरह बल्कि उससे भी बढ़ कर अंग्रेज़ ने उससे फ़रेब किया। बिलआख़िर "शाह हिजाज़" व "मलिके बिलादुल अरब" ने ख़लीफ़ा के अलावा तमाम ख़िताबात अपने बेटे अली बिन हुसैन को दे दिये और ख़ुद क़बरस के रास्ते फ़रार होने पर मजबूर हुआ। उसने ज़िंदगी के आख़िरी अय्याम कसमपुर्सी के आलम में अपने बेटे अब्दुल्लाह के पास उसके टुकड़ों पर गुज़ारे जिसे इस्राईल का पड़ोस महफ़ूज़ करने के लिये उर्दुन का बादशाह बनाया गया था। उसका दिमाग़ी फ़ुतूर देखिये कि उसने ख़लीफ़ा का ख़िताब अपने पास अपनी

मौत 4 जून 1931 ई0 तक रखा जबकि यह ख़ुद बेटे के पास पनाह गुज़ीन हो चुका था।

हिजाज़ पर आले सऊद के तसल्लुत के बाद अली बिन हुसैन ने दोबारा हिजाज़े मुक़द्दस को लेने की कोशिश की, लेकिन उसको भी नामुराद होकर भागना पड़ा। बिलआख़िर ख़िलाफ़ते उस्मानिया से हिजाज़ छिनवाने वाले इस ख़ानदान को हिजाज़ की ज़मीन नसीब न हुई। उन्हें उर्दुन भागना पड़ा और हिजाज़ में आले सऊद को ला बिठाया गया।

अब्दुल्लाह बिन हुसैन

अब्दुल्लाह बिन हुसैन 1882 ई0 में पैदा हुआ था। उसको अरब बग़ावत और अंग्रेज़ सरकार की ताबेदारी पर उर्दुन की मम्लिकत से नवाज़ा गया और 25 मई 1923 ई0 को उसने आज़ादी का एलान कर दिया। किस से आज़ादी? यह सोचने की बात है। क्या इस ख़िलाफ़ते उस्मानिया से जो पूरे आलमे अरब, पूरे आलमे इस्लाम की मुहाफ़िज़ व सरपरस्त थी।

अब्दुल्लाह बिन हुसैन वह बदनाम हुक्मरान था जिसका मग़रिब के साथ रवय्या शुरू से दोस्ताना था और वह एक मार्डन शख़्स समझा जाता था। कहा जाता है कि ख़ुद अब्दुल्लाह का विज़न भी एक अज़ीम मम्लिकत का था जिसकी हुदूद उर्दुन, शाम, लबनान और फ़लस्तीन हो। यह सारा इलाक़ा मम्लिकते हाशमिया का हिस्सा हो और इसका दारुल ख़िलाफ़ा दमिश्क़ हो। यही वजह है कि बहुत से अरब रहनुमा भी उस पर एतिबार करते थे क्योंकि वह दुश्मन के नर्ग़े में रहते हुए भी उससे दोस्ती रखे हुए था। इसके बदले में यह भी दीगर अरबों पर एतिबार नहीं करता था।

1946-1947 ई0 के दौरान जब फ़लस्तीन यहूदियों को दिया जा

रहा था, अब्दुल्लाह की कोई नियत नहीं थी कि फ़लस्तीन की तक़सीम को रोका जाए या उसके ख़िलाफ़ रुकावटें खड़ी की जाएं। एक मुअर्रिख़ EUGENE L ROGAN ने लिखा है कि अब्दुल्लाह दरअसल तक़सीमे फ़लस्तीन की हिमायत करता था ताकि अंग्रेज़ के ज़ेरे निगरानी बचा खुचा हिस्सा उर्दुन के साथ शामिल कर दिया जाए। उसके मुताबिक़ अब्दुल्लाह इस हद तक आगे बढ़ गया था कि उसने यहूदी वफ़ूद से भी मुलाक़ातें कीं (इस्राईल की मुस्तक़बिल की वज़ीरे आज़म गोल्डा मियर इन वफ़ूद में शामिल थी) ताकि अलग से एक समझौता तै किया जा सके।

कुछ मुअर्रिख़ यह कहते हैं कि मुलाक़ातें उस वक़्त तक के लिये अमन व अमान के क़्याम को मुम्किन बनाने के लिये की गई थीं जब तक अक़वामे मुत्तहिदा खुद उस इलाक़े के सेक्यूरिटी के फ़राइज़ न संभाल ले। इससे समझा जा सकता है कि उस शख़्स ने फ़लस्तीनी मुसलमानों से ग़द्दारी और यहूद की चापलूसी में किस हद तक गिरना पसंद कर लिया था।

अब्दुल्लाह के करतूत देखकर कहा जा सकता है कि अगर "रुकावट बन कर उसे परेशान न करती तो वह इस्राईल के साथ वाक़ई समझौता कर लेता। 1948 ई० के अवाइल तक अरब मुमालिक ने उस पर ज़ोर डाला कि वह उनके साथ "कुल अरब अस्करी मुदाफ़िअ़त फ़लस्तीन" में हिस्सा ले और इस्राईल के ख़िलाफ़ जंग लड़े। उसने इस मौक़ा को ग़नीमत जानते हुए अपनी गिरती हुई साख़ (जो मग़रिबी और यहूदी सरबराहों से बेपनाह दोस्ती की वजह से अरबों में ख़राब होती चली जा रही थी) बचाने के लिये आमादगी ज़ाहिर कर दी।

उसने सोचा कि इस जंग में अगर वह अपने आप को अरब

अफ़वाज का सिपहसालार कहलवाने में कामियाब हो जाता है तो उसका वक़ार बहाल हो सकता है, लेकिन उसने इस चक्कर में सबसे ख़तरनाक चाल चली। एक अच्छी भली "मुस्लिम यहूदी जंग" को उसने अरब क़ौमियत की तहरीक की शक्ल में पेश करके उसे "अरब इस्राईल जंग" में तबदील कर दिया। बाद में उसकी सिपहसालारी की ख़्वाहिश अरब लीग ने मुस्तरद की।

लेकिन यहां भी उसने "वफ़ादार एजंट" होने का सबूत दिया। दौराने जंग उसकी अफ़वाज ने सिर्फ़ उन इलाक़ों तक पेशक़दमी की जो फ़लस्तीनी मुसलमानों के लिये मख़्सूस कर दिया गया था और जो इलाक़ा यहूदियों को दिया गया था, उस पर उसने एक गोली भी न चलाई। इस जंग के आख़िर में सिर्फ़ मिस्र की फ़ौजें आगे बढ़ती जा रही थीं जबकि बाक़ी तमाम अरब अफ़वाज बशमूले उर्दुनी अफ़वाज के पीछे हटती चली गईं। ख़ास तौर से उर्दुन ने आगे बढ़ने की कोई ख़ास कोशिशी की ही नहीं, जबकि मिस्री अफ़वाज भी भारी जानी नुक़सान की क़ीमत पर आगे बढ़ रही थीं।

इस सब कुछ के बावजूद अब्दुल्लाह का अंजाम भी किसी ग़द्दार के इबरतनाक अंजाम से कम न था। जब लबनान के वज़ीरे आज़म RIAD BEH AL-SOLH को गोली मारकर हलाक कर दिया गया तो अम्मान में यह अफ़वाहें गर्दिश करने लगीं कि लबनान और उर्दुन इस्राईल से मुआहदा कर रहे हैं। इस पर जब अब्दुल्लाह 20 जूलाई 1951 ई० को मस्जिदे अक़्सा में जुमा की नमाज़ के लिये पहुंचा तो एक फ़लस्तीनी मुसलमान मुस्तफ़ा शौकी जिसका तअ़ल्लुक़ हुसैनी क़बीले से था, ने उसे गोलियों से भून डाला।

अब्दुल्लाह उस वक़्त चट्टान वाले गुंबद (क़ब्तुल सुख़्रा) में नमाज़े जुमा पढ़ रहा था कि उसके सीने और खोपड़ी में तीन गोलियां

दाग़ी गईं। इत्तिफ़ाक़ की बात है कि उसका पोता हुसैन बिन तलाल भी वहां मौजूद था। उसने क़ातिल का पीछा करने की कोशिश की तो उसके सीने पर भी गोली दाग़ी गई। उसने यहां आने से पहले एक तमग़ा (MEDAL) पहना था जिसकी वजह से गोली उस तमग़े से लगकर नीचे गिर गई और यह बाल बाल बच गया।

मुस्तफ़ा शौक़ी और उसके साथी मूसा अब्दुल्लाह ने उसे क़त्ल करने के बाद मिस्र में जाकर पनाह ले ली जबकि कुल दस अफ़राद पर यह मुक़द्दमा चलाया गया, अलक़ुद्स के गर्वनर ने इस मुक़द्दमे की समाअत की। इन दस में से दो तो फ़रार हो गये जबकि चार को सज़ा हुई और उन्हें शहीद कर दिया गया।

हुसैन बिन तलाल

हुसैन बिन तलाल, अब्दुल्लाह बिन हुसैन का पोता था। अगर्चे अब्दुल्लाह बिन हुसैन पर क़ातिलाना हमले में ज़ख़्मी होने के बाद तलाल बिन अब्दुल्लाह तंदरुस्त हो गया था, लेकिन यह बादशाह इसलिये नहीं बन सकता था कि उसकी दिमाग़ी हालत और तवाज़ुन दुरुस्त नहीं था, लिहाज़ा 1952 ई० ही में उसे मअ़ज़ूल कर दिया गया ताकि उसका बेटा हुसैन बिन तलाल अगला बादशाह बन सके। बाद में यह "शाह हुसैन" के नाम से मशहूर हुआ।

यह 14 नवम्बर 1935 ई० को पैदा हुआ था। उसने अपनी तालीम इस्कंदरिया के "विक्टोरिया कालिज" से हासिल की। बाद में यह मज़ीद तालीम हासिल करने के लिये पहले हार्वड और बाद में "राइल मिलिट्री अकेडमी सेंदुहरस्ट" (ROYAL MILITARY ACADEMY, SANDHURST) चला गया जहां तीसरी दुनिया के हुक्मरानों को आलमी ताक़तों का वफ़ादार रहते हुए अपनी अवाम पर हुकूमत करने की तरबियत दी जाती है।

अगर्चे 16 साल की उम्र में बादशाह बन गया था, लेकिन उसकी ताजपोशी एक साल बाद 2 मई 1953 ई0 में की गई। 2 मई 1953 ई0 से लेकर 7 फ़रवरी 1999 ई0 तक (तक़रीबन 46 साल) उर्दुन का हुक्मरान रहा था। इस निस्फ़े सदी के दौरान उसने उर्दुन से मिलने वाली इस्राईली सरहदों की हिफ़ाज़त का फ़रीज़ा पूरी दिलजमई से अंजाम दिया। 1967 ई0 की जंग में उसने सिर्फ़ एक वजह से हिस्सा लिया था, वह "आला मक़्सद" यह था कि मक़ामी फ़लस्तीनी आबादी की मदद हासिल की जाए और इसके ज़रीए अपनी बादशाहत को इस्तिहकाम बख़्शा जाए। इस जंग में अरब हुक्मरानों ने इसको पेश क़दमी पर ख़ासा मजबूर किया, लेकिन उसकी फ़ौज किसी सूरत भी आगे गढ़ने पर तैयार नहीं थी, और बड़ी आसानी और शर्मनाक तरीक़े से पीछे हटती रही, यहां तक कि दरयाए उर्दुन का पूरा मग़रिबी किनारा इस्राईल ने हड़प लिया और उर्दुन की आबादी आधी हो गई।

सियाह सितम्बर 1970 ई0 (Black September):

यह वह वाक़िआ था जिसकी वजह से उसका किर्दार खुल कर सामने आ गया। वाक़िए ने न सिर्फ़ अरब मुसलमानों के हद्फ़ व मक़्सद को मल्यामेट कर दिया, बल्कि खुद इस्लामी मुमालिक व अफ़वाज में फूट डाल दी। 1967 ई0 की छः रोज़ा जंग में इस्राईल ने जब अरब क़ौमियत के अलमबरदारों को शर्मनाक शिकस्त दी तो शाह हुसैन ने भरपूर मौक़ा परस्ती और इब्नुल वक़्ती दिखाई। कल तक जब यह फ़लस्तीन का तआवुन हासिल करना चाहता था तो उनका भरपूर साथ देता था, जबकि इस जंग के बाद इस्राईल के सामने जी हुज़ूरी शुरू कर दी।

उस वक्त मिस्र और शाम के हुक्मरान एक हद तक

फ़लस्तीनियों की मदद करते रहते थे और फ़लस्तीनी फ़िदाईन इस्राईल पर उर्दुन की सरहद से हमले करते रहते थे, लेकिन शाह हुसैन ने अपने आक़ा और आक़ाज़ाद अमरीका और इस्राईल को खुश करने के लिये न सिर्फ़ यह कि फ़लस्तीनी मुजाहिदीन के रास्ते में रुकावटें खड़ी कीं बल्कि उर्दुन की अफ़वाज को हुक्म दिया कि इस्राईली अफ़वाज पर कोई हमला नहीं किया जाएगा। ख़ास तौर से उस इलाक़े के कमांडर जनरल मशहूद हदीशा को यह हुक्म दिया गया था, लेकिन फिर भी बअ़ज़ फ़ौजियों ने इस हुक्म को नज़र अंदाज़ करते हुए इस्राईली फ़ौजियों पर गोले बरसा दिये, जिसकी वजह से 28 यहूदी फ़ौजी मौक़ा पर ही हलाक जबकि 80 शदीद ज़ख़्मी हो गए, जबकि 4 टैंक भी तबाह कर दिये गए। अगर्चे अस्ल लड़ाई उर्दुन के इन कुछ फ़ौजियों ने लड़ी थी लेकिन इस वाक़िए से पी ऐल ओ के मोराल में बहुत इज़ाफ़ा हुआ। यासिर अरफ़ात ने फ़तह का एलान किया और सारा क्रेडिट ले लिया। आख़िरकार शाह हुसैन ने पी ऐल ओ के गिर्द घेरा तंग करने के लिये एक 7 निकाती मुआहदा किया जिसके तहत उस तन्ज़ीम की सरगर्मियां महदूद कर दी गईं।

सितम्बर 1970 ई० के आग़ाज़ में पी ऐल ओ ने तंग आकर हवाई जहाज़ अग़वा किया फिर बअ़ज़ फ़लस्तीनी कैम्पों को आज़ाद इलाक़ा क़रार दे दिया जबकि शाह हुसैन पर कई क़ातिलाना हमले के किये गए लेकिन वह सबके सब नाकाम हो गए। इस पर शाह हुसैन ने 16 सितम्बर 1970 ई० को मार्शल ला का एलान कर दिया। उर्दुन की अफ़वाज ने अमान में पी ऐल ओ के दफ़ातर पर हमले शुरू कर दिये नीज़ अर्बद, सवीलह और रिज़क़ा नामी फ़लस्तीनी कैम्पों पर हमला कर दिया गया। इस जंग में उर्दुन की मदद के लिये बर्तानिया

ने बड़ी मिक्दार में अस्लहा रवाना किया, जबकि शाम ने पी ऐल ओ की मदद करने के लिये 250 टैंक उर्दुन भेज दिये।

इस जंग में सख़्त तबाही हुई और दोनों तरफ़ से बड़ी तादाद में हलाकतें हुईं। पी ऐल ओ की शामी शाख़ को सरहद पर मौजूद उर्दुन के 40 वीं ब्रीगेड ने तबाह कर दिया, जबकि पी ऐल ओ और उसके हामी शामी टैंकों की तरफ़ से उर्दुन के 60 से ज़ाइद टैंक तबाह कर दिये गए। हलाकतों की तादाद दोनों तरफ़ से 7000 से 8000 के दर्मियान थी। आख़िरकार जब क़्याम अमन हुआ तो इस शर्त पर कि पी ऐल ओ को निकाल करें लबनान भेजा जाएगा, जबकि अरब मुमालिक उर्दुन में मुदाख़िलत बंद करेंगे। अगर्चे इस्राईल को 21 मार्च 1968 ई० को नाकामी हुई थी लेकिन इस जंग के बाद उसने एक गोली इस्तेमाल किये बग़ैर अपने सारे मक़ासिद हासिल कर लिये, क्योंकर अरबों के दर्मियान फूट डाल दी गई थी।

1973 ई० की अज़ीम तरीन ग़द्दारी:

1973 ई० की रमज़ान जंग के आग़ाज़ में मुसलमानों को ख़ातिर ख़्वाह कामियाबी मिली थी, लेकिन एक तो शाह हुसैन की यहूद नवाज़ी और ग़द्दारी की वजह से जंग की काया ही पलट गई, दूसरे खुद लड़ने वाले अरब मुमालिक के सरबराहों का अपना अपना एजंडा था जो बाद में सबकी नाकामी का सबब बना।

जंग की तैयारी इंतिहाई पोशीदा रखी गई थी। सरबराहों ने यह फ़ैसला जंग से महज़ दो हफ़्ते क़ब्ल किया था, जबकि जरनेलों को एक दिन पहले और फ़ौजियों को महज़ चार घंटे पहले हमले की इत्तिला दी गई थी। जंग से दो हफ़्ते क़ब्ल शाह हुसैन की मुलाक़ात इस्कंदरिया में हाफ़िज़ अलअसद और अनवर सादात से हुई। इसमें उसके सामने जंग के लिये की गई तैयारियां बयान की गई थी और

खुद उसे भी चौकस रहने को कहा गया था।

25 सितम्बर को यह ग़द्दार खुफ़िया तरीक़े से इस्राईल रवाना हुआ और तलअबीब जाकर इस्राईली वज़ीरे आज़म गोल्डामेयर को आने वाली जंग के बारे में ख़बरदार कर दिया। ख़ास तौर से शाम की तरफ़ से जिस पर खुद गोल्डामेयर ने भी यक़ीन नहीं किया और उससे यह पूछाः "क्या शामी मिस्रियों के बग़ैर ही जंग में जा रहे हैं?" हैरत की बात यह है कि यह वार्निंग इस्राईल के कानों में पड़ी लेकिन इसका कोई ख़ास नोटिस न लिया गया। मूसाद ने यह समझा कि इस मुख़्बिर बादशाह ने वही कुछ बताया है जो हमें पहले से मालूम था।

इस जंग की मूसादा को ग्यारह मर्तबा वार्निंग मिली लेकिन उसने यह कह कर टाल दिया कि हमारी इत्तिला के मुताबिक़ अरबों के पास जंग का कोई मंसूबा नहीं, हत्ता कि शाह हुसैन की वार्निंग भी बेअसर साबित हुई। अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि इस क़दर मुतमइन और बेफ़िक्र इस्राईल पर अगर बेख़बरी में हमला हो जाता और यह ग़द्दार उसे इत्तिला न देता तो इस्राईल का क्या हश्र होता? लेकिन बिलआख़िर इस्राईल ने जंग से ठीक 2 घंटे क़ब्ल अपनी रेज़रू आर्मी को चौकस कर दिया जबकि उसके सिर्फ़ दो घंटे बाद हमला शुरू हो गया।

शुरू में तो जंग मुसलमानों के हक़ में रही और उन्होंने काफ़ी बड़ा हिस्सा वापस ले लिया, लेकिन बाद में जब अमरीकी इम्दाद की भरमार हुई तो शाह हुसैन पर ज़ोर दिया गया कि तैशुदा मंसूबे के मुताबिक़ उर्दुन की तरफ़ से हमले का आग़ाज़ किया जाए।

उसने बराहे रास्त हमला करने की बजाए अपनी फ़ौज शाम की सरहद पर भेज दी जिसने बढ़ती हुई इस्राईली फ़ौज को रोक दिया,

लेकिन इसकी ख़बर भी अपने आक़ा को अमरीका के ज़रीएं दे दी और इस्राईल से दरख़्वास्त की कि इस्राईल उसकी फ़ौजों पर हमला न करे। इस्राईली वज़ीरे दिफ़ाअ़ मूशे दायान ने ऐसी कोई दरख़्वास्त मानने से इंकार कर दिया। वह नहीं चाहता था कि उर्दुन को कोई ज़मानत दी जाए। बस इतना कह दिया कि इस्राईल एक और महाज़े जंग नहीं खोलना चाहता।

इस्राईल के साथ अमन मुआहदाः

यासिर अरफ़ात की ग़द्दारी और मुआहदए ओसलू के बाद से शाह हुसैन ने इस्राईल की तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाया और अमन मुज़ाकिरात शुरू किये। उस वक़्त के अमरीकी सदर किलिंटन ने यह वादा किया कि अगर इस्राईल से मुआहदा हो जाता है तो उर्दुन के तमाम क़र्ज़े मुआफ़ कर दिये जाएंगे। मिस्री सदर हुस्नी मुबारक के इशारे पर उस ग़द्दार ने इस्राईल से बाक़ाएदा मुज़ाकिरात किये और अमन मुआहदा किया। इसके बदले उसे ARANA का इलाक़ा और दरयाए उर्दुन के पानी के हिस्से की मुंसिफ़ाना तक़सीम का झांसा दिया गया। बाद में इस्राईल के साथ तिजारती मुआहदा भी कर लिया गया और यूं उर्दुन की तरफ़ से इस्राईल की सरहद मुकम्मल तौर पर महफ़ूज़ हो गई और इस्राईली अफ़वाज फ़लस्तीनी मुसलमानों को कुचलने के लिये आज़ाद हो गई।

इस्हाक़ राबिन के साथ भाईचाराः

इस कम नसीब के बदनाम ज़माना इस्राईली रहनुमा इस्हाक़ राबिन के साथ इंतिहाई क़रीबी और ज़ाती तअ़ल्लुक़ात थे। इस्हाक़ राबिन को दफ़नाने पर उसने तक़रीर कीः

"मेरी बहन लीहा राबिन! मेरे दोस्तो! मैंने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा लम्हा भी मेरी ज़िंदगी में आएगा कि मैं अपने एक भाई,

एक साथी, एक दोस्त, एक फ़ौजी जिससे मुझी अपनी ख़िलाफ़त दो बार मिली, जिसकी मैं इज़्ज़त करता था और वह मेरी इज़्ज़त करता था, के नुक़सान पर रोऊंगा। एक ऐसा आदमी जो जानता था कि हमें फ़ासलों और रुकावटों को उबूर करना होगा और बातचीत करनी होगी ताकि हम एक दूसरे को पहचान सकें और इस बात की कोशिश कर सकें कि आने वाले कल में हमारी पालीसी जारी रखी जा सके। हम ऐसा करने में कामियाब हो गए और भाई और दोस्त बन गए।''

इस्हाक़ राबिन जैसे सफ़्फ़ाक क़ातिल और मुस्लिम कश सहीवनी लीडर को भाई कहने वाला यह शख़्स अपनी साख बहाल करने के लिये यह भी कहता फिरता थाः ''हम मुहम्मद (सल्ल0) के ख़ानदान से हैं और हमारा क़बीला अरब में सबसे क़दीम है।'' जबकि इस्लाम में तैशुदा क़ानून है कि सियाह आमाल वालों को आला नसब कोई फ़ाएदा नहीं देगा।

अब इस के अंजाम की तरफ़ आइये! इसकी मौत 7 फ़रवरी 1999 ई0 कोजिगर के सरतान की वजह से हुई। मौत से क़ब्ल दुनिया से जाते जाते भी उसने एक और यहूद नवाज़ हरकत की। उसने अपनी मौत से क़ब्ल ही अमरीका में दौराने इलाज अपने भाई को वली अह्द के मंसब से मअ़ज़ूल करके अपनी अंग्रेज़ बीवी (जो उस पर मुसल्लत रहने के लिये मंसूबे के तहत उसके पास भेजी गई थी) के बतन से पैदा होने वाले बेटे अब्दुल्लाह को वली अहद बना लिया। वाज़ेह रहे कि उसका भाई शहज़ादा हम्ज़ा पाकिस्तानी ख़ातून शाइस्ता इक्रामुल्लाह का दामाद है। लेकिन उसके ख़्यालात भी बहुत ज़्यादा लिबरल हैं।

यह थी नस्ल दर नस्ल ग़द्दारों की रूदाद......अलक़ुद्स से ग़द्दारी

करने वाले दुनिया में ज़लील व ख़्वार हुए ही, आख़िरत में भी इबरतनाक अंजाम उनका मुंतज़िर है। ख़िलाफ़ते उस्मानिया के सुकूत, सरज़मीने अरब की छोटे टुक्ड़ों में तक़सीम, बेगुनाह फ़लस्तीनी मुसलमानों का ख़ून और अर्ज़े मुक़द्दस पर यहूदी तसल्लुत के इस्तिहकाम में हिस्सा लेने की नहूसत उनसे ज़ाइल न होगी और दज्जाली कुव्वतों के ये हमनवा अपने इबरतनाक अंजाम को पहुंच कर रहेंगे।

(2) यासिर अरफ़ात

यादश बख़ीर, मुजाहिदे आज़म जनाब यासिर अरफ़ात साहब को भी इन मेहरबानों की इन फ़ेहरिस्त में मुम्ताज़ जगह दी जा सकती है, जिन्होंने अलकुद्स के मुहाफ़िज़ का एज़ाज़ सीना पर सजाने के बावजूद बिलवास्ता तौर पर दज्जाली रियासत के इस्तिहकाम में किर्दार अदा किया। मौसूफ़ के घर में भी चूंकि ख़ातूने अव्वल यहूदी अन्नस्ल थीं लिहाज़ा समझा जा सकता है कि यहूद से उनकी दुश्मनी और अलकुद्स के ग़ासिबों के ख़िलाफ़ उनका जिहाद किस क़दर "हक़ीक़ी" होगा? मौसूफ़ न सिर्फ़ अमरीकी हुक्मरानों की सरपरस्ती में दज्जाली रियासत के सरबराहों के साथ ख़ैर सगाली के मुआहदे, मुज़ाकिरात और मुसाफ़हे व मुआनक़े करते रहे बल्कि शरीअ़त पर इस्तिक़ामत को छोड़ कर लिबरल अज़्म और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह के बजाए इंतिख़ाबी ढकोसला बाज़ियों पर यक़ीन रखते थे। दरयाए उर्दुन के मग़रिबी किनारों में उनकी तन्ज़ीम, हमास के मुजाहिदीन और उर्दुन के फ़लस्तीनी मुहाजिरीन के लिये मुस्तक़िल मसाइल पैदा करती रही। अगर्चे आलमी मीडिया पुरइस्रार अंदाज़ कुव्वतों ने उनका इमेज "मर्दे मुजाहिद" का बना रखा था, लेकिन जानने वाले जानते हैं कि फ़लस्तीनी जिहाद को उनकी मफ़ाद परस्त सियासत ने इंतिहाई

नुक़सान पहुंचाया और यह न सिर्फ़ अपनी तन्ज़ीम में शरई उसूलों को रिवाज देने के बजाए गैर ज़रूरी हद तक आज़ाद ख़्याली को तरवीज देते थे, बल्कि आलमी सतह पर भी हमास के इमेज को दाग़दार करने, फ़लस्तीनी मुसलमानों में फूट डलवाने और इस्राईल के लिये नर्म गोशा रखने के हवाले से बदनामी की हद तक मशहूर थे। अल्लाह तआला अलकुद्स को ऐसे मेहरबान हमनवाओं की मेहरबानियों से महफ़ूज़ रखे और हमें अर्ज़े मुक़द्दस के तहफ़्फ़ुज़ और हक़ीक़ी मुहाफ़िज़ीन की पहचान और उनकी हिमायत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

(३) अनवर सादात

अनवर सादात का शुमार भी अलकुद्स के नादान दोस्तों और दज्जाली रियासत के नामेहरबान हमनवाओं में होता है। दुनिया के और बहुत से यहूद नवाज़ों की तरह उनके घर में भी "ख़ातूने अव्वल" क़दामत परस्त यहूदी ख़ानदान से तअल्लुक़ रखती थीं। "जहां सादात" नामी यह ख़ातून बाक़ाएदा मंसूबे के तहत उनकी ज़िंदगी में दाख़िल हुई थीं और आख़िर तक उनसे वह इक़्दामात करवाती रहीं जिससे अलकुद्स के फ़िदाकारों के दिल ज़ख़्मी और दज्जाली रियासत के सरपरस्तों के मक़ासिद की तकमील होती थी। अलकुद्स के दो तरफ़ उर्दुन और मिस्र दो अहम इस्लामी मुल्क हैं। इनमें मज़लूम फ़लस्तीनी मुहाजिरीन भी पनाह लेते हैं और इनकी सरहदों से इस्राईली क़ब्ज़ागीरी की हुदूद में आने वाले इलाक़ों में दाख़िल होकर इस्राईली फ़ौजियों का नाक में दम किया जा सकता है, इसलिये दज्जाली निज़ाम की हमनवा आलमी ताग़ूती ताक़तों की हमेशा यह कोशिश रही कि इन दोनों मुमालिक के हुक्मरां उनके ज़ेरे दस्त और ताबेअ़ फ़रमान रहें। न वह अपने मुल्कों में शरीअ़त का

निफ़ाज़ होने दें और न अपने अवाम के जज़्बात का रुख़ अलकुद्स के मज़लूमों की मदद की तरफ़ फिरने दें। यही वजह है कि यहां जो भी हुक्मरां आता है उसके घर में उमूमन यहूदी ख़ातून मलिकए मुहतरमा की शक्ल में बिराजमान होती है और उसके इक़्तिदार को मुस्तहकम और तवील तर बनाने के लिये बदी की आलमी कुव्वतें हर क़िस्म का तआवुन और हिमायत करती हैं। अनवर सादात की ज़िंदगी का सबसे ख़तरनाक फ़ैसला कैम्प डेविड मुआहदा था जिसमें वह चाए की मेज़ पर अलकुद्स का मुबारक तरीन ख़ित्ता इस्राईल की गोद में डाल कर ख़ाली हाथ लौट आए। इसके एवज़ उन्हें तागूती ताक़तों की तरफ़ से एज़ाज़ व इन्आम से नवाज़ा गया, लेकिन खुद मिस्र के मुहिब्बे दीन व वतने अवाम उनके इक़्दामात को किस नज़र से देखते थे, इसका अंदाज़ा उनके क़त्ल के वाक़िए से हो सकता है, जब उन्हें एक परेड के दौरान गोलियों से छलनी करके अलकुद्स से ख़यानत का इंतेक़ाम लिया गया। फ़लस्तीन को कुर्आने करीम में "अर्ज़े मुबारक" कहा गया है, इससे जो वफ़ा करता है वह अल्लाह, रसूल, मलाइका और मुख़्लिस मुसलमानों के नज़दीक सआदतमंद ठहरता है और जो इससे जफ़ा करे वह दुनिया में भी तिकोनी तौर पर धुतकार दिया जाता है और आख़िरत में भी बुरा अंजाम उसका मुंतज़िर है। अल्लाह तआला हमें रहमानी रियासत के इस्तिहकाम और दज्जाली रियासत के ख़िलाफ़ जिहाद की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए और दुनिया व आख़िरत में बुरे अंजाम से बचाए। आमीन।

मराजअ़ व मआख़ज़

इस मज़मून की तैयारी के लिये इन किताबों से इस्तिफ़ादा किया गयाः

1. SELA AVRAHAM: "ABDULLAH BIN HUSSEIN", THE CONTINUM POLITICAL ENCYCLOPEDIA OF THE MIDDLE EAST, NEW YEAR CONTINUM.

2. "JORDEN AND 1948: THE PERSISTENCE OF OFFICIAL HISTORY".

3. AVE SHLAIM: "THE WAR OF PALESTINE: REWRITING THE HISTORY OF PALESTINE", CAMBRIDGE UNIVERSITY RESS (2001).

4. LANDES JOUSHA: "SYRIA AND PALESTINE WAR: FIGHTHING KING ABDULLAH'S GREATER SYRIA PLAN".

5. ROGAN AND SHLAIM: "THE WAR OF PALESTINE".

6. TRIPP CHHRLES: "IRAQ AND 1948 WAR: MIRROR OF IRAQ'S DISORDER".

दज्जाली रियासत के मेहरबान हमनवा

उर्दुन व मिस्र के हुक्मरान और अलकुद्स के नादान राहनुमाः

जो शख़्स भी माद्दियत परस्ती में मुब्तला हो जाता है, अल्लाह तआला के ग़ैबी वादों पर उसका ईमान कमज़ोर हो जाता है......और जिस शख़्स का ईमान अल्लाह और उसके वादों पर यअ़नी आख़िरत के हिसाब व किताब और जज़ा व सज़ा पर कमज़ोर हो जाता है वह फ़ित्नए दज्जाल का शिकार हो जाता है......और जो शख़्स फ़ित्नए दज्जाल का शिकार होने के बाद तदाबीर पर अमल न करे जो हदीसे शरीफ़ में बताई गई हैं (इनका खुलासा दज्जाल 1 और 2 के आख़िर में दिया गया है) तो एक दिन ऐसा आता है कि वह दज्जाली कुव्वतों का हमनवा बन जाता है। इसकी वजह यह है कि वह इस आर्ज़ी और फ़ानी दुनिया की अधूरी और कभी न पूरी होने वाली लज़्ज़तों में इतना गुम हो जाता है कि उसे हलाल व हराम की तमीज़ ख़त्म हो जाती है। उसके नज़दीक यह दुनिया ही सब कुछ होती है। ईमान, अकीदा और नज़रिया, दुनिया पर दीन ग़ालिब करने का शौक़, इंसानियत को नफ़्स और शैतान की गुलामी से छुड़ाने के लिये कुर्बानी देने का बेलोस ज़ज़्बा......यह सब चीज़ें उसके नज़दीक बेमअ़नी हो जाती हैं। वह मुंह और शर्मग़ाह की लज़्ज़तें पूरी करने में इतना मगन हो जाता है कि इस दुनिया से उसे शदीद मुहब्बत हो जाती है। दुनिया की फ़ानी लज़्ज़तों को छोड़ना और आख़िरत की हमेशा की ज़िंदगी के लिये जान और माल लुटाला उसके लिये मुश्किल हो जाता है। वह मौत को अल्लाह तआला की मुलाक़ात और उसकी तैयार की हुई नेअ़मतों को पाने का ज़रीआ समझने के

बजाए दुनिया हाथ से जाते रहने का सबब समझता है। यह वह ख़तरनाक बीमारी है जिसे हदीस शरीफ़ में "وَهَـــن" का नाम दिया गया है। इस मर्ज़ में गिरफ़्तार शख़्स दुनिया की मुहब्बत और मौत से डर की वजह से न इस दुनिया में मुअ़ज़्ज़ज़ मुसलमान बन कर रह सकता है और आख़िरत में तो उसका कुछ हिस्सा वैसे ही बाक़ी नहीं रहता। इस मर्ज़ की बयान की गई अलामात दरहक़ीक़त "दज्जाली रियासत" के बाशिंदों की सिफ़ात हैं। फ़ित्नए दज्जाल दर हक़ीक़त "माद्दियत परस्ती" का फ़ित्ना है यअ़नी ख़ुदा परस्ती और इंसानियत के लिये ख़ुलूस व ईसार के बजाए मफ़ाद परस्ती, लज़्ज़त परस्ती, ऐश परस्ती और आराम पसंदी। जफ़ाकशी की सादा ज़िंदगी छोड़कर जो लोग आराम तलबी की मस्नूई ज़िंदगी में मुब्तला हो जाते हैं, वह "दज्जाली रियासत" के इस्तिहकाम के लिये इसके हमनवाओं का किर्दार अदा करते हैं। यही वजह है कि मुस्लिम मुमालिक के बीचों बीच "दज्जाली रियासत" अपनी इब्तिदाई शक्ल में क़ाइम हो गई है और उसे गिर्द व पेश से कोई ख़तरा ही नहीं है। आईये! इस बात को समझने की कोशिश करते हैं कि हमारे अरब भाई अलक़ुद्स से और उसके निगेहबान फ़लस्तीनी मुसलमानों से इतने बेपरवा और फ़ित्नए दज्जाल के इतनी बुरी तरह शिकार कैसे हो गये?

ऐश व इशरत का फ़ित्ना:

आज कम व बेश चालीस साल पुरानी बात है कि "अरब इस्राईल जंग" हुई जो इब्तिदा में (किसी हद तक) इस्लाम के नाम पर लड़ी गई थी। इसके आग़ाज़ में तो मुसलमानों ने बड़ी पेशक़दमी की लेकिन बाद में अपनों की ग़द्दारी ने जंग का नतीजा ही बदल कर रख दिया। ग़द्दारी और मुख़्बिरी अगर्चे जंग से पहले ही हो चुकी थी लेकिन इस्राईल बदमस्त होकर समझ बैठा था कि उसे कोई हाथ नहीं

लगा सकता। ख़ैर! बाद में बहुत हद तक ग़द्दारी और बड़ी तादाद में अमरीकी मदद ने यहूदियत के गुबार में इतनी हवा भर दी कि वह बदतरीन शिकस्त से बच गया। अमरीका की तरफ़ से इतने बड़े पैमाने पर इस्राईल को अस्लहा भेजा गया कि अरब मुसलमानों को समझ न आता था कि वह अमरीका की जफ़ा पर हैरत करें या उस वक़्त को रोएं जब उन्होंने उस पर एतिबार किया था।

जंग रुकने के बाद अरब मुसलमानों ने अमरीका की इस बेरुख़ी पर अमरीका का तेल सप्लाई का बाईकाट कर दिया। उस वक़्त आले सऊद के वाहिद ग़यूर हुक्मरान शाह फ़ैसल ने एक मशहूर तक़रीर की थी:

"हम तेल के कुंवों को आग लगा देंगे और ऊंटनी के दूध और खजूर वाली रिवायती ज़िंदगी की तरफ़ वापस लौट जाएंगे।"

इससे आगे बढ़कर इराक़ के ग़यूर हुक्मरानों ने इससे भी अहम काम किया। वह यह था कि शिमाल में ब्रिटिश पेट्रोलियम औ जुनूब में अमरीकन आइल कम्पनी को सरकारी तहवील में ले लिया और इस तरह यहूद व नसारा को इस ख़तीर आमदनी से महरूम कर दिया जो उनको मुसलमानों की दौलत से हो रही थी। इसके अलावा उस वक़्त के इराक़ी हुक्मरान की तक़रीर जो कि काफ़ी हद तक इस्लाम और अरब ग़ैरत (न कि क़ौमियत) पर मब्नी थी, इस क़दर पुरअसर थी कि सद्दाम हुसैन ने इन हुक्मरानों का तख़्ता उलटने के बावजूद भी इस तक़रीर को तमाम अहम चौराहों और इस्लामी सक़ाफ़त के कुछ मराकिज़ पर संगे मरमर में तराश कर नस्ब करवाया। अरब भाई उस वक़्त जफ़ाकश भी थे, ग़ैरतमंद भी और काफ़ी हद तक इस्लामी जज़्बे से मालामाल भी।

यह उस वक़्त की बात है जब उस क़ौम में ग़ैरत थी और

इस्लाम और मुसलमानों के बारे में फ़िक्र रखती थी। यह बात अमरीका और उसके नाजाइज़ बेटे को बहुत बुरी लगी और उसने इसका तोड़ करने के लिये एक सोचे समझे मंसूबे के तहत अरबों में क़ौम परस्ती और ऐशपरस्ती को फरोग़ दिया। उन्होंने अरब भाईयों में इस्लामी उख़ूवत के बजाए अरब क़ौमियत का तसव्वुर पैदा किया और उनकी जफ़ा कशी वाली ज़िंदी छुड़वाकर उनको मेअ़यारे ज़िंदगी इतना बढ़ा दिया कि आईंदा वह ऐसे बयानात से बाज़ रह सकें और इस तरह की हिम्मत दोबारा न कर सकें कि अपने ही तेल के कुंवों पर बारूद रखकर उन्हें तबाह करने की धमकी दे सकें।

आज अगर हम देखें तो वह अपनी चाल में जिस हद तक कामियाब हो चुके हैं इसका अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं। अरब भाईयों में ऐश व इशरत की आदत कोई ढकी छिपी बात नहीं और यही वजह है कि अगर और बहुत सी बातों को नज़र अंदाज़ कर दिया जाए तो भी एक बात का जवाब नहीं दिया जा सकता। वह यह कि अरब मुमालिक में अरब क़ौमियत के दावा के बावजूद अपने ही अरब भाईयों (यअ़नी फ़लस्तीनी मुसलमानों) से इस क़दर बेरुख़ी क्यों बरती जा रही है? इस बात का कोई जवाब है हमारे पास? फिर कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह उनसे वह चीज़ छीन ले जिस पर उन्हें बड़ा नाज़ है।

आइये! देखते हैं कि हमारे अरब भाई किस तरह से यहूद के बिछाए हुए ऐश व इशरत के जाल में फंसे हुए हैं।

अरब रहनुमाओं और मालदार शुयूख़ का हालः

अगर अरब बादशाहों की दौलत से क़त्अ़ नज़र कर लिया जाए तो भी दुनिया के पचास अमीर तरीन अरब शुयूख़ की दौलत और असासा जात 236.24 अरब डालर से भी ज़्यादा नहीं। यह वाज़ेह रहे

कि इसमें बादशाहों की दौलत शामिल नहीं। लेकिन यह सारी दौलत इस्लाम और मुसलमानों पर ख़र्च होने के बजाए आराम तल्बी, ऐश पसंदी और तफ़रीअ़ पर लग रही है। अरब भाईयों के दो सबसे बड़े अय्याशी के मराकिज़ में दुबई और लबनान शामिल हैं जबकि मराकश भी उनके अय्याशी के मक़ामात में से एक है।

हवाई जहाज़ों की ख़रीदारी:

सऊदी शहज़ादा प्रिंस वलीद बिन तलाल वह पहला शख़्स है जिसने Super Jumbo A-380 की ख़रीदारी की है। यह वह पहला शख़्स है जिसने इंफ़िरादी हैसियत में यह जहाज़ ख़रीदा है। ख़रीदने के बाद उसने उसमें तरह तरह की आराइश व ज़ेबाइश के लिये बाज़ाब्ता तौर पर एक Interiror Designer से राब्ता किया ताकि वह इस "हवाई महल" में तज़ईन व आराइश और ऐश व आराम का इज़ाफ़ी सामान मुहय्या कर सके।

मश्रिक़े वुस्ता में बढ़ते हुए हवाई सफ़र और हवाई जहाज़ों की इंफ़िरादी तौर पर ख़रीदारी को मद्देनज़र रखते हुए मग़रिबी कम्पनियों ने दुबई में एक नुमाइश का एहतिमाम किया, जिसमें हवाबाज़ी की तारीख़ में पहली मर्तबा इस बात पर खुसूसी तवज्जोह दी गई कि किस तरह जहाज़ के अंदरूनी हिस्सों की खुसूसी ज़ेबाइश की जाए।

बहरी जहाज़ों की ख़रीदारी:

इस कुव्वते अरब इमारात के शैख़ और रूस के अरबपती इब्राहीम दौफ़ के दर्मियान इस बात का मुक़ाबला चल रहा है कि किसका बहरी जहाज़ दुनिया के सबसे महंगी बहरी सवारी (Yatch) होगी? याद रहे कि यह Yatch ग़ालिबन इटली में तैयार हो रही है और इसमें ऐश व इशरत का महंगा तरीन सामान मुहय्या किया जाएगा। इस तरह की एक Yatch की क़ीमत आम तौर से 20-30

करोड़ डालर के लगभग होती है और इसमें किया गया मज़ीद काम 2 से 10 करोड़ डालर लेता है।

क़तर का शैख़ जो कि ग़ालिबन अरबों में सबसे ज़्यादा फ़ुज़ूल ख़र्च है, उसने 30 करोड़ डालर की कसीर रक़म से लंदन के वसत में इंतिहाई महंगा फ़्लेट लिया है जोकि ऐश व इशरत में अपनी मिसाल आप है। इस कम्पलेक्स के हर फ़्लेट में जाने के लिये एक अलग लिफ़्ट मुख़्तस की गई है।

शुयूख़ को एक तरफ़ छोड़ दें, आप यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि लंदन की अक्सर व बेशतर तिजारती और मालियाती इलाक़ों की ज़मीनें अरब हज़रात ने ख़रीद ली हैं। जबकि अरब हज़रात को इस मुल्क (बर्तानिया) में अदावत आमेज़ नज़रों से देखा जाता है और यह वहां आज़ादी और Privacy के साथ घूम भी नहीं सकते। इन महंगे इलाक़ों में Oxford Edgware और Piccardly और Bond स्ट्रीट्स (Streets) शामिल हैं।

बुलंद व बाला इमारातः

अरब हज़रात बहुत बड़े पैमाने पर अपना पैसा मिट्टी और गारे पर लगा रहे हैं। इसका अंदाज़ा दर्जे ज़ेल सरबफ़लिक इमारतों की तअ़मीर से लगाया जा सकता है।

☆ बुरुज दुबईः ऊंचाई 800-1050 मीटर। इस वक़्त दुनिया की सबसे ऊंची इमारत है।

☆ अलबुरुजः 1,200 मीटर। अलनख़ील वाले दुबई में इसे बना रहे हैं और यह 2011 ई0 में मुकम्मल हो जाएगी।

☆ बुरुज अलकबीरः 1,500 मीटर। इस पर ग़ौर किया जाए और यह कुवैत में बनाया जाएगा।

☆ अलमरजान टावरः 1,500 मीटर। यह भी ज़ेरे ग़ौर है और

इस पर काम शुरू नहीं हुआ। यह बहरैन में बनाया जाएगा।

इस तरह पूरे मशरिके वुस्ता में बड़े पैमाने पर ऊंची ऊंची इमारतें बनाई जा रही हैं, गोया कि......अल्लाह मुआफ़ करे......क़ौमे आद की रिवायत ज़िंदा हो रही है। बुरुज़े दुबई की पूरी ऊंचाई छिपाई जा रही है ताकि इससे ऊंची इमारत न बनाई जा सके। इसमें दुनिया का सबसे बड़ा शापिंग माल होगा, जबकि ऐसे अपार्टमेंट भी होंगे जिनकी Interior Designing इटली के मशहूर Fashion Icon ने की है, जिसका नाम Gorgio Armani है।

इस प्रोजेक्ट का ठेका Emmar ने लिया है, जिसने तअ़मीरात के शोअ़बे में दुनिया भर में 100 अरब डालर से भी ज़्यादा की सरमायाकारी की हुई है। बुरुजे दुबई खुद 20 अरब डालर का प्रोजेक्ट है, जिसमें 500 ऐकड़ से ज़्यादा अराज़ी इस्तेमाल की गई है, जबकि इस पर ख़र्च की जाने वाली रक़म के लिहाज़ से दुनिया का सबसे ज़्यादा महंगाफ़ी मुरब्बा किलोमीटर इलाक़ा है।

अलनख़ील का प्रोजेक्ट "The World":

अलनख़ील का "The world प्रोजेक्ट" दरअसल एक मस्नूई जज़ीरा है जिसको Al-Nakheel ने बनाया है। यह बहुत सारे जज़ीरे हैं जो कि बिल्कुल दुनिया के नक़्शे का नमूना हैं। इसमें चीन के शहर Shanghae का हिस्सा एक अरबपती चीनी ने 28 मिलियन डालर की लागत से ख़रीदा है, जिस पर वह बिल्कुल Shanghae शहर के नक़्शे का होटल और Resort बनाएगा मतमूल चीनी का नाम Bin Hu है, जोकि एक कम्पनी Zhong International Company का मालिक और President है। इस जज़ीरे का रक़्बा तो मालूम नहीं लेकिन जो इलाक़ा उसने ख़रीदा है उसका रक़्बा 58,000 मुरब्बा गज़ है। यह अकेला ही इस

दौड़ में शामिल नहीं, दो और इमारती बाशिंदों ने भी Fantasy Island के नाम से एक जज़ीरा ख़रीदा है, जिस पर वह लोग 2.2 अरब डालर ख़र्च करके अय्यारी का मर्कज़ बनाना चाहते हैं। उनका नाम अहमद बिन अब्दुल्लाह और अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अस्सानी है। उन्होंने यह जज़ीरा 16.3 करोड़ डालर में ख़रीदा है। आख़िरी ख़बरें आने तक दुबई की ग़ैर शरई मईशत के ज़वाल की बिना पर यह प्रोजेक्ट बुरी तरह से नाकामी का शिकार था।

दूसरे मुमालिक में अरब शुयूख़ की फ़ुज़ूल ख़र्चियांः

आग़ाज़ अपने ही मुल्क से कर देते हैं। रहीम यार ख़ान में उनके शाहाना मुहल्लात और शिकारगाहें हैं। इस मक़सद के लिये उन्होंने एक एयरपोर्ट भी क़ायम किया है। यहां वह शिकार के लिये आते हैं और तलूर की एक नायाब तरीन नस्ल (Bustard) का शिकार करते है। पाकिस्तानी हुकूमत ने अपने इन मेहमानों को 200 मुरब्बा मील का इलाक़ा शिकार के लिये दिया हुआ है।

एक मशहूर सहाफ़ी ने अपनी रिर्पोट में लिखा था कि अमरीका में अरबों के लिये पाबंदियों और मुश्किलात की वजह से अब अरब शुयूख़ ने आम तौर से मशहूर अमरीकी शहर "लास वीगास" की जगहों के बजाए मश्रिक़े बईद का रुख़ करना शुरू कर दिया है। मश्रिक़े बईद में यह सिंगापूर, मकाऊ (चीन के ज़ेरे तसल्लुत छोटा सा साहिली मुल्क) बेंकाक, थाइलैंड, मलेशिया और दीगर जगहों में जाकर अपनी क़ीमती दौलत लुटा देते हैं।

यह सहाफ़ी लिखता है कि अब "लास वीगास" के कुछ होटलों में जूए और नाच गाने के बजाए मुसलमानों के ख़िलाफ़ प्रोग्राम मुन्अक़िद किये जाते हैं और एक में उसने खुद शिर्कत की भी थी, जिसमें उसने मुसलमानों के ख़िलाफ़ बनाए गए थिंक टैंक और तौहीन

रिसालत के मुरतकिबीन के ख़िलाफ़ वाहिद आवाज़ उठाई थी और मुसलमानों का दिफ़ाअ़ करने की कोशिश की थी।

इस तरह लबनान और मराकश में खुशगवार आब व हवा और साहिली फ़ज़ा ठंडी फ़ज़ा की वजह से अय्याशी के मराकिज़ हैं। पिछले दो सालों में लबनान के हालात ठीक न होने की वजह से एक रिकार्ड तादाद स्काटलैंड चली गई थी।

Andrew Harthey Traver Agents जो कि एक फ़ाईव स्टार होटल Balmorall में सेल्ज़ ऐंड मार्किटिंगे के शोअ़बे से मुंसलिक है, बताता है:

"स्काटलैंड अरब मार्किट के लिये एक ख़ास चीज़ है। अरब इसकी खूबसूरती से नीज़ इस्टाक्स की मेहमान नवाज़ी से बहुत मुतअस्सिर हुए थे। उसने मज़ीद कहा कि अरब यहां एक महीने से ज़्यादा रहे और तमाम देखने वाली चीज़ें देखीं।"

इसके अलावा यह बात भी क़ाबिले ग़ौर है कि हमारे अरब भाई आजकल अय्याशी के लिये या तो यूरप का रुख़ कर रहे हैं या फिर मश्रिक़े बईद का। 9/11 के बाद अमरीका ने अरबों पर पाबंदी लगाई थी तो ज़्यादातर ने मकाऊ में जूए के अड्डों का रुख़ किया जोकि चीन के ज़ेरे इंतेज़ाम है, लेकिन इसकी कहानी हांग कांग हबीसी है ताहम फ़र्क़ सिर्फ़ इतना सा है कि मकाऊ पुर्तगाल को सौ साल के लिये तोहफ़ा दिया गया था, लेकिन यहां तक़रीबन वही निज़ाम चल रहा है, जो कि पुर्तगाल में आज से बीस साल पहले था, बिल्कुल हांगकांग की तरह।

एक और नाखुशगवार मिसाल शाह फ़हद की है, जिनके बारे में एक अमरीकी तारीख़दान लिखता है: "यह शख़्स अपने आप को कैसे ख़ादिमे हरमैन शरीफ़ैन कहता है, जबकि "लास वीगास" में (कैरी

पैकर के बाद) सबसे बड़ी BET (शर्त) हार गया था और पैसे न होने की वजह से उसे Detain कर लिया गया था। फिर जब पैसों से भरा हवाई जहाज़ गया तब जाकर हुकूमते अमरीका ने उसे रिहा किया था।"

लगज़री कारों की ख़रीदारी:

अरब मुमालिक में लगज़री गाड़ियों की मांग इस क़दर बढ़ गई है कि माली साल 2005 ई0-2006 ई0 में औसतन 16 फ़ीसद से 20 फ़ीसद तक इज़ाफ़ा देखने में आया, जबकि बहरैन की हुकूमत ने दो कम्पनियों को लाइसेंस जारी किये हैं कि वह उनके मुल्क में गाड़ियों की फ़ैक्ट्री लगा सकें। उसका असल मक़्सद यह है कि बहरैन की हुकूमत चाहती है कि मरिश्रके़ वस्ता की सारी गाड़ियां यहां तैयार हों और पूरे ख़ित्ते में फ़रोख़्त हों।

अरब भाईयों को अल्लाह के रास्ते में पैसे ख़र्च करने के बजाए फ़ुज़ूल शौक़ पालने की ऐसी आदत है कि एक दस्तावेज़ी फ़िल्म में एक शैख़ ने अपनी 200 गाड़ियां दिखाईं और यह भी बताया कि अगर गाड़ी पुरानी हो जाए तो हम उसे बेचना अपनी तौहीन समझते हैं। हम उसे अपने मुलाज़िमों को तो दे देते हैं लेकिन बेचते नहीं। कोई शक नहीं कि इसी में अरबों की इस फ़ितरी सख़ावत का इज़्हार होता है जो उनके आबा व अज्दाद में थी, लेकिन इसमें भी शक नहीं कि यह इस उम्दा ख़सलत का ग़लत इस्तेमाल है।

लीबिया में ख़रीदारों का पागलपन:

लीबिया गो कि बहुत ज़्यादा मालदार मुल्क नहीं, लेकिन यहां भी माद्दियत परस्ती बहुत बढ़ गई है। इससे बक़िया मुमालिक का हाल ख़ुद मालूम हो जाएगा।

लीबिया में पाबंदियों के ख़ाते के बाद बड़े पैमाने पर चमकदार

कारें और मोटर साईकलें बहुत ज़्यादा आम होती जा रही हैं। तराबुलस (Tripoli) जो कि अब दर्जन से ज़ाइद आला दर्जा के महंगे होटलों का गढ़ है, इसमें कई नए शापिंग माल खुल गए हैं। Gregaresh Street में बूतीन खुल गए हैं। 80$ की जीन्ज़ की पेंट और 1300$ की Exercise Machine और 250$ के परफ़्यूम बेचने वाली दुकानें खुल गई हैं।

इन दुकानों पर ख़र्च होने वाला ज़्यादातर पैसा सियासी तौर पर अमरीका के असर व रुसूख़ में रहने वाले सियासत दानों के पास से से आता हैं।

बअ़ज़ लोगों का कहना है कि इस मुल्क में अमीर तो अच्छी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, जबकि बाक़ी ज़्यादातर बस जी रहे हैं। याद रहे कि लीबिया 30$ अरब डालर तेल की आमदनी से कमाता है। इसके अलावा हर सा.ल वह मुख़्तलिफ़ तरक़्क़ियाती कामों पर 19 अरब डालर सर्फ़ करता है, जिसकी वजह से कई अमरीकी और यूरपी कम्पनियां यह ठेके लेने की कोशिश करती रहती हैं जो उन्हें मिल भी जाते हैं और फिर वह लूटमार का बाज़ार गर्म करती हैं।

मशिरक़ी वुसता की मक़ामी लगज़री मार्किटः

तौहीद अब्दुल्लाह जो "दुबई गोल्ड एण्ड ज्वेलरी गुरूप" और (LLC) Damas को मैनेजिंग डाइरेक्टर है, उसने "मार्किटिंग फार लगज़री प्रोडक्ट्स" (MARKETING FOR LUXURY PRODUCTS) के मौज़ूअ़ पर मुन्अक़िदा एक कान्फ़्रेंस में यह निकात पेश किये थेः

- "2010 ई0 तक लगज़री गोल्ड की इलाक़ाई मार्किट (यअ़नी अरब मुमालिक की मार्किट) 100 अरब डालर तक पहुंच जाएगी जिसमें दुबई का हिस्सा 8 अरब डालर के लगभग होगा।"

- "अरब ख़्वातीन और नौजवानों की मौजूदा नस्ल 20 साल की उम्र से लगज़री गोल्ड के संजीदा ख़रीदार होते हैं। मग़रिब के मुक़ाबले में जहां यह 40 साल की औसत तक है। इस तरह हमारे मशहूर ब्रांड को 20 साल मज़ीद मिल जाते हैं।"

- "बैनुल अक़्वामी लगज़री मार्किट का मौजूदा हिज्म तक़रीबन 400 डालर है, जिसमें से 10 फ़ीसद मश्रिक़े वुस्ता में है। बढ़ती हुई आमदनी की शर्ह और दुबई की उभरती हुई लगज़री मार्किट को देखते हुए कहा जा सकता है कि यह मुस्तक़बिल और तेज़ी से फैलेगी।"

- "बैनुल अक़्वामी सतह पर 32 फ़ीसद लगज़री मार्किट की आमदनी ज़ेवरात और घड़ियों से हासिल होती है, जोकि एक अहम जुज़ है। लगज़री मार्किट के माली साल 2006 ई० की पहली शशमाही में सुइटज़रलैंड की सुइटज़रलैंड साख़्ता घड़ियों की मांग में पिछले साल के मुक़ाबले में 12.2 फ़ीसद इज़ाफ़ा देखा गया और रक़म थी 17.5 करोड़ डालर।"

- "हम उम्मीद करते हैं कि लगज़री घड़ियों की फ़रोख़्त 2006 ई० के आख़िर तक 50 करोड़ डालर से तजावुज़ कर जाएगी, जबकि इस मार्किट का हजम 2010 ई० तक 4 अरब डालर तक पहुंच जाएगा।"

- "आज का गाहक नौजवान है, ज़्यादा पढ़ा लिखा है और ज़्यादा चीज़ें मांगता है और ब्रांड के अलावा मुकम्मल लगज़री ऐक्सपीरियंस चाहता है जिसमें World Class Shoping की सहूलत और बेहतरीन Customer Service शामिल हैं।"

मआज़ बरकात जोकि World Class Council के मश्रिक़े वुस्ता, तरक्क़ी और पाकिस्तान का एम डी है, कहता है:

"मार्किट में गहरे रिसर्च के बाद हम एक बार फिर सोने की ज्वेलरी की मांग में दोबारा इज़ाफ़ा देख रहे हैं। इज़ाफ़े का यह रुजहान आईंदा बरसों में मज़ीद नुमू पाएगा।"

दुबई आबादी का तनासुब (DEMOGRAPHICS OF DUBAI)

आईये! अब दुबई की आबादी का तनासुब देखते हैं।

दुबई में नस्ली एतिबार से दर्ज ज़ेल लोग आबाद हैं:

मक़ामी (असल अरब)	17 फ़ीसद
हिंदुस्तानी	51 फ़ीसद
पाकिस्तानी	16 फ़ीसद
बंगाली	9 फ़ीसद
फ़िलीपीनो (फ़िलिपीनी)	3 फ़ीसद

दुबई की कुल आबादी 1,0422,000 के लगभग है, जिसमें से मर्द तक़रीबन 1,073,000 और 349,000 औरतें हैं।

मर्दों में 250,000 के क़रीब मज़दूर हैं जोकि तअ़मीरात के शोअ़बे से वाबस्ता हैं। सालाना चालीस लाख सय्याह दुबई आते हैं और दुबई की मईशत में एक अरब डालर डाल कर जाते हैं। एक और हैरत अंगेज़ बात यह है कि दुबई की मईशत दुनिया में सबसे ज़्यादा तेज़ी से तरक़्क़ी करती हुई मईशत थी, जिसकी शर्ह 15 फ़ीसद से भी ज़्यादा थी, लेकिन गरानी की शर्ह भी 12 से 5 फ़ीसद के दर्मियान थी। हुकूमत इसे 5 फ़ीसद तक महदूद रखना चाहती है।

अगर ईमान व आख़िरत के ज़ावियए नज़र से देखा जाए तो दुबई एक इबरतकदा है, जिसमें हमारे अरब भाई माद्दियत परस्ती का अंजाम देख सकते हैं। अगर वह इसी तरह की तरक़्क़ी करना चाहते

हैं तो देख लें कि उनके अपने मक़ामी अफ़राद अक़ल्लियत बनकर रह गए हैं और उनका अपना खून किस हद तक साफ़ रह गया है?

प्लास्टिक सर्जरी और कासमेटिक्सः

दुबई में प्लास्टिक सर्जरी और आप्रेशन की क़ीमत में बहुत ज़्यादा इज़ाफ़ा देखने में आया है, जिसकी अस्ल वजह इसकी बेतहाशा मांग है। अगर्चे प्लास्टिक सर्जरी से बअज़ मअ़क़ूल काम भी लिये जा सकते हैं, जैसे बुढ़ापे की वजह से लटक जाने वाली खाल कम करना, जली हुई खाल को तबदील करना और ज़ख़्म के निशानों को मिटाना शामिल हैं, इसके अलावा मोटापे के शिकार अफ़राद के लिये चर्बी कम करने की सहूलत भी मौजूद है, लेकिन एक नामअ़क़ूल बात यह है कि इसमें भी खुराफ़ात मौजूद हैं। सबसे अहम खुराफ़ात दर्ज ज़ेल हैं:

- पुश्त की बनावट तबदील करना।
- औरतों में सीने के अअ़ज़ा की बनावट में तबदीली।

और दीगर खुराफ़ात में भी कमी नहीं जो कि दुबई में आम हैं और दूसरे अरब मुमालिक में भी आम हो रही हैं। मौजूदा साल में इन खुराफ़ात में दुबई में तेज़ी से इज़ाफ़ा हुआ है और इसकी क़ीमतें भी 15 से 20 फ़ीसद तक बढ़ी हैं।

तरक़्क़ी......लेकिन अख़्लाक़ी अक़्दार की क़ीमत पर

अगर्चे कुछ लोगों के नज़दीक यह बात क़ाबिले रश्क है कि दुबई की तरक़्क़ी एक मिसाल है, उसकी ज़ाहिरी रौनक़ें हर वक़्त जगमगाती रहती हैं, लेकिन तस्वीर का दूसरा रुख़ इंतिहाई भयानक है, जिससे हमारे अरब भाइयों को सबक़ सीखना चाहिये।

दुबई अगर्चे सय्याहों का एक आलमी मर्कज़ है लेकिन यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि इंसानी हुक़ूक़ की तन्ज़ीमों ने यहां की औरतों

के बारे में एक ख़ौफ़नाक नक़्शा खींचा है। तन्ज़ीम के मुताबिक़ दुबई जिंसी तिजारत का बड़ा मर्कज़ बन चुका है। यहां क़हबा ख़ानों की बोहतात है। एक और रिपोर्ट के मुताबिक़ इस हवाले से मश्रिक़े वुस्ता में दुबई के बाद सिर्फ़ इस्राईल का नम्बर आता है।

तवाइफ़ों की अक्सरियत (मासिवाए उनके जो सारा वक़्त यही काम करती हैं) दिन को सोती हैं, दोपहर से रात दस बजे तक मुख़्तलिफ़ रेस्टोरेंट्स में बैरों की ख़िदमात अंजाम देती हैं जबकि शाम से रात के दर्मियान अपना रिवाती काम करती हैं।

तवाइफ़ों में दर्ज ज़ेल क़ौमियत की औरतें शामिल हैं:

रूसी: यह चूंकि ख़ूबसूरत, सेहतमंद और गोरी होती हैं, इसलिये अरब हज़रात इनको पसंद करते हैं। इनमें सोवियत यूनियन से आज़ाद होने वाली रियासतों की औरतें शामिल हैं।

चीनी, फ़िलीपीनो: इनको ज़्यादातर वह ग़ैर मुल्की सियाह पसंद करते हैं जिनका तअ़ल्लुक़ अमरीका व यूरप से होता है।

ईथोपियन, अफ़रीक़ी: यह आम तौर से मज़दूरों का निशाना बनती हैं।

हिंदुस्तानी, पाकिस्तानी: इंतिहाई शर्म का मक़ाम है कि इनमें जुनूबी एशिया और पाकिस्तान की औरतें भी होती हैं लेकिन इससे भी ज़्यादा शर्म का मक़ाम यह है कि एक ज़माने में "ख़लीज टाइम्ज़" में इश्तिहार आता था: "Famous Lahori Mujra" (मशहूर लाहौरी मुज्रा)

तवाइफ़ों के तनासुब से देखा जाए तो यह बात क़ाबिले ग़ौर है कि यहो ज़िनाकारी का बाज़ार इस हद तक गर्म है कि अक्सर इमारती बाशिंदे यह बात सुनकर नज़रें झुका लेते हैं कि दूसरे ममालिक से आने वाले अफ़राद अक्सर व बेशतर इसी मक़सद के

लिये यहां आते हैं।

एक और इंसानी अलमिया यह है कि अरब हज़रात हैदराबाद (हिंदुस्तान) में औरतों से शादी करने के बाद उन्हें छोड़ कर चले जाते हैं। हैदराबादी भी गुर्बत की वजह से अपनी बेटी ब्याह कर हमेशा के लिये पछतावे में फंस जाते हैं। अफ़सोसनाक बात तो यह है कि शादी करवाने वाले बीच के लोग भी अपना कमीशन हक़ महर की तरह मांग लेते हैं और बमुश्किल उन ग़रीब वालिदैन को 5000 रूपया मिल पाता है।

इससे भी अफ़सोसनाक सूरते हाल सऊदी अरब की है। यहां पर काम करने वाली औरतें जिन्हें नौकरानी या मैड (Maid) कहते हैं, बड़ी तादाद में इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलिपाइन, सिरी लंका और दीगर मुल्कों से लाई जाती हैं। इनमें से फिलिपीनी और दीगर ईसाई औरतें छुट्टी के दिनों में (जुमा, जुमेरात) यह ग़लत काम करती हैं जब्कि नाजाइज़ औलादों को यह पार्कों या यतीमख़ानों में छोड़ देती हैं। एक ऐन जी ओ के मुताबिक़ जद्दा और उसके गर्द दो नवाह से एक साल में 3000 से ज़ाइद ऐसे बच्चों को उठाया गया। सोचने की बात यह है कि ग़ैर मुल्की ख़ादिमाओं का यह रुजहान कहीं अहले हरमैन को इस गंदगी में मुलव्विस करने की मंसूबा बंद कोशिश तो नहीं।

इसके अलावा मुआमलात यहां तक ही महदूद नहीं हैं खुद हमारे मुल्क में भी यही हाल है। आर्ट की आड़ में मुज्रे होते हैं। बेहयाई और फ़हश कामों का प्रचार किया जाता है। हैरानकुन बात तो यह है कि खुद पाकिस्तान में भी रूसी और चीनी तवाइफ़ें आती हैं और कराची के पोश इलाक़ों और इस्लामाबाद में यह कोई ग़ैर मअ़रूफ़ बात नहीं। और इससे भी हैरानकुन बात यह है कि इस्लामी रियासत

पाकिस्तान के बअ़ज़ सियासतदान और ब्यूराक्रेट इस बैनुल अक़्वामी घिनावने कारोबार को फ़रोग़ दे रहे हैं।

इस तरह के वाक़िआत अक्सर अरब शुयूख़ और अब तो हुक्मरानों में भी बहुत ज़्यादा आम होते जा रहे हैं। अल्लाह ही सबको हिदायत दे और अपनी दौलत को अय्याशी की बजाए इस्लाम की ख़िदमत के लिये ख़र्च करने की तौफ़ीक़ दे। इस क़िस्म के दो वाक़िआत मुलाहज़ा करें:

- बिरादरे मुल्क क़तर का अमीर इन मुआमलात में सब को पीछे छोड़ चुका है। एक दफ़ा शराब के नशे में धुत किसी नाइट क्लब में मगन था (अपने मुल्क में)। इस दौरान उसका दिल एक लड़की पर आ गया जो कि नाच रही थी। उसने अपने वज़ीर से कहा कि इस लड़की से बातचीत करके निकाह का मुआमला करा दो। वज़ीरे मौसूफ़ ने पहले तो अमीर को ग़ौर से देखा, बाद में सिर्फ़ इतना कह सका: "जनाब! यह आप की बेटी है।"

यह वही ग़ैरतमंद शख़्स है जिसने कुछ अर्सा पहले अपने बाप का तख़्ता उस वक़्त उलट दिया था जब वह इलाज के सिलसिले में लंदन या सुइटज़रलैंड गया हुआ था।

- बहरैन के शैख़ ईसा ख़लीफ़ा की बहन जिसका नाम मरयम ख़लीफ़ा था, एक ग़ैर मुल्की अंग्रेज़ के साथ भाग गई थी। वह ग़ालिबन अमरीकी था और यह सन 2000 ई0 के आसपास के बात है। यही नहीं बल्कि इस तरह के नजाने कितने वाक़िआत ऐसे हैं जिनका किसी को इल्म नहीं हो पाता।

अरबों में ख़ास तौर से दुबई में औरत की जिस भयानक तस्वीर की मंज़रकशी की गई है, इसका सबसे भयानक पहलू भी सुन लीजिये। इंसानी हुक़ूक़ की तन्ज़ीम ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि

चीनी औरतों से जब मालूमात ली गई तो उन्होंने बताया कि उनके ज़्यादातर गाहक वह अमरीकी फ़ौजी होते हैं जो कि इराक़ से कुछ दिन की छुट्टियों पर दुबई आ जाते हैं। इस तरह से हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि इमारात, इराक़ जंग में कितना "अहम" किर्दार अदा कर रहा है।

इस बात का एक और सबूत यह भी है कि इमारात में "जबल अली" नामी बंदरगाह है जो दुनिया में सबसे बड़ी मस्नूई (इंसान की बनाई हुई) बंदरगाह है। क़तर के अमरीकी अड्डे के बाद यह बंदरगाह भी अमरीकी जंगी तय्यारा बरदार जहाज़ों के लिये सहूलतें फ़राहम करने के मर्कज़ का काम करती है और इस तरह इमारात में ग़ैर मुल्की फ़ौजी मुसलसल आते रहते हैं।

आज तक मुसलमान हुक्मरानों का अलमिया यह रहा है कि उनकी सबसे बड़ी कमज़ोरी औरतें ही रही हैं, लेकिन वह इस हद तक गिर जाएंगे कि ग़ैर मुस्लिम हमला आवरों को औरतें फ़राहम भी करेंगे, इस ज़िल्लत का तसव्वुर भी पहले ज़माने के मुसलमानों ने न किया होगा।

उर्दुन का बादशाह (अब्दुल्लाह) जिसका तअ़ल्लुक़ तारीख़ी ग़द्दारों से है, उसका बाप वही शख़्स था जिसने ख़ुफ़िया तौर से 1973 ई0 की जंग से एक हफ़्ता पहले तलअबीब जाकर मूसाद और इस्राईली वज़ीरे आज़म गोल्डामेयर को हमले से ख़बरदार किया था, उसका अपना ख़ून भी ख़लत मलत हो चुका है। अगर्चे उसका दादा शरीफ़े मक्का था, लेकिन उसके बाप ने पहली शादी एक अरब और दूसरी एक अंग्रेज़ यहूदिया से की थी और मरने से पहले इस्राईल को मज़ीद ख़ुश करने के लिये अपने छोटे बेटे को जो कि अंग्रेज़ यहूदी औरत से था, बादशाह बना दिया था। इस तरह ग़द्दार ख़ानदान के ख़ून में

अंग्रेज़ का खून ख़लत मलत हो गया। इसके पहले बेटे की बीवी बैगम शाइस्ता इक्रामुल्लाह थी। उसने बड़े बेटे से शादी की थी। यह बेटा एक अरब ख़ानदान से था।

इसके मुक़ाबले में तस्वीर का दूसरा का रुख़ देखें। प्रिंस चार्ल्स बर्तानिया का अगला बादशाह होगा। उसने पहली शादी डयाना से की थी। उससे दो बेटे हुए। बाद में दोनों में तलाक़ हो गई। डयाना बाद में यके बाद दीगरे दो मुसलमानों के इश्क़ में गिरफ़्तार हो गई। पहला एक पाकिस्तानी डाक्टर था जो झंग का रहने वाला था। उसने शहज़ादी से शादी की पेशकश महज़ इस वजह से ठुकराई कि उसके वालिदैन रज़ामंद नहीं थे। उसके इस फ़रमांबरदाराना रवय्ये से डयाना बहुत ज़्यादा मुतअस्सिर हुई थी।

दूसरा मुसलमान दाऊद अलफ़ादी था जो मिस्र से तअल्लुक़ रखता था। दाऊद जैसा भी था लेकिन वह एक मुसलमान तो था। और यह बात M15 और M16 (बर्तानवी ख़ुफ़िया इदारों) और शाही ख़ानदान को खटकती थी। अगर्चे डयाना ख़ुद शाही ख़ानदान से न थी, लेकिन एक बर्तानवी शहज़ादे की मां अगर मुसलमान हो जाए या फिर एक मुसलमान से शादी कर ले, वह कैसे बर्दाश्त कर सकते थे? चुनांचे ख़ानदान और ख़ुफ़िया इदारों के गठजोड़ से दोनों को हलाक कर दिया गया।

यह बात भी एक हक़ीक़त है कि डयाना की मौत के बाद ख़ुद बर्तानिया में अक्सर लोगों का यह ख़्याल था कि उसकी मौत एक हादसा नहीं था, बल्कि एक मुनज़्ज़म साज़िश का नतीजा था। एक और बात भी हमें मालूम होनी चाहिये कि डयाना बर्तानिया की मौजूदा दौर की सबसे मक़बूल तरीन शहज़ादी थी। रौशन ख़्याल और वसीउज़्ज़र्फ़ यूरप ने उसे क़त्ल कर डाला और तारीक ख़्याल, तंग ज़र्फ़

मुसलमानों ने अंग्रेज़ औरत के बतन जनम लेने वाले नीम गोरे मख़्लूतुन्नस्ल यहूदी को बादशाहत का तख़्त वर्से में पेश कर दिया।

ख़ैर! बात कहां से कहां पहुंच गई। दुबई में औरतों के साथ जो कुछ भी हो रहा है, उसका ढिंढोरा तो चीख़ चीख़ कर यह नाम निहाद इंसानी हुक़ूक़ की तन्ज़ीमें पीटती रहती हैं, लेकिन इन तन्ज़ीमों का सबसे ज़्यादा तारीक पहलू हमें तालिबान के हवाले से नज़र आता है।

इन तन्ज़ीमों को यह नज़र आ रहा था कि अफ़ग़ानिस्तान में तालिबान हुकूमत ने बेपर्दा औरतों के आज़ादाना घूमने फिरने पर पाबंदी लगा दी थी, लेकिन उन्हें यह नज़र नहीं आता कि उस वक़्त वहां जंग और गुर्बत की वजह से बेहयाई कितनी आम हो गई थी। ओबाश सरमायादारों ने किस तरह औरत को खिलौना बना कर रख दिया था। इन नाम निहाद तन्ज़ीमों को यह नज़र नहीं आता कि तालिबान ने यह पाबंदी लगाने के साथ ही ग़रीब ख़्वातीन के लिये वज़ीफ़े और राशन का घर में इंतेज़ाम कर दिया था।

उनको यह नज़र आता था कि फ़ह्हाशी के अड्डों को नेस्त व नाबूद करके रख दिया गया था, लेकिन यह नज़र नहीं आता कि औरतों को तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम करने और घर बैठे क़िफ़ालत करने के लिये तालिबान ने क़िस्मा क़िस्म मुश्किलात के बावजूद क्या कुछ नहीं किया था।

अरब मुसलमानों के लिये बाइसे इबरतः

दुबई की तरक़्क़ी में अरब भाइयों के लिये इबरत का सामान है। हम यह देख सकते हैं कि किस तरह मआशी इस्तिहकाम और तरक़्क़ी के नाम पर दुबई ने अपना इस्लामी तशख़्ख़ुस खो दिया। आज का दुबई और क़तर इस हद तक आगे हैं कि उनका कहना हैः

"अगर इस्राईली सरमायाकार यहां आना चाहें तो हमें इस पर कोई एतिराज़ नहीं।"

मुलाहज़ा फ़रमाइये! तरक़्क़ी और सरमाया कारी के नाम पर किस तरह अरब भाइयों को उनके दीन और नज़रियए हयात (जो ईमान व जिहाद का दूसरा नाम है) से दूर किया जा रहा है और किस तरह से वह ऐसी क़ौम बनते जा रहे हैं जिसको इस्लाम और मिल्लते इस्लामिया की फ़िक्र ही नहीं रही। हमारे अरब भाई इन ख़ुराफ़ात में उलझे जा रहे हैं जबकि मग़रिबी मुमालिक ख़ुसूसन अमरीका के साबिक़ सदर बुश यह फ़रमा रहे हैं:

"हम नए आलमी निज़ाम के लिये काम कर रहे हैं।"

दुबई की तरक़्क़ी अरब मुसलमानों के लिये इस लिहाज़ से खुली इबरत है कि अगर अरब अपने मज़हबी शिआ़र और मिसाली सक़ाफ़त की क़ुर्बानी की क़ीमत पर तरक़्क़ी करना चाहते हैं तो फिर इसकी क़ीमत क्या होगी? इस बात का एक नमूना दुबई में देखा जा सकता है।

यहूदी बैंकों में अरब हज़रात की सरमायाकारीः

यहूदी बैंकारों ने इस्राईल की जो मदद की और अरबों को शिकस्त देने के लिये जिस तरह बेदरेग़ सरमाया लुटाया, वह सबके सामने है, लेकिन अरब हज़रात इस्लाम और मुसलमानों की फ़िक्र से महरूम हो जाने के सबब अपनी दौलत इन्ही दुश्मनाने दीन व मिल्लत के पास रखवाते हैं। इसका तरीक़ा यह है कि अरब मुमालिक जो तेल बेच रहे हैं और इससे जो आमदनी उनको मिलती है, उससे वह कुछ तो अपने पास रख लेते हैं, लेकिन बाक़ी अमरीकी व यूरपी बैंकों के पास चली जाती है, जबकि यह बात क़ाबिले ग़ौर है कि जिन यहूदी बैंकों में यह क़र्ज़ रखवाते हैं, उनसे यह वापस निकाल भी

नहीं सकते। हां अगर किसी और यहूदी इदारे में सरमाया लगाना हो तो फिर कोई हर्ज नहीं। ऐसा आसानी से मुम्किन होता है।

इस तरह के इकाउंट्स में कितना पैसा है? इसका अंदाज़ा इन तीन मुमालिक के अअ़दाद व शुमार से लगाया जा सकता है:

अरब इमारतः 300 अरब डालर। क़तरः 120 अरब डालर। कुवैतः 40-60 अरब डालर।

बजाए इसके कि हमारे अरब भाई यह पैसा तालीम व तहक़ीक़, ग़रीब मुसलमानों की मदद, दीनी इदारों की ख़िदमत और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह में ख़र्च करें, वह इस पैसे को अय्याशियों और फ़ुज़ूल ख़र्चियों पर ख़र्च करते या फिर इन्ही यहूद व नसारा के यहां रखवा देते हैं जो ख़ुद उनके भी दुश्मन हैं। लंदन और कई दूसरे यूरपी शहरों में अरब मुसलमानों ने पूरी गलियां की गलियां ख़रीद ली हैं। लंदन में Edgewarwe Oxford Street और Piccardly (तक़रीबन) तमाम की तमाम अरबों ख़रीद ली हैं, ताकि जब तेल ख़त्म हो तो भी उनकी आमदनी का सिलसिला जारी है।

स्काटलैंड की सिटी कौंसिल ने इस बात की तौसीक़ कर दी है कि "प्रिंसेज़ स्ट्रेट" (जिसमें मालदार अरब मुसलमान दिलचस्पी रखते हैं) को बेच कर उसे एक फ़र्द के ज़ेरे इंतेज़ाम (Single Ownership) कर दिया जाए, ताकि इस कमर्शल इलाक़े की सड़क के अतराफ़ में मौजूद इमारतों की बैनुल अक़्वामी सतह की तअ़मीरे नो हो सके।

EDIN BURG के सिटी कौंसिल के तरक़्क़ियाती कामों के लीडर Tom Buchanan का कहना हैः "हम से बअ़ज़ लोगों ने रुजूअ़ किया है, जिनके पास बैरूनी फ़ंड्ज़ तक रसाई है जोकि Princess Street को ख़रीदना चाहते हैं और उनके पास

बेतहाशा पैसा है। अगर्चे यह मंसूबा तवील है और मुख़्तलिफ़ मालिकों को तलाश करने और मुज़ाकिरात करने में 10 साल का अर्सा भी लग सकता है।"

इस सड़क की मालियत तक़रीबन 1.35 अरब पाउंड है ($2.66 Billion) इसके अलावा RBS यअ़नी राइल बैंक आफ़ स्काटलैंड (Royal Bank of Scotland) क़तर में बड़े पैमाने पर सरमायाकारी करने की कोशिश में लगा हुआ है, जबकि कुवैत भी इस सिलसिले में अपना पैसा यूरप और अमरीका में लगाने के इंतेज़ार में बैठा है। यह इस सब जानिबदाराना रवय्ये के बावजूद है जो अमरीका ने अरबों के साथ इख़्तियार किया। मसलनः

2005 ई0 में अमरीका में जब तूफ़ान (कतरीना) आया तो इसके बाद बंदरगाहों का नज़्म व नस्क़ अमरीका ने Charity Fund के लिये ठेका देने का फ़ैसला किया। इस ठेके की सबसे बड़ी बोली अरब कम्पनी "दुबई पोर्ट वर्ल्ड" ने दी, लेकिन बाद में इस कम्पनी पर इतना दबाव डाला गया कि आख़िरकार यह दस्त बरदार हो गई। वजह सिर्फ़ इतनी सी थी कि बंदरगाह जैसे हस्सास तन्सीबात पर अरब कम्पनी को कैसे बर्दाश्त किया जा सकता है?

इसी तरह अमरीका में एक हवाई जहाज़ बनाने वाली कम्पनी के हसस "दुबई इयर व स्पेस" (DAE) ने ख़रीदे तो इस पर भी बहुत शौर उठा। बाद में जब तक DAE ने यह ऐलान नहीं कर दिया कि इस फ़िलहाल हसस बेचने की कोई ज़रूरत नहीं और वह एक मुनासिब वक़्त में उसे अच्छे दामों फ़रोख़्त कर देगी, तब ही जाकर शौर व ग़ुल ठंडा पड़ा।

इस सब कुछ के बावजूद अरब हज़रात अमरीका और यूरपी मुमालिक में सरमाया कारी करने से बाज़ नहीं आ रहे हैं। इस्लामी

बैंकों और मुस्लिम मुमालिक में सरमायाकारी के बजाए मग़रिबी मुमालिक में अरब भाइयों की सरमायाकारी दर्ज ज़ेल है:

- UBS (सुइटज़रलैंड का बैंक) 5 फ़ीसद हसस की ख़रीदारी ज़ेरे ग़ौर है (इमारात)

- BARCLAY'S BANK: 3 फ़ीसद हसस की ख़रीदारी इमारात के ज़ेरे ग़ौर है। (कुवैत और क़तर भी उम्मीदवारों में शामिल हैं)

- जर्मनी के DUETSCHE BANK के 2.19 फ़ीसद हसस इमारात की हुकूमत के पास मौजूद हैं।

- CITI GROUP (CITI BANK): 4.9 हसस जिसकी मालियत 7.5 अरब डालर है अबू ज़ह्बी की हुकूमत के पास हैं।

- (RBS) ROYAL BANK OF SCOTLAND क़तर की हुकूत इसके हसस की ख़रीदारी में दिलचस्पी ले रही है।

यह बात भी क़ाबिले ग़ौर है कि अरब मुसलमान इन बैंकों को उस वक़्त पैसा फ़राहम कर रहे हैं जब यह सारे बैंक ख़सारे में जा रहे हैं और उन्हें पैसे की शदीद ज़रूरत है। इस वक़्त इस्लामी मुमालिक और इस्लामी इदारों में सरमायाकारी करने के बजाए और यह साबित करने के बजाए कि इस्लामी मआशी निज़ाम ही वह वाहिद दवा है, जिससे मौजूदा महंगाई, बेरोज़गारी का इलाज किया जा सकता है, हमारे अरब भाई इस सिसकते हुए यहूदी सूदी बैंकों को सहारा दे रहे हैं और उन्हें नज़अ की हालत में आक्सीजन मुहय्या कर रहे हैं।

इसकी सबसे बड़ी मिसाल 'CITI GROUP की है जिसका ख़सारा 6.8 अरब डालर तक पहुंच गया है, इसको अरब सरमायादार हज़रात की तरफ़ से 7.5 डालर की इम्दादी सांस दी जा रही है। अरब इस हवाले से कहते हैं: "बुरे वक़्तों में तो यह राज़ी हो जाएंगे,

लेकिन अच्छे वक़्तों में इस तरह के सौदे नहीं हो पाएंगे।"

इस फुज़ूल नज़रिये के ख़िलाफ़ सबसे बड़ी दलील यह है कि इस बात की क्या ज़मानत है कि वह अच्छे वक़्तों में उन्हें बर्दाश्त करेंगे? क्या पता वह इन अरबों को अपना बोरिया बिस्तर समेटने की इजाज़त भी न दें?

इस वक़्त तक़रीबन तमाम आलमी बैंक ख़सारे में हैं। बुन्यादी तौर पर इसकी वजह अमरीका में घरों में क़र्ज़ की सूद की शर्ह में कमी है, जिसे "Sub Prime Mortgage" कहते हैं। मग़रिबी मुमालिक को जब माली मुश्किलात पेश आईं तो अरब सरमाए ने उनको हमेशा सहारा दिया। ऐसे कठिन वक़्त में इन बैंकों के ख़सारे को कम करने के लिये उनकी मदद करना कितनी बड़ी नादानी है? अल्लाह तआला मुसलमानों को समझ दे।

यह अलमिया पहले भी होता रहा है। 9/11 के बाद जहाज़ बनाने वाली कम्पनियां ख़सारे में जा रही थीं तो उस वक़्त इमाराते सऊदिया क़तर, बहरैन, उमान, पाकिस्तान और बड़ी तादाद में मुसलमान मुल्कों ने 300 से ज़ाइद बोइंग जहाज़ ख़रीदे, जिसकी वजह से इस सनअ़त को सहारा मिल गया। यह किसी ने नहीं सोचा कि इस सहारे से तक़वियत पाने वाली दज्जाली निज़ाम की हमनवा ताक़तें बेसहारा मुसलमानों के साथ क्या कर रही हैं और मज़ीद क्या कुछ करने का इरादा रखती हैं? इज्तिमाई मफ़ादात से बेतवज्जही हमें यह दिन दिखा रही है।

फ़लस्तीनी मुसलमानों की मज़लूमाना हालते ज़ार के बावजूद उन्हें ज़ालिम और संगदिल सहीवनियों के रहम व करम पर छोड़ना और अपनी बेतहाशा दौलत से सहीवनियत की मदद करने वाले यहूदी बैंकारों को सहारा पहुंचाना हमारे दौर का वह अलमिया है,

जिसकी बिना पर दज्जाल के हरकारे और दज्जली रियासत मज़बूत हो रही है। ज़रूरत है कि रुजूए इल्लल्लाह, इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह और जिहाद व किताल फ़ी सबीलिल्लाह की दावत को आम किया जाए। यह वह वाहिद ज़रीआ है जिसकी बिना पर रहमान के बंदे, दज्जाल के लशकरियों के सामने जम कर खड़े हो सकते और अपने सच्चे मअ़बूद की बंदगी और प्यारे रसूल सल्ल0 से मुहब्बत का हक़ अदा कर सकते हैं।

मआख़ज़ व मसादिर

गुज़िश्ता मज़मून में दिये गए अअ़दाद व शुमार दर्ज ज़ेल किताबों से लिये गए हैं:

(1) ARTEH L. AVNERI: "The Claim of Dispocession: Jewish land settlements and the labs 1878-48", Transaction Publishers (1984)

(2) ISSA KHAF: "Politics of Palastine: Arab Factionalism and Social Disintegration 1939-48", Suny University Press (1991)

(3) KENNETH W. STEEN: "The land Question in Palestine 1917-39" University of North Carolina (1984)

(4) ABRAHAM RABINOVICH: "THE YOAN KIPPUR WAR: THE GPIC ENCOUNTER THAT TRANSFORMED THE MIDDLE EAST"

(5) CNN REPORT "HUSSEIN IS DEAD"

David Ben Guion: "From Class to Nation: Reflections on the Vocation and Mission of the labour movement" (HEBREW An Ord-1976)

इस्राईल की कहानी

एक मश्रिकी तह्क़ीक़कार और एक मग़रिबी लखारी की ज़बानी

अगले सफ़हात में दुनियाए मश्रिक़ व मग़रिब से एक एक तह्क़ीक़कार की तहरीरों का खुलासा पेश किया जा रहा है। पहली तहरीर तारीख़ के तनाज़ुर में "इस्राईली रियासत के मुतालआ" पर मुशतमिल है। इसमें इस्राईल की ज़मानए क़दीम से ताअसरे जदीद तारीख़ पर ताइराना नज़र डाली गई है। यह मज़मून डाक्टर अबरार मुहिउद्दीन साहब, शोअ़बए उलूम इस्लामिया, इस्लामिया यूनीवर्सिटी, बहावलपूर का तहरीर कर्दा है। आं जनाब ने उसे इसे आजिज़ को अख़्बार में बग़र्ज़ इशाअ़ते इर्साल किया था। अख़्बार में तो शाए न हो सका, यहां इसकी तलख़ीस पेशे ख़िदमत है। अस्ल मज़मून "इस्राईल से इस्राईल तक" के नाम से लिखा गया है और इदारा तह्क़ीक़ाते इस्लामी, बैनुल अक़्वामी यूनीवर्सिटी, इस्लमाबाद के तहत शाए होने वाले सहमाही जरीदे "फ़िक्र व नज़र" जल्द 46, शुमारा 3, महरम- रबीउल अव्वल 1430 हि0, जनवरी- मार्च 2009 ई0 मे शाए हुआ है। मुसन्निफ़ इसका खुलासा इफ़ादए आम के लिये मज़मून निगार और मज़कूरा जरीदे के शुक्रिया के साथ पेश कर रहा है। मक़ाले में दी गई अंग्रेज़ी इबादात का तर्जुमा साथ ही दे दिया गया है। दूसरी तहरीर एक केनेडियन सहाफ़ी "राबर्ट ओ डर्सकोल" के खुफ़िया इस्राईली दौरे के आंखों देखे हाल पर मुशतमिल है जिसमें क़दम क़दम पर क़ारईन को तजस्सुस व सनसनी खेज़ी के साथ

आलिमाना और दियानत दाराना अमली तहक़ीक़ का इम्तिज़ाज देखने को मिलेगा। बीच में "मुरब्बा क़ौसैन" में दी गई इबाराते अहक़र का तशरीही इज़ाफ़ा हैं। मुअल्लिफ़ किताब के इस हिस्से को "इस्राईल की कहानी" का नाम देकर मज़कूरा बाला दोनों तहक़ीक़ कारों के नाम करते हुए इनके लिये दुआ गो है।

दज्जाली रियासतः मश्रिकी मुहक़्क़िक़ीन की नज़र में

मौजूदा दौर माद्दी इर्तिक़ा के उरूज का दौर है। इस माद्दी इर्तिक़ा ने दुनिया को समेट कर एक बस्ती बना दिया है। मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के लोग इतने क़रीब आ गए हैं कि क़ब्ल अज़ीं इस क़ुर्बत का तसव्वुर भी नामुम्किन था। यह ग्लोबलाइज़ेशन बजाए इसके कि बनी नोअ़ इंसान के मसाइल हल करते, दुनिया से जिहालत और ग़ुर्बत का ख़ातिमा होता और लोग माज़ी के मुक़ाबले में ज़्यादा अमन व सुकून से रहते, इसके बरअक्स इसका असर यह हुआ कि इंसान इंसान के हाथों दहशतगर्दी का शिकार हो रहा है। यह दहशतगर्दी कहीं सियासी है, कहीं क़ौम परस्ताना है, कहीं मआशी है और कहीं तहज़ीबी। इस दहशतगर्दी के साथ साथ इस "ग्लोबलाइज़ेशन" ने रियासती दहशतगर्दी को भी जनम दिया, जिसने कमज़ोर मुमालिक के वजूद के लिये ख़तरात पैदा कर दिये। ग्लोबलाइज़ेशन ने एक आलमी मआशी इस्तिहसाली निज़ाम को जनम दिया जिसकी पैदाकर्दा मस्नूई महंगाई दुनिया के ग़रीब को मज़ीद ग़रीब बना रही है और दौलत को आलमी सतह पर चंद सौ ख़ानदानों की तिजोरियों में तेज़ी से मुंतक़िल कर रही है। जिस अख़्लाक़ी बेराहरवी ने यूरप और अमरीका के मुआशरों को तबाह करके रख दिया। इस "सिमटाव" (ग्लोबलाइज़ेशन) की वजह से वह अब मुस्लिम मुआशरों पर मीडिया के ज़रीए मुसल्लत की जा रही है। इस ग्लोबलाइज़ेशन के मुसल्लत कर्दा इस्तिहसाल के चुंगल में पूरी दुनिया जकड़ी जा चुकी है। इस जकड़न का मर्कज़

कहां है? अव्वल तो यह बहस छिड़ती नहीं। अगर कहीं छिड़ती है तो मसाइल की निशानदही के लिये राज़ी व ग़ज़ाली, रूमी व इक़बाल के ऐसे "वर्सा" तलाश करके शरीके बहस किये जाते हैं, जिनको न अपने माज़ी का इल्म होता है और न ही मुस्तक़बिल में तअ़मीरे मिल्लत की तड़प उनमें पाई जाती है। यह अलमी क़ल्लाश बेचारे मसाइल का हल तो क्या बताएंगे, मसाइल की निशानदही भी नहीं कर पाते। ऐसे मुफ़क्किरीन की ज़ियारत चैनल्ज़ के तनख़्वाह याफ़्ता पतंगड़बाज़ों या अख़्बारात के Paid लखारियों की शक्ल में की जा सकती है।

इंसानी तारीख़ का मुतालआ़ बताता है कि यह मुआशरती अनार की अख़्लाक़ी ज़ाब्तों की ख़िलाफ़ वर्ज़ी और मुख़्तलिफ़ अज़मज़ की तख़्लीक़ माज़ी में यहूदी क़ौम के सियाह कारनामों में से एक है। इस क़ौम की पूरी तारीख़ अल्लाह की खुल्लम खुलाना नाफ़रमानी, नस्ली तअ़ल्ली, हवस ज़द, क़त्ल व ग़ारतगरी और ज़ुल्म से इबारत है। इन बदकिर्दारों की बदौलत यह क़ौम माज़ी में हर नबी की बद्दुआओं और फिर इसके नतीजे में अल्लाह के अज़ाब की मुस्तहिक़ बनी है। इसी बदकिर्दारी का ही नतीजा है कि दुनिया की दो बड़ी इल्हामी कुतुबे क़ुर्आन और बाइबल इस क़ौम की मज़म्मत पर मुत्तफ़िक़ हैं। अपने ज़मानए रुसवाई (Diaspora) में यह हर क़ौम के यहां नफ़रत की नज़र से देखी जाती रही, हत्ता कि आज इस्राईल के मुरब्बी व मुहसिन अमरीका में 1789 ई० में अमरीकी दस्तूर बना तो उस वक़्त के अमरीकी सदर बिंजामेन ने यहूदियत को अमरीका के लिये सबसे बड़ा ख़तरा क़रार दिया था और हक़ीक़त भी यह है कि आज की दुनिया के हर फ़साद में दरअसल यहूदी शैतानी ज़ह्न काम कर रहा है। ज़ारे रूस के ख़िलाफ़ बग़ावत और ईसाइयों के क़त्ल में यही हाथ

था। बैंक आफ़ इंगलैंड की शक्ल में बर्तानवी मआशियत के मालिक यही हैं। अमरीकी मीडिया पर मुकम्मल कंट्रोल उनका है। दुनिया में सोने की तिजारत उनके क़ब्ज़े में है। मश्रिक़े वसती में इस्राईल के क़याम के बाद से आलमी हालात इतनी तेज़ी से ख़राब होना शुरू हुए हैं कि इससे पहले ऐसा फ़साद इंसानी तारीख़ देखने में नहीं आया। इसकी बुन्यादी वुजूहात इस क़ौम के माज़ी में पोशीदा हैं, जिनका मुतालआ ज़रूरी है।

इस क़ौम की सबसे बड़ी ख़ुसूसियत इसकी नस्ली तअ़ल्ली का तसव्वुर है, जिसके मुताबिक़ यह क़ौम दुनिया की सबसे अहम और अल्लाह के यहां पसंदीदा तरीन क़ौम है। इनका यह ज़ह्नी तसव्वुर बाइबल यूं बयान करती है कि ख़ुदा ने क़ौमे यहूद से मुख़ातब होकर कहा:

"I have chosen him in order that he may command his sons and his descendents to obey me and to do what is right and just."

"मैंने उन्हें मुंतख़ब किया है ताकि वह अपने बेटों की क़यादत कर सकें और उनके उम्मती मेरी इताअ़त करें और वही करें जो सही और मुतअ़य्यन हो।"

इस्राईल की इस नस्ली बरतरी को उनकी मशहूर क़ानून की किताब "Talmud" यूं बयान करती है:

"Heaven and earth were only created through the merit of Israel."

"जन्नत और दुनिया को सिर्फ़ इस्राईल के मेअ़यार के लिये पैदा किया गया।"

"Whoever helps Israel is as though he

helped the Holy One blessed be He. Whoever hates Israel is like me who hates Him."

"क़ौमे इस्राईल की मदद करना खुदा की मदद करना है और उससे नफ़रत करना खुदा से नफ़रत करना है।"

तालमूद के इस जुम्ले के तहत अमरीका को यह बावर कराया जाता है कि इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान में वह जो कुछ कर रहा है दरअसल खुदा की मदद कर रहा है। आख़िरत की नजात सिर्फ़ इस्राईलियों के लिये मख़्सूस है, ग़ैर इस्राईली उख़रवी नजात नहीं पाएंगे।

"No Gentiles will have a share in the world to come."

उनका यह अक़ीदा है कि इब्राहीम अलै0 किसी यहूदी को जहन्नम में न जाने देंगे।

"In the Hereafter Abraham will sit at the entrance of Gehinnom and will not allow any circumcised Israelite to desend into it."

"और आख़िरत में इब्राहीम जहन्नम के दरवाज़े पर धरना दे देंगे और किसी इस्राईली को जहन्नम में फैंकने की इजाज़त न देंगे।"

जो क़ौम फ़िक्री तौर पर इस हद तक तंग नज़र हो, उस क़ौम से क्योंकर तवक़्क़ो रखी जा सकती है कि वह किसी आलमगीर मसावात का पैग़ाम दुनिया को देगी। यही वजह है कि इसकी तारीख़ में आलमगीरियत और मुसावात का तसव्वुर नापैद है। इस क़ौम की तारीख़ का ज़रीं दौर हज़रत दाऊद अलै0 (1000 ई0 क़ब्ल मसीह) से शुरू होता है। हज़रत दाऊद अलै0 के बाद आप के बेटे हज़रत

सुलैमान अलै0 नबी बने। आपके दौर में तहज़ीब व तमद्दुन उरूज पर था। रूपये पैसे की फ़रावानी थी। इस दौर में आलमी हुक्मरानी सिर्फ़ और सिर्फ़ आपके हिस्से में थी। गोया इस वक़्त "न्यू वर्ल्ड आर्डर" आप का चलता था। आपने बेशुमार तअमीरी काम किये। इनमें एक अहम काम "हैकल सुलैमानी" की तअमीर भी थी। हज़रत सुलैमान अलै0 जब इसकी तअमीर करा रहे थे, अल्लाह के हुज़ूर इसमें बरकत के लिये दुआ गो हुए। अल्लाह तआला ने इस दुआ को शर्फ़े कबूलियत अता फ़रमाया, लेकिन यह बात भी उसी वक़्त हज़रत सुलैमान अलै0 के सामने बयान कर दी कि अगर तेरी क़ौम मेरे उसूलों पर क़ाइम नहीं रहेगी और ग़ैरों की पूजा करेगी तो उसको मैं दुनिया के लिये इबरत बनाऊंगा।

हज़रत सुलैमान अलै0 के बाद सलतनत में सियासी और मज़हबी इख़्तिलाफ़ात हद से बढ़ गए। इन इख़्तिलाफ़ात में एक गुरूप का सरबराह हज़रत सुलैमान अलै0 का घरेलू मुलाज़िम "यरबआम" था, जबकि दूसरे गुरूप का सरबराह हज़रत सुलैमान अलै0 का बेटा "रुजआम" था। इख़्तिलाफ़ हद से बढ़े तो सलतनत (796 क़ब्ल मसीह) दो हिस्सों में तक़सीम हो गई। शिमाली सलतनत जिसका नाम इस्राईल था और जिसका पायए तख़्त सामरिया था, यह सलतनत बनी इस्राईल के दस कबाइल पर मुशतमिल थी। जिसका पहला सरबराह हज़रत सुलैमान अलै0 का यही गुलाम "यरबआम" था, जबकि बाक़ी क़बीलों "यहूदाह" (हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अलैहिमुस्सलाम का क़बीला) और "बिन्यामीन" के क़बीले ने मिल कर "जूडया" की सलतनत जुनूब में क़ाइम की, जिसका पायए तख़्त यरोशलम था और जिसका सरबराह हज़रत सुलैमान अलै0 का बेटा "रजआम" बना। यह तक़सीम 11 वीं सदी क़ब्ल

मसीह अमल में आई। हैकल सुलैमानी जूडया की सलतनत के हिस्से में आया था, इसलिये इस्राईल वालों ने "बैथल" नामी कस्बा में एक और हैकल तअ़मीर कर लिया (हैथल का मअ़नीः अबरानी ज़बान में खुदा का घर है) "हैथल" में हज़रत इब्राहीम अलै0 ने बहुक्मे खुदावंद क़याम किया था और यहां अल्लाह के हुक्म से एक मअ़बद भी बनाया था और इसमें बरकत के लिये अल्लाह के हुजूर दुआ भी की थी।

आज इस्राईल अबुल अंबिया हज़रत इब्राहीम अलै0 के तअ़मीर कर्दा हैकल का नहीं सोचता, बल्कि हज़रत सुलैमान अलै0 के तअ़मीर कर्दा हैकल की तअ़मीर की ख़ातिर आलमी अमन को दाव पर लगाने पर तुल बैठा है। इसकी कई वुजूहात हैंः एक तो यह कि अगर वह हज़रत इब्राहीम अलै0 के तअ़मीर कर्दा हैकल की बात करे तो फिर बनू इस्हाक़ और बनू इस्माईल में दूरियां कम होती हैं, क्योंकि मक्का में कअ़बा भी हज़रत इब्राहीम अलै0 का तअ़मीर कर्दा है। उनकी नस्ल तअ़ल्ली ऐसा करने की इजाज़त नहीं देती। दूसरे उनका अपना अंदरूनी तअ़स्सुब भी आड़े आता है। वह इस तरह कि 'हैथल" का हैकल दस गुमशुदा क़बाइल (सलतनते इस्राईल) का हैकल था, जबकि हैकल सुलैमानी बाक़ी दो क़बीलों, "बनू यहूदा" और "बनू यामीन" (सलतनते जूडया) के तसर्रुफ़ में था और मौजूदा इस्राईल इन दो क़बाइल का है। इस बिना पर वह अपने हैकल की बात करते हैं, इस्राईल के हैकल की बात नहीं करते। दोनों सलतनतें दौलत की फ़रावानी और ऐश व आराम के बावजूद बाहम बरसरे पैकार नहीं, पुर तकल्लुफ दस्तरख़्वां, नाव व नोश और मौसीक़ी की दिलदादगी तहज़ीब का शिआ़र बन चुका था और तबक़ए शुरफ़ा में शुमूलियत के लिये इन "आदाबे महफ़िल" (Etiquettes) की पाबंदी ज़रूरी

थी।

कौमों का ज़वाल मुआशरे पर मज़कूरा अख़्लाकी ज़ाब्तों की गिरफ़्त कमज़ोर पड़ने से शुरू होता है। जब कौमें इन अख़्लाकी ज़ाबतों की पाबंदी करना छोड़ दें तो तन आसानी, ऐश व आराम, शराब व शबाब, तबक़ाती इस्तिहसाल और अद्ल की अदम फ़राहमी मुआशरे में घर कर लेती है। इस तरह कौम अपने ज़वाल की तरफ़ लुढ़कना शुरू हो जाती है।

अख़्लाकी ज़वाल अपने साथ तबक़ाती इस्तिहसाल और हुसूले इंसाफ़ में दुशवारी भी साथ लाता है। इस बिना पर हवसे ज़र ने ग़रीब तबक़े पर मआश और इंसाफ़ के दरवाज़े बंद कर दिये थेः "तुम मिस्कीनों को पामाल करते हो और ज़ुल्म करके गेहूं छीन लेते हो। अपने लिये तराशे हुए पत्थरों के मकानों में तुम न बसोगे। तुम सादिक़ों को सताते, रिश्वत लेते और फाटक (शहरों) में मिस्कीनों की हक़ तल्फ़ी करते हो।"

शराब आम हो गई थीः "वह मयख़्वारी से पुर होकर बदकारी में मशगूल होते हैं। इसके हाकिम रुसवाई दोस्त हैं।" बाइबल में "यूशअ़" का पूरा जुज़, यह बात क़तई तौर पर वाज़ेह करता है कि "लिबराज़म" (Enlightenment या Libraslism) ने शराब और ज़िना आम कर दिया था। जहां यह ख़ौफ़नाक अख़्लाकी बुराइयों आम हों वहां इन बुराइयों के मुक़द्दमात किस किस शक्ल में होंगे, बख़ूबी अंदाज़ा किया जा सकता है।

इस कौम की अख़्लाकी बदकारियों के बयान के लिये अंग्रेज़ी बाइबल "प्रोटेस्टेंट" (Protestant) में एक जुम्ला यूं हैः

"You yourselve go off with temple Prostitutes and together with the offer

pagen sacrifice."

इस जुम्ले की तशरीह फुट नोट पर यूं की गई है:

"Temple prostitutes, these women were found in Canaanite temples where fertility gods where worshipped. It was believed that intercourse with prostitutes assured fertile fields and herds."

कैथोलिक बाइबल की इबारत इससे कुछ मुख़्तलिफ़ है, लेकिन इससे भी यह पता चलता है कि यह हराम कारी मअ़बदों में भी होती थी। इस हराम कारी से यह तसव्वुर वाबस्ता था कि खुदा खुश होकर उनको मआ़शी तौर पर खुशहाल करता है।

जिस मुआशरे की क़द्रें इस हद तक ज़वाल का शिकार हो जाएं सियासी और मज़हबी लोग भी बदकिर्दार हो जाएं और शरीफ़ आदमी मुआशरे में अपने आप को अजनबी समझने लगे तो फिर अज़ाबे इलाही इन मुआशरों का मुक़द्दर बन जाता है, चूंकि यूशअ़ नबी ने उन्हें यह बता दिया था: "सामरिया अपने जुर्म की सज़ा पाएगा क्योंकि उसने अपने खुदा से बग़ावत की है। वह तलवार से गिराए जाएंगे। उनके बच्चे पारा पारा होंगे और बार बरदार औरतों के पेट चाक किये जाएंगे।"

अब आइये! दूसरी यहूदी रियासत यहूदिया (जूडया) का हाल बाइबल के हवाले से सुनते हैं। जूडया का पहला हुक्मरान हज़रत सुलैमान अलै0 का बेटा "रजआम" था। मर्कज़ी हैकल सुलैमानी (मअ़बद) उनके पास था। उनमें मशहूर अंबिया यसअयाह, हज़की ईल और जरमियाह हुए हैं। इन में अंबिया की तमाम मसाई सईदा के बावजूद अपने अस्लाफ़ की तमामतर बुराइयां इनमें भी बदर्जए अतम

पाई जाती थीं। हमने हज़रत मूसा अलै0 के दौर में बयान किया है कि बड़े बेटे की कुर्बानी का तसव्वुर उनमें मअ़रूफ़ था। क़राइन यह बताते हैं कि इस्राईली सलतनत में इसका तसव्वुर न था, लेकिन जूडया की सलतनत में इस रस्मे बद की इब्तिदा जूडया के फ़रमांरवा अरहार ने की। इस रस्मे बद पर सबसे ज़्यादा एहतिजाज नबिये वक़्त यरमियाह ने किया। इस तरह "यहूदाह" (खुदा) के मुजस्समों की पूजा की जाती थी। शिर्क और बुतपरस्ती इस हद तक क़ौम में घर कर गई कि आगे चलकर उनके यहां सूरज देवता की मूरत की पूजा भी शुरू हो गई जिस पर हज़क़ी ईल. नबी ने सख़्त सरज़निश की: "तुम्हारे ऊंचे मक़ामों को ग़ारत किया जाएगा और तुम्हारी कुर्बानगाहें उजड़ेंगी और सूरज देवता की मूरतें तोड़ डाली जाएंगी।"

ज़िनाकारी इनमें शुरू से जड़ पकड़ चुकी थी, जिसका ज़िक्र हमने मूसा अलै0 के दौर के हालात में भी किया है। यह बुराई भी जूडया में ज़ोरों पर थी। इस बारे में अल्लाह तआला से मंसूब यह क़ौल बाइबल का हिस्सा है: "मैंने जब उनको सैर किया तो उन्होंने क़हबाख़ानों में बदकारी की और हर एक सुब्ह के वक़्त अपने पड़ोसी की बीवी पर हिनहिनाने लगा।" इस मुल्क में लूती भी थे जो वह सब मक्र वह काम करते थे जिनकी बिना पर इस्राईली मुस्तोजिब सज़ा ठहरे थे।"

यह बदकारी उनमें इस हद तक बढ़ गई कि महरम रिश्तों का तसव्वुर भी उनके यहां ख़त्म हो गया: "तेरे अंदर वह हैं जो फ़िस्क़ व फ़ुजूर करते हैं, तेरे अंदर वह हैं जो अपने बाप की हरम शिक्नी करते हैं। नापाकी की हालत में मुबाशिरत करते हैं। किसी ने दूसरे की बीवी से बदकारी की। किसी ने अपनी बहू से की। किसी ने अपनी बहन को रुसवा किया। तेरे अंदर हवसे ज़र की वजह से खून रेज़ी

की गई। तूने सूद लिया और ज़ुल्म करके अपने पड़ोसी को लूटा।" बाइबल के इस बयान को पढ़ने के बाद आज अमरीका में उठने वाली उस तहरीक का जाइज़ा लें जिस का बुन्यादी मक़्सद रिश्तों में मुहर्रमात के तसव्वुर को ख़त्म करना है। 1960 ई० की दिहाई में 79 ऐसी फ़िल्में दिखाई गईं जो मुहर्रमात से निकाह पर मब्नी थीं। अमरीकी रिसाला टाइम ने इन रुजहानात पर पसंदीदगी का इज़्हार करते हुए एक मज़्मून लिखा जिस का एक जुम्ला यूं थाः

"Incest taboo is dying of its own irrelevance."

इस मौज़ूअ़ पर फ़िल्में दिखाने का मतलब इस क़बीह फ़ेअ़ल पर शर्माने की बजाए फ़ख़्र करना है। यह बात अमरीकी मुआशरे में नई नहीं है। जूडया की सलतनत में अवाम इतने "रौशन ख़्याल" (Enlightenment) थे कि वह इस क़िस्म की बदकिर्दारी पर शर्माते न थेः "क्या वह अपने मक्रूह कामों पर शर्मिंदा हुए? वह हरगिज़ शर्मिंदा न हुए बल्कि वह लज्जाए तक नहीं, इसलिये वह गिरने वालों के साथ गिरेंगे।"

उनकी अख़्लाक़ी बदकिर्दारियों का एक जुज़्व रातों को शबाब व कबाब की महफ़िलें सजाना होता था, जिसको आज की मग़रिबी तहज़ीब का लाज़मी ख़्याल किया जाता हैः "उन पर अफ़सोस जो सुब्ह सवेरे उठते हैं ताकि नशा बाज़ी के दर पै हों और जो रात को जागते हैं जब तक शराब उनको भड़का न दे उनके जश्न की महफ़िलों में बरबत, सितार, दफ़ और शराब है। वह ख़ुदा के काम का नहीं सोचते।" वह हर तरफ़ से अपना नफ़ा ही ढूंढते हैं। हर एक कहता हैः "तुम आओ मैं शराब लाऊंगा और हम ख़ूब नशा में चूर होंगे और कल भी आज ही की तरह होगा बल्कि इससे भी बेहतर

होगा।" बाइबल के हर दो हवालाजात से यह अंदाज़ा होता है कि इस किस्म की पार्टियां कारोबारी बुन्यादों पर होती थीं। जैसा कि आज का मुहज़्ज़ब फ़ाइव स्टार कल्चर है।

इस अख़्लाक़ी मुआशरती बिगाड़ की इस्लाह का काम वहां के मज़हबी तब्क़ा बज़ाते ख़ुद मुआशरे पर एक अख़्लाक़ी दाग़ था। उस दौर के मज़हबी लोगों के किर्दार को बाइबल मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर और मुख़्तलिफ़ हवालों से बयान करती है। इनमें से चंद मक़ामात मुलाहज़ा हों:

"सब छोटे से बड़े तक लालची और नबी से काहिन तक दग़ाबाज़ हैं।"

"मैंने सामरिया के नबियों में हिमाक़त देखी है। उन्होंने बअ़ल के नाम से नुबुवत की है। मैंने यरोशलम के नबियों में एक हौलनाक बात देखी है। वह ज़िनाकार, झूट के पैरू और बदकारों के हामी हैं। कोई अपनी शरारत से बाज़ नहीं आता। वह सब मेरे लिये सदूम और अमूदा की मानिंद हैं।"

"उसके काहिनों ने मेरी शरीअ़त को तोड़ा है। उन्होंने नजिस और ताहिर में फ़र्क़ नहीं किया है। उन्होंने मुक़द्दस और आम में फ़र्क़ नहीं किया। उसके अम्रा शिकार को फाड़ने वाले भेड़ियों की तरह हैं, जो नाजाइज़ नफ़ा की ख़ातिर ख़ून रेज़ी करते और जानों को हलाक करते हैं और उनके नबी उनके लिये कच्ची कहगल हैं। बातिल ख़्वाब देखते और झूटी फ़ालगीरी करते हैं और कहते हैं कि ख़ुदावंद यूं फ़रमाता है, हालांकि ख़ुदा ने नहीं कहा।"

हज़्क़ीईल अलै0 के इन अल्फ़ाज़ को क़ुर्आने करीम ने "لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ" के अल्फ़ाज़ से बयान किया है जो इस क़ौम के मज़हबी तब्क़े के मिन्हजे

हयात को वाज़ेह करता है। हमारे अक्सर उलमा ने "अस्सहत" का मअ़नी हराम किया है जबकि सिहत का मअ़नी ऐसे कमाई है जो बाहमी ईसार व मूरत के तअ़ल्लुक़ात के मनाफ़ी हो (जैसे दुकानदार का किसी चीज़ को बाज़ार के रेट से ज़्यादा महंगे दामों फ़रोख़्त करना या हमारे यहां वकीलों और डाक्टरों की भारी फ़ीसें) (देखिये: "लुग़ातुल क़ुर्आन" लिल उस्ताज़ व "मुफ़रादातुल क़ुर्आन" लिल अस्फ़हानी)

इस क़ौम ने अंबिया से महाज़ आराई का सिलसिला रूमियों के दौर में जारी रखा। हज़रत ईसा अलै0 इस क़ौम में मबऊस हुए तो अपनी साबिक़ा "क़ाबिले फ़ख़्र" रिवायात क़ाइम रखते हुए हज़रत ईसा अलै0 के साथ भी उन्होंने आराई जारी रखी। हज़रत ईसा अलै0 के अक़ीदे के मुताबिक़ मस्लूब किये गए, उनको मस्लूब क्यों किया गया? इसकी वुजूहात यहूदी व ईसाई लिट्रेचर में बित्तफ़सील मौजूद हैं, जिसके मुताबिक़ हज़रत ईसा अलै0 बारह क़बाइल में से यहूदा के क़बील से थे। हज़रत ईसा अलै0 की ज़ात के दो पहलू इनके लिये क़तई तौर पर नाक़ाबिले क़बूल थे। सबसे पहला मन्फ़ी पहलू यही था कि वह यहूदियों की मज़हब व सियासत की तक़सीम के मुताबिक़ सियासी ख़ानदान (यहूदा) में पैदा होकर मज़हबी तालीम देने लगे। उनके क़ाइम कर्दा उसूल के मुताबिक़ मज़हबी तालीम सिर्फ़ बनू लादी का हक़ था।

दूसरा यहूद के लिये नाक़ाबिले क़बूल पहलू हज़रत ईसा अलै0 की वह तालीमात थीं जो उनके मआशी मफ़ादात और उनकी रौशन ख़्याली की मज़म्मत करती थीं। आपने फ़रमाया: "अपने वास्ते ज़मीन पर माल जमा न करो। ख़ून न करना, ज़िना न करना, झूटी क़समें न खाना, इंतेक़ाम की बजाए अफ़्व व दरगुज़र से काम लेना।

नज़र व नियाज़ में पैसा ज़ाए करने की बजाए अपने भाई की शिकायत दूर करना, सद्का खैरात छिप कर करना, झूटे नबियों से ख़बरदार रहना जो तुम्हारे पास भेड़ों की शक्ल में आते हैं, मगर बातिन में फाड़ने वाले भेड़िये।"

बाइबल ही बताती है कि हज़रत ईसा अलै0 की यह तालीमात उनके लिये हैरानकुन थीं: "जब यसूअ़ ने बात ख़त्म की तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसकी तालीम से हैरान हुई क्योंकि वह उनके फ़क़ीहों की तरह नहीं बल्कि साहिबे इख़्तियार की तरह उनको तालीम देता था।" यह इबारतें वज़ाहत कर रही है कि ज़माने के मरूजा मज़हबी तबक़े की तालीमात के मुक़ाबले में हज़रत ईसा अलै0 की तालीमात मुन्फ़रिद क़सम की (इल्हामी) थीं।

नोटः बाइबल में जाबजा "झूटे नबी" की इस्तिलाह इस्तेमाल होती है। इस बारे में ज़ह्न में रहे: "यहूद की इस्तिलाह में नुबुवत, इस्लामी नुबुवत से बिल्कुल अलग मफ़हूम रखती है। उनके यहां यह ज़रूरी नहीं कि नबी का तअ़ल्लुक़ अल्लाह के साथ जुड़ा हुआ और मुस्तहकम हो या उसकी निस्बत मअल्लाह क़वी हो। "वह नबी या नुबुवत के क़ाइल सिर्फ़ उनके लुग़वी मअ़ना में थे। नबी उनके यहां पेशगोई करने वाला ज़्यादा से ज़्यादा यह कि वह साहिबे कश्फ़ भी हो, जैसे मुश्रिक क़ौमों में काहिन। उनके यहां नबी और काहिन की इस्तिलाह में साथ साथ चलती थीं।"

इन तालीमात को हवसे ज़र के मारे दौलतमंद मज़हबी ठेकेदार क्योंकर क़बूल करते, उनकी हवसे ज़र का आलम यह था कि मज़हबी इजारादारों से मिली भगत करके यह ख़ुद हैकल सुलैमानी में ख़रीद व फ़रोख़्त के बाज़ार लगाते थे। चुनांचे एक मौक़ा पर "यसूअ़ ने ख़ुदा के हैकल में दाख़िल होकर इन सबको निकाल दिया, जो

हैकल में खरीद व फ़रोख़्त कर रहे थे और सराफ़ों के तख़्ते और कबूतर फ़रोशों की चौकियां उलट दें और उनसे कहा कि मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा, तुम उसे डाकूओं की खोह बनाते हो।" हवसे ज़र की यह इंतिहा थी और मज़हबी तबके की बदकिर्दारी के उरूज का यह आलम था कि बदअख़्लाक़ी और बदकिर्दारी की तालीम देना दौलत कमाने का बड़ा ज़रीआ बन चुका था। "बहुत से लोग सरकश, यहूदा और दग़ाबाज़ हैं। ख़ास कर मख़्तूनों में से उनका मुंह बंद करना चाहिये। यह लोग नाजाइज़ नफ़ा की ख़ातिर नाशाइस्ता बातें सिखा कर घर के घर तबाह देते हैं।" पाल का यह ख़त टाइट्स के नाम हज़रत ईसा अलै० के बाद इस कौम की अख़्लाक़ी बदहाली की तस्वीर पेश करता है।

बदकिर्दारी व बदअख़्लाक़ी को ज़रीअए आमदनी बनाने वाली क़ौम आज अगर फ़िल्म इंडस्ट्री (ख़ास तौर पर अमरीका की हालीवुड) और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर क़ाबिज़ होकर "फ़ोक्स लाइफ़" (Fox Life) नाम से चैनल चलाकर वह सब दिखाए जो नहीं दिखाया जाना चाहिये। इंटरनेट पर फ़ह्श फ़िल्में दिखाकर रहा अख़्लाक़ियात का जनाज़ा निकाला जाए तो यह उनके माज़ी का तसलसुल है। उनके यहां यह कोई नई बात नहीं है।

हज़रत ईसा अलै० ने अपनी तालीमात में इन मज़हबी बदकिर्दारों की सबसे ज़्यादा मज़म्मत की है जो अलफ़ाज़ की हद तक तो तालीमी सरगर्मियों में हिस्सा लेता था लेकिन अमली तौर पर बदकिर्दार था। इन मज़हबी बयानात की चंद झलकियां मुलाहज़ा हों:

(1)......"फ़कीह और फ़रीसी मूसा अलै० की गद्दी पर बैठे हैं। पस वह जो कुछ तुम्हें बताएं वह सब करो लेकिन उनके से काम न करो क्योंकि वह जो कहते हैं करते नहीं हैं।

(2)......वह अपने तअवीज़ बड़े बताते हैं और अपनी पोशाक के किनारे चौड़े रखते हैं और ज़्याफ़तों में सदरे नशीन और इबादतगाहों में आला दर्जे की कुर्सियां और बाज़ारों में सलाम और आदमियों से रिब्बी कहलाना नापसंद करते हैं।

(3)......ऐ रियाकार फ़क़ीहियो और फ़रीसियो! तुम बेवाओं के घरों को दबाते हो और दिखावे के लिये नमाज़ों देते हो, तुम्हें ज़्यादा सज़ा होगी। मज़कूरा इबारात से बख़ूबी अंदाज़ा होता है कि ग़रीब तबक़ा के मआशी इस्तिहसाल में यह लोग बराबर के शरीक थे।

(4)......उनके मुआशरे में पीरी मुरीदी एक कारोबार बन चुकी थी जिसका बुन्यादी मक़्सद मज़हब के नाम पर बदअमली फैलाना था। ऐ रियाकार फ़क़ीहो और फ़रीसियो! तुम पर अफ़सोस कि एक मुरीद करने के लिये तरी और ख़ुश्की का सफ़र करते हो और जब मुरीद हो चुकता है तो उसे अपने से दूना जहन्नम का ईंधन बनाते हो। ख़त कुशी इबारत साफ़ ज़ाहिर करती है कि मज़हब के नाम पर बेअमली फैलाई जा रही थी।

(5)......क़ब्रें बनाना और उनको आरास्ता करना भी उनकी मज़हबी तालीमात का हिस्सा था। चुनांचे बाइबल ही का बयान है: "ऐ रियाकार फ़क़ीहो और फ़रीसियो! तुम पर अफ़सोस कि नबियों की क़ब्रें बनाते और रास्त बाज़ों के मक़बरे आरास्ता करते हो।" इस शैतानी निज़ाम के मरकज़ी किर्दार यह मज़हबी लोग पर्ले दर्जे के बदकिर्दार होते थे। "ऐ रियाकार फ़क़ीहो और फ़रीसियो! तुम पर अफ़सोस! कि तुम सफ़ेदी भरी क़ब्रों की मानिंद हो जो ऊपर से तो ख़ूबसूरत दिखाई देती हैं, मगर अंदर मुर्दों की हड्डियों और नजासत से भरी हैं। इस तरह तुम भी ज़ाहिर में तो लोगों को रास्त बाज़ दिखाई देते हो, मगर बातिन में रियाकार और बेदीन हो।"

(6)......यहां की सोसाइटी में मौजूदा दौर के औक़ाफ़ से मिलता जुल्ता एक मुहक्कमा था जो मअ़बदों से टेक्स वसूल करता था। यह टेक्स एक मज़हबी टेक्स भी था जो आमदनी का 1/10 होता था। इस टेक्स की अदाईगी के बाद अहकामे शरइया की पाबंदी ज़रूरी ख़्याल न की जाती थी। "ऐ रियाकार फ़क़ीहो और फ़रीसियो! तुम पर अफ़सोस! कि पौदीना, सौंफ़ और ज़ीरा पर तोदह यकी (अश्र:10 फ़ीसद) देते हो पर तुम ने शरीअ़त की ज़्यादा भारी बातों यअ़नी इंसाफ़, रहम और ईमान को छोड़ दिया है।" (यह तमाम मज़्म्मती बयानात "मत्ती" के बाब 23 से लिये गए हैं।)

इन दो वुजूहात की बिना पर हज़रत ईसा अलै0 के ख़िलाफ़ मज़हबी तबक़े के महाज़ आराई फ़ित्री बात थी। चुनांचे यह तबक़ा आप को ख़त्म कराने की तजावीज़ सोचने लगा।

हज़रत ईसा अलै0 को किस जुर्म में फांसी दी गई? यहूदी और ईसाई लिट्रेचर में इस बारे में बयानात मुख़्तलिफ़ हैं। बाइबल के मज़कूरा बाला बयान के मुताबिक़ हज़रत ईसा अलै0 का जुर्म यह है कि आपने हैकल को गिराने की बात की थी जबकि यहूदियों की सबसे मुअ़तबर किताब "तालमूद" (Talmud) (यहूदियों की यह किताब कई अज्ज़ा पर मुशतमिल है और जुज़्व के आगे अज्ज़ा हैं और कुल 63 अज्ज़ा पर मुशतमिल है। यह किताब दस ज़ख़ीम जिल्दों में छपी हुई है। एक सफ़्हा अबरानी ज़बान में और दूसरा अंग्रेज़ी में है। यह किताब उनके नज़दीक बाइबल से ज़्यादा मुअ़तबर है।) के मुताबिक़ यसूअ़ ख़ानदानी लिहाज़ से गिरा हुआ आदमी, जादूगर था (जादू) सिखाता था। यहूदी क़वानीन के मुताबिक़ जादूगरी की सज़ा फांसी है, इंसाफ़ के तमाम तक़ाज़े पूरे करके उसको फांसी लगाया गया है।

तालमूद का यह बयान सरासर झूट है। फांसी की असल वजह यह दो बातें यअ़नी हैकल को गिराने का दावा और मज़हबी तबके की इस्लाह था। हक़ीक़त यह है कि किसी मुआशरे के मज़हबी तबके की इस्लाह सबसे ज़्यादा मुश्किल काम होता है। हज़रत ईसा अलै0 को मालूम था कि यह लोग माज़ी में अंबिया के साथ जो सुलूक करते रहे हैं, मुझसे भी यह सुलूक करेंगे। अंबिया की ख़ुदादाद फ़क़ीहाना और हकीमाना बसीरत हालात को सबसे ज़्यादा समझने वाली होती है। बाइबल बताती है कि हज़रत ईसा अलै0 को अंदाज़ा हो चुका था कि उनके साथ क्या होने वाला है। इसलिये अपने मस्लूब होने से पहले यह बता दिया था कि मुसलसल अल्लाह की नाफ़रमानियों, क़त्ले अंबिया और अख़्लाक़ी गिरावटों के बाइस यरोशलम बमअ़ हैकल ख़त्म होने वाला है। "सच कहता हूं कि यहां किसी पत्थर पर पत्थर बाक़ी न रहेगा जो गिराया न जाएगा।"(93) हज़रत ईसा अलै0 की यह पेशनगोई यूं पूरी हुई कि आप के बाद रूमियों ने उन पर अपने मज़हबी क़वानीन जबरन नाफ़िज़ किये और हुक्म दिया गया कि दीगर रिआया की तरह यहूदी भी शहंशाह की इबादत क्या करें। जिस पर 96 ईसवी में यहूदियों ने आज़ादी की तहरीक शुरू की। यह तहरीक इलाक़े में रूमी इक़्तिदार के लिये ख़तरा बनी तो रूमी हुक्मरान नाइट्स ने 70 ईसवी में हमला करके पूरे शहर की ईंट से ईंट बजा दी और हैकल को बुन्यादों से ख़त्म कर दिया।

इस सूरते हाल ने यहूदियों को फ़लस्तीन से दूसरे इलाक़ों की तरफ़ हिज्रत करने पर मजबूर कर दिया। कुछ लोग रूस और यूरप की तरफ़ हिज्रत कर गए। कुछ लोग स्पेन (मुस्लिम सलतनत) की तरफ़ निकल गए और कुछ अरब इलाक़ों में जा बसे जिनमें से तीन

कबीलों बनू कैनुकाअ़, बनू नज़ीर और कुरैज़ा ने मदीना मुनव्वरा में सुकूनत इख़्तियार की।

आंहज़रत सल्ल0 के दौर में बनू नज़ीर ने आप सल्ल0 को शहीद करने की कोशिश की। इस बिना पर मदीना से निकाल दिये गए। फ़त्हे ख़ैबर के मौक़ा पर एक यहूदिया ने आंहज़रत सल्ल0 को दावत पर बुला कर खाने में ज़हर देने की कोशिश की जिसके नतीजे में आप सल्ल0 के एक सहाबी शहीद हो गए जिनके क़िसास में उस यहूदिया को क़त्ल किया गया।

दौरे सहाबा, उम्वी दौर और अब्बासी दौर में यह लोग मुस्लिम इलाक़ों में निहायत अमन और सुकून से रहे। यह एहसान फ़रामोश अपनी इस बेख़ानुमाई (Diaspora) के दौर में मुस्लिम इलाक़ों में हुकूमत के ईवानों से लेकर कारोबारी दुनिया में मुकम्मल दख़ील थी। इस्लामी रियासत में यहूदियत, ईसाइयत और इस्लाम छः सदियों से ज़्यादा अर्सा अमन और हमआहंगी से रहे। बाक़ी यूरप की तरह उन्हें जुल्म व सितम का निशाना नहीं बनना पड़ा, लेकिन जब मुस्लिम इक़्तिदार का ख़ातिमा हुआ तो ईसाइयों ने इन लोगों को जबरन ईसाई बनाया फिर क़त्ल किया गया। ईसाइयत क़बूल करने वाले यह यहूदी "कनवेसस" (Canvesos) कहलाए लेकिन आम ईसाई उन्हें नफ़रत से "मारानोस" ख़िन्ज़ीर कहते थे।

उस्मानी तुर्कों के दौर में भी मुसलमानों की मेहमान नवाज़ी का लुत्फ़ लेने वाली इस क़ौम ने मुसलमानों को यह सिला दिया कि उस्मानी ख़लीफ़ा सुल्तान मुहम्मद अरबअ़ 1687 ई0 के दौर में यहूदियों ने शबीताई ज़ेवी की क़्यादत में रियासत के ख़िलाफ़ बग़ावत की। जब उसे गिरफ़तार करके सुल्तान के सामने पेश किया गया तो यह मुसलमान हो गया लेकिन अंदरूनी तौर पर यह यहूदी ही रहा।

इसके मरने के बाद इसके पैरूकारों में से दो सौ यहूदी ख़ानदानों ने ज़ाहिरन इस्लाम कबूल किया लेकिन अंदरूनी तौर पर यह यहूदी ही रहे। यह लोग मुसलमानों के साथ मस्जिदों में नमाज़ पढ़ते लेकिन ख़ुफ़िया तौर पर अपने मअ़बदों (Synogoge) में इबादत भी करते। यह गिरोह "दो नुमा" (Donmeh) कहलाए (मुस्तफ़ा कमाल अतातुर्क और उसके साथी इसी तहरीक के रुक्न थे। इसी फ़िर्क़ा में एक और गिरोह पैदा हुआ जिसका सरबराह जैकब फ़्रींग 1791 ई0 था। उसने जिंसी आज़ादी का नारा लगाया। आज के दौर के बहुत से जदीद रुजहानात, सैक्यूलरिज़्म, तशकीक पसंदी, दुह्रियत, अक़ल्लियत पसंदी, मनफ़ियत पसंदी, तकसीरियत और अक़ीदे को निजी मुआमला समझाने के पेश रू यही यहूदी हैं।)

अपनी इस बेख़ानमानुमाई (Diaspora) जिसे कुर्आन ने "ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ" कहा है, के दौर में यह क़ौम एक तरफ़ मुस्लिम इलाक़ों में बड़े मज़े से रह रही थी जबकि यूरप में उसके साथ इंसानियत सोज़ सुलूक हो रहा था।

तारीख़ी बदकिर्दारियों की हामिल यह क़ौम माज़ी की तरह आज भी हर जगह, हर इलाक़े और हर क़ौम के यहां नफ़रत की नज़र से देखी जाती है, जिसका इक़रार यहूदी क़ौम के नजात दहिंदा "थ्योडोर हर्टज़ल" (Theodore Hertzel) को भी था। हर्टज़ल इस बात का शाकी रहा है कि आख़िर पूरी दुनिया में हम से नफ़रत क्यों की जाती है? हर्टज़ल को यक़ीनन इसका जवाब भी मालूम था और वह था उनकी यह तारीख़ी बदकिर्दारियां और एहसान फ़रामोशियां जो आज कुतुबे तारीख़ व मज़ाहिब में पूरी तरह महफ़ूज़ हैं जिसकी वजह से वह अपने (बनी इस्राईल) दर्मियान मबऊस होने वाले हर नबी की ज़बान से लअ़नत के मुस्तहिक़ बनते रहे हैं। हज़रत मूसा अलै0 से

लेकर आज तक दुनिया की पूरी क़्यादत मा सिवाए साबिक़ा अमरीकी सदर बुश के उनको नफ़रत की नज़र से देखती है।

हमने बनी इस्राईल का यह सारा किर्दार उनके मज़हबी लिट्रेचर की रौशनी और हवालाजात से बयान किया है। अगर इसकी पूरी तफ़सील को समोया जाए तो इनका क़ौमी मिज़ाज दो ख़साइस पर मब्नी दिखाई देता है: "एक नस्ली तअ़ल्ली, दूसरे हवसे ज़र"। माज़ी की तारीख़ हो या हाल का ज़िक्र, यह क़ौम जिस इलाक़े और जिस मुल्क में गई अपने नस्ली बरतरी के ज़अ़म की बिना पर अक़ल्लियत में होने के बावजूद वहां की तहज़ीब को क़बूल करने के लिये बजाए उन्होंने वहां अपना कल्चर थौपने की कोशिश की।

हवसे ज़र की ख़ातिर उनके अख़्लाक़ी ज़ाब्ते भी बदलते रहते हैं। माज़ी में भी ऐसा होता रहा है और अब अमरीका में भी यही हो रहा है। दौलत की ख़ातिर वहां हर बुराई फैला रहे है। 1920 ई0 में हुन्री फ़ोर्ड अव्वल ने अमरीका में यहूदी तअ़ल्ली से ख़बरदार करने के लिये "हमारी बैनुल अक़्वामी यहूदियत" (Our International Jews) लिखी। इसमें वह उनके मिज़ाज की इस ख़ासियत का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं:

"The claim made for the jews that they are sober race may be true that has not obscured two facts concerning them that they usually constitute the liquar dealers of countries where they live in numbers and that in the United States they were only the race exempted from the operation of the prohibition law."

आज इस मुल्क की हवसे ज़र का यह आलम है कि दुनिया में सबसे ज़्यादा जिस मुल्क को अमरीका मदद मुहय्या करता है वह इस्राईल है। चुनांचे "रोन डेविड" मशहूर अमरीकी मुसन्निफ़ लिखता है: "अमरीका हर साल इस्राईल को 3 अरब डालर फ़ंड मुहय्या करता है। यह इम्दादम फ़ी इस्राईली 1000 और फ़ी इस्राईली सिपाही 9000 डालर बनती है। इस रक्म में इस्राईल को मुहय्या किया जाने वाला अस्लहा शामिल नहीं है।" इस तरह यह क़ौम आज अमरीकी अवाम पर बोझ बनी हुई है। हवसे ज़र ही की वजह से इस्राईल औरतों की ख़रीद व फ़रोख़्त का एक बड़ा मर्कज़ है। लाहौर से शाए होने वाले उर्दू हफ़्त रोज़ा "निदाए मिल्लत" ने लंदन से शाए होने वाले मशहूर अरबी जरीदे "अलमुजल्ला" के हवाले से एक मज़मून में बयान किया है: "यहां (इस्राईल) में पूरी दुनिया बिलख़ुसूस रूस से लड़कियां लाई जाती हैं जिनकी क़ीमत एक हज़ार से चार हज़ार डालर तक होती है। यहां औरतें किराए पर भी मुहय्या होती हैं। 150, 300 और 5 हज़ार इस्राईल करंसी "शैकल" (Shequel) के आधे घंटे के लिये किराए पर और मिल जाती है जबकि मंशियात, एड्ज़ और मनी लांडरिंग का भी यह मुल्क एक बड़ा मरकज़ है।" हवसे ज़र ने इस मुल्क के मुआशरे का यह रंग बना दिया है। यूं यह मुल्क अपने तीन ख़साइस की बिना पर दुनिया की अख़्लाक़ियात की तबाही का सामान पैदा कर रहा है। इस मुल्क की क़त्ल व ग़ारत गरी की पालीसी भी कोई पोशीदा नहीं है। इस्राईल की इस क़त्ल व ग़ारत गरी का एतिराफ़ ख़ुद इस्राईली अह्ले इल्म को भी है। प्रोफ़ेसर "शाहिक" (Shahik) तिल अबीब यूनीवर्सिटी कैमिस्ट्री के प्रोफ़ेसर हैं। उन्होंने अपनी किताब "ज्यूश हिस्ट्री एण्ड ज्यूश स्टेट" (Jewish History and Jewish State) में अरबों पर

इस्राईली मज़ालिम की दासतानें तफ़सील से लिखी हैं। वह लिखते हैं कि यहूदियों पर सख़्त पाबंदी है कि यह ग़ैर यहूदियों को ज़मीन मुज़ारअ़त पर भी नहीं दे सकते। वहां तअ़स्सुब का यह आलम है:

"A jew could not even drink a glass of water in the home of a non-jew."

फ़लस्तीनियों के क़त्ले आम के वारे में मअ़रूफ़ इस्राईली मुअर्रिख़ "ईलान पाप" (Ilan Pape) जो 2007 ई0 तक हीफ़ा यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर रहे हैं, की किताब "The Ethnic cleansing of Palist" में दर्ज है: "दिसम्बर 1947 ई0 से 1949 ई0 तक फ़लस्तीनियों का मुसलसल 31 बार क़त्ले आम हुआ। यहूदियों ने फ़लस्तीनियों की 418 वस्तियां सफ़्हए हस्ती से मिटा दीं। माहनामा मज़कूरा मुअर्रिख़ के हवाले से मज़ीद लिखता है कि मौसूफ़ ने जनवरी 2008 ई0 में "मांचिस्टर मेट्रो पोलीटियन" यूनिवर्सिटी में ख़िताब करते हुए कहा था:

"जिस तरह फ़लस्तीनियों का नस्ली सफ़ाया हुआ है वह क़ाबिले फ़रामोश है। दूसरी जंगे अज़ीम के वाद इस्राईल ने एक सोचे समझे मंसूबे के तहत क़त्ले आम करके निस्फ़ से ज़्यादा फ़लस्तीनियों को उनके घरों से निकाला है जो अब दरवदर की ठोकरें खाने पर मजबूर हैं। यह वहशतगर्दी की तारीख़ का वह तसलसुल है जो अंबिया के क़त्ल से शुरू कर फ़लस्तीनियों के क़त्ल तक आ पहुंचा है। अपने अंबिया की क़ातिल क़ौम ग़ैर यहूदी नस्ल के लोगों की तरफ़ इंसान दोस्ती का हाथ कैसे बढ़ा सकती है? यह सोचना भी हिमाक़त है।"

अख़्लाक़ी गिरावट के लिहाज़ से भी इस्राईल दुनिया के मुमालिक में सफ़े अव्वल पर है। आज इंसानियत जिस बदअख़्लाक़ी व बदकिर्दारी की तरफ़ जारी है इसमें भी मुकम्मल इस्राईल का हाथ है।

यहूदी नेटवर्क "फ़ोक्स लाइफ़" (Fox Life) चैनल के शर्मनाक प्रोग्राम और इंटरनेट पर हयासोज़ फ़िल्में यहूदी बदअख़्लाक़ी की ज़िंदा तस्वीर हैं। तिल अबीब हमजिंस परस्ती का दुनिया में एक बड़ा मर्कज़ है। यहां का "Gay Pride Centre" मशहूर है जहां हर साल एक लाख "Gay" जुलूस निकालते हैं।

इस्राईल में शराबसाज़ी की सनअ़त बड़े ज़ोरों पर है। तक़रीबन दो दर्जन कारख़ाने इस्राईल में शराब बनाते हैं। यहां की तैयारकर्दा शराब, फ़्रांस जो शराबसाज़ी में सबसे आगे है, की शराब से ज़्यादा पसंद की जाती है। शराब बनाने के लिये "बूतीक शराब साज़ कारख़ाने" (Boutique Wineries) क़ाइम किये गए हैं। इनमें मशहूर बूतीक यरोशलम के मग़रिब में जूडया के पहाड़ों में है। इसकी तैयार कर्दा शराब को मुसलसल तीन साल "वाइन आफ़ दी इयर" (Wine of the Year) का एज़ाज़ मिल चुका है।

फ़ह्हाशी के फैलाव के लिये "Enlightenment" की इस्तिलाह यहूदी तारीख़ की ईजाद है। जिसके मुताबिक़ अट्ठारवीं सदी में मशरिक़ी यूरप के "आर्थोडिक्स" यहूदियत की तहरीक बराए तहफ़्फ़ुज़ यहूदी तहज़ीब उठी, तो इसी दौर में इसके बरअक्स मग़रिबी यूरप में यहूदियों में अख़्लाक़ियात से आज़ादी की तहरीक चली। इस तहरीक का करता धरता एक यहूदी "मूसा मेंदलिसन" (Moses Mondelessohn) 1786 ई० था:

"As such Mendelssohn became a symbol and reform and liberalism-a reform of belief and in religious matters."

इस तहरीक को मज़ीद तक़वियत इंक़िलाबे फ़्रांस और नेपोलियन की फ़ुतूहात ने मुहय्या की जिसका नतीजा यह हुआ कि यहूदियों ने

अपनी मुआशरती हैसियत को बेहतर बनाने के लिये अख़्लाक़ी आज़ादी, आज़ाद ख़्याली और रौशन ख़्याली की बुन्याद पर "रिफ़ार्म जूडाइस्म" (Reform Judaism) के नाम से यहूदी मज़हब में एक तबदीली क़बूल की। इस रौशन ख़्याली के नतीजे में यहूदी सोसाइटी में तीन बड़े काम हुएः

(1)......मज़हब और मआशिरत दो अलग अलग चीज़ें तसलीम की गईं। इसके मुताबिक़ मज़हबी लिहाज़ से यहूदियत का मुकम्मल वफ़ादार रहते हुए मग़रिबी तहज़ीब को मुकम्मल तौर पर अपना लिया गया। यही चीज़ अब मुसलमानों में पैदा करने की कोशिश की जा रही है।

(2)......यहूदी लिट्रेचर का दूसरी ज़बानों में तर्जुमा किया गया। इसके तहत मुसलमानों को यह तरग़ीब देना है कि वह अपनी तमाम मज़हबी कुतुब बशमूल क़ुर्आन को सिर्फ़ दीगर ज़बानों में शाए किया जाए और अस्ल टेक्स्ट से जान छुड़वाई जाए। इसी बिना पर आजकल सिर्फ़ तराजमे क़ुर्आन शाए करने की मुख़्तलिफ़ जानिब से कोशिशें हो रही हैं।

(3)......ख़्वातीन को भी सूमआ में रब्बी के तौर पर क़बूल किया गया। बिल्कुल इसी अंदाज़ में मुस्लिम सोसाइटी में भी इस क़िस्म की कोशिश की जा रही है कि मसाजिद में ख़्वातीन अइम्मा रखी जाएं। क़ारईन को याद होगा कि कुछ अर्सा क़ब्ल अमरीका की किसी मस्जिद में पैंट शर्ट में मलबूस एक ख़ातून ने इमामत कराई थी जिसकी तसावीर बमअ़ ख़बर अख़्बारात में छपी थीं। यहां यह बात ज़ह्न में रहे कि हमारे यहां बअ़ज़ नाम निहाद मज़हबी तन्ज़ीमें तबलीग़े दीन के बहाने औरतों में दरूसे क़ुर्आन का एहतिमाम करती हैं और इसमें ख़्वातीन की नमाज़ बाजमाअ़त का एहतिमाम किया

जाता है। यह अस्ल मक़्सद तक पहुंचने का एक ज़रीआ है जिसे की ख़ातिर इन तन्ज़ीमों को इस्तेमाल किया जाता है। इन तमाम मअरूज़ात के मुतालआ से पता चलता है:

1-अल्लाह के अहकाम से अलल एलान रूगर्दानी करना इस क़ौम का शेवा है। इस सिलसिले में यह क़त्ल अंबिया से भी नहीं चूके।

2-हवसे ज़र की बिना पर अख़्लाक़ी और बदकिर्दारी फैलाना उनके क़ौमी किर्दार का हिस्सा है। आज भी यहूदियों के ज़राए अबलाग़ इस शैतानी मुहिम में लगे हुए हैं।

3-मुख़्तलिफ़ आलमी इदारों और मल्टी नेशनल कम्पनियों के ज़रीए दुनिया की दौलत को समेटा जा रहा है।

4-पूरी दुनिया के किसी भी इलाक़े में होने वाली क़त्ल व ग़ारत गरी में उनका पूरा पूरा हाथ होता है। इस सिलसिले में "जोन परकान्स" (John Parkans) की किताब "Confession of an Ecocnomic hit man" और "ऐंडरियू केरिंगशन" (Andrew Carringtion) की "Synogage of Shatan" का मुतालआ ज़रूरी है।

इस्राईल की यह आलमी दहशतगर्दी ख़त्म नहीं हुई है। यह एक आतिशा से अब दो आतिशा होती जा रही है। हालात बताते हैं कि मुस्तक़बिल में उसने दो काम करने हैं:

(1)......इनमें एक तअमीर हैकल है जिसकी ख़ातिर वह आलमी अमन को भी भस्म कर देगा।

(2)......और दूसरे ऐसा आलमी सहीवनी निज़ाम जिसका इक़्तिदार बराहे रास्त उसके हाथ में हवस की ख़ातिर अक़्वामे मुत्तहिदा को एक आलमी हुकूमत के तौर पर तसलीम कराया

जाएगा, मगर इससे पहले वह तअ़मीर हैकल के ज़रीए मुस्लिम दुनिया का रद्दे अमल देखना चाहता है। उनको इस आलमगीर सहीवनी इक़्तिदार की नवेद बाइबल जो उनकी बदकिर्दारियों की मुस्लमा मुक़द्दस दासतान है, बताती है जिसके मुताबिक़: "उनका बादशाह (मुसलमानों के मुताबिक़ दज्जाल) गधे पर सवार आ रहा है। जो क़ौमों के दर्मियान इंसाफ़ करेगा वह समंदर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हुकूमत करेगा। दरयाए फ़ुरात से ज़मीन के आख़िरी सिरे तक उनकी हुक्मरानी होगी। वह (यहूदी क़ौम) अपने दुशमनों को बर्बाद करेंगे।" यह दौर बहुत अच्छा और ख़ूबसूरत होगा। उनके नौजवान अनाज और शराब पर तवाना होंगे। यह है वह नवेदा जिसकी ख़ातिर इस्राईल तअ़मीरे हैकल चाहता है। इस्राईल के इस प्रोग्राम की तफ़सीलात देखनी हों तो सदर जान्सन के दौर में अमरीकी व्हाइट हाउस की तर्जुमान "ग्रेस हॉलसेल" (Grace Haulsell) की किताब "Forcing God's Hando" का मुतालआ़ अज़बस ज़रूरी है। मुहतरमा ने इस किताब की तकमील के लिये बज़ाते ख़ुद इस्राईल का दौरा किया और इस बारे में वहां के मज़हबी और सियासी अरबाबे इक़्तिदार के ख़्यालात सुने और वह हैरत ज़दा हैं कि तमाम यहूदी और Evenglican ईसाई मस्जिदे अक़्सा को गिरा कर हैकल की तअ़मीर का तहिया किये हुए हैं।

मुहतरम क़ारईन! इससे आपने अंदाज़ा कर लिया होगा कि हैकल की तअ़मीर उनकी ख़ुशहाली और माद्दी तरक़्क़ी नीज़ मज़हबी शिआ़र की बहाली के लिये ज़रूरी है और हर क़ौम को अपनी ख़ुशहाली, अपनी माद्दी तरक़्क़ी और अपने मज़हबी कल्चर की बक़ा और इर्तिक़ा का हक़ हासिल है। इस्राईल को बिला शुबा इन तमाम

का हक़ हासिल है, लेकिन अरब इलाक़ों पर ग़ासिबाना क़ब्ज़ा करके नहीं। क्या किसी दूसरी क़ौम के मज़हबी शआइर को नुक़्सान पहुंचाने का भी हक़ हासिल है? यक़ीनन नहीं है। इस क़िस्म का हक़ अक़्वामे मुत्तहिदा के बुन्यादी हुक़ूक़ के ज़ाब्तों से लेकर किसी मुल्क का कोई ज़ाब्ता नहीं देता। इस मक़्सद के लिये इस्राईल मस्जिदे अक़्सा को शहीद करना चाहता है और मस्जिदे अक़्सा की शहादत में रुकावट बनने वाले या उसकी हिफ़ाज़त के अवामिल को ख़त्म किया जा रहा है। मुसलमानों का बाहमी इत्तिफ़ाक़ इसमें बड़ी रुकावट था जिसको ख़त्म करने के लिये मुसलमानों में अरब, अजम की तक़सीम पैदा की कई। इस वक़्त मस्जिदे अक़्सा के तहफ़्फ़ुज़ में सबसे बड़ी रुकावट एक मुस्लिम ऐटमी मुल्क (पाकिस्तान), पाकिस्तानी क़ौम और अफ़्वाजे पाकिस्तान है। इस वक़्त पाक अफ़ग़ान सरहदी इलाक़े में कुछ कराया जा रहा है वह पाकिस्तान की ऐटमी सलाहियत पर क़ब्ज़ा करने के लिये कराया जा रहा है। अह्ले पाकिस्तान के मोराल को गिराने के लिये मम्लिकते ख़ुदादे पाकिस्तान की ख़ातिर कुछ कर गुज़रने वालों को सामाने इबरत- बनाया है। भुट्टु मर्हूम, ज़िया शहीद, मुहसिने पाकिस्तान डाक्टर अब्दुल क़दीर ख़ान वग़ैरा के हालात हमारे सामने हैं।

आज की दुनिया के फ़िरऔनों को अल्लाह तआला का यह फ़ैसला ज़ह्नों में रखना चाहिये जो उसने इस क़ौम के बारे में बाइबल और क़ुर्आन में बयान किया है। आख़िरी फ़ैसले इस ख़ालिक़ व मालिक और हाकिमे काइनात ही के चलते हैं। इस सूरतेहाल में देखना यह है कि मम्लिकते ख़ुदादाद पाकिस्तान के अस्ल अह्ले इक़्तिदार क्या करते हैं? यहां पाकिस्तान के अवाम मज़हबी और

सियासी तबके की मिली ग़ैरत और सियासी समझ बोझ का इम्तिहान है।

पेअ़मारे हरम! बाज़ बा तअ़मीरे जहां ख़ेज़
अज़ ख़्वाबे गिरां, ख़्वाबे गिरां, ख़्वाबे गिरां ख़ेज़

दज्जाली रियासतः मग़रिबी मुफ़क्किरीन की नज़र में

"आलमी दज्जाली रियासत" का क़याम और अहदाफ़ एक ग़ैर मुस्लिम सहाफ़ी के ज़ावियए नज़र से

क़ारईने किराम! अगले सफ़्हे में आप जो तहरीर पढ़ने जा रहे हैं, यह कैनेडा से तअल्लुक़ रखने वाले एक बाहिम्मत सहाफ़ी की तहरीर है जिसने ख़तरात मौल लेकर इस्राईल का पुर ख़तर सफ़र किया और वापस आकर मग़रिबी दुनिया की आंखें खोल देने वाली एक ज़ोरदार मअलूमाती किताब लिखी। किताब का नाम "नया आलमी निज़ाम और दज्जाल का तख़्त" (The New World Order Land of Thorn of Antichrist) है। नाम ही से आप समझ गए होंगे कि "नफ़रत की रियासत" इस्राईल के बारे में यह ख़्याल कि वह दज्जाल की आलमी हुकूमत का पायए तख़्त है, सिर्फ़ मुस्लिम ज़अमा का नहीं, बहुत से मग़रिबी दानिश्वर भी उसे इसी नज़र से देखते हैं। इस किताब की तलख़ीस इस ग़र्ज़ से पेश की जा रही है कि हमारे क़ारईन इस हक़ीक़त तक पहुंच सकें कि ग़ैर मुस्लिम अहले मग़रिब में से भी कुछ लोग ऐसे हैं जो हालात व वाक़िआत को सहीवनी ऐनक की नज़र से नहीं बल्कि हक़ीक़त तक रसाई के शुऊर से देखते हैं और दुनिया में पेश आने वाले मख़सूस हवादिस के पीछे कारफ़रमा ख़ुफ़िया शैतानी कुव्वतों को पहचानने की कोशिश करते हैं। यह दिलचस्प तलख़ीस आपको बताएगी कि मग़रिब के बाशऊर

दानिश वर जो सहीवनियत के असर से अपने आप को बचाए हुए हैं, दुनिया को वही चीज़ बावर कराने की कोशिश कर रहे हैं जिसकी तरफ़ मुस्लिम मुफ़क्किरीन मुसलसल तवज्जोह दिला रहे हैं। यह अलग बात है कि दोनों के अंदाज़े फ़िक्र और अंदाज़े बयान में फ़र्क़ है। आख़िर क्यों न हो? जबकि एक को वह्य के सच्चे इल्म से रुश्द व हिदायत और इस्तिफ़ादे का मौक़ा दस्तियाब है और दूसरा महज़ अपनी अक़्ल और बसारत से धुंदले शीशे के पार देखने की कोशिश कर रहा है। इस मअ़रकतुल आरा किताब के ख़ुलासे से क़ारईन को यह भी पता चलेगा कि मुशाहदा और तहक़ीक़ करने वाला मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, अगर उसकी फ़िक्रे रास्त सिम्त में सफ़र कर रही है तो उसके डांडो आगे जाकर ज़रूर आपस में मिल जाएंगे और इंसानी फ़ितरत थोड़े से फ़र्क़ के साथ एक ही नतीजे तक जा पहुंचेगी। पढ़िये और देखिये कि ग़ैर मुस्लिम मुफ़क्किरीन मौजूदा हालात को किस ज़ाविये से देखते और मुस्तक़बिल क़रीब में दुनिया को पेश आने वाले वाक़िआत को किस अंदाज़ में बयान करने की कोशिश करते हैं?

हम पहले मुसन्निफ़ का तआ़रुफ़ देंगे फिर किताब का तआ़रुफ़ी ख़ुलासा पेश करेंगे। इसके बाद आप अस्ल किताब की तलख़ीस मुलाहज़ा कर सकेंगे। याद रहे कि मुसन्निफ़ मग़रिबी क़लमकार है लिहाज़ा वह "मुसलमानों" के बजाए "अरब" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करता और फ़लस्तीन के मअ़रके को इस्लाम और यहूदियत के बजाए "अरब और इस्राईल तनाज़ा" के तनाज़ुर में देखता है। इसी तरह वह हज़रत ईसा अलै0 के लिये वह अलक़ाब इस्तेमाल नहीं करता जो मुसलमानों का ख़ास्सा हैं। यह अलक़ाब राक़िम ने "मुरब्बा क़ौसैन" में बढ़ाए हैं।

मुसन्निफ़ का तआरुफ़:

मुसन्निफ़ का नाम "राबर्ट ओडर्सकोल" है। 1938 ई0 में पैदा हुए और 1996 ई0 में इंतेक़ाल हुआ। उनका आबाई वतन केनेडा है और यह पेशे के एतिबार से मुअ़ल्लिम हैं। इंगलैंड, आयरलैंड और केनेडा की यूनीवर्सिटियों में तदरीस के फ़राइज़ अंजाम देते रहे। "यूनीवर्सिटी आफ़ टोरन्टो" में अर्सा दराज़ तक इस्टंट प्रोफ़ेसर की हैसियत से ख़िदमात अंजाम दें। तदरीस के साथ उनको तहक़ीक़ और तसनीफ़ का उम्दा ज़ौक़ भी था। यह मग़रिब के उन इंसानियत पसंद और मुसन्निफ़ मिज़ाज लोगों में से हैं जो आला इंसानी इक़्तिदार और आफ़ाक़ी इंसानी उसूलों के क़ाइल हैं। उन्होंने अपने ज़मीर का गला नहीं घोंटा, न आंखों के आगे तअ़स्सुब की धुंद आने दी है। उनके अंदर छिपे मुतहबस तहक़ीक़ कार ने जब उन्हें खोज और जुस्तजू पर आमादा किया तो उन्होंने इस राह में आने वाले ख़तरात की परवा नहीं की। एक तरफ़ तो तहक़ीक़ का मुस्तनद मेअ़यार उनके पेशे नज़र रहा है और दूसरी तरफ़ तहक़ीक़ के नताइज से दुनिया को आगाह करने में उन्होंने किसी ख़ौफ़ को आड़े नहीं आने दिया और नकि सी दीदा या नादीदा दुशमन उन्हें इससे बाज़ रख सकी है। उन्होंने अपनी तहक़ीक़ के दौरान जिन मुख़्तलिफ़ मुस्नफ़ीन की तहक़ीक़त से इस्तिफ़ादा किया, उनके हवाले से फ़राख़दिली से दिये हैं ताकि इल्मी ख़िदमात में उनकी अव्वलियत का एतिराफ़ किया जा सके। इनमें डेस ग्रीफ़न, आई वनूफ़ डबरूसकी और ईरेडिकल्स शामिल हैं। उन्होंने सबसे ज़्यादा इस्तिफ़ादा "डेस ग्रीफ़ेन" से किया। मुनासिब होगा कि यहां डेस ग्रीफ़न को भी आपसे मुतआ़रिफ़ करवा दिया गया है।

"डेस ग्रीफ़न" एक सीनियर लखारी और मुहक़्क़िक़ मिज़ाज

अमरीकी मुसन्निफ़ है। उसने अब तक पांच मअ़रकतुल आरा किताबें लिखी हैं। 1985 ई० में उसने एक जरीदे "The Midnight Messenger" की बुन्याद रखी जिसका मक़्सद तेज़ी से बदलते हुए आलमी हालात के बारे में दुनिया को आगाही देना था। इस शशमाही जरीदा की अमरीका की 50 रियासतों और दुनिया भर के 12 मुमालिक में इशाअ़त होती है। ग्रीफ़न अमरीका का बेबाक मुसन्निफ़ समझा जाता है। ज़ेल में हम नेट से इसका तआ़रुफ़ पेश करते हैं। नेट पर दी गई मालूमात चूंकि यहूदी लखारियों के ज़ेरे असर होती हैं, इसलिये अगर आप "डेस गिरफ़न" के बारे में मालूमात लेने नेट पर जाएं तो आपको इसका तआ़रुफ़ एक मख़्सूस अंदाज़ में मख़्सूस इस्तिलाहात के इस्तेमाल के साथ मज़म्मती उस्लूब में मिलेगा, जो इस बात की अलामत है कि उस शख़्स की तहक़ीक़ात ने अगर सहीवनियत की सफ़ों में दराड़ पैदा नहीं की तो खलबली ज़रूर मचाई है। यही हाल ज़ेरे नज़र किताब "दज्जाल का तख़्त" का है। आप इस सर्च करना चाहेंगे तो इसके बेस्ट सेलर होने के बावजूद आप को नेट पर इसकी तफ़सीलात लेने में बहुत मुश्किल महसूस होगी। यह इस बात की अलामत है कि उसने फ़िल वाक़ेअ़ "बिरादरी" की दुखती रग को छेड़ा है। तआ़रुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइयेः

"डेस ग्रीफ़न" (Des Griffen) साज़िशी ज़ह्न रखने वाला एक क़दामत पसंद अमरीकी लखारी है। यह ठोस ईसाई नुक़्तए नज़र से लिखता है और बुन्यादी तौर पर आलमी साज़िशों और ख़ास तौर पर न्यू वर्ल्ड आर्डर के मौज़ूअ़ में दिलचस्पी रखता है। इसकी किताबें अमरीकी हुकूमती करप्शन और बदनामे ज़माना यहूदी मंसूबा साज़ों के गिरोह "अलवीनाती" (Illuminati) के अमरीकी मुआशरे पर असरात के दर्मियान रब्त दिखाने की कोशिश पर मुश्तमिल हैं। इसी

तरह फ्री मैसनरी और वर्ल्ड बैंकर्स इसके ख़ास मौज़ूअ़ हैं। यह रूथ्स चाइल्ड फ़ैमिली और राक फ़ीलर्ज़ के दुन्यावी सियासत में ख़ुफ़िया असर पर यक़ीन रखता है। इसकी किताब "Fourth Rich of the Rich" आठ मर्तबा शाए हुई और इसका जर्मन ज़बान में तर्जुमा किया गया है। 1980 ई० की दहाई में इसका ख़ास मशग़ला "किंग मार्टिन लौथर" की स्टोरी की तहक़ीक़ व तफ्तीश करना था ताकि इस पुरअसरार कहानी के पीछे असल आदमी को दरयाफ़्त कर सके। 1975 ई० में यह एक आज़ाद पब्लिशिंग हाउस "Emissary Publications" के अहम बानियों में से एक था। 1985 ई० में उसने एक अख़बार "Midnight Messenger Newspaper" के नाम से भी तैयार किया जिसको यह उमूमन ख़ुद ही अबडेट करता है। "Emissary Website" पर और "Conspiracy Nation" के लिये भी लिखता है। सहीव्रनियत पर उसके आर्टिकल हाथों हाथ लिये जाते हैं। हितके इज़्ज़त के मुख़ालिफ़ जमाअ़त (यहां उससे सहीवनी लाबी मुराद है।) इसकी तहरीर को सामियों की मुख़ालिफ़ (यअ़नी यहूद मुख़ालिफ़) ख़्याल करती है। उसकी किताबों के नाम से उसके काम की नौइयत का बख़ूबी अंदाज़ा होता है:

- गुलामी में उतरने का अमल (1980 ई०)
- मार्टिन लौथर किंग, कहानी के पीछे अस्ल आदमी (1987 ई०)
- सामी मुख़ालिफ़ और बेबी लोनीन तअ़ल्लुक़ (1988 ई०)
- दोज़ख़ के तूफ़ानी गेट (1996 ई०)

इस वक़्त "ग्रीफ़न" अपनी छटी किताब पर काम कर रहा है जिसका नाम "Storming the Gates of Hell" है।"

किताब का तआ़रुफ़:

ज़ेरे नज़र किताब "नया आलमी निज़ाम और दज्जाल का तख़्त" के तीन हिस्से हैं। पहला हिस्सा इस्राईल पर है। इसमें मुसन्निफ़ ने इस्राईल के क़्याम की साज़िशी दासतान बयान की है।

दूसरे हिस्से में मुसन्निफ़ ने फ़लस्तीन की मौजूदा सूरते हाल और फ़लस्तीनियों की कसमपुर्सी और बेबसी का ज़िक्र किया है। इस्राईल का सियासी क़ैदियों पर ज़ालिमाना तशद्दुद और मुतअस्सिरीन से बराहे रास्त सुनी हुई दासतान तहरीर की है। यह एक मग़रिबी मुसन्निफ़ की बराहे रास्त गवाही है जो हमें बताती है कि फ़लस्तीन पर मज़ालिम की जो दासतानें इस्राईल की जेल से बाहर निकलती हैं, वह इससे कहीं ज़्यादा भयानक और अलमनाक हैं जितना हम सुनते हैं।

तीसरे हिस्से में मुसन्निफ़ ने इस्राईल से वापस अपने मुल्क (केनेडा) जाते हुए पेश आने वाले सनसनी ख़ेज़ वाक़िआत का ज़िक्र किया है। जिससे इस्राईलियों की संगदिलाना ज़ह्नियत और मुतअ़ज़िबाना फ़ितरत का पता चलता है। आख़िर में सहीवनियत पर ज़ोरदार मालूमाती तब्सिरा किया और दुनिया वालों को मुस्तक़बिल में पेश आने वाले हालात और उनके सद्दे बाब का तरीक़ा अपने फ़ह्म की हद तक बयान किया है। बंदा ने इस हिस्से में मुरब्बा क़ौसीन लगाकर जाबजा कुछ इज़ाफ़ात किये हैं। यह किताब का सबसे दिलचस्प और ज़ोरदार हिस्सा है। इस तब्सिरे के आख़िर में उसने सहीवनियत का मुक़ाबला करने के लिये अमरीकी क़ौम को जो तजावीज़ दी हैं, वह पढ़ने से तअ़ल्लुक़ रखती हैं और यह सतरें इस किताब का हासिल और निचौड़ हैं।

याद रहे कि यह मक़ाला इस्राईल के बारे में 1991-93 ई0 के दौरान लिखा गया था। इसमें फ़लस्तीनियों के बारे में जो भी बताया

गया है वह PLO या हमास के ज़ावियए नज़र से हरगिज़ बयान नहीं किया गया। इसमें PLO के किसी रुक्न का सिरे से तज़किरा ही नहीं किया गया है, इसमें ज़्यादातर आम अवाम, सहाफ़ी और इंसानी हुक़ूक़ के नुमाइंदों के हवाले से बात की गई है। इसलिये यह तहरीर इंतिहाई मुतवाज़िन, मुअ़तदिल और तमाम अह्ले इंसाफ़ के नज़दीक मुअ़तबर क़रार दी जा सकती है।

यह भी वाज़ेह रहे कि उसने दज्जाल को एक शैतानी ताक़त या शैतानी कारिंदे के तौर पर नहीं लिया और न उसे मज़हबी रंग से देखा है, बल्कि वह उसे एक हवस परस्त और हरीस मआ़शी ताक़त के तौर पर देखता और तब्सिरा करता है जो सारी दुनिया के वसाइल पर क़ब्ज़ा करके इंसानी नस्ल में से चंद लोगों का कुल्ली इक़्तिदार क़ाइम करना चाहती है। ज़ाहिर है मग़रिबी तहक़ीक़कार जब अपनी आसमानी किताबों तौरात और इंजील से भी रहनुमाई हासिल न करेंगे जबकि उसमें दज्जाल के बरपा कर्दा फ़ित्नों का मुतअ़द्दद मक़ामात पर मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में तज़किरा मौजूद है तो हालात को महज़ माद्दी तनाज़ुर में ही देखेंगे। बहरहाल इस सब कुछ के बावजूद किताब एक दिलैर सहाफ़ी और निडर तहक़ीक़कार की जुर्अतमंदाना कोशिश और चश्मकुशा हक़ाइक़ पर मुशतमिल है जिस पर हमें मुसन्निफ़ का शुक्रगुज़ार होना चाहिये।

इन तलख़ीस में आप पहले मुक़द्दमा पढ़ेंगे, फिर बित्तरतीब इसके तीन हिस्से और आख़िर में ख़ुलासा। अल्लाह तआ़ला से दुआ कीजिये कि वह इन तहक़ीक़ीकारों को इस ज़बरदस्त मेहनत के सिले में मुहलत की घड़ियां ख़त्म होने से पहले सच्चे दीन की हिदायत नसीब फ़रमा दे। आमीन।

दज्जाल का तख़्त

(मुक़द्दमा)

जैसे जैसे हम ज़िंदगी की कश्ती में सवार होकर इख़्तिताम के साहिल तरफ़ सफ़र करते हैं, रास्ते में कहीं न कहीं हमें यह एहसास ज़रूर होता है कि हमारी ज़िंदगी और तारीख़ में जितने भी हादसे हुए हैं, वह शायद हादसे न हों, शायद वह एक मुनज़्ज़म मंसूबे का हिस्सा हों हत्ता कि एक फ़र्द या मुतअ़द्दद अशख़ास ने इसकी बाक़ाएदा प्लानिंग की हो। "मंसूबे" की जगह "साज़िश" का लफ़्ज़ भी इस्तेमाल किया जा सकता है। आजकल हम अपनी ज़िंदगी और मुआशरे पर (यअ़नी अमरीकियों की ज़िंदगी और मग़रिबी मुआशरे पर) जो असरात देख रहे हैं, क्या वह एक तैशुदा मंसूबे का नतीजा हैं जिसकी मुसलसल निगरानी की जा रही है? हमें क्या महसूस होता है जब ऐसा ख़्याल हमारे ज़ह्न में आता है? अगर हम ऐसा ही महसूस करते हैं तो हम यक़ीनन अकेले नहीं हैं। पिछले 60 सालों की ग़लतियों और हिमाक़तों पर अगर नज़र दौड़ाई जाए तो एक Best Seller मुसन्निफ़ "Gray Allen" अमरीका पर अपने मज़मून के बारे में कहता है:

"अगर हम औसत के क़ानून के लिहाज़ से देखें तो अमरीकी तारीख़ के आधे से ज़ाइद वाक़िआत बेहतरी के लिये थे, जबकि बक़िया आधे वाक़िआत अमरीका के लिये अच्छे नहीं थे। अगर हम अपने रहनुमाओं की नाअह्ली और नाआक़िबत अंदेशी को भी मद्दे नज़र रख लें तो हमारे रहनुमा अक्सर हमारे हक़ में ग़लती करते रहे हैं। लेकिन हम महज़ किसी इत्तिफ़ाक़ या फिर किसी हिमाक़त का

सामना नहीं कर रहे, एक मुनज़्ज़म और ज़हीन तरीन मंसूबाबंदी का सामना कर रहे हैं।"

पिछले 200 सालों में बहुत सी सरकारी और ग़ैर सरकारी शख़्सियात ने इस "साज़िश" (यअ़नी अमरीकियों के ख़िलाफ़ अमरीका ही में की जाने वाली साज़िश) का ज़िक्र किया है। वह हमें इसे "चंद अनासिर की साज़िश" बताते हैं। इन शख़्सियात में Charles, Henry Foril, Dissali Taylor Caldinel, Linderth और अक़्ल व दानिश का क़िला समझे जाने वाले Winston Churchill भी शामिल हैं।

हत्ता कि चर्चिल ने तो 1920 ई0 में यह बयान दिया थाः

"एक बैनुल अक़्वामी साज़िश हमारे बहुत क़रीब है जिसका मक़्सद "तहज़ीब व तमद्दुन का ख़ातमा" और "इंसानी मुआशरे की अज़्सरे नो तअ़मीर" है। यह साज़िश उतनी ही घिनावनी है जितनी कि ईसाइयत पाकीज़ा है और अगर इसको न रोका गया तो यह ईसायत की तालीमात को हमेशा के लिये ख़त्म कर देगी।"

चर्चिल बिश्शवीक इंक़िलाब का सख़्त मुख़ालिफ़ था और वह इसको एक सियासी तबदीली से आगे की चीज़ के तौर पर देखता था। वह समझता था कि यह एक नई बादशाहत के क़्याम के लिये एक आड़ या पर्दा है।

एक दज्जाली बादशाहत का क़्यामः

"कुछ लोग यहूद को पसंद करते हैं कुछ नहीं, लेकिन कोई बाशऊर शख़्स इस बात से इंकार नहीं करेगा कि यह एक नापसंदीदा और इंतिहाई से ज़्यादा हैरत अंगेज़ नस्ल है जो कि इस दुनिया में आई होगी।"

अच्छाई और बुराई में जो जंग हमेशा इंसानी सीने में जारी होती

है, कहीं भी इतनी ज़्यादा शिद्दत इख़्तियार नहीं करती जितना कि यहूदी नस्ल में इख़्तियार करती है। इंसानी फ़ितरत का दोग़लापन कहीं भी इतना खुल कर सामने नहीं आता जितना कि इस नस्ल में ज़ाहिर होता है। यह भी ऐन मुम्किन है कि यह क़ौम मौजूदा दौर में अख़्लाक़ियात व फ़ल्सफ़ा का एक नया निज़ाम लेकर आना चाह रही है या फिर उसको तरतीब दे रही है। यह नया निज़ाम उतना ही घिनावना है जितनी कि ईसाइयत पाकीज़ा है और यह निज़ाम ईसाइयत को मस्ख़ करके रख देगा। इस घिनावनी साज़िश में शामिल अफ़राद ने अपने आबा व अज्दाद के दीन को छोड़कर अपने ज़ह्नों को मौत के बाद रूहानी दुनिया से ख़ाली कर लिया है।

यहूदियो में यह कोई नई तहरीक नहीं। Sparataus -Weishaupt के ज़माने से "कार्ल मार्क्स" (Karl Marx) से लेकर "ट्रोट्सकी" रूस, "बेलाकुन" (Bela Kun) हंगरी, "रोज़ा लीननबरी" (Rosa Lunenboury) जर्मनी, और "एम्मा गोल्डमैन" (Emma Goldman) अमरीका के दिनों तक इस "बैनुल अक़्वामी साज़िश" ने ज़ोर पकड़ना शुरू कर दिया। यह रोज़ बरोज़ बढ़ती और फैलती चली जा रही है। इसी साज़िश ने फ्रांसीसी इंक़िलाब में इंतिहाई अहम किर्दार अदा किया था। उन्नीसवीं सदी की बेशतर तहरीकों का इससे तअ़ल्लुक़ किसी सूरत भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। अब इन्ही लोगों ने, इन ग़ैर मअ़मूली लोगों ने जिनका तअ़ल्लुक़ यूरप और अमरीका की छिपी हुई कुव्वतों से है, रूसी अवाम को उनके बालों से दबोच लिया है और उनके सिरों को क़ाबू कर लिया है। अब वह इस बड़ी सलतनत के "ग़ैर मुतनाज़ा आक़ा" बन चुके हैं।

इस मौज़ूअ़ पर मैंने यअ़नी (राबर्ट ओडिस्कोल्ट) ने एक नज़्म

लिखी और साथ ही इसके कई मक़ाले थे जिसको "The Nato and Waraw Pact are one" के नाम से किताबी शक्ल दे दी गई। इब्तिदा में तो यह काम सिर्फ़ नज़्म की हद तक महदूद था लेकिन इसको एक तहक़ीक़ी मक़ाले की शक्ल देना इंतिहाई मुश्किल साबित होने लगा। जिस चीज़ को हम हालात व वाक़िआत के मुशाहदे की फ़ित्री जिबिल्लत को इस्तेमाल करते हुए जांच लेते या पहचान लेते हैं, वह बिअय्निही इसी तरह मक़ाले की शक्ल में पेश नहीं किये जा सकते, क्योंकि इसके लिये ठोस सबूत की ज़रूरत होती है। मैं खुद अपनी तरबियत और पेशे एक एतिबार से एक मुअ़ल्लिम हूं। पिछले तीस सालों से बर्तानिया, आयरलैंड और केनेडा की जामिआत में पढ़ता आया हूं, जिसमें केनेडा की सबसे बड़ी जामिआत में से एक "यूनीवर्सिटी आफ़ टोरंटो" भी शामिल है। मैं यहां 25 साल से पढ़ा रहा हूं। मैंने इसी मक़्सद के तहत इस मौज़ूअ़ पर लिखे गए मवाद में ग़ोते लगाने शुरू किये जिसमें यूरप, शिमाली अमरीका और जापान वग़ैरा का तारीख़ी और अस्करी मवाद शामिल है। इन हज़ारों लाखों तहरीरों और मक़ालों या फिर किताबों में से अक्सर व बेशतर हमेशा के लिये खो चुकी थीं। इनके आसार या तो किसी किताब में हवाले की हद तक महदूद हैं या फिर किसी लाइब्रेरी में किसी अंधे तारीक गोशे में पड़े हुए हैं। जब मैं अपने जमा कर्दा इक़्तिबासात और हवालाजात को जांच रहा था तो मैं यह बात महसूस करके और भी ज़्यादा हैरत ज़दा हो गया कि "दज्जाल के इस तख़्त" की तैयारी मुनज़्ज़म तरीन अंदाज़ में पिछले दो सौ सालों से जारी है।

इस मौक़ा पर मैं खुद एक दोराहे पर खड़ा था। या तो मैं इस सारे मवाद को इकट्ठा करके अपनी सारी उम्र इसको तरतीब देकर

एक किताब लिखने में गुज़ार देता जो कि मैं अकेले लिखता, या फिर दूसरा तरीक़ा यह था कि इन तमाम मुसन्निफ़ीन की किताबों को मुतालआ़ करता और आख़िर में इनमें से सबसे जामेअ़ किताब लिखने वाले में से एक को चुन लेता जो कि मेरी कहानी सुनाता (यअ़नी मैं उसके लिखे हुए मवाद से अपनी की हुई तहक़ीक़ को सहारा देता)

इसके लिये मेरे नज़दीक सबसे मौज़ूं शख़्स '''डेस ग्रीफ़न'' था जिसने अपनी तीस साला तहक़ीक़ में पांच किताबें लिखी थीं। मैं ग्रीफ़न के पेशकर्दा नताइज से न सिर्फ़ बहुत मुतास्सिर हुआ था बल्कि उसके तरीक़ए तहक़ीक़ से भी बहुत मुतअस्सिर हुआ जिसकी मदद से उसने यह नताइज हासिल किये थे।

दूसरे लखारियों की बनिस्बत सरकारी दस्तावेज़ात जैसे "War Office Records" और "Public Record" पर बहुत ज़्यादा इन्हिसार करने के बजाए, जोकि अक्सर लोगों की कमज़ोरी रही है, ख़ास तौर पर इस मौज़ूअ़ पर लिखने वाले मुसन्निफ़ों की, ग्रीफ़न की सबसे बड़ी ख़ुसूसियत यह है कि वह असल हक़ाइक़ या बुन्यादी हक़ाइक़ को कभी भी मुतज़ाद तौर पर मशहूर किये गए फ़र्ज़ी दलाइल की ख़ातिर नज़र अंदाज़ नहीं करता। पर्दे के पीछे के वाक़िआत को तमाम हालात व वाक़िआत के तनाज़ुर में देखता है। वह इस नियत से तहक़ीक़ करता है कि इस साज़िश को तैयार करने वालों ने अस्ल हक़ाइक़ एहतियात के साथ दबा दिये हैं, लेकिन अस्करी राज़ों को एक ख़ास मौक़ा के बाद छिपाया नहीं जा सकता, चाहे वह जंग हो या कुछ और, क्योंकि जब फ़ौजी रिटायर हो जाता है तो वह दोबारा एक आम शहरी और एक आम इंसान बन जाता है। आम शहरी की तरह शैख़ियां भगारता है, अपने कारनामे और

मुशाहिदे इधर उधर हांकता है और अपने अफ़आल को वसीअ़ तर तनाज़ुर में देखता है। ग्रीफ़न इसी मक़सद के तहत उन लोगों का हवाला देता है जो उस वक़्त वहां पर मौजूद थे। जैसे कांग्रेस के अरकान, वज़ीरे दिफ़ाअ़, ऐडमर्ल, जरनैल और सफ़ीर वग़ैरा। इसके अलावा सीनेट और ईवाने नुमाइंदगान की कमेटियां जिन्होंने तहक़ीक़ाती रिपोर्टें तैयार कीं। जंग के दौरान जारी किये गए पम्फ़लेट और इस दौरान मर्कज़ से दिये गए अहकाम।

मैंने ग्रीफ़न के उसूलों और तरीक़े कार को सख़्ती से अपना और अपनी तहक़ीक़ के दौरान सख़्त मेअ़यार और तहक़ीक़ के उसूलों पर पाबंद रहा। इसके अलावा हक़ाइक़ की सच्चाई को हर नुक्तए नज़र से देखा और उनके तमाम पहलूओं का जाइज़ा लिया। इसके बाद मैं वसूक़ से कह सकता हूं कि ग्रीफ़न वह शख़्स है जो एक वसीअ़ तनाज़ुर में तमाम वाक़िआत को देखता है और उन्हें अस्करी और हुकूमती तदाबीर की गहराई में जाकर समझता है। वह इस बात में भी तफ़रीक़ कर सकता है कि क्या चीज़ हक़ीक़ी है और क्या चीज़ हक़ाइक़ को रद्द व बदल करने के लिये घड़ी गई है? इसलिये मैंने अमरीका और रूस के बारे में ग्रीफ़न की किताब से मज़ामीन लिये ताकि क़ारईन एक तहक़ीक़ेकार की तहक़ीक़ को दूसरे तहक़ीक़ कार के जाइज़े और जांच के बाद मुलाहज़ा कर सकें।

राबर्ट ओडर्सकोल
यूनीवर्सिटी आफ़ टोरंटो
13 सितम्बर 1992 ई0

हिस्सा अव्वल

इस्राईल कैसे वजूद में आया?

एक पुरख़तर सफ़र की रूदाद

ज़ेल में हम केनेडा से तअ़ल्लुक़ रखने वाले एक निडर सहाफ़ी "राबर्ट ओडर्सकोल" का "सफ़र नामए इस्राईल" दे रहे हैं। इस सहाफ़ी ने जान जोखिम में डाल कर इस्राईल का सफ़र किया। मुसलमानों और यहूदियों से मुलाक़ातें कीं। इस्राईली अफ़वाज की कारसतानियां देखीं। हालात का बचश्म खुद मुशाहदा किया और वापसी पर इस्राईली तफ़तीश कार अफ़सरों को कामियाबी से ग़च्चा देकर निकल गया, जबकि उसके पास ऐसी तसवीरें और नोटिस मौजूद थे जो उसे इस्राईली जेलों में नस्ब गूंगी बहरी सलाख़ों के पीछे पहुंचा सकते थे। वतन वापस पहुंच कर उसने अपनी याददाश्तों को बड़े दिलचस्प अंदाज़ में मुरत्तब किया और दरहक़ीक़त वह काम किया जो किसी मुसलमान सहाफ़ी को करना चाहिये था। हम सब को दुआ करनी चाहिये कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मज़लूम फ़लस्तीनी मुसलमानों की इस मदद के सिले में उसे इस दुनिया से जाने से पहले हिदायत नसीब करे ताकि वह दुनिया व आख़िरत की फ़लाह का मुस्तहिक़ हो जाए।

सहीवनियत इस्राईल को जनम देती है:

उन्नीसवीं सदी (1800's) के आग़ाज़ से ही यूरप और अमरीका में "सियासी सहीवनियत" एक नई ताक़त बन कर उभरी

लेकिन तारीख़ खुद इस बात की गवाह है कि सहीवनियत की सबसे ज़्यादा मदद यूरप और बहरे ओकियानूस के पार अमरीका में मौजूद "रूथ शील्ड" के गमाश्तों ने की। राथ्स चाइल्ड ख़ानदान खुद भी "ख़ाज़ार" नस्ल का यहूदी था। 1880 ई0 की दहाई में मशहूर यहूदी सरमायादार Baron Edmund de Rothschild ने "ख़ाज़ार" नामी यहूदियों की एक ख़ास नस्ल के लिये बहुत सारी ख़ाज़ार बस्तियां फ़लस्तीन में बनाई। ख़ाज़ार ज़्यादातर यहूदी हैं। "रूथ शील्ड" फ़ैमली खुद भी "ख़ाज़ार" यहूदी हैं और कट्टर क़िस्म के तालमूदी यहूदी हैं। जिनके मज़हब ने इसके अलावा उनको और कुछ नहीं सिखाया कि वह गोए (Goy) या (Gentile) को (यअ़नी आम इंसानों को। यह दोनों इस्तिलाहात दरअस्ल ग़ैर यहूदियों के लिये इस्तेमाल की जाती हैं।) पलीद और हैवानों से भी बदतर और यहूदी नस्ल को सब इंसानों से बरतर समझें। "रूथ शील्ड" अपने क़बीले के यहूदियों को फ़लस्तीन में बसाने के लिये बेदरीग़ पैसा ख़र्च करने के अलावा इस मुआमले में इंतिहाई मुतशद्दिद और शिद्दत पसंद था और इस हवाले से किसी यहूदी की मुदाख़िलत या ऐसा मशवरा भी बर्दाश्त न करता था जो उसके मिज़ाज के ख़िलाफ़ हो। एक मर्तबा उसने यअ़नी "ऐडमंड रूथ शील्ड" (Edumun Rothschild) रूसी सहीवनियों को साफ़ साफ़ मना करके उस वक़्त झिड़क दिया था जब उन्होंने इन यहूदी आबादी के मुतअ़ल्लिक़ अपनी तजवीज़ दी थी कि उसके मुआमलात किस तरह चलाए जाएं? वह इस क़दर हटधरम और ज़िद्दी था कि उसने यहां तक कह दिया था: "यह मेरी बस्तियां हैं और मैं यहां वही कुछ करूंगा जो मैं चाहूंगा।" (Morton, The Rothschild p30-31)

जदीद सहीवनी सियासत की बुन्याद डाक्टर थ्योडोर हर्टज़ल ने

उस वक़्त रखी जब उसने 1897 ई0 में सहीवनी कांग्रेस की बुन्याद रखी और सुइटज़रलैंड के शहर बासल (Basel) में पहली आलमी सहीवनी कांग्रेस बुलाई। मज़े की बात यह है कि इस कान्फ़्रेंस में शिर्कत करने वाले वफ़ूद में से ज़्यादा का तअ़ल्लुक़ मशरिक़ी यूरप से था जिनकी तादाद 197 थी। इस कांग्रेस को मग़रिबी यूरप के ज़्यादातर यहूदियों ने नज़र अंदाज़ कर दिया।

इसके अलावा अगर पिछले वाक़िआत पर नज़र दौड़ाई जाए तो हमें पता चलेगा कि हर्टज़ल को यक़ीनन किसी ने आगे बढ़ाया होगा, उसकी मदद और पुश्तपनाही की होगी। जैसे उसका "यहूदी रियासत" (The Jewish State) नामी किताबचा लिखना और इसकी इशाअत, इसी तरह से उसका सुइटज़रलैंड में आलमी सहीवनी कान्फ़्रेंस बुलाना। एक और चीज़ क़ाबिले ग़ौर है कि बासल में बुलाई गई कान्फ़्रेंस में मग़रिबी यहूदियों की अदम दिलचस्पी एक ही चीज़ की तरफ़ इशारा करती है। यक़ीनन वह उसे नस्लपरस्त यहूदियों का एक "ख़ाज़ार मंसूबा" समझते थे। इसी लिये वह उसमें दिलचस्पी नहीं ले रहे थे।

इसका एक और सबूत यह भी है कि खुद हर्टज़ल ने लिखा था: "इस कान्फ़्रेंस में हमने रूसी यहूदियों की ऐसी ताक़त देखी जिसका पहले हमने अंदाज़ा भी नहीं लगाया था और वह हमारे वह्म व गुमान में न थी। 70 से ज़ाइद वफ़ूद रूस से आए थे और वह रूस के पचास लाख यहूदियों की नुमाइंदगी कर रहे थे। हमारे लिये कितनी ज़िल्लत की बात है कि हमारे मुख़ालिफ़ीन ने हमारी ताक़त को नज़रअंदाज़ कर रखा है।"

(Read the controverry of Zainuism, Page200)

यही वह लम्हा था जहां से "तालमूदी यहूदियत" का मग़रिब पर

असर बढ़ना शुरू हो गया और मग़रिबी ताक़तों ने "तालमूदी यहूदियों" (या सहीवनी यहूदियों) को सारी यहूदियत का नुमाइंदा तसलीम कर लिया। इसका आगे चल कर हम ज़िक्र करेंगे कि इस ग़लतफ़हमी की वजह से मग़रिबी मुआशरे में एक तबाहकुन असर रूनुमा हुआ।

चूंकि मशहूर यहूदी सरमायादार "रूथ शील्ड" जिसके ज़ेरे असर यहूदी बैनुल अक़वामी बैंकरों और सहीवनी सियासतदानों के सियासी मक़ासिद और अज़ाइम एक ही जैसे थे। इसी लिये उस वक़्त के बाद से सहीवनियत की सबसे बड़ी मदद अमरीकी सरज़मीन से आई। यह मदद ख़ास तौर से उस वक़्त से शुरू हुई जब 1913 ई0 में वफ़ाक़ी रिज़र्व ऐक्ट (Federal Reserve Act) के ज़रीए अमरीकी मईशत की शह रग तालमूदी बैंकरों के हवाले की गई।

मशहूर यहूदी रहनुमा रिबाई वाइज़ (Rabbi Wise) अपनी किताब Challenging Years के सफ़्हा 186 और 187 में लिखता है:

"वुडरो विल्सन" (Woodrow Wilson) की इंतेज़ामिया के बारे में ब्रेनडीज़ (Brandies) ओर में अच्छी तरह जानते थे कि उसमें हमें शुरू ही से एक हमदर्द और ख़ैर ख़्वाह मिल जाएगा जोकि सहीवनी मक़ासिद को आगे बढ़ाने में अहम किर्दार अदा करेगा। इसके अलावा हमें वुडरो विल्सन के क़रीबी दोस्त कर्नल हाउस (Cornel House) जोकि इसका सबसे अहम और ताक़तवर दोस्त था, उसकी मदद भी मिल गई। कर्नल हाउस हमारे मक़सद को न सिर्फ़ समझता था बल्कि उसने सदर और सहीवनी तहरीक के दर्मियान सबसे अहम राबते और पुल का किर्दार अदा किया। 1914 ई0 के बाद से यह रिश्ता और भी मज़बूत हो गया जब सारी दुनिया

के यहूदी सहीवनियत के झंडे तले जमा हो गए थे और "यहूदी घर" (Jewish Homeland) मुतालबे पर सख़्ती से इस्रार करने लगे थे।"

1916 ई0 में अपनी सदर से मुलाक़ात के बारे में वाइज़मैन ख़ुद कहता है कि उसने सदर से कहा था: "जनाब सदर! दुनिया के यहूदी आपकी तरफ़ देखते हैं जब उनको आपकी ज़रूरत पड़ेगी।" जवाब में उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा: "घबराने और अंदेशा करने की कोई ज़रूरत नहीं, फ़लस्तीन तुम्हारा है।"

सहीवनी मुअर्रिख़ Dr. Joseph Kastein, 1933 ई0 में लिखता है कि बासल की 1897 ई0 में बुलाई गई सहीवनी कान्फ्रेंस में एक ऐग्ज़िक्यूटिव Executive की बुन्याद डाली गई थी जोकि पहला बैनुल अक़्वामी यहूदी इदारा था। Arthur Brain Coell अपने क़ारियों को बताता है कि किस तरह से छोटा सा सहीवनी बैनुल अक़्वामी जाल दुनिया भर में काम करता था (और करता है) इससे पहले बैनुल अक़्वामी यहूदी इदारे के सबसे पहले अर्कान पर ज़रा नज़र डालते हैं।

Sir Ernest Cassel और Man Warburg हैम्बर्ग के बहुत बड़े बैंक से वाबस्ता था और "रूथ शील्ड" का क़रीबी शराकतदार और दोस्त था जबकि पहली जंगे अज़ीम में जर्मन ख़ुफ़िया इदारे......जो हसास तरीन इदारा था......का सरबराह भी था। Banque de paris edouard noetzilin (प्रेस का एक बैंक) जो कि Pays Bas प्रेस में वाक़ेअ है, का एज़ाज़ी सदर था।

Franz Philipson जोकि बर्सलज़ में था और इन सब में नुमायां Jacob Schiff जोकि Kuhn, Loeb and Company जोकि न्यूयार्क में वाक़ेअ "रूथ शील्ड" की ऐजंट थी,

इसका सरबराह था और उन लोगों में से था जिसने कि 1917 ई0 के बिश्शवीक इंक़िलाब (रूस) में अहम किर्दार अदा किया था। इन सब लोगों को खून, नस्ल और सूद की रस्सियों ने आपस में बांध रखा था और उनका खुफ़िया नेटवर्क एक हल्के से इशारे से सरगर्म हो जाता था। इन लोगों ने इक़्तिसादी, सियासी और मालियाती इंटीली जिंस का हद से ज़्यादा मज़बूत जाल बिछाया हुआ था। एक हल्के इशारे पर यह बहुत बड़ी मदद जमा कर सकते थे, इज़ाफ़ी फ़ंड्ज़ मुहय्या कर सकते थे, बड़ी बड़ी रुकूम थोड़े अर्से में इकट्ठा कर सकते थे।

(Conell, "Sir Eduord Cassel, From Meifst Destiny")

यक़ीनन सियासी सहीवनियत ''तालमूदी यहूदियत'' का एक लाज़मी जुज़ था। दुनिया भर के ज़्यादातर यहूदी, दुनिया के किसी भी हिस्से में ''यहूदी रियासत'' कबूल कर लेते थे लेकिन तालमूदी यहूदी फ़लस्तीन की ज़िद करते रहे। आगे चलकर हम देखेंगे कि उनका मंसूबा यह भी था कि यरोशलम को अपना पायए तख़्त बना लिया जाए।

पहली जंगे अज़ीम का जब आग़ाज़ हुआ तो बर्तानिया के लिये बहुत से मुआमलात बहुत अच्छी तरह नहीं चल रहे थे......ख़ास तौर से सहीवनियों के लिये......क्योंकि बर्तानिया उनके शिकंजों में अच्छी तरह से जकड़ा हुआ नहीं था। बरतानवी वज़ीरे आज़म और तमाम जंगी जरनैल इस बात पर ज़ोर दे रहे थे कि किस तरह से जंग जीती जा सकती है। लेकिन जब बरतानवी वज़ीरे आज़म ने सहीवनी पेशकश के लालच में आने और सहीवनियों के मुतालबे को मानने से इंकार कर दिया तो गोया उसने अपनी सियासी मौत के सर्टीफ़िकेट पर दस्तख़त कर दिये थे। चुनांचे पर्दे के पीछे पूरी यहूदी मशीनरी हरकत में आ गई और वज़ीरे आज़म Lord Asqith को हटा कर

अपने पिठ्ठू Llod Georgd को लाया गया जिसके बारे में Dr Cham Wizmann ने कहा था कि: "यहूदी सरज़मीन के लिये हिमायत वज़ीरे आज़म बनने से भी पहले से इसका ख़ास्सा था।"

उसने आने के साथ ही बरतानवी फौज फ्रांस से निकाल कर फ़लस्तीन में डालना शुरू कर दी और "Sir Willian Robertson" जैसे क़ाबिल जरनैल को फ़ौज से फ़ारिग़ कर दिया जो कि इंतिहाई अहमक़ाना फ़ैसला था। इस पर तन्क़ीद करने के लिये बरतानवी माहिर अस्करियात कर्नल "Repington" ने मज़मून लिखा। इसमें कहा गया था:

"यह इंतिहाई अहमक़ाना फैसला है क्योंकि फ्रांस को छोड़कर फ़लस्तीन में फ़ौज डालने से हम फ़लस्तीन की वजह से अपनी सलामती ख़तरे में डाल रहे हैं। एक ऐसे वक़्त में जबकि जर्मनी ने रूस से जंग जीत ली है और अब वह इधर से भी अपने फ़ौजी फ्रांस में डालेगा तो हम क्यों अपने दस लाख फ़ौजी फ्रांस से फ़लस्तीन में फैंक रहे हैं?"

जब यह मज़मून लेकर वह "The Times" के दफ़्तर गया तो उसका कहना है: "ऐडीटर Geoffery Darson ने मुझे इंकारनामा दे दिया और कहा कि मेरा आज के बाद से The Times से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं।"

इसके बाद Cornel Repington ने Morning Post में यह मज़मून दिया जो कि सेंसर बोर्ड के पास भेजे बग़ैर शाए कर दिया गया। इस वजह से इन दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया (कर्नल और अख़बार के ऐडीटर को) और उन पर "क़ौमी सलामती को ख़तरे में डालने" का मुक़द्दमा चलाया गया लेकिन अवामी दबाव के बाइस उन पर सिर्फ़ हुब्बुल वत्नी की खिलाफ़ वर्ज़ी की फ़र्दे जुर्म

आइद की गई और सज़ा के तौर पर जुर्माना लगा दिया गया।

इत्तिहादियों की अरबों से गद्दारीः

अरबों से आज़ादी के वादे के बावजूद बर्तानवी हुक्मरान अरबों से गद्दारी पर तुल बैठे थे, जैसा कि एक यहूदी मुअर्रिख़ Alferd Lilienthal कहता हैः

"अगर अरबों को पता होता कि ख़ुफ़िया सिफ़ारती मुआहदे पहले ही से तै हो चुके हैं तो इस बात का शायद ही कोई इम्कान होता कि किसी क़िस्म की बग़ावत होती।"

अंग्रेज़ों और इत्तिहादियों की अरबों के बारे में बदनियती को समझने के लिये हमें इस बात पर नज़र डालनी चाहिये जोकि "लार्ड बलफ़ोर्ड" (Lord Balforer) ने उस वक़्त कही थी जब उसने इस तारीख़ी बदअहदी पर मुशतमिल "एलान बिलफ़ौर" का इज्रा किया था। उसने कहा थाः

"फ़लस्तीन में हम इस तजवीज़ को हरगिज़ पेश नहीं करेंगे जिसमें यह सिफ़ारिश की गई है कि फ़लस्तीन की मक़ामी आबादी की ख़्वाहिशात को भी मद्दे नज़र रखा जाए क्योंकि बड़ी ताक़तों ने पहले ही सहीवनियों से मुआहदे और वादे किये हुए हैं और सहीवनियत चाहे सही हो या ग़लत, अच्छी हो या बुरी, वह एक लम्बी रिवायत पर मब्नी है और इन सात लाख के लगभग अरबों से ज़्यादा अहम और असर अंगेज़ है जोकि वहां रहते हैं। जहां तक फ़लस्तीनियों का तअल्लुक़ है तो बड़ी ताक़तों ने तो शायद ही उनके हक़ में कोई ऐसा बयान दिया हो जिसकी उन्होंने ख़िलाफ़ वर्ज़ी न की हो।"

(Hisst "The gun and the olive branch p.42")

दूसरी जंगे अज़ीम के बाद दहशतगर्दी के ज़रीए सहीवनी रियासत का क़्याम

जब यूरप और एशिया से सारी दुनिया की तवज्जोह हटी, ख़ास तौर से जब दूसरी जंगे अज़ीम अपने इख़्तिताम तक पहुंची तो सारी दुनिया की तवज्जोह का मर्कज़ फ़लस्तीन बन गया क्योंकि सहीवनी इस्राईली रियासत के क़्याम के लिये सर तोड़ कोशिशें कर रहे थे। नवम्बर 1944 ई० में जब बर्तानवी नो आबादियाती सेक्रट्री "Lord Mayne" फ़लस्तीन के मस्ले के पुरअमन हल के लिये क़ाहिरा पहुंचा तो फ़लस्तीन के दो सहीवनी दहशतगर्दों ने उसे क़त्ल कर दिया। उसका जुर्म सिर्फ़ इतना था कि वह और बहुत से मुंसिफ़ मिज़ाज लोगों की तरह समझता था कि मशिरक़े वुस्ता में सहीवनी मंसूबा तबाही के अलावा और कुछ नहीं ला सकेगा।

जब 1946 ई० में अगली "आलमी सहीवनी कांग्रेस" का इन्अक़ाद जिनेवा में हुआ तो "डाक्टर वाइज़मैन" (Dr. Weizman) (जो कि इस यहूदी इदारे का सरबराह भी था) ने एक ख़ास चार्टर की "मज़ाहमत, दिफ़ाअ़ और हैरत।" इस चार्टर की एक ख़ुसूसियत यह थी कि इसमें फ़लस्तीन की बरतानवी अथारिटी के ख़िलाफ़ लड़ने की और हर जगह लड़ने की बात की गई थी, या दूसरे लफ़्ज़ों में आलमी सहीवनी कांग्रेस ने सहीवनी रियासत के क़्याम के लिये दहशतगर्दी की मंजूरी दी और तौसीक़ की। रूस में भी यही हथकंडे निहायत कारआमद साबित हुए थे। दरअसल

"बिरादरी" ने निहायत दूरअंदेशी से काम लिया था और इस बात को समझ गए थे कि सहीवनी रियासत दहशतगर्दी के बग़ैर हासिल नहीं की जा सकती।

इस मक़्सद के लिये कई यहूदी दहशतगर्द तन्ज़ीमें फ़लस्तीन में क़ाइम हो गईं ताकि सहीवनी रियासत के क़्याम के लिये दहशत के ज़रीए दबाव डाला जा सके। इनमें से दो इंतिहाई अहम थीं। एक का नाम था "अर्नज़्वाई यसवी" जिसकी सरबराही मीना ख़ुम बगीन कर रहा था। दूसरी दहशत गर्द तन्ज़ीम का नाम था "लेही" (Lehi) जिसकी सरबराही इसहाक़ शामीर कर रहा था। Los Angeles Times के मुताबिक़ यह इस्राईल की ज़ेर ज़मीन शुरूआत थीं और क़त्ल को सियासी हर्बे के तौर पर इस्तेमाल करती थीं। इन दोनों तन्ज़ीमों के सरबराह आगे चल कर इस्राईल के वज़ीरे आज़म बने। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि सहीवनियत और दहशत गर्दी या इस्राईली रहनुमा और दहशतगर्दी किसी हद तक लाज़िम व मलज़ूम हैं।

Lord Moyne के अलावा सहीवनी दहशतगर्दों ने Sir Harold Mac Millan जोकि फ़लस्तीन का बर्तानवी हाई कमिश्नर था, को भी क़त्ल करने की कोशिश की।

(Bell, "The lang War: Israel and the Arahs Since 1948, p201)

इसी तरह Count Folke Bernadotte जोकि 1948 ई0 में अक़वामे मुत्तहिदा का मुक़र्रर कंर्दा स्वीडन का सालिस था, उसने बग़ैर किसी रोकटोक के फ़लस्तीन में यहूदी आमद की सख़्ती से मुख़ालिफ़त की थी। इसके अलावा वह इस बात पर भी ज़ोर डाल रहा था कि वह फ़लस्तीन में मौजूद पनाह गुज़ीनों (मुहाजिर फ़लस्तीनी मुसलमानों) को इस्राईल में दोबारा वापस जाने की

इजाज़त दी जाए। इसके अलावा वह इस बात पर भी ज़ोर दे रहा था कि जितनी भी मिल्कियतों को नुक़सान पहुंचा है इसका भी इज़ाला किया जाए। यही वजह है कि इसको भी एक दहशतगर्द यहूदी तन्ज़ीम "इस्ट्रन गैंग" ने हलाक कर दिया। इस्राईली हुकूमत को अच्छी तरह से मालूम था कि यह कत्ल किसने किया है? लेकिन किसी को भी गिरफ्तार नहीं किया गया। जैसे जैसे वक़्त गुज़रता गया वैसे वैसे क़ातिल हीरो बन गए और "बैगन" और "शामीर" तो बाद में इस्राईली हुकूमत के सरबराह और वज़ीरे आज़म भी बने।

जैसे जैसे फ़लस्तीनी मुसलमानों के ख़िलाफ़ दहशतगर्दी और खूरेज़ी बढ़ती चली गई, यहूदियों की इस्राईल आमद में मुनज़्ज़म तरीके से इज़ाफ़ा होता चला गया। बर्तानवी ईवाने आम (House of Commons) की एक कमेटी ने एलान कियाः

"बहुत बड़ी तादाद में यहूदी मशिरकी यूरप से जर्मनी में मौजूद अमरीकी ज़ोन की तरफ़ हिज्रत कर रहे हैं ताकि बिलआख़िर फ़लस्तीन पहुंच सकें। यह बात तो बिल्कुल साफ़ है कि एक इंतिहाई ज़्यादा मुनज़्ज़म तहरीक जिसके पास बेपनाह पैसा, ताक़त और असर व रुसूख़ है, इसके लिये काम कर रही है।"

इसके अलावा अमरीकी ईवाने बाला (Senate) की भी एक कमेटी जो कि जंग के बारे में तहक़ीक़ात के लिये यूरप भेजी गई थी, उसने भी यह बयान दिया थाः

"यहूदियों की मशिरकं यूरप में जर्मनी में मौजूद अमरीकी ज़ोन की तरफ़ नक़्ल मकानी एक सोचा समझा मंसूबा जिसके लिये पैसा अमरीका में मौजूद बअ़ज़ गुरूप और तन्ज़ीमें मुहय्या कर रही हैं।"

ग़ौर तलब बात यह है कि यह हिज्रत रूस के ज़ेरे इंतेज़ाम मशिरकी यूरप और ख़ुद रूस के अंदर से हुई जोकि चर्चिल के बक़ौल

Iron Curtain (सुर्ख़ पर्दे) से हुई जहां से मक्खी भी इधर से उधर नहीं जा सकती थी, बल्कि अमरीकी और इत्तिहादी तो दूसरी तरफ़ के लोगों को वापस रूस में धकेल रहे थे। ऐसे कठिन वक़्त में हज़ारों की तादाद में रूस और मशिरक़ी यूरप से यहूदियों की नक़्ल मकानी इस बात का खुला सबूत है कि उसको लंदन, मास्को और वाशिंगटन की पूरी पूरी हिमायत हासिल थी। कहां तो कोई भी शख़्स सोवियत यूनियन से बग़ैर इजाज़त के नहीं निकल सकता था और कहां यह हाल कि Iron Curtain ने यहूदियों के रेले को फ़लस्तीन जाने की खुली छूट रखी थी।

1946 ई0 और 1947 ई0 में सहीवनी दहशतगर्दी अपने उरूज पर थीं। यहूदी दहशतगर्दों ने बर्तानवीर फ़ौजियों को भी न बख़्शा। हज़ारों बर्तानवी फ़ौजी (जिनको पहली जंगे अज़ीम में फ़लस्तीन लाया गया था) उन पर घात लगाकर हमला किया गया, कभी उन्हें सोते हुए अपने अब्दी घर रवाना कर दिया गया, या फिर धमाके करके मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से हलाक कर दिया गया। एक बाग़ में दो बर्तानवी फ़ौजियों को अज़ीयतें देकर हलाक कर दिया गया था। जूलाई 1946 ई0 में यरोशलम में मौजूद किंग डेविड होटल (King Dewad Hotel) के धमाके से उड़ा दिया गया। यह धमाका करने वाले दहशतगर्द सहीवनी अच्छी तरह से जानते थे कि उस वक़्त उस होटल में न सिर्फ़ बर्तानवी फ़ौजी बल्कि बीस बेख़बर यहूदी और चालीस मुसलमान भी उस होटल में काम कर रहे होंगे। बम धमाके से बीस मिनट पहले होटल में एक फ़ोन काल मौसूल हुई जिसमें बरतानवी कमांडर को यह धमकी दी गई थी कि वह उस इलाक़े को ख़ाली करले जोकि न किया गया, क्योंकि बर्तानवी समझते थे कि यह इलाक़ा पूरी तरह से महफ़ूज़ है और इस तरह की दीगर टेलीफ़ोन

कालें पहले भी मौसूल होती आई थीं।

अब देखने में तो यह बेवकूफ़ महसूस होती है लेकिन ग़ौर तलब बात यह है कि सहीवनियों ने अपने हम नस्ल और हम मज़हब यहूदियों को भी न बताया जो उस इमारत में काम कर रहे थे ताकि इस आप्रेशन की कामियाबी को खुफ़िया मंसूबाबंदी से मुम्किन बनाया जाए। इस हमले में 80 से ज़ाइद बरतानवी, यहूदी और मुसलमान हलाक हुए और सहीवनी पालीसी कि "ज़रूरत आख़िरी हद तक जाने पर मजबूर करती है।" अपनी पूरी आब व ताब से दुनिया का मुंह चिड़ाती नज़र आई।

दहशतगर्दी की बढ़ती हुई वारदातों, हज़ारों लाखों की तादाद में रूसी यहूदियों की नक़्ल मकानी और खुद बर्तानिया पर सहीवनियों के बढ़ते हुए दबाव और अमरीका में फ्रीमैसन अमरीकी सदर हैरी टुरूमैन के भी सख़्त दबाव में अंग्रेज़ ने यहूदी दबाव क़बूल करते हुए अपना मैन्डेट ख़त्म करके फ़लस्तीन को अक़्वामे मुत्तहिदा के हवाले कर दिया था। नवम्बर 29, 1947 ई0 में फ़लस्तीन को दो आज़ाद रियासतों में तक़सीम करने की सिफ़ारिश की गई। यकुम अक्तूबर 1947 ई0 को अक़्वामे मुत्तहिदा में इस प्लान को मुसलमानों ने मुस्तरद कर दिया था। उनके लिये बात बिल्कुल नाक़ाबिले क़बूल थी कि वह अपने 2000 साल पुराने वतन को छोड़ दें।

अक़्वामे मुत्तहिदा में जब बिलआख़िर फ़लस्तीन तक़सीम का प्लान पेश किया गया तो उसमें 54 फ़ीसद से ज़्यादा इलाक़ा यहूदियों को दिया गया था ताकि वह इस्राईल का क़याम मुम्किन बना सकें। सबसे ज़्यादा मज़े की बात यह थी कि जब अक़्वामे मुत्तहिदा की निगरानी में निजी इम्लाक का सर्वे किया गया तो 93 फ़ीसद निजी मिल्कियत वाली ज़मीनें फ़लस्तीनियों की अपनी थीं। यह बात

अक़वामे मुत्तहिदा की अपनी सर्वे रिपोर्ट में दर्ज है लेकिन अक़वामे मुत्तहिदा की सबसे हैरत अंगेज़ तजवीज़ यह थी कि 93 फ़ीसद मिल्कियत और 70 फ़ीसद आबादी वाले मुसलमानों के हिस्सा में 40 फ़ीसद इलाक़ा दिया गया जबकि सहीवनियों को 54 फ़ीसद इलाक़ा दिया गया। तक़रीबन तमाम अच्छी और क़ाबिल काश्त ज़मीनें यहूद को दे दी गईं। ख़ास तौर पर बह्रे मुतवस्सित के साथ की ज़रख़ेज़ ज़मीनें भी उन्ही को दे दी गईं, हालांकि यह ज़मीनें कई नस्लों से अरबों ही की थीं और उन पर उनके आबा व अज्दाद काश्तकारी करते आए थे और उनकी पैदावार ही इस इलाक़े की अस्ल बरआमदात थीं। इसके अलावा अक़वामे मुत्तहिदा की तक़सीम के मंसूबे में नजफ़ का सेहरा भी सहीवनियों को दे दिया गया था। हालांकि यहां तो ज़्यादातर अरब बद्दू क़बाइल आबाद दे और यहां पर यहूद अरब तनासुब 1,00,00 पर 475 का था। इसी तरह यहीं से अर्ज़े फ़लस्तीन की ज़्यादातर गंदुम और गेहूं की पैदावार हासिल की जाती थी जबकि ज़ैतून और स्ट्रास (एक सहराई फल) की पैदावार भी इस इलाक़े से हुई थी लेकिन इस सबके बावजूद इस्राईल यह कहता रहता है: "इस्राईल वह है कि जिसने नजफ़ के सहरा को एक ज़रख़ेज़ और खूबसूरत बाग़ में तबदील कर लिया है।"

(Dimbleby: The Palestenians)

एक मर्तबा फिर सहीवनी प्रोपेगंडे ने दुनिया भर के अवाम की आंखों में धूल झोंक दी। जैस जैसे अक़वामे मुत्तहिदा में फ़लस्तीन के तक़सीम की कोशिश शुरू हुई, वैसे वैसे सहीवनियों ने मरबूत लाबिंग शुरू कर दी जबकि दूसरी तरफ़ अरबों के पास ऐसे ज़राए नहीं थे जिनसे वह ऐसी लाबियां बना सकतें और न ही वह झूट बोलने के फ़न से आशना थे।

इस प्लान पर जब पहली बार वोटिंग की गई तो इसे मतलूबा तादाद में वोट नहीं मिल सके। अगले चंद दिनों में अमरीकी सदर हैरी टुरूमैन और अमरीकी इंतेज़ामिया ने दीगर मुमालिक पर इतना दबाव डाला कि ज़्यादातर वोट जो कि "नहीं" में थे या ऐसे मुमालिक के थे जो वोटिंग से इज्तिनाब कर रहे थे, उनको हां में तबदील कर लिया गया जबकि बअ़ज़ मुमालिक जिनका वोट इस मंसूबे के ख़िलाफ़ था उनको वोट डालने से इज्तिनाब करने की तरग़ीब दी गई। उस वक़्त के अमरीकी सैक्रट्री दिफ़ाअ़ John Forestal ने कहा थाः "अमरीका इस वक़्त स्कैंडल की हद तक दूसरी क़ौमों पर दबाव और ज़ोर डालने वाला मुज्रिम था।"

एक मुअर्रिख़ J. Boweryer Bell का कहना है कि अगर्चे सहीवनियों ने सिफ़ारती जंग ज़रूर जीत ली थी हालांकि "इंजील और तौरात की पेशगोइयों की जज़्बाती अंदाज़ में दुहराने के अलावा उनके पास और कोई ठोस सबूत नहीं था।" लेकिन चूंकि अरब पूरी सरज़मीन चाहते थे जबकि सहीवनी समझोते की बात कर रहे थे और अक़्वामे मुत्तहिदा में ज़्यादातर मुमालिक इंसाफ़ पर मब्नी फ़ैसले की बात कर रहे थे, इसी लिये अरबों की बात को बिल्कुल ग़लत पैराए से देखा जाने लगा जबकि सहीवनियों के लिये फ़लस्तीन में आधा हिस्सा मार्लीना एक अच्छा समझौता क्योंकि वह तो एक रत्ती बराबर भी उस ज़मीन के मालिक नहीं थे जो उनको एलाट की गई थी। (यअ़नी वह ख़ित्ता जो आपकी मिल्कियत नहीं उसका 54 फ़ीसद अगर आप को मिल जाए तो यह एक निहायत नफ़ा बख़्श और अच्छा समझौता है) यह एक शैतानी मंसूबा था लेकिन इंतिहाई चालाकी से तरतीब दिया गया था।

सबसे बड़ी धोकाबाज़ी यह हुई थी कि इस क़रारदाद में जब

इस्राईल ने अपने मतलूबा रक्बे से भी ज़्यादा ख़ित्ते पर क़ब्ज़ा कर लिया तो फिर बअ्ज़ हल्क़ों ने उसे 1948 ई० की करारदाद के मुताबिक़ पीछे हटने को कहा। इस पर इस्राईली सफ़ीर ने बनी इस्राईल की रिवायती तावील साज़ी की झलक दिखाते हुए कहा: "क्योंकि इस मुसवद्दे की तहरीर फ़ेअ्ल माज़ी में है इसलिये अगर इस पर अमलदरआमद नहीं होता तो यह ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाती है।"

चूंकि अक़्वामे मुत्तहिदा की इन सिफ़ारिशात के बावजूद फ़लस्तीन में तशद्दुद बढ़ता ही चला गया। इसलिये अक़्वामे मुत्तहिदा ने सलामती कौंसिल की तमाम सिफ़ारिशात को मुअ्त्तल करने की कोशिश की जबकि टुरूमैन ने भी सहीवनियों की बेझिझक दहशतगर्दी से तंग आकर इस्राईल के बारे में अपनी पालीसी तबदील करने का इंदियह दिया और इस बात की अफ़्वाहें गर्दिश करना शुरू हो गईं कि बर्तानिया की सरबराही में दोबारा से मैंन्डेट वाला निज़ाम क़ाइम किया जाएगा जबकि इसमें अमरीका का भारी किर्दार होगा। इस मौक़ा पर सहीवनियों ने इस बात का एहसास कर लिया कि अगर ऐसा हो गया तो इस्राईल का मुआमला शायद हमेशा के लिये खटाई में पड़ जाए। लिहाज़ा उन्होंने ज़रा भी देर लगाए बग़ैर दहशतगर्दी की कार्रवाइयों में कई गुना इज़ाफ़ा कर दिया।

एक सोचे समझे मंसूबे के तहत बेसर व सामान अरबों को जंग में झोंका गया। जबकि उनको तो 1939 ई० के वाइट पेपर (किर्तास अब्यज़) की इशाअत के बाद पहले ही हथियार डलवा कर निहत्ता कर दिया गया था। इसके बाद इस यक्तरफ़ा जंग में जो कुछ हुआ वह इस तरह से है:

"यहूदी दहशतगर्द तन्ज़ीमों "अर्गन" और "लेही गैंग" ने

"देरयासीन" नामी गांव पर हमला कर दिया। उन्हें जो भी नज़र आता उसको छुरियों से काट देते। 250 से ज़ाइद अरब मुसलमानों को जिन में ज़्यादातर औरतें और बच्चियां थीं, कुंवों में फैंक दिया गया।" (Time Magazine)

इस संगीन दहशतगर्दी के नतीजे में फ़लस्तीनियों को इस बात का अंदाज़ा हो गया कि उन्होंने अपनी ज़मीन नहीं छोड़ी तो उनके साथ क्या होगा......लिहाज़ा चंद हज़ार अफ़राद के अलावा लाखों की तादाद में अरबों ने क़रीबी अरब रियासतों में हिज्रत करना शुरू कर दी।

"जब लोगों को ख़बर मिली कि "अर्गन" (बंदनामे ज़माना दहशतगर्द यहूदी तनज़ीम) के बदमआश इस गांव के क़रीब आ रहे हैं जोकि ज़्यादातर अरब ईसाइयों पर मुशतमिल था तो बहुत से लोगों ने एक गिर्जा घर में पनाह ले ली और एक मक़ामी राहिब के पीछे सफ़ेद झंडे के साथ खड़े हो गए। यह दिखाने के लिये कि उनके पास कोई हथियार नहीं और यह कि उनकी कोई ख़्वाहिश नहीं कि वह इस्राईलियों से लड़ें। देरयासीन हर्गिज़ कोई अस्करी ठिकाना न नहीं था बल्कि इस गांव के ईसाइयों के यहूदियों के साथ अच्छे तअ़ल्लुक़ात थे। यह गांव "हीफ़ा" में वाक़ेअ़ था। लेकिन यहूदी दहशतगर्दों ने किसी चीज़ का लिहाज़ न किया। न गिर्जा घर, न अमन की ख़्वाहिश और सफ़ेद झंडे की अलामत की। उन्होंने औरतों, बच्चों समेत बेदरीग़ क़त्ले आम किया। उनकी ख़ूनी प्यास उस वक़्त बुझी जब वहां लाशों के अलावा कुछ न बचा।"

इस गांव के रहने वालों का क़त्ले आम सिर्फ़ एक नियत से किया गया था। वह यह कि मक़ामी ग़रीब आंबादी में ख़ौफ़ बरपा किया जा सके। Jaques de Reynier जो कि रेड क्रास का

नुमाइंदा था जब अगले रोज़ उस जगह पर पहुंचा तो उसे इस्राईलियों ने बताया कि वह उस इलाके की "सफ़ाई" कर रहे हैं। उन्होंने मशीनगनों और दस्ती बमों को इस्तेमाल किया था जबकि आख़िर में छुरियां इस्तेमाल की थीं। कोई भी शख़्स देख सकता था कि 250 से ज़ाइद मर्द, औरतें और बच्चे ज़ब्ह किये गये थे। नौजवान औरतों की अस्मत दरी की गई थी। एक हामिला औरत को बुरी तरह से मारा पीटा गया था और उसके बच्चे को चाकू से पेट काट कर निकाल दिगया गया था। एक नो उम्र लड़की को उस वक़्त गोली से हलाक कद दिया गया था जब उसने एक छोटे बच्चे को बचाने की कोशिश की थी।

(Dimbleby, "The Palestenians" p 80)

Richard Cutting के मुताबिक़ जो कि इस पूरे इलाक़े के लिये अक़वामे मुत्तहिदा का नाइब इंस्पेक्टर जनरल था, लोगों को बाक़ाएदा काट कर टुक्ड़े टुक्ड़े किया गया था और कानों के कटे हुए हिस्से भी हमें इस्राईली फ़ौजियों के कपड़ों से चिपके हुए मिले थे जिनमें इन औरतों और बच्चों के बुन्दे भी कानों में लगे हुए थे जिनको "सफ़ाई मुहिम" के दौरान टुक्ड़े टुक्ड़े कर दिया गया था।

Cutting ने इस बात का भी ज़िक्र किया कि उसको एक ख़ुफ़िया पैग़ाम याददाश्त देखने को मिला था जोकि अर्गन को हगाना (Hagannah) जो कि इस वक़्त इस्राईल की बाज़ाब्ता आर्मी थी, की तरफ़ से दी गई थी। इसमें लिखा था:

"देरयासीन हमारे प्लान का पहला हिस्सा था, जब तक तुम उस पर क़ब्ज़ा जमाए रखते हो तो हमें इस बात पर कोई एतिराज़ नहीं कि तुम किस तरह से यह सब कुछ करते हो।"

(Dimbelby, "The Palestenians", p.80)

इसके काफ़ी अर्से बाद बेगन ने अपनी आप बीती में इस बात का एतिराफ़ कियाः

"यक़ीनन यह एक कामियाब मंसूबा था कि अरबों को अफ़वाहों के ज़रीए कि इस तरह के मज़ीद वाक़िआत भी हो सकते हैं, इतना दहशतज़दा कर दिया जाए कि वह अपनी ज़मीनें छोड़ कर भाग जाएं।"

(Hisst, "The Gun and The Olive Branch")

अगर्चे देरयासीन पर सहीवनी हमला बहुत बड़ा इंसानी सानिहा था मगर दोबारा इसी तरह के हमले करने की धमकी महज़ ख़ाली खूली धमकी नहीं थी। इन्ही धमकियों और दहशतगर्दी की कार्रवाइयों करने वाले यहूदियों का सबसे बड़ा और कामियाब हर्बा था कि वह पेट्रोल के भरे ड्रम में आग लगाकर लुढ़का दिया करते थे। यह घूमते हुए बैरल अरबों के महलों में जाकर तबाही मचाते थे। इन बमों को "Barrel Bombs" कहा जाता था। उनको आम तौर से गुंजान आबाद बस्तियों और कानों में फैंक दिया जाता था जिनसे बेपनाह जानों और अम्लाक का ज़ियाअ़ हुआ था।

(Dimbleby, The Palestenians, P.89)

सहीवनियों की सियाह तारीख़ और क़्यामे इस्राईल की बुन्यादें

इस उन्वान के तहत हम इस्राईल के क़्याम (1948 ई0) और इस सहीवनी रियासत के लिये इख़्तियार किये जाने वाले शैतानी हथकंडों को बयान करेंगे।

सहीवनियत के दो चेहरेः

सहीवनियों की दो रुख़ हैंः एक अवामी दिखावे के लिये है। यह बड़ा नर्म दिल और सियासी मुस्कुराहट से भरपूर है। दूसरा वह संगदिल और ख़ौफ़नाक रुख़ है जो खुफ़िया और दुनिया से छिपा हुआ है। इस हक़ीक़त को समझने के लिये यह बात बहुत ज़्यादा फ़ाइदामंद होगी कि हम "थ्योडोर हर्टज़ल" जो कि सबसे बड़ा सहीवनी सियासतदान था और जिसने पहली मर्तबा सहीवनी रियासत के लिये एक बाक़ाएदा मुनज़्ज़म तरीन कोशिशों का आग़ाज़ किया था, के बयानात और किताबों का मुतालआ करें और उसकी ज़ाती अवामी राए जिसका वह हर जगह इज़हार करता रहता था, उस पर नज़र रखें। उसने अपने मक़ाले "यहूदी रियासत" (The Jewrish Stat) में तफ़सील से अपने दिमाग़ में मौजूद तरीक़ाकार को बयान किया है। वह लिखता हैः

"सहीवनियों का अज़ीमुश्शान मंसूबा यह है कि तहज़ीब व तमद्दुन की एक शाख़ बरबरियत की दर्मियान खोली और इसकी बुन्याद रखी जाए।" (Hisst, "The Gun and The Olive Branch P.15)

हर्टज़ल और उसके दोस्त बैनुल अक़्वामी दुनिया को यह धोका दे रहे थे कि मक़ामी अरब आबादी के हुक़ूक़ और उनकी आज़ादी पर कभी समझौता नहीं किया जाएगा। अपने एक और मक़ाले (1902 ई0) Alteneuland यअ़नी Old New Land में हर्टज़ल ने एक ऐसा नक़्शा खींचा था जिसमें सहीवनी रियासत के फ़लस्तीन में क़्याम के फ़वाइद का ज़िक्र किया गया था। इसमें उसने लिखा थाः

"अरब हमारे नए दोस्त बन जाएंगे और हाथ खोल कर हमारा साथ देंगे और इस बात पर बहुत ज़्यादा पुरजोश होंगे कि सहीवनी उनके लिये जदीद दुनिया के तमाम लवाज़िमात लेकर आ रहे हैं। और मलेरिया से भरे हुए दलदली इलाक़े और बेआब व गयाह सेहरा को एक ख़ुशनुमा बाग़ में तबदील कर रहे हैं।"

(Hisst, "The Gun and The Olive Branch P 16")

यह तो थी उसकी दुनिया दिखावे वाली सोच जो वह अवाम के सामने बयान करता था, लेकिन उसकी अपनी डायरी जिसमें वह अपनी ज़ाती राए का ज़िक्र करता है और जिसके बारे में उसने यह नहीं सोचा था कि वह किसी वक़्त अवामी नज़रों में आ जाएगी और एक इस खुफ़िया डायरी की इशाअ़त भी होगी। इसमें उसके ख़्यालात ही कुछ और थे। उस किताब का नाम हैः "The Complete Diaries of Theodre Hezl"

इस डायरी में उसने खुल कर इस्राईल के क़्याम की अस्ली हक़ीक़त का ज़िक्र किया है। इस्राईल के क़्याम के लिये अपने मंसूबे का ज़िक्र वह इन मरहलावार निकात की शक्ल में करता हैः

अव्वलनः वह एक यूरपी ताक़त से स्पॉनसरशिप (Sponsor Ship) का ज़िक्र करता है ताकि यहूदियों के लिये एक साज़गार

माहौल पैदा कर सके जिसका तरीक़ाकार यह होगा कि यहूदी इस मक़्सद के लिये अपनी दौलत और प्रेस (मीडिया) को इस्तेमाल करें।

दोमः हर्टज़ल इस बात पर भी ज़ोर देता है कि अरबों और यूरपी अक़्वाम में भी फूट डालने की ज़रूरत है ख़ास तौर से बड़ी यूरपी कुव्वतों के दर्मियान।

सोमः यह कि यूरपी हुकूमतों को ज़ेर करने के लिये यह इंतिहाई ज़रूरी है कि उनके जासूसी नेटवर्क में घुस कर कार्रवाई की जाए और अपने नेटवर्क की ताक़त को दिखाया जाए जोकि सारी दुनिया बिलख़ुसूस यूरप में बड़ी तेज़ी से काम कर रहा है। इस सिलसिले में उसने बड़ी ज़ंबरदस्त बात कीः

"एक नई यूरपी जंग सहीवनियत के लिये इंतेहाई फ़ाएदामंद होगी।"

हर्टज़ल ने यह भी लिखा कि सिर्फ़ तमन्नाओं ही से "सहीवनी रियासत" क़ाइम नहीं की जा सकती है। अपनी डायरी में वह इस बात पर बहस करता है कि सहीवनी रियासत सिर्फ़ उसी सूरत में पायए तकमील तक पहुंच सकती है जब मुकम्मल और दूसरों को कुचल कर रख देने वाली सहीवनी बालादस्ती क़ाइम हो जाए जबकि साथ साथ यह कोशिश भी करना होगी कि मक़ामी आबादी (यअ़नी फ़लस्तीनी मुसलमानों) को वहां से निकाल बाहर किया जाए (वाज़ेह रहे कि यह शख़्स पहली जंगे अज़ीम से पहले मर गया था और यह तहरीर ग़ालिबन 1900 की है) उसने कहाः

"हमारी कोशिश यह होगी कि ग़ुर्बत से चूर आबादी को बार्डर की दूसरी तरफ़ चुपके से मुंतक़िल किया जाए और इस मक़्सद के लिये उन्हें क़रीबी रियासतों में नौकरियों और दूसरी मुराआ़त की लालच दी जाए, जबकि ख़ुद फ़लस्तीन में उन्हें काम करने की

इजाज़त न दी जाए या फिर उनके लिये रोज़गार का हुसूल नामुम्किन बना दिया जाए।"

"The Complete Diaries of Theodre Hezl Vol1 p 343"

बाद में 1940 ई0 की दहाई में Joseph Heitz ने जोकि सहीवनी नो आबादियात का चार्ज संभाले हुए था, भी यही बात दुहराई:

"हमारे आपस के दर्मियान यह बात बिल्कुल साफ़ साफ़ होनी चाहिये कि इस्राईल में दोनों फ़रीक़ों की कोई गुंजाइश नहीं। अगर इतनी बड़ी तादाद में अरब यहां पर मौजूद रहें तो हम अपनी आज़ादी के नस्बुल ऐन को हरगिज़ नहीं पा सकेंगे। हम सारी अरब आबादी को यहां से मुंतक़िल कर देंगे या हमें ऐसा करना होगा। यहां तक कि एक भी गांव और एक भी क़बीला बाक़ी न रहे।"

(Hisst, "The Gun and The Olive Branch P 130)

क़यामे इस्राईल के लिये सहीवनियत के दो हर्बे

1- मुसलमानों की नस्लकशीः

इसकी बहुत सी मिसालें मौजूद हैं कि किस तरह से फ़लस्तीनी अरबों की नस्लकशी के लिये यहूदी दहशतगर्दी का बेदरीग़ मुज़ाहरा किया गया, ताकि सहीवनी रियासत के लिये जगह बनाई जा सके। जैसे "अलमिनारा" के गांव को मुकम्मल तौर पर ख़ाली कर लिया गया था, जब सहीवनी कुव्वतों ने मुसलमानों के तमाम घरों को धमाके से उड़ा दिया और धमकी दी कि वापस नहीं आना। इसी तरह एक और अरब क़स्बे "नसरुद्दीन" में हर घर को मिस्मार कर दिया गया था या फिर जला दिया गया था या फिर मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया गया। इसी तरह "अर्रूमा" में हंगाना ने सबको कहा थाः "या तो लबनान की तरफ़ भाग जाओ या फिर मरने के लिये तैयार हो जाओ।" हीफ़ा और टाइबरियस (Tiberius) के शहरों की सारी अरब आबादी ख़त्म हो गई थी जब 1948 ई0 में हंगाना ने वहां पर हमला किया था। Einez Zetium के गांव में सबको इकट्ठा किया गया था और एक एक शख़्स को चुन कर सलीब किया जाता था। कई औरतों को मारा पीटा गया जबकि 37 नौजवान मर्द और बच्चों को शहीद कर दिया गया। 29 अक्तूबर 1948 ई0 को इस्राईली हवाई जहाज़ों ने "सफ़सफ़" के गांव पर वहशियाना बम्बारी की थी। इसके बाद फ़ौज़ी, क़स्बे में दाख़िल होते चले गए। मक़ामी आबादी का सफ़ाया करते चले गये। इसी दौरान चार लड़कियों की कई इस्राईली फ़ौजियों ने उनके ख़ानदानों के सामने बारबार आबरू रेज़ी की। इसके बाद बीस लोगों को अंधा

करके बारी बारी गोली मार दी गई। माजिदुल करम में दस आम निहत्ते शहरियों को क़त्ल कर दिया गया।

1948-49 ई० के दौरान जब सहीवनी हमले की ख़बर फैली और फ़लस्तीनियों को इस बारे में पता चला तो इस्राईलियों ने अपनी पालीसी तबदील कर दी और फिर धोका और फ़रेब की एक नई रिवायत क़ाइम हुई। इस्राईली फ़ौजी मक़ामी रेडियो स्टेशन से और ट्रकों पर भारी मैगाफ़ोन लगाकर मुसलमान रहनुमाओं की तरफ़ से अरबी में एलानात करवाते थेः

"अल्लाह के नाम पर अपनी जानें बचाने के लिये भाग जाओ।"

(Dimbleby, "The Palestenians, Page 80)

ज़ाहिरी बात है कि सरकारी सतह पर यही कहा जाता था कि मुसलमान रहनुमाओं ही ने मक़ामी अरब आबादी को भागने का मशवरा दिया था ताकि अपनी जाईदादें छोड़कर इस जंगज़दा इलाक़े से दूर भाग जाएं। लेकिन एक फ़लस्तीनी मुसन्निफ़ वलीद ख़लील और बहुत से दूसरे मुसन्निफ़ों ने जिनमें Erskine Childers भी शामिल है जोकि कि अक़वामे मुत्तहिदा की इस कमेटी कारकुन भी रहा जो कि अरब रेडियो और रिपोर्टें की निगरानी करती थी, इन सबका कहना है कि मुसलमान रहनुमाओं की तरफ़ से फ़लस्तीन में अपने आबाई घरों को छोड़ने का एक ज़र्रा बराबर भी फ़लस्तीनी रहनुमाओं ने नहीं दिया था। इसके बरअक्स मुतअ़द्दद ऐसे हवाले दिये जाते हैं जिनसे यह साबित होता है कि फ़लस्तीनी अरब आबादी से यह कहा गया था कि फ़लस्तीन छोड़ने से मुआमला अपने हाथ से निकल जाएगा और इससे फ़लस्तीनी मक़सदियत को नुक़सान पहुंचेगा। (Woolfson, Portrail of a Palestenian, Page 17)

हत्ता कि सहीवनी भी 1950 ई0 के बाद से इस बात का ज़िक्र करते हैं जब इस्राईली हुकूमत ने फ़लस्तीनी मुहाजिरीन के बारे में यह पालीसी अपनाई: "जो चले गए वह चले गए।" यअ़नी फ़लस्तीनी मुसलमान जो आज भी अक़्वामे मुत्तहिदा के ज़ेरे निगरानी इम्दादी कैम्पों में रह रहे हैं और फ़लस्तीन से चले गए हैं वह दहशतज़दा होकर जब फ़लस्तीन से चले गए तो बस चले गए। अब उन्हें वापस आने दिया जाएगा। यही वह वक़्त था जब इस्राईली हुकूमत यह कहती रही थी: "पनाहगुज़ीनों का मस्ला एक बैनुल अक़्वामी मस्ला है जिसका इस्राईल के क़्याम से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं।"

2- झूटा प्रोपेगन्डा:

सहीवनी तहरीक के आग़ाज़ ही से उसके पीछे सबसे बड़ी कुव्वत Anti Semitism थी। जिसका मतलब है "यहूद मुख़ालिफ़" या फिर "यहूद के ख़िलाफ़ नफ़रत" जबकि इसका हक़ीक़ी मतलब यह है कि "इस्राईल के बेटे" (यहूद) "जन्टाइल" (ग़ैर यहूदी इंसानों) के साथ नहीं रह सकते क्योंकि वहां पर उन्हें नफ़रत, तअ़स्सुब और ज़ुल्म का निशाना बनाया जाएगा। इसी लिये यहूदियों को भी अपने आप को अलग करना पड़ेगा, बिल्कुल वैसे ही जैसे "Britan Is British"। यह बात डाक्टर वाइज़मैन ने कही थी क्योंकि सहीवनी तहरीक के लिये सबसे बड़ा मस्ला यह था कि इतने यहूदियों को जमा किया जा सके जोकि न सिर्फ़ इस मक़्सद के लिये माली मदद कर सकें बल्कि वह इस्राईल की तरफ़ नक़्ल मकानी करने के लिये राज़ी भी हों। इस मक़्सद के लिये बहुत से मवाक़ेअ़ पर सहीवनी रहनुमाओं को आम यहूदियों पर दबाव और दहशगर्दी के हथकंडे इस्तेमाल करना पड़े, ताकि वह इस बात को यक़ीनी बना सकें कि यहूदी आबादी फ़लस्तीनियों की आबादी से ज़्यादा है जिसकी

पैदाइश की शर्ह बहुत ज़्यादा है।

जैसे 1945 ई० में अमरीकी सदर फ़्रैंकलिन रोज़वेल्ट ने मग़रिबी यूरपी अक़्वाम जोकि अमरीकियों के साथ हैं, यह तजवीज़ दी कि होलोकास्ट के मज़लूमों को अमरीका और यूरप के लिये एक लाख वीज़ों का इज्रा किया जाए। इस होलोकास्ट से बच जाने वाले यूरपी यहूदियों में से ज़्यादातर मश्रिक़ी वसती (इस्राईल) नहीं जाना चाहते थे और उनका सहीवनियों से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं था, लेकिन सहीवनियों ने फ़ौरन इस मंसूबे को (यअ़नी यूरपी यहूदियों को अमरीका का वीज़ा देने के मंसूबे को) शदीद तन्क़ीद का निशाना बनाया और इस बात पर ज़ोर दिया कि कम अज़ कम तीन लाख अफ़राद को इस्राईल भेजा जाए जबकि अमरीका की कांग्रेस पर दबाव डाला गया कि वह सिर्फ़ बीस हज़ार यहूदियों को अमरीका का वीज़ा जारी करे और इस काम में सहीवनियों की मदद की जाए कि बाक़ी सब यहूदी इस्राईल की तरफ़ नक़्ल मकानी कर सकें।

(Dimbleby, "The Palestenians, Page 84)

1950 ई० की दहाई के आग़ाज़ ही में इस्राईल से यहूदियों की वापस नक़्ल मकानी इस्राईल आमद के लिये की गई नक़्ल मकानी से भी बढ़ गई जो कि सहीवनियों के लिये इंतिहाई ख़तरनाक था। इस चीज़ को रोकने और आबादी की इस कमी को पूरा करने के लिये इस्राईली हुकूमत की नज़र क़रीबी अरब मुमालिक पर पड़ी। ख़ास तौर से इराक़ पर जहां 1,30,000 यहूदी आबाद हैं। यहां के यहूदी निस्बतन ख़ुशहाल थे और अरब आबादी के साथ पुरअम्न तरीक़े से रह रहे थे और यहां पर उनकी सियासी साख भी मज़बूत थी। इस्राईल की तरफ़ नक़्ल मकानी की तरग़ीब देने के लिये सहीवनियों ने 1950-51 ई० दर्मियानी अर्से में इराक़ में रिहाइश पज़ीर यहूदियों

के मुहल्ले में तीन बम धमाके किये और उसका यह नक़्शा खींचा कि यह यहूदी मुख़ालिफ़ दहशतगर्द गिरोहों का काम है। इन धमाकों के फ़ौरन बाद ही सहीवनियों ने ऐसे पम्फ़लेट बांटना शुरू कर दिये जिनमें यह दर्ज था कि इस्राईल की तरफ़ हिज्रत की जाए क्योंकि यही वह महफ़ूज़ इलाक़ा है जहां वह अब रह सकते हैं। नाक़िस मंसूबाबंदी और जल्दबाज़ी की वजह से तहक़ीक़ी इदारों की नज़र उन सहीवनियों की तरफ़ हो गई जो इन धमाकों में मुलव्विस थे और इस सिलसिले में तहक़ीक़ात का आग़ाज़ किया गया। एक आदमी जिसका नाम Yehudah Tajja था, को उसके साथियों समेत गिरफ़्तार कर लिया गया जिसने इस बात का एतिराफ़ किया कि उसको धमाके करने के लिये सहीवनियों ने पैसे दिये थे। यह सबूत इराक़ी अहलेकारों के लिये इंतिहाई मुअस्सिर साबित हुए, लेकिन सहीवनी प्रोपेगंडे का कमाल देखिये कि उन्होंने फिर भी इराक़ी हुकूमत पर बहुत ज़्यादा सियासी दबाव डालना शुरू कर दिया। ख़ास तौर से बैनुल अक़वामी हल्क़ों की तरफ़ से बेतहाशा दबाव डाला गया और यहूदियों को इराक़ छोड़ने का मशवरा दिया गया। क़ुदरती तौर पर उन पर सिर्फ़ इस्राईल ही के दरवाज़े खुले थे।

(Hisst, "The Gun and The Olive Branch P155-164")

इससे भी ज़्यादा अफ़सोसनाक वाक़िआ और सहीवनी सफ़ाकियत की मिसाल नवम्बर 1940 ई0 के महीने में Patria नामी कश्ती के डूबने के वाक़िए में हुई जब उसमें सवार कई बर्तानवी मुअज़्ज़ज़ीन को 252 ग़ैर क़ानूनी यहूदी तारिकीन वतन समेत ग़र्क़ करके डूबो दिया गया। इस वाक़िए की तफ़सील 1968 ई0 में Dr. Herzl Resenblim ने तलअबीब के अख़बार Yedios Acheronos में लिखी। Resenbliam ms

सहीवनी ऐक्शन कमेटी का हिस्सा था जिसने इस हमले का हुक्म दिया था। उसने अख़्बार में इंकिशाफ़ किया कि उसने इस तजवीज़ की सख़्ती से मुख़ालिफ़त की थी कि Patria हमला न किया जाए लेकिन उसको सख़्त धमकी दी गई और जिस्मानी तशद्दुद का भी निशाना बनाया गया था ताकि उसकी ज़बान बंद की जा सके। इस ग़ैर इंसानी अमल के दिफ़ाअ में मूशे शाहरत Moshe Sharret ने बयान दिया था (जोकि इस्राईल हुकूमत का आला उहदेदार था): "हमें कभी चंद अफ़राद की कुर्बानी देकर बहुत से अफ़राद को बचाना होता है।" इन यहूदियों को इसलिये कुर्बान किया गया था कि सारी दुनिया में यह ढिंढोरा पीटा जा सके कि यहूद मुख़ालिफ़ लहर हद से तजावुज़ कर चुकी है। यही Anti Semitism सहीवनी तहरीक के ख़ून का हिस्सा और उसकी बक़ा का सहारा है।

यहूद दुनिया भर में अपने ख़िलाफ़ पाई जाने वाली नफ़रत का रोना रोते रहते हैं लेकिन दरहक़ीक़त इसमें मौरूसी और आलमगीर नफ़रत ने इस्राईल के इस्तिहकाम में बड़ा मुअस्सिर किर्दार अदा किया। World Zionist Organization के सदर Dr. Nahun Goldman अपनी 23 जूलाई 1958 ई० की जिनेवा की कांग्रेस में मुन्अक़िद की गई तक़रीर में कहता है:

"यहूद से नफ़रत में मौजूदा कमी ने एक नई घंटी बजा दी है। अब यहूदी हर जगह बराबर के शहरी हैं। जहां यह यहूदी कम्यूनिटी के लिये अच्छी बात, वहां दूसरी तरफ़ हमारी सियासी ज़िंदगी के लिये यह इंतिहाई से ज़्यादा मन्फ़ी असर रखती है।"

इस तरह Davar अख़्बार के मुदब्बिर ने जो कि इस्राईल में सबसे बड़ी सोशलिस्ट पार्टी का अख़्बार है, लिखा था कि वह उन यहूदियों को जोकि सुख का सांस लेकर आराम से दुनिया भर में बैठ

गए हैं, उनको इस तरह से वापस लाएगा कि चंद अच्छी कारकर्दगी वाले नौजवानों को भेज कर यह नअ़रा बाज़ी करवाई जाए: "यहूदियो! तुम इस्राईल वापस चले जाओ।" इससे भी ज़्यादा हैरत अंगेज़ इंकिशाफ़ उस वक़्त सामने आया जब Malkid Greenwald जो कि जर्मन हुकूमत का रुक्न था, उसने इस बात का इक़रार किया कि यहूदी ऐजंसी जो कि उस वक़्त सहीवनी इदारों की सबसे मज़बूत ऐजंसी थी, ने नाज़ियों के साथ यह मुआहदा किया था कि वह हज़ारों की तादाद में यहूदियों को बेदख़ल और यहूदी कैम्पों में मुंतक़िल करने की कोशिशों में ख़ुदकश जर्मन नाज़ी हुकूमत की मदद करेंगे। उसकी ग़र्ज़ यह थी कि उनको सिहतमंद यहूदियों को इस्राईल की आबादी बढ़ाने से इस्राईल भेजने की इजाज़त दी जाए। उसको बाद में मुआफ़ कर दिया गया लेकिन उसने यह इल्ज़ाम यहूदी ऐजंसी के Rudolp Kastner को दिया। उसका एतिराफ़ जर्मन हुकूमत के सबसे बड़े नाज़ी रुक्न Adolph Eihmann ने Life मैगज़ीन के एक आर्टीकल में भी किया।

इंसाफ़ पसंद यहूदियों की जानिब से सहीवनियत की मुख़ालिफ़त

यह बाब बड़ा दिलचस्प है। यहूदियों और सहीवनियों की पैदाकर्दा तबाही व बरबादी को जानने के लिये हमें अरबों ही की नहीं, बल्कि उन यहूदियों की भी सुननी चाहिये जोकि इस्राईल में आए थे और उनकी राए भी लेनी चाहिये। इस सिलसिले में Nahan Chofshi के ख़्यालात हद से ज़्यादा अहम हैं। वह इन पहले पहल के सहीवनी तारिकीने वतन में से थे जिनका जोश एक भयानक तजुर्बे में तबदील हो गया। जब उसने इस्राईल के क़्याम और फ़लस्तीनी आबादी के लिये ग़ैर मुंसिफ़ाना रवय्ये को देखा। वह लिखता है:

"हम आए और हमने मक़ामी अरब आबादी को पनाह गुज़ीनों में तबदील कर दिया और इस सब के बावजूद हम उनको गाली देते हैं और उनसे नफ़रत बरतते हैं। बजाए इसके कि हम अपने किये पर नादिम हों, हमें शर्म आए और हम उसका कुछ हद तक इज़ाला करें। हम अपने भयानक करतूतों का दिफ़ाअ़ करते हैं और उनको मज़ीद बढ़ा चढ़ा कर हसीन मंज़रकशी करते हैं।"

(Dimbleby, The Palestenians, Page91)

Chofsi आगे चल कर कहता है:

"सिर्फ़ एक अंदरूनी इंक़लाब ही से यह ताक़त हमें नसीब हो सकती है कि हम अरबों से क़ातिलाना नफ़रत न करें। अगर ऐसा न हुआ तो यह नफ़रत हमारे लिये बिलआख़िर तबाही लेकर आएगी।

उस वक़्त हमें यह एहसास होगा कि हम पर उन भयानक करतूतों की कितनी भारी ज़िम्मादारी आइद होती है जोकि हमने अरब पनाह गुज़ीनों के साथ रवा रखे। हमने उनके साथ कितना बुरा किया। हमने यहूदियों को दुनिया भर से (सात समंदर पार से) फ़लस्तीन लाकर बसाया लेकिन उन अरबों की विरासतों और जागीरों पर जिनके खेत पर हम काश्तकारी करते हैं, जिनके बाग़ों के हम फल खाते हैं, जिन के अंगूर हम इकट्ठा करते हैं और जिन शहरों में हम रहते हैं, उनको हमने लूट लिया। अरबों से ज़मीन छीन कर हमने तालीम, ख़ैरात और इबादत के लिये इमारतें खड़ी कर लीं और हम अपने लोगों से यह कहते फिरते हैं कि हम अह्ले किताब हैं और दूसरी क़ौमों के लिये एक नूर हैं।''

(Zionint Archies & Library)

Jhon Magnes जो कि Hebraw University का चांसलर था, उसने भी सहीवनियों का ज़िक्र इस तरह से किया थाः ''वह ज़ालिम, ताक़त के नशे में मस्त, माद्दियत परस्त और ज़ुल्म के पुजारी हैं।'' इसी तरह 1956 ई0 में एक इस्राईली की मय्यत की तक़रीब में मूशे दायान (Moshe Dayan) को अपने साथी सहीवनियों से यह कहना पड़ गया थाः

''हम होते ही आख़िर कौन हैं जो कि उनकी नफ़रत के ख़िलाफ़ शिकायत करें? अब आठ साल हो चुके हैं फ़लस्तीनी ग़ज़्ज़ा के पनाहगुज़ीन कैम्पों तक महदूद हो गए हैं और उनकी आंखों के सामने हम उन ज़मीनों और गांव को अपना घर बना लेते हैं कि जिसमें उनके आबा व अज्दाद रहते थे।''

(Hisst, "The Gun and The Olive Branch P172)

1921 ई0 से भी क़ब्ल एक यहूदी मुसन्निफ़ Asher

Ginzburg सहीवनी तहरीक के रुख़ को देखते हुए यह कहने पर मजबूर हो गया था:

"क्या यह वह मंज़िल है जिसके लिये हमारे वालिदैन ने कोशिशें कीं और जिसकी ख़ातिर इतनी नस्लों ने मशक़्क़तें झेली हैं? क्या सहीवन (Zion) की तरफ़ वापसी का यही वह ख़्वाब है जोकि सदियों से हमारे लोग देखते आए हैं लेकिन अब जब हम वहां लौट आए हैं तो हम ज़मीन पर शबे ख़ून मार रहे हैं। वह भी मअ़सूमों का? इन लोगों ने अपने नबियों की क़ुर्बानी देकर और तहज़ीब व तमद्दुन के उसूलों की ख़ातिर ख़ुद उन्होंने मशक़्क़तें झेली हैं, लेकिन यह आपस में हरीस हैं और फिर भी ख़ून बहा रहे हैं और अपनी इंतेक़ाम की ख़्वाहिश को बरक़रार रखे हुए हैं।"

इसके बाद, बहुत बाद, यअ़नी 1940 ई0 क़ी दहाई में एक और यहूदी मुसन्निफ़ Rib Binyomin लिखता है:

"मैं ख़ुद अपने लोगों को पहचान नहीं पा रहा हूं, क्योंकि उनकी रूहों में तबदीली आ चुकी है। इन लोगों ने मज़ालिम और सफ़्फ़ाकियत ही की वजह से नहीं बल्कि इस बात से भी कि अवामी राए में इन लोगों के करतूतों को अच्छी और क़ाबिले सताइश निगाहों से नहीं देखा जाता।"

(Thylier, "The Zionist Mind," P108)

डाक्टर वाइज़मैन जो कि एक "रूथ शील्ड" ऐजंट और सिफ़ारतकार था, उसने 1944 ई0 में जब फ़लस्तीन का दौरा किया तो यह बयान दिया था:

"इस वक़्त माहौल बिल्कुल Militorisation का हो गया है (सहीवनी आबादी और रहनुमाओं का) और इससे भी बुरी चीज़ जो कि अफ़सोसनाक भी है और ग़ैर यहूदी भी कि दहशतगर्दी का

इर्तिकाब भी किया जा रहा है।"

(Zionist Archives and Library)

मशहूर यहूदी मज़हबी रहनुमा Hirsch जोकि Neturei Karata का एक साबिक़ हुक्मरान था, उसने भी यह बयान दियाः "सहीवनियत यहूदियत के हैरानकुन हद तक ख़िलाफ़ है। यहूदी लोग एक रूहानी हलफ़ उठा चुके हैं कि वह बज़ोर ताक़त मुक़द्दस ज़मीन पर वापस नहीं जाएंगे। ख़ास तौर से वह लोग जो वहां पर रह रहे हैं (यअ़नी मक़ामी आबादी) उनकी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ वह हरगिज़ उस ज़मीन में नहीं जाएंगे। यहूदी लोगों को मुक़द्दस ज़मीन ख़ुद की तरफ़ से दी गई थी और हमने इस पर गुनाह किये। यही वजह है कि हमें जिलावतन कर दिया गया था और हमें उसकी पादाश में यह सज़ा दी गई कि इस ज़मीन को दोबारा लेने की कोशिश नहीं करेंगे।"

(Zionist Archives and Library)

यह यहूदी रहनुमा तो इस हद तक कहता हैः "होलोकास्ट भी सहीवनियत की वजह से हुआ था।"

अब नहीं मालूम कि यह शख़्स होलोकास्ट को ख़ुदा की पकड़ इस वजह से समझता था कि यह सब सहीवनियों की नाफ़रमानी की वजह से होता आया फिर सहीवनी क़्यादत के काले करतूतों को इसकी वजह समझता था? ("रूथ शील्ड" और उसका नेटवर्क और उसके सूवियत नाज़ी और अमरीकी हुकूमत के साथ तअ़ल्लुक़ात) यह बात तो वाज़ेह नहीं, लेकिन यह बात अपनी जगह मुसल्लम है कि उसे सहीवनियत की मचाई गई तबाही का अंदाज़ा ज़रूर हो चुका था।

हिस्सा दोम

फ़ील्ड स्टडी

इस्राईल जाकर मुरत्तब की गई यह मालूमात बहुत ज़्यादा जामेअ़ नहीं हैं, लेकिन जो कुछ भी मैं लिख रहा हूं वह मेरा ज़ाती तर्जुबा है। इसके लिये मैंने फ़लस्तीन के मक़ामी बाशिंदों से बहुत से इंटरव्यू किये। मैं मक़ामी लोगों से बहुत ज़्यादा घुल मिल गया ताकि मुझ को अपने क़ारईन को तहक़ीक़ी बात बताने में ज़्यादा हिचकिचाहट न हो। मैंने ज़िंदगी के तमाम शोअ़बों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले अफ़राद का इंटरव्यू किया। मैंने इन अफ़राद के साथ गुफ़्तगू इस तरह से नहीं की कि उनको यह एहसास हो मैं उनसे कुछ पूछ रहा हूं, बल्कि मैं उनसे झूट मूट बहुत सी ऐसी चीज़ें कह दता था जिससे उनको पता नहीं चलता था कि मैं उनसे सब किस लिये पूछ रहा हूं? इसलिये मुझे बहुत सी ऐसी बातें मालूम हुईं जिनका आम हालात में मालूम होना मेरे लिये नामुम्किन था। जिन लोगों ने मुझे इजाज़त दी मैंने उनके अस्ली नाम लिखे हैं और उनके शहर भी बताए हैं, लेकिन मैंने ज़्यादर अपने इन दोस्तों की शनाख़्त को खुफ़िया ही रखा है।

मैंने सबसे पहले इस बात की कोशिश की कि वाक़िआत से बराहे रास्त मुंसलिक लोगों के इंटरव्यू किये जाएं। फिर उनको मैंने दूसरे इंटरव्यूज़ से मिलाकर और दीगर ज़राए और तरीक़ों से उनकी जांच की और उनके Reliability (मुस्तनद होने के सबूत) को देखा। मैंने इस सिलसिले में ऐसे सवाल नामों (Questionarer)

जो कि एक जैसे और मेअयारी थे, का भी इस्तेमाल किया। यह सवाल नामे मैंने उन लोगों से भरवाए जो मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के रहने वाले थे और एक दूसरे को जान भी नहीं सकते थे, लेकिन उनके जवाबात में हैरानकुन हद तक मुमासिलत मौजूद थी। इन सबको मद्दे नज़र रखते हुए मैं बिलआख़िर इन नतीजे पर पहुंचा कि वाक़ई इस्राईली हुक्काम और फ़ौजी फ़लस्तीन के सियासी क़ैदियों को मुनज़्ज़म तरीक़े से और बाक़ाएदा मंसूबे के तहत अज़ियत देते हैं और आम फ़लस्तीनी आबादी के इंसानी हुक़ूक़ की खुली ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर रहे हैं।

आर्थडोक्स (कट्टर) यहूदी और सहीवनियत:

इससे पहले कि मैं अपनी तह्क़ीक़ात का तफ़सील से ज़िक्र करूं और फ़लस्तीनियों के लिये इस्राईलियों के रवय्ये का ज़िक्र करूं, मैं इतने ही ज़रूरी एक और मौज़ूअ़ का ज़िक्र करना चाहूंगा जो एक आम इस्राईली ज़ह्नियत की अक्कासी करता है। "आर्थोडोक्स" यहूदी मज़हबी तन्ज़ीमें इस्राईल के लिये सख़्त रवय्या रखती हैं। इनमें से ज़्यादातर इस्राईली फ़ौज में शमूलियत के मुकम्मल ख़िलाफ़ हैं हत्ता कि बअ़ज़ तो इस्राईल को तसलीम तक नहीं करते, लेकिन इस सब के बावजूद आर्थोडोक्स यहूद के सहीवनी तहरीक और उसके रहनुमाओं पर गहरे असरात मौजूद हैं। इसके अलावा उनकी इस्राईली के क़्याम के लिये की जाने वाली कोशिशों को भी नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता। (मुसन्निफ़ यह कहना चाहते हैं कि जो यहूदी सहीवनियत के किसी हद तक मुख़ालिफ़ हैं, वह भी इस्राईल के क़्याम में उनके मुआविन और मुसलमानों पर ढाए जाने वाले मज़ालिम पर ख़ामोश हामी या शरीककार हैं।)

अपने आप को जब मैंने एक नौजवान यहूदी मज़हबी तालिबे

इल्म ज़ाहिर किया तो मैंने कई दिन यरोशलम के "आर्थोडोक्स यशीवा" (Yashiva): यह एक तरीक़े का मुनज़्ज़म कैम्प होता है) जो पुराने अलकुद्स शहर में वाक़ेअ़ है, में दाख़िला ले लिया और कई दिन तक वहीं रहा। इस दौरान मैंने बहुत से मज़हबी मुबाहिसे और मुज़ाकिरे व मनाज़िरे भी देखे जो कि इल्मी नोइयत के थे, लेकिन इनका तअ़ल्लुक़ बराहे रास्त मज़हब से था। इसके अलावा मैंने बहुत से राहिबों (यहूदी मज़हबी पेशवाओं) से भी गुफ़्तगू की जिसमें उनसे तौरात और तालमूद के बारे में बात की जाती थी। यही बातें मैं बाद में अपने साथी तालिबे इल्मों से भी करता था और उनसे मुज़ाकिरात के ज़रीए अपनी मालूमान को मुस्तनद और वसीअ़ करता था।

तौरात तो इस हद तक मुब्हम मतालिब व मफ़ाहीम पर मुशतमिल है कि उनमें खुद आपस में तदाद मौजूद है। इसी बिना पर उसकी ज़रूरत पेश आई कि ज़बानी क़ानून को "मिशनाह" (Mishnah) की शक्ल में अलग से तरतीब दिया जाए जो कि सिर्फ़ मअ़नी और तशरीह मालूम करने के लिये इस्तेमाल होगा। इसके लिये हमें "तालमूद" के एक और हिस्से जिसका नाम "जिमारह" (Gemarah) है, को भी इस्तेमाल करना होता है जो कि हक़ीक़तन इस क़ानूनी राए वह्य (यहूदी उलमा के फ़तावे) पर मुशतमिल है जोकि नस्ल दर नस्ल यहूदी राहिबों ने की थी और इसके कुछ हिस्से जनाबे ईसा (अलै0) से भी पहले ज़माने के हैं।

एक और चीज़ जिस पर आर्थोडोक्स यहूदी सबसे ज़्यादा ज़ोर देते हैं, बल्कि यह कहना सही होगा कि उनकी बुन्याद ही इस चीज़ पर है, वह यह कि तमाम क़वानीन को बिल्कुल "जामेअ़" कर दिया जाए ताकि दुनिया के हर मस्ले का हल उसमें मौजूद हो और कोई भी मस्ला रह न जाए जो इन यहूदी मज़हबी क़वानीन के रू से हल

न होता हो। तौरात के बारे में, मैं कोई आलिम नहीं हूं लेकिन मैं जो समझता हूं वह कुछ यूं है कि तौरात की सबसे पहली शक्ल "अहकामे अशरा" थी। बाद के अंबिया के जो सहीफे आए वह तौरात में शामिल किये जाते रहे जबकि इसकी वज़ाहत और इसके मआनी यह लोग अलग किताबों में लिखते थे जैसे तालमूद। तालमूद की तारीख़ के मुताबिक़ यह बाबुल में कैद की तारीख़ तक मुकम्मल हो गई थी, जबकि मिशनाह (Mishanah) ईसा (अलै0) के आस पास की लिखी हुई है। अजीब बात यह है कि इसमें और तालमूद में पैग़म्बरों के अलावा यहूदी उलमा के फ़त्वे भी दर्ज किये हुए हैं। जिस सवाल का उनके पास जवाब न होता कि इंसान को यह अच्छी तरह से पता हो कि उसे किस तरह से और क्या करना चाहिये, इसके मुतअ़ल्लिक़ जवाबात इन्ही क़वानीन से दरयाफ़्त किये जाते हैं। (यह बिल्कुल सूरह बक़रा में मज़कूर गाए वाला वाक़िआ है कि किस रंग की, कितनी उम्र की और कैसे औसाफ वाली गाए? राक़िम) इसका नतीजा यह है कि हैरानकुन हद तक यह 613 क़वानीन हैं जो कि वक़्त के साथ साथ बनते चले आए हैं और यह बढ़ते ही चले गए हैं। अगर कोई चाहता है कि वह खुदा से करीब पहुंच जाए तो उसे इन सब पर अच्छी तरह से और पूरी पूरी तरह से अमल करना पड़ता है। ज़िंदगी का हर पहलू जिसमें उसका रहन सहन, उसका लिबास, उसका खाना पीना, उसके बाल, उसके ख़्यालात, उसकी इबादात और उनके तरीके बिल्कुल इसी तरह से होने चाहियें जिस तरह कि यह 613 क़वानीन बताते हैं।

हत्ता कि आम से आम मौज़ूआत और ज़िंदगी की रोज़मर्रा की चीज़ें भी इन्ही क़वानीन की भेंट चढ़ गई हैं, जैसे मिसाल के तौर पर जब मैं Yeshiva (यशीवा) में था तो वहां के तालिबे इल्म रिहाई

(ज़ेरे तरबियत यहूदी पेशवा) तीन दिन तक सिर्फ़ एक नुक्ते पर बहस करते रहे। बात सिर्फ़ इतनी सी थी कि अगर हवा ज़ोर से चले और मेज़ पर मौजूद एक शख़्स के चशमे को ज़मीन पर गिरा दे और उसका साथी उस पर चढ़ जाए तो तालमूद की रौशनी में उस वक़्त क्या फ़ैसला होना चाहिये? तलबा इस बात को मद्दे नज़र नहीं रखे हुए थे कि वह इस सिलसिले में अपनी ज़ाती राए दें कि इन चशमों के नुक़सान का ज़िम्मादार कौन है? वह तो इसी बात पर उनके हुए थे कि इस सूरत में "तालमूद" क्या कहती है? क्योंकि इस पूरी बहस में अपने दिल और दिमाग़ की कोई गुंजाइश नहीं होती हैं। बंदा ख़ुदा की तरफ़ सिर्फ़ उसी सूरत में रुजूअ़ कर सकता है या फिर उसकी तवज्जोह का मर्कज़ बन सकता है, जब वह तालमूद के क़वानीन की बहुत ज़्यादा पासदारी पूरी तरह करता हो और उसकी कोशिश यह हो कि वह ज़िंदगी को इस क़ानून के ताबेअ़ कर ले, हत्ता कि ज़िंदगी की इस्प्रिट (रूह को भी) इसी क़ानून के मातहत और ताबेअ़ कर लिया जाए ताकि वह बिल्कुल हर्फ़ ब हर्फ़ मिशनाह (Mishnah) के क़वानीन जैसी हो जाए।

लेकिन इन सबके बाद मैंने यह नतीजा अख़्ज़ किया कि इन आर्थोडोक्स यहूदियों के मुतअ़ल्लिक़ यह बात कही जा सकती है कि यह लोग ख़ुदा के वजूद को अपने अंदर ढूंढने के बजाए एक दूर दराज़ की फ़र्ज़ी दुनिया और ख़्याली क़वानीन में ढूंढते हैं। यही वजह है कि इंसान हमेशा के लिये ख़ुदा से जुदा हो जाता है और इन्ही क़वानीन की भूल भुलय्यों (Maze) में गुम हो जाता है। ज़्यादा से ज़्यादा वह यही कर सकता है या फिर उसके पास यही चारा रह जाता है कि इस धुंधले से रिश्ते के ज़रीए जिसको वह क़ानून कहता है, इसके ज़रीए वह ख़ुदा से अपना तअ़ल्लुक़ जोड़ सके, लेकिन यह

भी उसी सूरत में मुम्किन है जब वह अपनी ज़िंदगी का एक एक पल तालमूद की हज़ारों तशरीहात में तलाश करे, जो कि उसके यहूदी उलमा (स्कालर्ज़) ने बयान किये हैं।

आर्थोडोक्स (Orthodox) यहूदियत का अगर चंद लफ़्ज़ों में खुलासा निकाला जाए तो यह बनता है:

"हर तरह से अक़्ल का दिल पर जबरी और न ख़त्म होने वाला निफ़ाज़, ज़िम्मादारी (Duty) का अशद्द ज़रूरत पर, ख़्याल का एहसासात पर।"

लेकिन क्या ज़िंदगी इस हद तक क़ानून के ज़ेरे असर हो सकती है कि हर चीज़ पत्थर पर लिख दी जाए? क्या इंसानी रूह को और उसके ख़्याल और अमल को इस हद तक मुक़य्यद किया जा सकता है? क्या इंसानी फ़ित्रत और जिबिल्लत को इंसान के हर अमल पर असरअंदाज़ हो जाने वाले और इंसान ही के बनाए हुए क़ानून के ताबेअ़ किया जा सकता है? अगर ग़ौर किया जाए तो क्या इस चीज़ की ख़्वाहिश भी करना, इंसानी आज़ादी, ज़रूरत और जोश व वलवला इन सबको मिटाने और ज़िंदगी से ही नफ़रत करने के मुतरादिफ़ नहीं है???

"तालमूदी यहूदियत" ज़ह्न को क़ाबू करने का एक सिस्टम है जिससे शख़्सी इंफ़िरादियत का ख़ात्मा कर देने की कोशिश की जाती है। यह आज़ादी को Pharisees Rubic के तंग रास्तों तक महदूद करने की कोशिश है। हमें यह भी मालूम होना चाहिये कि फ़रीसी (Pharisees) यअ़नी यहूदी अहबार और फ़क़ीह, ईसा (अलै0) के सख़्त मुख़ालिफ़ थे। सिर्फ़ यह वह लोग हैं जिनके लिये ईसा (अलै0) नफ़रत और नापसंदीदगी का मुआमला फ़रमाते थे। तालमूदी यहूदियत हज़रत ईसा (अलै0) के बिल्कुल ख़िलाफ़ खड़ी है

क्योंकि ईसाइयत में मुहब्बत की वकालत की गई है, एक ऐसी चीज़ की जोकि दुनिया के तमाम बड़े मज़ाहिब का नस्बुल ऐन रहा है, जिसमें यहूदियत भी शामिल है, मासिवाए यहूदियत का "फ़रीसी" (Pharasaic) फ़िर्क़ा।

बहुत से यहूदी जिनमें खुद "आर्थोडोक्स यहूदी" भी शामिल हैं, खुद ज़िंदगी और रूह के ख़िलाफ़ "तालमूदी जंग" में दिलचस्पी नहीं रखते। वह ईसाइयत के ख़िलाफ़ इस नज़रियाती जंग की तरफ़ भी माइल नहीं होते जिसे यहूदी वरपा करते चले आए हैं......लेकिन फिर भी यह चीज़ उनके शुऊर में ज़रूर लिख दी जाती है, क्योंकि यह तो सबसे बुन्यादी चीज़ है जिस पर रिबाइयों (यहूदी पादरियों) की तरबियत होती है। इसी चीज़ से यहूदी ज़हनियत मुतअस्सिर होती है और अक्सरियत को यह मौक़ा फ़राहम करती है क वह उस थोड़े से तबक़े के लिये न ख़त्म होने वाली मदद करते रहें, जिसका काम ही यही है कि वह दूसरी क़ुव्वतों के साथ मिल कर इंसान के पास मौजूद सबसे क़ीमती चीज़ को तबाह कर सकें, यअ़नी इंसानी रूह की वह आज़ादी जिस पर आज तक आंच नहीं आई।

☆☆☆

इस्राईल में प्रेस का किर्दार

दरयाए उर्दुन के मग़रिबी किनारे में सफ़र के दौरान मैं खुशकिस्मत था कि फ़लस्तीनी सहाफ़ियों से राबते में आ गया जिन्होंने मुझे इस बारे में बताया कि इस्राईली मीडिया किस तरह से काम करता है? इस्राईली मीडिया आम तौर से वही कुछ बयान करता है कि उसे इस्राईल के अस्करी तर्जुमान बताते हैं। इन अस्करी बयाना में सिर्फ़ यहूदी फ़ौजियों से ली गई मालूमात को मद्दे नज़र रखा जाता है और दीगर ऐनी शवाहिद का तो तज़किरा भी नहीं होता। अरब सहाफ़ियों को हर चीज़ जो कि वह लिख रहे हैं इस्राईली सेंसर वालों को देनी पड़ती है। इस महकमे के निगरान अक्सर आर्टीकलों को निकाल देते हैं जोकि हुकूमत, फ़ौज, पुलिस और आर्मी के काले करतूतों की निशानदही करते हैं। इस्राईली सेंसर वाले इस बात पर सबसे ज़्यादा ज़ोर देते हैं कि इन वाकिआत के पसमंज़र को बयान न किया जाए। जैसे मिसाल के तौर पर इस्राईल का एक फ़लस्तीनी ऐजंट (जोकि इस्राईलियों की मदद कर रहा है) अपने ही किसी फ़लस्तीनी पर या इसके घर या मुहल्ले पर हमला करता है या फिर इस्राईली अफ़वाज अपनी पसंदीदा "इज्तिमाई सज़ाओं" के लिये कार्रवाई करती हैं तो इस आर्टीकल में इस तरह की छोटी तफ़सील शामिल नहीं होनी चाहिये कि यह कार्रवाइयां सिर्फ़ इसलिये की जाती हैं कि फ़लस्तीनी हड़ताल जैसे "गुनाहे अज़ीम" का एलान करते हैं या फ़िर बच्चे दीवारों पर नअ़रे लिख देते हैं या फिर मुज़ाहिरे करते या इस बात पर धरना देते हैं कि उनके शहरी हुकूक की खुली ख़िलाफ़ वर्ज़ी हो रही है।

दूसरी तरफ यरोशलम पोस्ट (Jerosalem Post) जोकि ज़र्द सहाफ़त (Yellow Journalism) की एक नादिर मिसाल है, चीख़ चीख़ कर इस्राईली फ़ौज के ऊपर हमले का एलान करेगा, लेकिन वह इस हक़ीक़त को नज़रअंदाज़ कर देगा कि इस्राईली फ़ौजियों ने इस अरब हमला करने वाले के ख़ानदान के अफ़राद को बग़ैर किसी वजह के गिरफ़तार कर लिया था। अगर कोई फ़लस्तीनी सहाफ़ी इन तमाम बातों के बावजूद हक़गोई से काम लेता है तो इस्राईली सेंसर वाले इस पर सख़्त जुर्माने लगाते और क़ैद की सज़ा देते हैं। इसके अलावा इस्राईली फ़ौज कभी भी इस चीज़ में झिझक महसूस नहीं करती कि वह अपने मुल्क की जम्हूरी अक़्दार से सर्फ़े नज़र रखते हुए अपनी पालीसियों से थोड़ा सा भी इख़्तिलाफ़ रखने वालों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करें। मिसाल के तौर पर Voice of Palestine रेडियों जोकि एक अरब स्टेशन है और सीडोन में वाक़ेअ़ है अपना ज़्यादातर वक़्त फ़लस्तीनी सियासी मसाइल को देता है, उसको इस्राईली ज़ेरे ज़मीन (ख़ुफ़िया) दस्तों ने 1988 ई0 में उड़ा दिया था। और फिर दोबारा एक मर्तबा 1990 ई0 में उस पर धावा बोला जिसकी वजह से सात अफ़राद जान से हाथ धो बैठे थे और अट्ठारह दूसरे ज़ख़्मी हो गए थे। फ़लस्तीनी सहाफ़ी और बअ़ज़ औक़ात तो ग़ैर मुल्की रिर्पोटर और कैमरामैन भी बेदर्दी से गोलियों का निशाना सिर्फ़ इस वजह से बना दिये गए कि वह एक "ग़लत वक़्त पर ग़लत जगह में" मौजूद थे और उनको अक्सर औक़ात हमले से पहले कोई वार्निंग भी नहीं दी जाती थी।

इस्राईली क़ातिल इसक्वाड और ग़ैर मुल्की मीडिया

इस मौज़ूअ़ पर रौशनी डालने के लिये सबसे अच्छी मिसाल यह है कि किस तरह से इस्राईली हुकूमत बैरूनी मीडिया और सहाफ़ियों से मुआमला करती है? ख़ास तौर से इस "ख़ुसूसी यूनिट" से जिसका मक़्सद बड़ी मछलियों को क़त्ल करना है। "इंतिफ़ाज़िया" के आग़ाज़ ही से इस्राईलियों ने ज़ेरे ज़मीन ख़ुसूसी दस्ते तशकील दिये जिनका मक़्सद ही उन लोगों का ख़ातमा करना है जिनको वह ख़तरा समझते हैं। फ़लस्तीन इंसानी हुकूक़ के मर्कज़ (PHRC) Palestenian Human Rights Centre और Elia Zureil जोकि Queens यूनीवर्सिटी में Sociology की प्रोफ़ेसर है, के मुताबिक़ 1988 ई० से 75 फ़लस्तीनी बाशिंदों को इन्ही ख़ुसूसी ज़ेरे ज़मीन दस्तों के ज़रीए मार दिया गया। इन ख़ुसूसी दस्तों के अह्लेकार अरबों ही की तरह लिबास पहनते हैं और अपने फ़रेब देने वाले हुलिये की वजह से बेगुनाह शिकारों की तरफ़ इतनमीनान से जाते हैं और क़रीब पहुंच कर मशीनगन की गोलियां बरसाते हैं। जब अस्करी तर्जुमान से बार बार पूछा गया तो उन्होंने बताया कि 1991 ई० में जिन 29 लोगों को शहीद किया गया। इनमें से सिर्फ़ 7 के पास पिस्तौल या फिर महज़ छुरियां थीं। उनको Mista Rivim (मुस्तअ़ रीवीम) यअ़नी अरब भेस में मौजूद अह्लेकारों ने शहीद किया था। इनमें से भी सिर्फ़ तीन ने किसी क़िस्म की मुज़ाहमत की

थी। आधे से ज़ाइद अफ़राद ऐसे थे जिनकी उम्रें बीस साल से भी कम थीं। यह खुसूसी दस्ते इस्राईली जवाबी कार्रवाइयों के लाज़मी जुज़ बन गए थे और यह वज़ीरे दिफ़ाअ़ इसहाक़ राबिन के ज़ेरे निगरानी थे, जो कि बाद में इस्राईल का वज़ीरे आज़म मुंतख़ब हुआ था।

अगर्चे इस्राईली ज़ेरे क़ब्ज़ा इलाक़ों में इन्ही खुसूसी दस्तों के वजूद का इक़रार ज़रूर करते हैं, लेकिन वह इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि यह मौत के दस्ते (Death Squad) नहीं हैं बल्कि उनको इसलिये तशकील दिया गया था कि वह फ़लस्तीनी आबादी के अंदर घुस कर मुतशद्दिद और इंतिहा पसंद अनासिर को पकड़ सकें जोकि इंतिफ़ाज़ा की हिमायत कर रहे हैं। फ़ौज ने तो इस तरह की फ़िल्में भी बनाई हुई थीं, ताकि अवाम को दिखाया जा सके कि यह ज़ेरे ज़मीन दस्ते किस तरह से घात लगाकर गिरफ़्तारियां करते हैं और अपनी महारत और लगन के साथ इन दहशतगर्दों को पकड़ लेते हैं? इस फ़िल्म में कहीं भी यह नहीं दिखाया गया था कि इस्राईली फ़ौजियों का यह संगदिल दस्ता बेगुनाह फ़लस्तीनियों को किस तरह बेदर्दी से क़त्ल करता है।

ग़ैर मुल्की मीडिया और इंसानी हुक़ूक़ के गुरूपों ने इसके बिल्कुल बरअ़क्स नक़्शा पेश किया है, जोकि इस्राईली फ़ौज के प्रोपेगंडे को पाश पाश कर देता है। उन्होंने तो कई सियासी क़त्ल और ज़ेरे ज़मीन दस्तों की कार्रवाइयां भी दिखाई हैं। CBS-TV को मजबूर किया गया था कि वह उस टेप को तबाह कर दे जिसमें फ़ौजियों को हमला करते हुए दिखाया था। यह 1988 ई0 का वाक़िआ है यअ़नी सरकारी सतह पर इक़रार से भी तीन साल क़ब्ल का। एक और मौक़ा पर 1988 ई0 में तीन सहाफ़ियों को राइटर्ज़

और Financial Times से मुअत्तल कर दिया गया था जब उन्होंने इस रिपोर्ट की इशाअत की कि "खुसूसी दस्ते" क्या हैं और यह किस तरह काम करते हैं? इस्राईली वज़ीरे आज़म इसहाक़ राबिन ने इन तमाम इल्ज़ामात का इन्करार किया था और इन्हें "मुकम्मल बेकार" कहकर मुस्तरद कर दिया था। अगर्चे इन तीनों सहाफ़ियों को बहाल कर दिया गया था लेकिन राइटर्ज़ का सहाफ़ी Steve Weizmann उस वक़्त बाल बाल बचा जब एक धमाका खेज़ मवाद ने उसकी गाड़ी को तबाह कर दिया, जबकि Financial Times के नामा निगार Andrew Whitley पर हमला किया गया था और एक नामालूम हमलाआवर के ज़रीए उसकी पिटाई लगाई गई थी। यह अफ़सोसनाक वाक़िआ यरोशलम में उस लम्हे के कुछ देर बाद पेश आया जब उसने अपनी रिपोर्ट करवाई थी।

इस हक़ीक़त की कि ज़ेरे ज़मीन दस्ते दरहक़ीक़त क़त्ल के दस्ते (Death Squad) होते हैं, तसदीक़ कई ज़राए से हो चुकी है जिनमें खुद इस्राईली मीडिया भी शामिल है। जैसाकि Danny Rubenstien ने 25 जनवरी 1992 ई0 के शुमारे में इस्राईली अख़बार Haarety ने ज़िक्र किया था। इस आर्टीकल में उसने इस बात का तज़किरा किया था कि इस्राईली फ़ौजियों ने एक नौजवान मुहम्मद आबिद को महज़ शक की बिना पर मार दिया हालांकि वह अस्करी आदमी नहीं था। इस्राईली मुसन्निफ़ Maya Rosenfeld ने खुद 1989-90 ई0 के दौराने इस्राईली फ़ौजियों के हाथों किये गए 18 सियासी क़त्ल गिनवाए। यह रिपोर्ट उसने Association of Civil Rights in Israel के लिये बनाई थी।

ऐमनिस्टी इंटरनेशनल ने भी जनवरी 1990 ई0 में अपनी रिपोर्ट

में इस बात का ज़िक्र किया था कि फ़लस्तीन में सियासी क़त्ल की वारदातों में इज़ाफ़ हुआ है। इस रिपोर्ट में यहां तक लिखा हुआ था:

"पिछले चंद सालों में इस्राईली हुकूमत ने इंतेहाई महारत से मावराए अदालत क़त्ल की मज़म्मत भी की और साथ ही हौसला अफ़ज़ाई भी की। ख़ास तौर से अफ़वाज के ज़रीए क़त्ल की, ताकि वह इंतिफ़ाज़ा के दौरान फैली हुई ख़राब सूरतेहाल को क़ाबू कर सके।"

1991 ई० में मुल्की रिपोर्ट में भी अमरीकी State Department ने इस्राईल पर अपनी रिपोर्ट में इस बात की तसदीक़ की कि ऐमनिस्टी इंटरनेशनल और PHRIC ने यह बात सही तौर से बयान की है कि 27 ऐसे फ़लस्तीनियों पर हमला करके उन्हें क़त्ल किया गया था, जिनमें से ज़्यादातर अफ़राद ग़ैर मुस्लह थे लेकिन State Department ने अपने रिवायती दोग़लेपन का मुज़ाहरा करते हुए यह लिख दिया कि "यह अमवात इसलिये सही थीं कि इनमें से ज़्यादातर अफ़राद मतलूब थे, छिपे हुए थे या फिर दीवारों पर नअ़रे लिखने के बाद भागने की कोशिश कर रहे थे।" अमरीकी और इस्राईली अथारिटीज़ के दर्मियान गहरे रवाबित को मद्देनज़र रखकर देखा जाए तो इस बयान की हक़ीक़त समझना मुश्किल नहीं रहता।

इस्राईल की तरक़्क़ी याफ़्ता मईशत और अरबों के क़ाबिले रहम हालात

मैंने मग़रिबी किनारे में मौजूद मुस्लिम आबादी में अफ़लास और गुर्बत को देखा और दूसरी तरफ़ इस्राईल की तरक़्क़ी और दौलत को देखा। इस्राईलियों का ज़ाहिर सी बात है दुनिया भर के मालदार सहीवनियों की हमदर्दी और उनके ख़ज़ानों तक रसाई हासिल है। अगर्चे जदीद सहीवनी रियासत उस ज़मीन में मौजूद है जहां हज़ारों साल की सक़ाफ़त और तहज़ीब मौजूद थी लेकिन ज़्यादातर इंफ्रास्टक्चर पिछली दो से तीन दहाइयों में क़ाइम किया गया। इस बात में कोई कसर नहीं छोड़ी गई कि दिलकश और पुरकशिश इमारात तअ़मीर की जाए और जदीद सड़कों का जाल बिछाया जाए। चुनांचे चौड़ी चौड़ी सड़कें बनाई गई हैं जिनके दोनों तरफ़ पैसे की रेल पेल नज़र आती है। इसके अलावा उन पर मौजूदा दौर की तमाम आसाइशें मौजूद हैं जिनमें नाइट क्लब, डिस्को हाल, शापिंग माल सामान से भरे हुए स्टोर और रेस्तोरान शामिल हैं।

फ़लस्तीनी आबादी में इसके बिल्कुल बरअक्स सूरतेहाल हमें नज़र आती है। ज़्यादातर सड़कें कच्ची हैं और इन पर चलने में झटके लगते हैं। ज़्यादातर इमारतें टूटी फूटी हैं। जो लोग इतने ख़ुशक़िस्मत हैं कि उनके पास मकानात हैं उनको भी जदीद दौर की ज़रूरतों की कमी है या फिर वह सिरे से मौजूद ही नहीं हैं। तमाम स्कूल इतने कम फंड्ज़ रखते हैं कि शागिर्द और मुअल्लिम दोनों

जदीद तालीमी मवाद और साज़ व सामान जैसे कम्पयूटर, आडियो विज़ूअल वग़ैरह चीज़ों से महरूम हैं। इसके अलावा वह इलाक़ा भी इतना अच्छा नहीं है, क्योंकि यहां पर खुश्क और पथरीली ज़मीन है और यह काश्तकारी वग़ैरा के लिये इस्तेमाल नहीं हो सकती (अलबत्ता यहां दरख़्त ज़रूर उगते हैं। ज़ैतून यहां की अस्ल पैदावार है)।

एक बड़ा इंसानी अलमिया है कि 15 लाख अफ़राद पनाह गुज़ीन कैम्पों में रह रहे हैं जिनमें से चंद का खुद मैंने दौरा किया था। इन कैम्पों की सूरते हाल भी इंतिहाई बुरी है और इसको तीसरी दुनिया से ही तश्बीह दी जा सकती है। ग़ज़्ज़ा की मिसाल तो एक खुले ज़ख़्म की तरह है जो कि मज़ीद ख़राब होता जा रहा है और हर दिन उसकी हालत मज़ीद बिगड़ती जा रही है। यहां के घर कम व बेश खंडर हैं। सड़कें कच्ची हैं और सीवरेज का निज़ाम मौजूद नहीं है। इंसानी फुज़ला गढ़ों में पड़ा होता है जिसकी वजह से बीमारियां आम हैं। यह कैम्प जिनकी निगरानी और देखभाल अक़्वामे मुत्तहिदा की एक तन्ज़ीम UNWRA करती है, इसको भी बहुत कम फंड्ज़ दस्तियाब हैं तिब्बी सहूलतें बिल्कुल नाकाफ़ी हैं। बेरोज़गारी हर जगह आम है क्योंकि यहां कोई कारख़ाना या फिर कोई जाब मौजूद नहीं है जबकि इनमें से बहुत से अफ़राद इस्राईल में रोज़गार हासिल नहीं कर सकते।

इसका नतीजा यह है कि यहां के लोग ख़तरनाक हद तक ग़ुर्बत और अफ़लास का शिकार हैं। बहुत से अफ़राद ग़िज़ाई क़िल्लत का शिकार हैं। यहां किसी क़िस्म की तिब्बी या मुआशरती सहूलतें नहीं हैं। न तिब्बी इंशोरंस जैसे मंसूबे जोकि ज़रूरत के वक़्त उनकी पहुंच में हों। तक़रीबन तमाम पनाह गुज़ीनों को एक तंग सी जगह में जमा

कर के रखा गया है कि सात से दस या फिर इससे भी ज़्यादा अफ़राद एक कमरे में रह रहे हैं। इसके अलावा इन पनाहगुज़ीनों के ख़िलाफ़ इज्तिमाई सज़ाओं, घरों पर सील लगाना और स्कूलों की बंदिश जैसे हर्बों को इस्तेमाल किया जाता है। मिसाल के तौर पर तिलकरम के पनाहगुज़ीन कैम्पों में 1989 ई0 के तालीमी साल में सिर्फ़ 45 दिन स्कूल खुले रहे थे और 1990 ई0 में सिर्फ़ 36 दिन खुले रहे थे। डाक्टर साबित जो एक फ़लस्तीनी दंदानसाज़ (Dentist) है और तिलकरम के पनाह गुज़ीन कैम्प का ऐडमिन्स्ट्रेटर भी है, उसने बताया कि इस्राईली फ़ौजियों के मज़ालिम और इतनी ज़्यादा गुंजान आबादी की वजह से यह कैम्प (Bitterness and Frusteration) के गढ़ बन गए हैं और यहां तशद्दुद बहुत आम है जोकि चिड़चिड़ी शख़्सियत और नफ़रत पसंदाना माहौल तशकील देता है।

यह सारे मअ़रूज़ी हक़ाइक़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि फ़लस्तीनी वाज़ेह तौर से एक अलग रियासत चाहते हैं ताकि वह अपनी मईशत बेहतर बना सकें, इंडस्ट्री, कमर्शल और कम्यूनीकेशन इंफ्रासट्रक्चर की तअ़मीर कर सकें। वह इसके लिये तैयार मुस्तइद हैं। वह इसकी अहलियत भी रखते हैं। वह ऐसा चाहते हैं और सबसे ज़्यादा अहम बात यह कि वह एक क़ौम की हैसियत से ज़िम्मादारी उठाने के लिये तैयार हैं। इसके बावजूद कि वह जानते हैं कि इस्राईलियों ने अपनी ताक़त, इस्तिताअ़त और उनकी दस्तर्स में जो कुछ भी था, वह इस्तेमाल कर लिया ताकि ज़ुल्म के ज़रीए फ़लस्तीनियों को दबाया जा सके या उनको पीछे रखा जा सके। फ़लस्तीनी अवाम अरब मुमालिक बिलख़ुसूस मशिरक़े वुस्ता में सबसे ज़्यादा पढ़े लिखे और तालीम याफ़्ता हैं।

एक अमरीकी इंजीनियर जो कि कुवैत में काम कर रहा था जब उससे मेरी लंदन की फ्लाइट में मुलाक़ात हुई तो उसने भी इस बात की तसदीक़ की कि ख़लीज की जंग से पहले सारा कुवैती बुन्यादी ढांचा (Infrastructure) फ़लस्तीन के तअ़लीम याफ़्ता और हुनरमंद अफ़राद पर तकिया करता था। कुवैती बहुत ज़्यादा अमीर हैं और वह फ़लस्तीनी मेनेजमंट और अफ़रादी क़ुव्वत को इस्तेमाल करते थे। यह बात कुछ हद तक उर्दुन के लिये भी सही है, जहां 15 लाख से ज़ाइद फ़लस्तीनी मुहाजिरीन रहते हैं, बल्कि फ़लस्तीनी दुनिया भर में रह रहे हैं और क़ानूनदान, डाक्टर, ताजिर वग़ैरा जैसे मुअ़ज़्ज़ज़ पेशावर अफ़राद के तौर पर काम कर रहे हैं और वह इस बात के लिये भी तैयार हैं कि वह वापस लौट कर अपने मुल्क को संभालना शुरू कर दें और अपने मुल्क की तअ़मीरे नो करें। ज़्यादातर सियासी क़ैदी जिनसे मेरी मुलाक़ात हुई, रवानी से अबरानी, अरबी और अंग्रेज़ी बोलते थे और तक़रीबन तमाम ने यूनीवर्सिटी में तालीम हासिल की थी। वह मेरे साथ बहुत ज़्यादा अदब और इज़्ज़त के साथ पेश आते थे। कई बार मैंने उनके साथ बैठकर खाना खाया और रात में भी उनके साथ क़्याम किया था। यह लोग मुझसे अक्सर इस बात का सवाल करते थे कि उन्हें कब आज़ादी से रहने का मौक़ा मिलेगा वह भी अपने मुल्क में? मैं समझता हूं कि उन्हें यह हक़ मिल जाना चाहिये और यह वह वक़्त है कि दुनिया इस मौज़ूअ़ पर ग़ौर करे और सहीवनियत को देखे कि वह कैसी क़ुव्वत बन चुकी है।

साबिक़ फ़लस्तीनी क़ैदियों से बातचीत

समीर अबू शम्सः

मग़रिबी किनारे में मेरी सबसे पहली मंज़िल "तिलकरम" थी। इस्राईली अस्करी जेलों की सबसे ख़तरनाक जगह। टैक्सी के अड्डे से मुझे सीधा एक आदमी समीर अबू शम्स के घर ले जाया गया। अगस्त 1990 ई० में उसे उर्दुन की सरहद पर उस वक़्त गिरफ़तार कर लिया गया था जब वह उसे पार करने वाला था। उस पर यह इल्ज़ाम लगाया गया था कि वह PLO का मिम्बर है जोकि वह कभी नहीं था। मैं उसी वक़्त उस पर इस वजह से एतिमाद करने पर तैयार हो गया कि जिन लोगों से मैंने अब तक बातचीत की थी, उन्होंने या तो अपना नाम ज़ाहिर न करने की दरख़्वास्त की या फिर इस बात का खुल कर एतिराफ़ किया कि वह PLO के मिम्बर थे या अब भी हैं। इस्राईली तफ़तीशी अफ़सरों ने जब उससे पूछा तो उसने इस बात का एतिराफ़ किया कि वह PLO का हिमायती तो है लेकिन उसने यह बात भी साफ़ साफ़ बताई कि वह कभी भी तन्ज़ीम का हिस्सा नहीं रहा था और इस तन्ज़ीम में कभी अंदर नहीं गया था।

समीर को बाद में एक इस्राईली जेल में ले जाया गया था जिसमें उसको एक मीटर ऊंचे और 1.8 मीटर चौड़े पिंजरे में क़ैद कर दिया गया। उसे इस हालत में तीन दिन तक रखा गया था। उस पिंजरे में न तो कोई खिड़की थी और न ही कोई बैतुल ख़ला। उसे मजबूर होकर इसी पिंजरे में रफ़अ़ हाजत करनी पड़ी। इसके तीन दिन बाद उसे एक और पिंजरे में मुन्तक़िल कर दिया गया जिसमें

उसे दो और साथियों की रिफ़ाक़त की सहूलत मिल गई। उसका नया पिंजरा दो मीटर चौड़ा और दो मीटर ऊंचा था।

हर सुब्ह समीर को इस छोटी से जगह से निकाल कर पूछगछ के लिये लाया जाता। इस दौरान उससे कई सवालात किये जाते। उसके ख़ानदान के बारे में और उसके PLO के मिम्बरों के बारे में। ज़ाहिर सी बात है कि समीर कुछ भी नहीं बता सकता था, क्योंकि वह कभी भी PLO का रुक्न नहीं रहा था। हर सुब्ह उसे पूछगछ के लिये लाया जाता और लाठियों से पिटाई की जाती। इंसानियत से आरी इस्राईली तफ़तीशकारों का एक पसंदीदा तरीक़ा यह होता था कि कुर्सी से उसके हाथ पांव बांध कर बालों से उसे पीछे खींचते थे जिससे बहुत ज़्यादा दर्द और तकलीफ़ होती थी। इसके अलावा इस्राईली उसे बहुत ज़्यादा मज़ाक़ और तन्ज़ का निशाना बनाते थे, जबकि रात में भी शौर मचाते थे ताकि उसे सोने न दिया जा सके। उसको अक्सर "जनाबे सदर" कहकर पुकारा जाता और आईने में उसकी अपनी शक्ल दिखाई जाती जिसके बाद उसे रिहाई का झांसा देकर इक़्बाले जुर्म करने को कहा जाता था। एक मर्तबा तो समीर को टार्चर करने वाले इस्राईली अफ़सरों ने उसका मुंह खोला और उसमें थूक दिया।

इसके पंद्रह दिन के बाद उसको एक वकील से मिलने दिया गया, लेकिन जैसे ही वह अदालत गया तो उसके ख़िलाफ़ तीस दिन का रीमान्डर दे दिया गया। (हालांकि उसके ख़िलाफ़ एक रत्ती बराबर भी सबूत नहीं था) ताकि इस्तिग़ासा को अपना काम जारी रखने दिया जाए। अदालत की इस तारीख़ के बाद उसको एक अलग पिंजरे में डाल दिया गया जहां उसकी गर्दन के गिर्द ज़ंजीर बांध दी गई, फिर उस ज़ंजीर को छत से बांध दिया गया। इस हालत में उसे

तीन दिन तक खड़ा रहने पर मजबूर रखा गया। अगर वह ज़रा सा भी झुकने की या बैठने की कोशिश करता तो गले में फंदा और सख़्त हो जाता और उसका दम घुटने लगता। ज़ाहिर सी बात है अगर वह गिर जाता तो उसकी मौत वाक़ेअ़ हो जाती। उसने मुझे बताया कि वह सिर्फ़ इस वजह से बच गया कि वह और उसके इर्दगिर्द के क़ैदी साथी मिलकर बातें करते या फिर नज़्में पढ़ते रहते ताकि इस दौरान सोने न पाएं। अगर वह इस हालत में सो जाते तो यह नींद उनके लिये मौत की थपकी साबित होती।

इस ख़ौफ़नाक वाक़िए के बाद उसे एक सर्द पिंजरे में डाल दिया गया जहां वह बहुत जल्द बीमार हो गया और उसकी अपनी आवाज़ खो गई। इसके कुछ अर्से बाद उसे जनीन की एक जेल भेज दिया गया और उसे फ़लस्तीनी अम्ले के साथ रखा गया ताकि जिस हद तक हो सके मालूमात इकट्ठी की जा सकें। समीर और जेल में उसके साथ मौजूद फ़लस्तीनी साथी यह जानते थे कि यह फ़लस्तीनी इस्राईलियों के साथ मिलकर काम करे हैं इसलिये उनका सामना नहीं करते थे। इसी दौरान उन लोगों का साथी क़ैदी सख़्त बीमार हो गया और समीर और उसके दोस्तों को भूक हड़ताल करना पड़ी ताकि उसको हस्पताल मुंतक़िल किया जा सके।

समीर को बिलआख़िर तीन महीने बाद जेल से रिहा कर दिया गया। उसको यह नहीं बताया गया कि उसे अचानक क्यों इतनी जल्दी रिहा कर दिया गया? लेकिन एक तफ़तीशी अफ़सर ने उसे इतना ज़रूर बताया कि उसे इसलिये गिरफ़तार किया गया, क्योंकि वह दौराने तालीम General Union of Palestenian Students से वाबस्ता रहा था, हालांकि समीर कभी इस तन्ज़ीम का रुक्न नहीं रहा था बल्कि सिर्फ़ उसने एक तआ़रुफ़ी तक़रीब में

शिर्कत की थी जोकि बज़ाहिर इस बात के लिये काफ़ी था कि इस्राईली इस वाक़िए के आठ साल बाद उसे इस जुर्म हिरासत में ले लें।

ख़ालिद राशिदीः

ख़ालिद राशिदी को 1985 ई0 में गिरफ़्तार किया गया था, जब उस पर PLO का रुक्न होने का इल्ज़ाम लगाया गया। ख़ालिद ने साफ़ एतिराफ़ किया कि वह उस वक़्त PLO का रुक्न था लेकिन वह जेल से बाहर आने के बाद दोबारा उस तन्ज़ीम में शामिल नहीं हुआ। तक़रीबन ढाई साल के बाद जब उसके जेल से रिहाई मिली तो 45 दिन की आज़ादी के बाद दोबारा उसे मार्च 1988 ई0 में गिरफ़्तार कर लिया गया। इसके चार महीने बाद उसे अदालत से ले जाया गया। अगर्चे उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं था, लेकिन जज ने उसे मज़ीद छः महीने क़ैद में रखने की मंज़ूरी दे दी ताकि उससे कुछ सबूत इकट्ठे किये जा सकें। इस ग़र्ज़ के लिये उसे नाबलूस की मरकज़ी जेल भेज़ दिया गया। इसके ग्यारह महीने बाद उसे अपने वकील से मिलने की इजाज़त मिली और Lia Semel ने इस्राईली सुप्रीम कोर्ट में कामियाबी से उसकी दरख़्वास्त पेश की और उसे क़ैद से रिहाई दे दी गई लेकिन 1984 ई0 में एक मर्तबा फिर उसे दोबारा बग़ैर कोई इल्ज़ाम लगाए जेल में डाल दिया गया। इसी दौरान ख़ालिद का केस Tamara Peeleg की नज़र से गुज़रा जो कि इस्राईली की इंसानी हुक़ूक़ की मुतहर्रिक तन्ज़ीमों में से एक की रुक्न हैं। उसने एक साल के बाद 1990 ई0 में उसको रिहाई दिलवाई।

दौराने क़ैद ख़ालिद को बहुत से तिब्बी मसाइल का शिकार होना पड़ा जिनमें बड़ी आंत में इंफ़ेक्शन और मेअ़दे से ख़ून का इख़्राज

शामिल है लेकिन इस सब के बावजूद उसे कोई तिब्बी इम्दाद नहीं दी गई। इस्राईली मोटे डंडों से उसकी बार बार पिटाई लगाते और सवाल करते। एक मर्तबा इस्राईली तफ़तीश कार जब उसे एक हस्सास सैकूरिटी ज़ोन ले जा रहे थे तो न सिर्फ़ यह कि उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी गई बल्कि उसके सर पर जो कपड़ा डाला गया, उसे मजबूर किया गया कि वह उस पर पेशाब करे और उसके अपने मुह पर डाल दे ताकि वह सूंघ भी न सके कि उसे किस जगह ले जाया जा रहा है।

अपनी कैद के पहले दौरानिये के बाद ख़ालिद को एक शनाख़्ती कार्ड दिया गया था जिसको "ग्रीन कार्ड" कहा जाता है और इसका मतलब या मक़्सद यह होता है कि यह शख़्स मग़रिबी किनारे से बाहर नहीं जा सकता ताकि वह कोई रोज़गार तलाश करे और अपने ख़ानदान वालों की किफ़ालत कर सके। हत्ता कि वह यरोशलम शहर में भी दाख़िल नहीं हो सकता है। यह लोग अक्सर इस्राईली इंतेज़ामिया के ख़ौफ़ में रहते हैं और उन्हें अक्सर गिरफ़्तार कर लिया जाता है और पिटाई लगाई जाती है।

सअ्दुद्दीन ख़ारमः

दौराने कैद उसके मुंह पर कीड़े मार दवाई DDT छिड़की गई और आंखों पर भी। मुंह पर मास्क लगाकर तीन दिन तक पिटाई लगाई गई ख़ास तौर से सर और शर्मगाह में और कई दिन तक भूका रखा गया। इसके अलावा उसके हाथ एक कुर्सी के साथ बांध कर कई दिनों तक रखा गया (22 दिन तक) और इस दौरान उसके हाथों को इस कदर सख़्ती से कसा गया था कि वह आज तक अपनी कलाइयों से आगे के हिस्से के मुकम्मल इस्तेमाल पर क़ादिर नहीं हो सका।

नाजीः

एक फलस्तीनी तालिबे इल्म जिसका नाम नाजी है, उससे जब नाबलिस से यरोशलम जाते हुए मुलाकात की तो उसने मुझे बताया कि उसको चार मुख़्तलिफ़ वाक़िआत के दौरान गिरफ्तार किया गया क्योंकि वह अक्सर बैरज़ियत यूनीवर्सिटी के सामने से गुज़र रहा होता था जब इस्राईली पुलिस वहां छापा मार रही होती थी। नाजी कुछ ही अर्सा पहले सतरह साल का हुआ था जब मेरी उससे मुलाकात हुई थी।

अहमद जाबिर मुहम्मद इब्राहीमः

एक और तालिबे इल्म अहमद मुहम्मद इब्राहीम जोकि सतरह साल का था उसको फौजियों ने गोली मार कर हलाक कर दिया, उस वक़्त वह एक पुरअम्न मुज़ाहरा करने वालों में शामिल था। वह भी सानवी तालिबे इल्मों का एक मुज़ाहरा जो कि यकुम मार्च 1992 ई0 में हो रहा था। रफ़ाह के शहर में नासिर हस्पताल के तिब्बी रिकार्ड के मुताबिक़ इस मुज़ाहरे में 14 तालिबे इल्मों का गोलियों से ज़ख़्मी होने के बाद इलाज किया गया था। इस्राईली अख़्बार यरोशलम पोस्ट (Jerusalem Post) ने इस मौक़ा पर यह बताया था कि एक हलाक और 9 ज़ख़्मी हुए और साथ ही यह भी लिखा थाः "एक मुस्लह तसादुम हमास के बुन्याद परस्तों और PLO के दर्मियान जारी था कि इन दोनों को रोकने के लिये इस्राईली आर्मी मैदान में कूदी ताकि मज़ीद ख़ूंरेज़ी को रोका जा सके।" क्या ख़ूबसूरत ग़दर है और झूट बोलने की सलाहियत का कितना ज़बरदस्त मुज़ाहरा है।

जमाल हसनः

सबसे बदतरीन तशद्दुद जो कि इस्राईली फ़ौजी करते हैं वह है बिजली से टार्चर देने का तरीक़ा। एक चौदह साला लड़का जिसका

नाम जमाल हसन था, जिससे मैंने बात की थी, उसको उसके वालिदैन के घर से हेबरोन (Hebron) के अस्करी कुत्रे सदारत (Military Headquarter) ले जाया गया। उसको कैदियों की अज़ियतनाक आवाज़ों ने खुश आमदीद कहा। उसको बरहना होने पर मजबूर कर दिया गया गया और इस चीज़ का इकबाले जुर्म करने को कहा गया कि उसने इस्राईली फौजियों पर पत्थर फैंका था। जमाल ने मुझे बताया कि अगर्चे उसने दीवारों पर नअ़रे लिखे थे लेकिन उसने कभी इस्राईली फौजियों पर पत्थर नहीं फैंके थे क्योंकि उसे मालूम है कि अगर वह इस तरह से उनको सामना करेगा तो उसे गोली मारकर हलाक कर दिया जाएगा।

शुरू में तो इस्राईली पूछगछ करने वाले अफसरों ने उसे धमकियों की हद तक महदूद रखा। वह छुरी की धार को उसके गले पर रख देते और उसके सर के पीछे दीवार पर मोटे डंडों से पीटते। उन्होंने उसे खस्सी करने की और उसकी बहन को गिरफ्तार करने की भी धमकी दी और कहा कि इस्राईली फौजी उसकी अस्मत दरी करेंगे। जमाल ने इकबाले जुर्म करने से साफ इंकार कर दिया और खौफ से उसने किसी भी धमकी का जवाब नहीं दिया।

इस पर उससे पूछगछ करने वाले और भी ज़्यादा फिर गए कि उससे इकबाले जुर्म का बयान लिया जाए। इसलिये उन्होंने उसके बाजूओं और टांगों पर बिजली के तार लगा दिये और बिजली के झटके देना शुरू कर दिये। वह कांपना और ठिठुरना शुरू हो गया। एक वक़्त ऐसा भी आया कि बिजली का Voltage इतना ज़्यादा हो गया कि वह कुर्सी से उछल कर गिर गया (उसको कुर्सी से नहीं बांधा गया था ताकि बिजली के ताकतवर तरीन झटके दिये जा सकें)। इस दौरान इस्राईली फौजी कहकहे लगा रहे थे और उसकी

नक़्ल उतार रहे थे जबकि उसको "अपने लोगों का हीरो" कह रहे थे। इसके बाद उसके सर पर गंदगी का बदबूदार थैला बांध दिया गया जिससे उसका दम घुटने लगा बिजली के झटकों के दूसरे सिलसिले जोकि उसकी शर्मगाह में दिये गए थे, न सिर्फ़ उसको बेपनाह तकलीफ़ हुई थी बल्कि तकलीफ़ की टीसें उठती थीं। दर्द के दौरे पड़ते थे। इसी दौरान उसके सर पर कई वार किये गए जिससे वह होश व हवास खो बैठा।

जब उसे होश आया तो उसने देखा कि एक फ़लस्तीनी कमरे में दाख़िल हुआ और उसने इस्राईलियों को बताया कि उसने जुमा को इस्राईली फ़ौजियों पर कई मवाक़ेअ़ पर पत्थर फैंकते हुए देखा है। जमाल ने इस इल्ज़ाम को सख़्ती से मुस्तरद कर दिया और उसने इस फ़लस्तीनी के मुंह पर थूक दिया जो कि हक़ीक़त में इस्राईलियों का ऐजंट था। इस्राईलियों ने उसको बिजली के मज़ीद झटके दिये और इस बार उसको इस बात पर मजबूर किया गया कि वह बिजली के तारों को अपने हाथों में पकड़े जिससे उसके बदन और ब्राज़ूओं में बिजली के झटके लगे। दोबारा उसको इक़बाले जुर्म करने को कहा गया लेकिन अब वह बोलने की सकत नहीं रखता था और उसने सिर्फ़ अपना सर हिलाया। एक और ऐजंट को लाया गया और उसने भी यही कहा कि उसने जमाल को पत्थर फैंकते हुए देखा है और यह कि वह जमाल को जानता है, उसके ख़ानदान को भी और यह कि वह कहां रहता है। पूछगछ करने वालों ने मज़ीद कहा कि उनके पास एक दर्जन से भी ज़्यादा इस बात के शाहिदीन मौजूद हैं, उसके लिये बेहतर यही है कि वह इक़बाले जुर्म कर ले, लेकिन इसके बावजूद भी जब उसने इक़बाले जुर्म करने से इंकार कर दिया तो राइफ़ल के बट से उसके बाज़ूओं और पांव पर शदीद ज़र्ब लगाई गई। इसके बाद

उसको बिजली के झटके दिये गये थे जिससे ज़ाहिरी बात है कि तकलीफ़ और भी ज़्यादा बढ़ गई।

इस तरह से उसे एक हफ़्ते तक कैद में रखा गया। इस ज़ालिमाना तशद्दुद के बाइस वह अगले नौ दिनों तक चल नहीं सकता था। उसका सारा जिस्म आबलों से भर गया था और उसे मालूम हुआ कि शायद उसकी एक पसली टूट गई है। इसके अलावा खाल पर जगह जगह जलने के निशानात थे। इसके बाद एक इस्राईली डाक्टर ने उससे पूछा: "क्या वह ठीक है?" तो उसने जवाब दिया: "वह ठीक है।" क्योंकि उसके साथी कैदियों ने उसे यह बताया था कि डाक्टर सिर्फ़ इस बात में दिलचस्पी लेते हैं कि जिस्म के कमज़ोर हिस्से का पता लगा सकें ताकि उस पर मज़ीद तशद्दुर किया जा सके और पूछगछ के दौरानिये को मज़ींद अज़ियतनाक बना सकें। तफ़तीश के अगले मरहले में सिग्रेट के ज़रीए उसकी खाल और आंख के पर्दे को दाग़ा गया लेकिन इसके बावजूद भी उसने इक़बाले जुर्म करने से इंकार कर दिया। तब दोबारा उसके चेहरे और टांगों पर डंडों से बेतहाशा पिटाई की गई।

बिलआख़िर तफ़तीशकार इस बात पर मजबूर हो गये कि रिवायती धोकाबाज़ी से काम लें ताकि तहरीरी बयान पर उसके दस्तख़त लिये जा सकें कि उसने इस्राईली फ़ौजियों पर पथराव किया था लेकिन यह बयान अबरानी ज़बान में था जोकि जमाल पढ़ नहीं सकता था। जैसे ही उसने इस तहरीरी बयान पर दस्तख़त किये, इस्राईली ख़ुशी से चीख़ने लगे और ज़बरदस्ती उसके अंगूठे के निशानात लिये गए। बाद में उसे अदालत ले जाया गया जहां इस्तिग़ासा ने जज को इस हलफ़नामे की बिना पर क़ाइल कर दिया कि उसको दो महीने तक मज़ीद कैद रखा जाए। उसके एक महीने

बाद उसे क़ैद से निकाल दिया गया लेकिन उसके ख़ानदान पर 1,500 शैकल का जुर्माना आइद कर दिया गया। जमाल आज तक अपने हाथों का इस्तेमाल दोबारा कभी पूरी तरह से नहीं कर सका और न ही टांगों का। और अब भी अक्सर दर्द व तकलीफ़ की टीसें उसके बाज़ूओं और पांव में उठती रहती हैं जोकि उसको मुस्तक़िल तौर से उन बिजली के झटकों की जो इस्राईली ज़ालिमों ने उसे दिये थे, याद दिलाती रहती हैं।

क़ैद के दौरान तशद्दुद से होने वाली हलाकतें:

मैंने इसके अलावा इस्राईली फ़ौजियों के ज़ुल्म और तशद्दुद का निशाना बनने वाले कई दर्जन अफ़राद से बातचीत की जिनमें से कई बिजली के झटकों और बार बार पिटाई का शिकार होते रहे। अगर्चे उनमें से अक्सर मुस्तक़िल ज़ख़्मों का तोहफ़ा लिये जी रहे हैं और उनके जिस्म के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में मुस्तक़िल दर्द रहता है लेकिन इस बात को हरगिज़ नहीं भूलना चाहिये कि इन अफ़राद के ज़ह्नी एहसासात के ख़िलाफ़ क्या कुछ नहीं किया गया होगा और वह किस क़िस्म के तशद्दुद का शिकार हुए होंगे? लेकिन वह यह सोच कर सब्र कर लेते हैं कि कम अज़कम इस मुसीबत से ज़िंदा निकल आए।

जब से "इंतिफ़ाज़ा" का आग़ाज़ हुआ यअ़नी दिसम्बर 1987 ई0 में PHIRC की रिपोर्ट के मुताबिक़ 25 फ़लस्तीनी इस्राईली क़ैद के दौरान शहीद हो गये। कुछ को गोली मार दी गई थी, बअ़ज़ तिब्बी सहूलतों की अदम फ़राहमी और ऐसी जिस्मानी पेचीदगियों (Medical Complication) की वजह से शहीद हो गए जिसकी वजह मार पिटाई और टार्चर थी।

PHIRC के मुताबिक़ दिसम्बर 1987 ई0 से मार्च 1992 ई0 के दर्मियान 1,030 फ़लस्तीनी इस्राईली फ़ाइरिंग, तशद्दुद और Tear

Gas के इस्तेमाल से जान की बाज़ी हार गए। इस खुले आम और थोक के हिसाब से मज़बहख़ाने जैसी कार्रवाइयों का यह जवाज़ पेश किया जाता है कि इस्राईली अपना दिफ़ाअ कर रहे हैं और फ़लस्तीनियों के हमले को रोकने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इस वजह को तसलीम भी कर लिया जाए तो इसी अर्से के दौरान 100 से भी कम इस्राईली हलाक हुए थे।

फ़लस्तीनी सियासी कैदियों पर तशद्दुदः

इस्राईली इंतेज़ामिया की कार्रवाइयों की बहुत ज़्यादा तफ़सीलात कई मुसन्निफ़ों ने बयान की हैं। Marion Walfron जो कि स्काटलैंड से यहूदी सहाफ़ी है, उसने भी एक किताब Bassam Shak'a: Portait of a Palestenian लिखी है जिसमें इन अज़ियतों की तफ़सील दी गई है जो कि फ़लस्तीनियों ने इस्राईलियों के हाथों झेलीं। मिसाल के तौर पर सबसे आम तरीक़ा यह इस्तेमाल किया जाता था कि बिजली के तार और शीशों के टुक्ड़े नीचे डाल देते थे, ख़ास तौर से उन फ़लस्तीनियों पर जो कि हमलों में गिरफ़तार होते थे। इसकी तसदीक़ इस्राईली अख़्बार Yedios Achronos नें उस वक़्त की जब एक आर्टीकल में एक पुलिस अफ़सर ने इस बात का इक़रार किया। Felieia Langer जोकि एक इस्राईली वक़ील है उसने भी इस बात का इंकिशाफ़ अपनी किताब With My Own Eyes में किया जिसमें उसने फ़लस्तीनियों पर होने वाले तशद्दुद का खुल कर तफ़सील से बयान किया है जोकि उसने एक वकील की हैसियत से इस्राईली इंसाफ़ के निज़ाम में देखा। इसके अलावा वलीद ख़लील की तहरीरों में भी इसका तफ़सीलन ज़िक्र मौजूद है।

इंसानी हुकूक की खिलाफ वर्जियां:

1972 ई0 तक 17,000 से ज़ाइद वकील, डाक्टर और उस्तादों को डीपोर्ट किया जा चुका था, वह भी बहुत मामूली सी बातों पर और अपने दिफ़ाअ़ का मौक़ा दिये बग़ैर। इसके अलावा पिछली दो दहाइयों में मज़ीद हज़ारों फ़लस्तीनियों को तालीम याफ़्ता अफ़राद और हुनरमंदों को डीपोर्ट किया जा चुका है।

1948 ई0 की जंगे आज़ादी के बाद (जिसको अरब एक सानिहा के तौर पर याद करते हैं) जिसकी वजह से लाखों फ़लस्तीनियों को अपने घरबार छोड़ने पड़े थे, इस्राईलियों ने उनके घरों पर क़ब्ज़ा कर लिया और Law of Aquisition of Absentee Property के तहत कोई भी फ़लस्तीनी जोकि 1947 ई0 से 1950 ई0 की दहाई में कभी भी बाहर गया हो, उसको यह मिल्कियत किसी भी सूरत में वापस नहीं मिल सकती है, न ही वह उसमें आबाद हो सकते हैं, न उन ज़मीनों को किराए पर ले सकते हैं, और न ही उस पर काश्तकारी कर सकते हैं। 385 से ज़्यादा फ़लस्तीनी गांव बिलखुसूस Galibee के इलाक़े में (शुमाली इस्राईली ख़ास तौर से लबनान और शाम से मुलहिक़ा सरसब्ज़ व शादाब इलाक़ा) मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिये गए हैं। यह फ़लस्तीनी गांव बुल्डोज़र के ज़रीए तबाह किये गए ताकि सहीवनी इस्राईली बस्तियां बना सकें।

(Woolfson, Portriat of a Palestenian, p1718)

इस्राईली हुकूमत का ग़ैर एलानिया नस्बुल ऐन यही है कि फ़लस्तीनी सक़ाफ़त की 2,000 साल से ज़ाइद की तारीख़ को मस्ख़ कर दिया जाए। इस मक़्सद के तहत इस्राईल बड़े पैमाने पर दुनिया भर से और ख़ास तौर पर रूसी यहूदियों को दरआमद कर रहा है और उन्हें मक़्बूज़ा फ़लस्तीन इलाक़ों में आबाद कर रहा है ताकि इन

इलाक़ों में अपनी अदवी बरतरी क़ाइम कर सके। फ़लस्तीनियों को सख़्ती से मना किया जाता है कि वह फ़लस्तीन के झंडे न लहरायें जोकि उन्होंने अपनी क़ौम की नुमाइंदगी के लिये चुना है। अगर वह ऐसा करें तो उनसे सख़्त तफ़्तीश की जाती है। घर बुल्डोज़ कर दिये जाते हैं हत्ता कि गोलियों से भी मार दिये जाते हैं।

शहरी हक़ूक़ की ख़िलाफ़वर्ज़ियां:

इससे भी ज़्यादा तशवीशनाक सूरते हाल इस्राईली मक़्बूज़ा इलाक़ों की यह है कि इस्राईली फ़लस्तीनियों के अपनी ज़मीन पर रहने के हक़ को बुरी तरह से पामाल कर रहे हैं। ख़ास तौर पर मश्रिक़ी यरोशलम में तो यह एक आम सी बात बन गई है। मश्रिक़ी यरोशलम में किसी भी फ़लस्तीनी को बड़ी मुश्किल से इमारत की तअ़मीर की इजाज़त दी जाती है जबकि सहीवनी आबादियां जिनके रिहाइशियों की तादाद हज़ारों में होती है, यरोशलम के शहरी इलाक़े के चारों तरफ़ फूट पड़ी है जिससे इन फ़लस्तीनी गांव की आबादियां घट गई हैं जोकि आसपास हैं। इसी तरह मग़रिबी किनारे में ज़मीनें मुस्तक़िल बुन्यादों पर ज़ब्त कर ली जाती हैं ताकि नई सड़कें बनाई जाएं जो कि Kibutzim दीगर इस्राईली आबादियों को मिला सकें। यरोशलम में तो सबसे बड़ा ज़ुल्म यह है कि इस्राईली फ़ौजी किसी भी जगह के मुतअ़ल्लिक़ "हस्सास सिक्यूरिटी ज़ोन" का एलान करके किसी भी घर पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं।

इसी तरह का एक इलाक़ा यरोशलम के मुस्लिम हिस्से में वाक़ेअ़ Al-Wad है। इस इलाक़े से गुज़रने वाली सड़क "दीवारे गिर्या" से जा मिलती है। तिरही (Tirhi) ख़ानदान......मिसाल के तौर पर......इस इलाक़े में पिछले तीन सौ साल से एक बड़े घर का मालिक था लेकिन 1969 ई0 में उसे मजबूर किया गया कि वह इस

घर को ख़ाली कर दे क्योंकि इस्राईली फ़ौज ने कहा था कि उसे यह इलाक़ा हिफ़ाज़ती मक़ासिद के लिये चाहिये। बाद में इस्राईलियों ने यह घर कभी भी इस मक़सद के लिये इस्तेमाल नहीं किया और इस घर को सील कर दिया गया। यकुम मार्च 1992 ई0 में एक अस्करी आबादी Ataret Choanim Yeshira के गुंडों ने इस घर पर क़ब्ज़ा कर लिया। "तिरही" ख़ानदान ने इसकी शिकायत की लेकिन इस तरह के मुक़द्दमात का जो हश्र होता है वह सबको मालूम है।

! एक शख़्स जिसका नाम Naief है जोकि एक Gift Shop का मालिक था, बिल्कुल "तिरही" ख़ानदान के घर के सामने, उसने अपना इलाक़ा यहूदी मज़हबी तन्ज़ीम को देने से इंकार कर दिया जिसकी वजह से कई बार उसकी दुकान में तोड़ फोड़ की गई। मेरी मुलाक़ात से चंद रोज़ पहले उस पर यहूदी गुण्डों ने हमला किया था जिसकी वजह से उसकी पसलियों पर ज़ख़्म थे और उसके दांत टूट गए थे।

इससे भी ज़्यादा हैरत अंगेज़ बात यह थी कि Atarot Choanim ने पुराने शहर के बिल्कुल वसती इलाक़े में वाक़ेअ कई बड़े घरों पर क़ब्ज़ा कर लिया जो कि कई नस्लों से अरब ख़ानदानों के पास थे। जब यहूदियों में एक दिन यह अफ़वाह फैलाई गई कि एक इस्राईली पर पुराने शहर में हमला किया गया है तो उन यहूदी गुंडों ने जो पहले से तैयार बैठे थे, बलवा किया और बिला इम्तियाज़ फ़ाइरिंग शुरू कर दी जबकि एक औरत जिसका नाम Aham Mushime है उसका घर जलाना शुरू कर दिया। मेरी जब उस औरत से बात हुई तो उसने बताया कि इन यहूदियों ने क़रीबी इलाक़े में मौजूद घरों पर भी फ़ाइरिंग की थी और वह इसका पहले से मंसूबा बनाए हुए थे।

यह है इंसानी हुकूक़ की ख़िलाफ़ वर्ज़ियों की वह संगीन सूरतेहाल जिसने फ़लस्तीन को ऐसा आतिश फ़शां बना दिया है जो किसी भी वक़्त फट सकता है। इसमें सारा कुसूर उस मुहज़्ज़ब और बाइख़्तियार दुनिया का होगा जो यह सब ख़ुद अपने नाक तले बर्दाश्त कर रही है।

हिस्सा सोम

इस्राईल से फ़रार

वतन वापसी की तैयारीः

जब मैंने अपने वतन केनेडा वापसी के लिये तैयारी शुरू की तो मैंने इस बात पर ग़ौर व फ़िक्र करना शुरू किया कि किस तरह से मैं यह सारा मवाद, रीसर्च और नोटिस वग़ैरा इस्राईल से बाहर ले जाऊं कि इस पर किसी की नज़र न पड़ सके। मुझे यह बात बताई जा चुकी थी कि इस्राईल के बन गोरियान एयरपोर्ट पर चैकिंग इंतिहाई सख़्त है और यह कि वह मेरे सामान की मुकम्मल तलाशी ली जाएगी। इसके बरअक्स मैं इंतिहाई आसानी के साथ इस्राईल में दाख़िल हुआ था और मुझे यह बताया गया था कि अगर मैं बम या कोई छिपा हुआ हथियार लेकर इस्राईल में दाख़िल नहीं हो रहा तो परेशानी की कोई बात नहीं। इसके अलावा मुझे इस बात की फ़िक्र भी हो रही थी कि मैंने इतना मवाद इकट्ठा कर लिया था कि उसको ज़ाए करना खुद एक नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़सान बन जाता। इसलिये मैंने यह फ़ैसला किया कि अपने नोटिस को जिस हद तक भी हो सके ख़ुतूत की शक्ल में या फिर एक सियाह की डायरी की शक्ल में (सफ़रनामे) में छिपा लिया जाए।

मैं अपनी फ़्लाइट से तक़रीबन दो घंटे क़ब्ल हवाई अड्डे पहुंचा। उस वक़्त वहां पर ज़्यादा रश नहीं था। एक घंटे के बाद एक नौजवान औरत जो कि एयरपोर्ट में काम कर रही थी, मेरे पास आई और अपने साथ चलने की दरख़्वास्त की। उसने नर्मी और अदब से

मुझे अपना सामान मेज़ पर रखने को कहा ताकि वह उसका मुआइना कर सके। ग़ौर से तलाशी लेने के बाद उसने मुझ से बहुत से ज़ाती सवालात पूछे। सबसे पहले उसने मुझसे पूछाः "मैं इस्राईल में क्या कर रहा था?" मैंने जवाब दियाः "मैंने ख़ास तौर से छुट्टी ली थी और मैं मुक़द्दस मक़ामात की सैर करना चाहता था।" उसने पूछाः "क्या मेरी मुलाक़ात इस्राईलियों से हुई थी?" मैंने जवाब दियाः "हां! मेरी मुलाक़ात बहुत से इस्राईलियों से हुई थी, लेकिन मेरी किसी एक के साथ बहुत ज़्यादा मुलाक़ात नहीं हुई थी।" उसने पूछाः "क्या मेरी मुलाक़ात किसी फ़लस्तीनी से हुई थी?" मैंने कहाः "हां! थोड़ी बहुत अलक़ुद्स के पुराने हिस्से में हुई थी।" उसने फिर मुझसे पूछाः "क्या आप मग़रिबी किनारे पर (दरयाए उर्दुन के मग़रिबी किनारे पर वाक़ेअ़ फ़लस्तीनी मक़बूज़ा इलाक़ा) गए थे?" मैंने बेतकल्लुफ़ी से कहा "हां! बस मक़ामाते मुक़द्दसा की सैर के दौरान वहां से गुज़र हुआ था।"

इसके बाद मुझसे वह सवाल पूछा गया जिसने मेरे लिये मुश्किलात पैदा कर दीं और सख़्त परेशानी का सबब बना। उसने पूछाः "क्या उन फ़लस्तीनियों ने आप को कुछ दिया था?" मैं वैसे ही हर सवाल के बाद मज़ीद घबराहट का शिकार हो रहा था। पहले तो मैंने यह सोचा कि अगर मैं अपने मग़रिबी किनारे दौरे का ज़िक्र करता हूं तो इससे बहुत से शुकूक व शुबहात पैदा होंगे, लेकिन इसके साथ ही मुझे मालूम था कि वह औरत मेरे बैग की तलाशी लेगी जिसमें बहुत सी ऐसी दस्तावेज़ात थीं जो कि मैंने इंसानी हुक़ूक़ की तन्ज़ीमों से इकट्ठी की थीं और जिनके साथ मैं राबते में था। अगर्चे मैंने अक्सर दस्तावेज़ात को अच्छी तरह से छिपा दिया था, लेकिन मुझे मालूम था कि कुछ न कुछ तो ज़रूर पकड़ी जाएंगी,

इसलिये मैंने इन दोनों तरह के ख़ौफ़ को मद्दे नज़र रख कर एक दर्मियाना सा जवाब दिया। मैंने कहाः "मुझे चंद सियासी पम्फ़लेट एक फ़लस्तीनी शहरी ने दिये थे जिससे मेरी मुलाक़ात टैक्सी में हुई थी।" उस औरत ने उस पम्फ़लेट को देखा और उस पर नज़र दौड़ाने के बाद उसको अपने आला उहदेदारों के हवाले कर दिया और यहीं से मेरे लिये मुश्किलात का आग़ाज़ हो गया।

उस वक़्त मैं चकराना शुरू हो गया जब मुझे दो मुस्लह सिक्यूरिटी आफ़ीसर ने पूछगछ के लिये एयरपोर्ट टर्मिनल के पीछे ले गए। कमरे में मौजूद तीन अफ़सरों ने मुझ से (बग़ैर मारे पीटे) जारिहाना अंदाज़ में तफ़्तीश शुरू कर दी और सख़्त अलफ़ाज़ इस्तेमाल किये। वह मुझसे पूछने लगेः "यह पम्फ़लेट मुझे किसने दिया है?" मैंने कहाः "उसका नाम सईद या फिर सय्याम था और मैं उसका पूरा नाम नहीं जानता क्योंकि मेरी उसके साथ मुलाक़ात एक या फिर दो मर्तबा हुई थी न ही उसका कोई पता मुझे मालूम है।" इस पर उन्होंने मुझसे पूछाः "मैंने ज़मीन ज़ब्त करने के मुतअ़ल्लिक़, घरों को सील (SEAL) करने के मुतअ़ल्लिक़ और ग़ज़्ज़ा में इलाक़ों की नाकाबंदी के मुतअ़ल्लिक़ दस्तावेज़ात और मवाद क्यों जमा कर रखे हैं?" मैंने हाज़िर दिमाग़ी से काम लेते हुए अदाकारी शुरू कर दी और कहाः "इसी लिये कि मैं इस्राईली रियासत का बहुत बड़ा हामी हों और मैं अपने दोस्तों को यह दिखाना चाहता हूं कि किस तरह फ़लस्तीनी मालूमात को तोड़ मोड़ कर पेश करते हैं, बिलख़ुसूस मग़रिबी किनारे के मुतअ़ल्लिक़।"

इस सबके बावजूद इस्राईली मुतमइन नहीं हुए और मुझ से पूछने लगेः "मेरी मुलाक़ात और किस शख़्स से हुई थी?" मैंने जवाब दियाः "मेरी मुलाक़ात और अरबों से नहीं हुई थी, लेकिन उस अरब

सहाफ़ी ने मुझे चंद और काग़ज़ात दिये थे।" जब उन लोगों ने मेरे बस्ते की मज़ीद तलाशी ली तो उन्हें फ़लस्तीनी इंसानी हुकूक़ की तन्ज़ीम (PHRIC) की असल रिपोर्ट की ऐमनिस्टी इंटरनेशनल (AMNESTY INTERNATIONAL और अमरीकी कमीशन बराए मुमालिक US COUNTRY COMMISSTION) ने तसदीक़ की थी। उन्होंने मुझसे उस फ़लस्तीनी सहाफ़ी के बारे में बहुत पूछाः "उसका चेहरा और हुलिया किस तरह का था? वग़ैरा?" मैंने उन लोगों को एक फ़र्ज़ी सा हुलिया बना कर बता दिया और फ़ौरन यह बहस छेड़ दी कि ऐसी रिपोर्टें यहूदी मुख़ालिफ़ दिमाग़ों की पैदावार हैं।

उस वक़्त तक वह लोग मेरे सामान की तीन मर्तबा तलाश ले चुके थे और वह यह समझ रहे थे कि मैं पी एल ओ (यासिर अरफ़ात की तन्ज़ीम) का एक हमदर्द या फिर मैं PLO के लिये काम कर रहा हूं। उस वक़्त इस्राईली आफ़ीसर जो मेरी तफ़्तीश की निगरानी कर रहा था उसने मुझ पर दबाव डाला कि जिन फ़लस्तीनियों को मैंने देखा था, उनका हुलिया वग़ैरा बताऊं। दूसरी तरफ़ एक दूसरा आफ़ीसर एक मोटा सा डंडा अपने हाथ में लेकर मेज़ पर हल्के हल्के मार रहा था और उसका साथी मुझसे पूछ रहा थाः "क्या तुम्हें मालूम है कि PLO के हामियों के साथ क्या होता है?" मैंने उसे जवाब दियाः "मुझे कुछ मालूम नहीं।" उस वक़्त जिस आफ़ीसर के हाथ में डंडा था उसने डंडे को अपनी गर्दन पर अलामतन रखा और इशारा किया कि उन्हें इस तरह मार दिया जाता है। चीफ़ सिक्यूरिटी आफ़ीसर ने कहाः "PLO के हामियों को कई महीनों और सालों तक क़ैद रखा जाता है और इस्राईली जेलों के आफ़ीसर उनके इस दौरानिये को इंतिहाई तकलीफ़देह बनाते हैं और

इसके लिये हर मुम्किन कोशिश करते हैं।" यह हक़ीक़त थी कि मैं सिरे से PLO का हामी था ही नहीं और यह कि यह सरासर एक झूटा इल्ज़ाम था इसके बावजूद मैं दहशत का शिकार हो गया।

सबसे ज़्यादा ख़ौफ़नाक मेरे लिये वह वक़्त साबित हुआ जब उन्होंने मुझसे सवाल किया: "क्या मैंने अपने इस्राईल में क़्याम के दौरान कोई डायरी रखी थी?" मुझे मालूम था कि वह बड़ी आसानी से मेरे बसती बैग से वह डायरी निकाल सकते थे, इसी लिये मैंने फ़ौरन इक़रार कर लिया। दरअसल मेरी डायरी में तमाम इंटरव्यू और नोटिस वग़ैरा छिपाए गए थे। इसके अलावा मैंने जेलों के बारे में रिपोर्टें और सियासी क़ैदियों के साथ बदसुलूकी के वाक़िआत भी लिखे हुए थे। अगर उनको वह दस्तावेज़ात और रिपोर्टें मिल जातीं तो, वह ज़रूर मुझे किसी तफ़्तीशी मर्कज़ ले जाते और मुझे काफ़ी लम्बे अर्से तक क़ैद रखते।

अब मेरी तफ़्तीश चार घंटों की हो चुकी थी। फ़्लाइट को छूटे हुए भी काफ़ी देर हो चुकी थी। मैंने अपनी डायरी निकाली और मैंने वह सफ़्हा खोल कर दिया जिसमें मैंने चंद ख़ुतूत लिखे हुए थे जो मैं भेज नहीं सका था। उसमें ज़्यादातर मक़ामात मुक़द्दसा की इमारतों और उनकी आर्कीटिक्चर (ARCHITECTURE) का ज़िक्र था जिनको मैंने देखा था और उन मक़ामात का ज़िक्र था। इस्राईली सिक्यूरिटी आफ़ीसरों ने कुल दस सफ़हात का मुतालआ किया जबकि मैंने पूरी कोशिश की कि अपनी शक्ल कम अज़ कम मुतमइन रख सकूं और घबराहट की कोई अलामत सामने न आने दूं लेकिन मेरी हालत तक़रीबन नीम बेहोशी जैसी थी। मैं यह सोचने लगा कि मुझे किस तरह से अज़ियत दी जाएगी? और किस तरह से मार कुटाई की जाएगी? या फिर बिजली के झटके दिये जाएंगे और भूका रखा

जाएगा लेकिन थोड़ी ही देर के बाद मैंने सुख का सांस लिया, क्योंकि उस इस्राईली आफ़ीसर ने मेरी डायरी पढ़ना छोड़ दी और मुझे वापस पकड़ा दी। अगर वह एक सफ़्हा भी आगे पलट देता तो दूध का दूध पानी का पानी हो जाता और उसे वह सारे नोट्सि वग़ैरा मिल जाते जो कि मैंने लिये थे और जिसकी बुन्याद पर मैंने उस आर्टीकल के आख़िरी हिस्से को लिखा। मैं तो यह सोचता हूं कि अगर मैं पकड़ा जाता तो मैं आज यहां होता भी कि नहीं।

मज़ीद तीन घंटों की सख़्त तलाशी के बाद मुझे यह बताया गया कि मैं जा सकता हूं। अगर्चे बहुत सी दस्तावेज़ात इस्राईली आफ़ीसरों को देनी पड़ीं जो उन्होंने ढूंढ निकाली थी। ख़ुशक़िस्मती से मैंने उन सबको पहले ही कोड्ज़ में लिख लिया था क्योंकि मुझे ऐसी सूरतेहाल का अंदाज़ा था।

एयरपोर्ट के तफ़्तीशी मर्कज़ से जब मैं निकला तो उस वक़्त तक आठ घंटे गुज़र चुके थे और मैं थकन से चूर चूर था, लेकिन फिर भी मैं मुतमइन था कि एक अज़ियत से तो जान छूटी। इस्राईली एयर लाइन एल आल (EL AL) ने मुझे यह पेशकश की थी कि मैं तलअबीब के शैरटन होटल में आराम कर सकूं ताकि अगले रोज़ की फ़्लाइट के ज़रीए लंदन रवाना हो सकूं लेकिन फिर मुझे दोबारा से इस्राईली सिक्यूरिटी से गुज़रना पड़ता जिसका ख़तरा मैं दोबारा नहीं मोल लेना चाहता था। इसलिये मैंने लंदन की अगली फ़्लाइट पकड़ी और केनेडा आ पहुंचने पर इंतिहा से ज़्यादा ख़ुश था।

आख़िरी जंग

जैसे ही हवाई जहाज़ ने इस्राईल के बनगोरियान के बैनुल अक़्वामी हवाई अड्डे से परवाज़ की, मैं अपने इस्राईल के दौरे के बारे में सोचने लगा। यक दम से अलबर्ट पाईक (ALBERT PIKE) की पेशगोइयां मेरे सामने शीशे की तरह शफ़्फ़ाफ़ तरीक़े से सामने आने लगीं। इस फ़्रीमैसन लीडर ने हैरानकुन वज़ाहत के साथ पहली जंगे अज़ीम की पेशगोई की थी और इसके बाद एक रूसी कम्यूनिस्ट रियासत के क़्याम की तफ़सील बताई थी। उसने दूसरी जंगे अज़ीम की भी पेशगोई की थी जोकि जर्मन क़ौमपरस्तों और सहीवनियों के दर्मियान पेश आई थी जिसके बाद इस्राईल के क़्याम का उसने एलान किया था......पाईक ने यह भी कहा था कि तीसरी आलमी जंग इस्राईल और अरबों के दर्मियान पेश आएगी जबकि उसके बाद दुनिया को मुकम्मल तबाही और बरबादी का सामना करना पड़ेगा और आलमी निज़ाम टूट फूट का शिकार हो जाएगा। जिस तरह इस्राईली मक़्बूज़ा इलाक़ों में दोबारा आबाद होते ही चले जा रहे हैं और उन अरबों को जोकि वहां के आबाई रिहाइशी थे उनको धकेलते चले जा रहे हैं (जिनमें उन सहीनवनी ज़ालिमों के ख़िलाफ़ नफ़रत बढ़ती ही चली जा रही है) इससे तो यह साफ़ नज़र आ रहा है कि बाक़ी दुनिया भी इस कोशिश में लगती चली जाएगी और इसमें शामिल हो जाएगी हत्ता कि अलबर्ट पाईक की तीसरी पेशगोई भी पूरी हो जाएगी।

सलीबी जंगों के वक़्त से लेकर अब तक तारीख़ इस बात की शाहिद है कि जिस क़ौम ने भी अरब दुनया पर हमला किया वह

बिलआख़िर भाग गई और इसमें भी कोई शक नहीं कि फ़लस्तीनी और अरब कभी भी सहीवनी रियासत को दिल से तसलीम नहीं करेंगे। वाक़ई इस मस्ले का दाइमी और फ़ैसलाकुन हल मेज़ की बजाए मैदान में नज़र आता है जोकि तमाम फ़रीक़ैन के लिये क़ाबिले क़बूल होगा। जौहरी हथियारों की तैयारी के बाद से तो "आख़िरी जंग जोकि तमाम जंगों का ख़ातमा कर देगी" की अलामात तो पहले ही सामने आ रही हैं जिसके बाद तमाम मुआशरती इक़्तिदार और इदारे (जिस तरह कि हम जानते हैं), ख़त्म हो जाएंगे और सारा मैदान अगले मरहले के लिये हमवार हो जाएगा।

मुस्तक़बिल में क्या होने वाला है?

मुस्तक़बिल क़रीब में क्या होने वाला है? क्या हम सब शिकस्त का लबादा ओढ़ लें? क्या हम सहीवनियों के सामने हथियार डाल दें? आंजहानी Dr. Carrol iigely का तो यह ख़्याल थां कि अमरीका और दुनिया को अब इन साज़िशों के शिकंजे से बचाना मुम्किन है। अगर 1966 ई0 से क़ब्ल भी कोई तहरीक चलाई जाती तो उसे भी नाकामी का सामना करना पड़ता......तो क्या इसका मतलब यह है कि गुलामी हमारा मुक़द्दर बन गई हैं?

नहीं! हरगिज़ नहीं! अभी सब कुछ नहीं बिगड़ा है। आख़िर में साज़िशी अनासिर नहीं जीतेंगे। यह साज़िश बिलआख़िर तबाह व बरबाद होकर रहेगी। (लेकिन अफ़सोस कि अमरीकी अवाम को इसकी ख़बर नहीं कि इस साज़िश को मुस्लिम मुजाहिदीन हज़रत मसीह अलै0 की क़यादत में तक़वा और जिहाद की बदौलत ख़त्म कर देंगे। शाह मंसूर) चूंकि इस साज़िश की बुन्याद लालच, गुरूर और बुराई पर मब्नी है इसलिये शैतान के इस मंसूबे में बहुत बड़ी ख़ामी है। यह साज़िश और मंसूबा तमाम रूहानी क़वानीन के बिल्कुल

ख़िलाफ़ है जोकि ख़ुद ख़ुदा ने बनाए हैं और इसी वजह से यह साज़िश ज़रूर बरबाद होकर रहेगी।

सहीवनियत समझती है शायद मुस्तक़बिल में सिर्फ़ इसी साज़िश के पास ताक़त और कुव्वत होगी, लेकिन यह महज़ उसका धोका है। इस निज़ाम में हर जगह दराड़ें पड़ी हुई मिलेंगी और यह निज़ाम ख़ुद भी हिल चलकर टूट रहा है। अख़्लाक़ी और रूहानी अक़्दार न होने की वजह से यह निज़ाम इंसानी फ़ितरत की कमज़ोरियों से भरा हुआ है। बिलआख़िर यह इंतिशार और बदउन्वानी ही पैदा कर सकता है। यह निज़ाम सिर्फ़ इस वजह से यक्जा है कि इस मक़्सद के लिये नफ़रत, ख़ौफ़, दहशत, हेराफेरी, ज़बरदस्ती, धमकियां और दबाव डाला जा रहा है। इन सबके बग़ैर इस निज़ाम के तमाम अज्ज़ा और इस साज़िशी अनासिर का पूरा तैयारकर्दा निज़ाम एक दम बैठ जाएगा।

जिस तरह हम इक्कीसवीं सदी के आख़िर की तरफ़ गामज़न हैं, हमें क्या करना चाहिये कि अमरीका वापस अपने तवाज़ुन की तरफ़ लौट आए और तरक़्क़ी और अमन आ सके। एक और इंक़िलाब की ज़रूरत है। अमरीकी अवाम के दिल व दिमाग़ को एक रूहानी इंक़िलाब की अशद ज़रूरत है। (सुब्हानल्लाह! मग़रिबी मुफ़क्किरीने इस्लाम के दाइयों जैसी बात कह रहे हैं। अफ़सोस कि वह रूह और रूहानियत का हक़ीक़ी मफ़हूम समझ रहे होते। राक़िम) यही रूहानी बेदारी अमरीका को सहीवनी शिकंजे से आज़ाद कर सकती है। क्या ऐसा मुअजज़ा इस वक़्त मुम्किन है? हां बिल्कुल मुम्किन है बिल्कुल उसी तरह जिस तरह अमरीकी जरनैल मिक आर्थर ने कहा थाः

"तारीख़ में एक भी ऐसी मिसाल मौजूद नहीं कि कोई क़ौम अख़्लाक़ी पस्ती के बाद सियासी और मआशी बुहरान का शिकार न

हुई हो, लेकिन इस नाज़ुक मोड़ पर या तो एक रूहानी इंक़िलाब बरपा हुआ जिसकी वजह से इस अख़्लाक़ी पस्ती का मुक़ाबला किया गया और दोबारा तरक़्क़ी की राह अपनाई गई या फिर क़ौम और भी ज़्यादा पस्ती की तरफ़ चली गई जिसका बिलआख़िर नतीजा मुकम्मल तबाही के अलावा कुछ भी नहीं था।"

अगर हमने एक मर्तबा फिर क़ौमी बेदारी को देखना है तो फिर Russ Walton जैसे कहता है: "यह सिर्फ़ इंफ़िरादी बेदारी ही से शुरू हो सकता है।"

या फिर T.S. Filliot जैसे कहता है:

"क्या मैं अपने हाथ कम अज़ कम सीधे रास्ते की तरफ़ बढ़ाऊं।"

हम सबको अपने हाथ सीधे रास्ते की तरफ़ बढ़ा देने चाहियें।

(अल्लाह करे कि इस मुअ़तदिल मिज़ाज केनेडियन सहाफ़ी की बात मग़रिबी दुनिया को समझ में आ जाए और वह अपना हाथ और क़दम उस सीधे रास्ते की तरफ़ बढ़ा दें जो इंसानियत की नजात का वाहिद और मुतअ़य्यन रास्ता है। आमीन)

पुरअस्रार दज्जाली अलामात

दज्जाली निज़ाम के हक़ में ज़ह्न हमवार करने के लिये फैलाई गई शैतानी अलामात

आपने कभी "सोनी ऐरिक्सन" का मोबाइल आन किया है? इसमें आप को क्या नज़र आता है? एक सब्ज़ आंख जो आहिस्ता आहिस्ता सुर्ख़ होती है। फिर आग के मुख़्तलिफ़ रंग बदलती हुई चारों तरफ़ फैलती है और मोबाइल ज़िंदगी की हरारत पकड़ कर झुरझुरी लेता और बेदार हो जाता है। यह सब्ज़, सुर्ख़ और ज़र्द रंग की आतिशी आंख जो ख़ास अंदाज़ से रंग बदलती, फैलती और स्क्रीन पर छा जाती है, फिर "हयात बख़्श कुव्वत" या "तवानाई के मंबअ़" का तअस्सुर पैदा करती है, क्या है? कभी आपने ग़ौर किया?

आपने सिग्रेट के पैकट देखे होंगे। उनके साइज़ और डीज़ाइन मिलते जुलते होते हैं, लेकिन कभी ग़ौर किया कि उनमें एक ऐसी क़द्रे मुशतरक भी है जिसकी बज़ाहिर सिग्रेट से कोई मुनासिबत नहीं, लेकिन वह सिग्रेट के अलावा शराब की बअ़ज़ अक़्साम पर भी यक्सां तौर पर सब्त नज़र आती है, ख़ास तौर पर तम्बाकू और शराब की मल्टी नेशनल कम्पनियों के ब्रांड पर जो अमरीका या बर्तानिया से तअ़ल्लुक़ रखती हैं। इनके ट्रेड मार्क में एक अजीब व ग़रीब क़दीम जंगली हयात की नक़ल एक "शबीह" होती है, जिसकी आजकल की रौशन ख़्याल कम्पयूट्राइज़्ड दुनिया में कोई अक़ली तौजीह मुम्किन नहीं, लेकिन रौशनियों की दुनिया के बासी उसे सुब्ह व शाम धुवां

निगलने और उगलने से पहले रोज़ाना बीसियों मर्तबा देखते और अपने ज़ह्न पर नक़्श करते हैं और बता नहीं सकते कि यह दौरे क़दीम की जंगली हयात की यादगार अजीब व ग़रीब चीज़ क्या है? यह तीन मुख़्तलिफ़ जानदारों पर मुशतमिल शबीह है, जिसके बीच में एक "नीम इंसानी नीम जन्नाती" क़िस्म का हियूला है। इसको दोनों तरफ़ से दो अजीबुल ख़िल्क़त जानवरों ने पकड़ कर सहारा दिया हुआ है। दाईं तरफ़ का जानवर घोड़े से और बाईं तरफ़ का शेर से मिलता जुलता है। बीच में मौजूद मर्कज़ी शबीह के सर पर ताज है और ताज के ऊपर छोटा सा शेर बना हुआ है। कुछ याद आया? आप को यह चीज़ यक़ीनन देखीभाली महसूस होगी। जी हां! बिल्कुल वैसा शेर जैसे कि हबीब बैंक या बैंक अलहबीब के मोनोग्राम में होता है। इस पूरी शबीह की तलख़ीस और अलामती नुमाइंदगी इस ताज से जाती है, जो इस "नीम इंसानी शैतानी" शबीह के सर पर मौजूद है। चुनांचे बहुत सी मसनूआत पर तो मुकम्मल शबीह होती है और कुछ पर फ़क़त यह ताज जो उसके मर्कज़ में बुलंद मक़ाम पर मख़्सूस अंदाज़ में चमतकार दिखा रहा होता है। मसलनः पेप्सी के डिस्पोज़ेबल टिन को ग़ौर से देखिये। इसमें जहां उस डब्बे को आरज़ी इस्तेमाल के बाद टोकरी में फैंकने की अलामत दी गई है, वहां पर ताज भी बना हुआ है। सवाल पैदा होता है......और वह्म व मफ़रूज़े या बेजा बहस के बजाए अक़्ल व मंतिक़ की बुन्याद पर पैदा होता है कि......कचरे की टोकरी के ऊपर ताजे शाहाना का क्या काम?

आप कभी अमरीका व यूरप गए हैं? नहीं गए तो ख़ुदारा (नक़्ल मकानी करके) वहां जाने की सोच दिल से निकाल दीजिये। वहां अन्क़रीब ऐसा वक़्त आने वाला है कि आप अपने तन के कपड़ों के अलावा कुछ साथ लेकर न निकल सकेंगे। अगर आप वहां गए हैं या

आपने दुनिया के मशहूर शहरों की सियाहत की है तो क्या आपने महसूस किया, आज़ाद ख़्याल और आज़ाद रवी की आख़िरी हद तक पहुंचने के बावजूद उर्यानियत परस्ती मज़ीद बढ़ती जा रही है और बेतहाशा बढ़ती जा रही है? शोहरत और दौलत के हुसूल और मनचाही ख़्वाहिशात की तकमील के लिये लोग जाइज़ व नाजाइज़ की तफ़रीक़ तो भुला ही चुके थे, अब वह जादू टोने और ग़ैर मरई ताक़त से माओराई इआनत के हुसूल के हुसूल की तरफ़ राग़िब हो रहे हैं। हैरी पोर्टर जैसे नावलों, फ़िल्मों, कार्टूनों और वीडियो गेम्ज़ ने छोटे छोटे बच्चों के ज़हन में यह रासिख़ कर दिया है कि दुनिया में जादू टोना और मावराई मख़्लूक़ात (यअ़नी शैतान और इसके नुमाइंदे आज़म दज्जाल, ख़बीस जिन्नात और उनके चेलों) की ताक़त ही अस्ल ताक़त है और इस तरह अल्लाह तआला का बिन देखे इंकार करने वालों की नई नस्ल शैतान के अनदेखे जाल में फंसती जा रही है।

आपको कभी हरमैन शरीफ़ैन हाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई? अल्लाह मुझे, आप को, हर साहिबे ईमान को वहां बार बार ले जाये और हरमैन के अक़ीदत और उस पर मर मिटने का जज़्बा नसीब फ़रमाए, कि वक़्त ही ऐसा आने वाला है जब वहां फ़िदाइयों के फ़नाफ़ी अल्लाह की तह से बक़ा का राज़ दुनिया के सामने आशकार होगा। आपने मनासिके हज की अदाइगी के दौरान शहरी दिफ़ाअ़ के महकमे को मुतहर्रिक देखा होगा। ट्रेफ़िक कंट्रोल के महकमा की तरफ़ से हुज्जाजे किराम की सहूलत और गाड़ियों के हुजूम को कंट्रोल करने के लिये मुख़्तलिफ़ इश्तिहारात, हिदायात वग़ैरा मुलाहज़ा की होंगी। इन महकमों के मोनोग्राम में आपको कोई चीज़ ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ और अजीब तो नहीं लगी? आपने महसूस किया वही

आंख जो रंग और शक्लें बदल बदल कर यूरप व अमरीका पर छाई नज़र आती है, यहां भी झांकती दिखाई देती है। वही तिकोन जो शैतान और दज्जाल की मुत्तहिदा ताक़त की अलामत है, यहां भी मुख़्तलिफ़ जगहों पर झिलमिलाती और मुख़्तलिफ़ चीज़ों पर नक़्श दिखाई देती है। आप अगर सफ़रे हरमैन के दौरान बीमार हुए हैं तो मेडीकल स्टोर ज़रूर गए होंगे या कम अज़ कम किसी "सैदलिया" के सामने से तो ज़रूर गुज़रे होंगे। वहां कभी सांप की शबीह देखी? बीमारियों के लिये मसीहाई बांटने के मर्कज़ में सांप की मूज़ी शक्ल का क्या काम है? लेकिन आप हाफ़िज़े पर ज़ोर दें तो सांप की शक्ल "आलमी इदारए सिहत" के मोनोग्राम और तिब व सिहत से मुतअ़ल्लिक़ा बहुत सी अशया पर भी मौजूद है। गुज़िश्ता दिनों राक़िमुल हुरूफ़ पंजाब के एक शहर की एक सड़क से गुज़र रहा था। रात का वक़्त था। एक मेडीकल स्टोर पर नज़र पड़ी। यह चीज़ तो बड़ी ख़ुश आइंद थी कि उसके मालिक ने तीस साल सऊदी अरब में रहकर आने की वजह से अपनी दुकान का नाम "सैदलिया" रखा था और अंदाज़े आराइश भी वैसा ही था जैसा सऊदी अरब के सैदलिया, यअ़नी दवा फ़राशों का होता है, लेकिन यह देखकर निहायत दुख हुआ कि बेख़बरी में उसने सांप की मख़्सूस अलामत भी वाज़ेह तौर पर बनाई हुई थी, जो उमूमन बला व हरमैन के मेडीकल स्टोरों की पहचान बन चुकी है और बग़ैर सोचे समझे बन चुकी है। आख़िर तिर्याक़ व इलाज और ज़हर व ईज़ा में मुनासिबत क्या कि मूज़ी शक्ल का यह जानवर सुनहरे और दीदा ज़ेब रंगों और मअ़सूम शक्ल के साथ अपनी फ़ितरत और रिवायत से बिल्कुल मुतज़ाद अशया के साथ लहराता दिखाई देता है? कहीं यह बच्चों के कपड़ों, जूतों और टोपियों पर महबूबियत और मअ़सूमियत की अलामत बना कुंडली

मारे बैठा होता है और कहीं हीरो किस्म के अदाकारों, कराटे खेलने वाले जंगजू खिलाड़ियों की वर्दियों पर ताक़त और कुव्वत के निशान के तौर पर फन फैलाए नज़र आता है।

आलमे मग़रिब और आलमे अरब के बाद आप अपने मुल्क को ले लीजिये! बहुत सी जगहों पर आपको ऐसी चीज़ें नज़र आएंगी जिन पर ग़ौर करने से अंदाज़ा होता है कि एक नामानूस चीज़ को धीरे धीरे, रफ़्ता रफ़्ता मानूस किया जा रहा है। इस तरह "नाखूब" आहिस्ता आहिस्ता "खूब" होता जा रहा है। मसलनः आप जियो और पी टी सी एल के मोनोग्राम को ताड़िये। एक आंख आप को ताड़ती दिखाई देगी। "LG" मशहूर बैनुल अक़वामी कम्पनी है। इसके मोनोग्राम में वाज़ेह इंसानी शबीह है, जो यक चश्म है। विंडोज़ 2007xp खोलिये। "ACDC" या "एडोब फ़ोटो शाप, एडोब एक्रोबेट रीडर" के लोगो को तवज्जोह से देखिये। पुरअस्रार किस्म की आंख आप को घूर रही होगी। आजकल "कम्प्यूटर वाइरस" को रोकने के लिये एक प्रोग्राम "NOD32" आया है। इसकी अलामत एक आंख है जिससे रौशनियां फूट रही हैं और यह आंख तने तन्हा हर तरह के वाइरस से दिफ़ाअ़ कर रही है। बच्चों के वीडियो गेम्ज़ में सबसे ताक़तवर हीरो की जो शबीह होगी, ग़ौर करें तो उसकी एक आंख होगी। बच्चों के एक मशहूर कार्टून में एक आंख वाली शबीह को सबसे ताक़तवर वजूद के तौर पर दिखाया जाता है। अब तो हमारे यहां एक मअ़रूफ़ अख़्बार और चैनल के "हर ख़बर पर नज़र" के इश्तिहार में एक आंख हर चीज़ पर नज़र जमाए और निगरानी करते दिखाई देना शुरू हो गई। यह इकलौती आंख आप को कम्प्यूटर और टी वी की स्क्रीन पर झिलमिलाती नज़र आएगी, आपके दिमाग़ में बिजलियां कूदेंगी और यह ज़ह्न के पर्दे पर अनमिट

नक़्श की तरह जम जाएगी। रफ़्ता रफ़्ता कुछ ही अर्से बाद इसका ऐसा तास्सुर दुनिया के ज़हन में बैठेगा कि अवामुन्नास दो आंखों को कमज़ोरी और एक आंख को ताक़त और ज़िहानत की अलामत समझने लग जाएंगे। खेल ही खेल में यह नौबत आ जाएगी कि एक या तीन आंखें भली और दो आंखें बुरी मालूम होंगी। "ज्यो" के मौसीक़ी चैनल "आग" में एक "आतिशी तिकोन" है यअ़नी मुसल्लस निशान जिसके बीचों बीच आग सींगों की शक्ल में जल रही है। यह इसी तरह का मुसल्लस है जैसा मिस्र के मशहूर ज़माना फ़िरऔनी एहराम में भी होता है और उसकी चोटी पर रौशनी फाड़ती एक आंख सब्त होती है। चोटी पर मौजूद रौशनियां बिखेरती यह आंख डालर की पुश्त पर दुनिया भर में सफ़र करते हुए पूरी दुनिया को पैग़ाम दे रही है कि अमरीका और मग़रिब की तरक़्क़ी के बलबूते पर ज़ोर दिखाने वाले इस फ़ित्ने को समझो, जो अपनी मख़्सूस अलामात दुनिया भर में फैला कर इंसानी ज़ह्नों को तारीख़ के अज़ीम तरीन फ़ित्ने के लिये हमवार कर रहा है।

अमरीकी डालर की तरह बर्तानवी पाउंड भी शैतानी अलामत या दज्जाली निशानात से ख़ाली नहीं। इसको उल्टा करके ग़ौर से देखें तो 666 का मख़्सूस शैतानी हिंदसा जलवा गर नज़र आएगा। मल्टी नैशनल कम्पनियों के मस्नूआत पर छपे "कोडबार" में भी आप को छः के तीन हिंदसे मुख़्तलिफ़ शक्लों में दिखाई दे ही जाएंगे। आज़ाद ख़्याल नौजवानों की शर्ट्स और बच्चों की टोपी या इस्तेमाल की दीगर अशया पर खोपड़ी और हड्डियों का मख़्सूस निशान भी आप से छिपा न रहा होगा। किसी को अगर आज के दौर की "उम्मुल ख़बाइस" यअ़नी टेलीवीज़न देखने की लत लगी हुई है तो उसे वक़्फ़े वक़्फ़े से किसी न किसी शक्ल में प्रोग्रामों, इश्तिहारात और कार्टून

में, एक आंख या तिकोन वक़्फ़े वक़्फ़े से किसी न किसी शक्ल अंग्रेज़ी हुरूफ़े तहजी A,e,o या Q के मुख़्तलिफ़ डीज़ाइनों में झिलमिलाती और अपना आप मनवाती नज़र आएगी। इन हुरूफ़ से बने डीज़ाइन जहां पाए जाएं, वह तिजारती कम्पनियां हों या तालीमी इदारे, शऊरी तौर पर A के डीज़ाइन में तिकोन और बक़िया हुरूफ़ में आंख की तमसील पैदा कर देते हैं। इसके बग़ैर उनके ज़ौक़ ज़िबाइश की तसकीन नहीं होती न उन्हें कोई और चीज़ सूझता है। ताज, तिकोन, आंख, सांप, खोपड़ी और हड्डियां, छः सौ छियासठ और तीन सौ बाईस के हिंदसे......आख़िर यह सब कुछ किया है? कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है। एक तिलस्म है जिसके आगे टंगा पर्दए ज़ंगारी है। "दज्जाल1" के आख़िर में दी गई रूहानी व अमली तदाबीर में "फ़ित्नए मीडिया से हिफ़ाज़त" का उन्वान बढ़ा दिया गया है। इसमें अपने इर्दगिर्द फैली दज्जाली अलामात पर ग़ौर करने और उनके शर से बचने की तलक़ीन की गई है। इस मज़मून की तलख़ीस "दज्जाल2" के आख़िर में भी दे दी गई है, लेकिन वहां यह अलामात मुख़्तसरन थीं। आइये! ज़रा इन अलामात को बिलतरतीब तफ़सील से देखते हैं और उनके पीछे छिपे फ़लसफ़े को समझने की कोशिश करते हैं। शायद कि इन अलामात की हक़ीक़त से वाक़फ़ियत हमें फ़रेब के इस नादीदा जाल में उलझने से बचने की सोच पैदा करे, जो इंसानियत के दुशमन और शैतान परस्त कुव्वतें कुर्रहये अर्ज़ पर तानने की कोशिश कर रही हैं। ज़िक्र का नूर, मस्नून आमाल, मासूर दुआओं का हिसार और तक़वा की बर्कत......इन सब शैतानी अलामात और जादूई निशानियों का असल तोड़ है, ख़ैर की यह चीज़ें अपनाने के साथ साथ शर की नुमाइंदा इन खुली निशानियों के पीछे छिपे ख़ुफ़िया पैग़ाम को जानना भी ज़रूरी है। फ़ेहरिस्त बनाई

जाए तो यह एक दर्जन के करीब बनती हैं। एक दो ग़ैर मशहूर भी है, जिनको हम आख़िर में ज़िम्नन ज़िक्र करेंगे। अस्ल बहस के आग़ाज़ से पहले चंद बातों की वज़ाहत ज़रूरी है:

(1) यह अलामात या इनकी शबीह जहां हकीकी या करीब बा हकीकत हो, हमारी बहस इसी से है। बअ़ज़ चीज़ों में ख़्याली या वह्मी तौर पर किस्मा कस्म फ़र्ज़ी शक्लें या तसव्वुराती शबीहें बन जाती हैं, जिनमें हकीकत से ज़्यादा कुव्वत वाहिमा की कारफ़रमाई होती। यह हमारी बहस से कतअन ख़ारिज है। समझदारी की बात यह है कि हकीकत से आंखें न चुराई जाएं और वह्म या एहतिमाल की बुन्याद पर किसी को मूरिदे इल्ज़ाम भी न ठहराया जाए। एतिदाल और म्याना रवी ही ज़िंदगी के हर मोड़ पर......दीनी हो या दुन्यावी......तहफ़्फ़ुज़ और सलामती की ज़ामिन है।

(2) यह अलामात दो किस्म की हैं: एक तो वह जो शैतान के साथ ऐसे ख़ासुल ख़ास अंदाज़ में मख़्सूस हैं कि उनका कोई और मतलब बनता ही नहीं, इनका इस्तेमाल करने वाला यह उज़्र करे कि मैं उनकी असलियत और पसमंज़र से नावाकिफ़ हों तो इसका उज़्र सौ फ़ीसद मकबूल है कि इन अलामात या निशानात की हकीकत अच्छे ख़ासे तालीम याफ़ता लोग भी नहीं जानते, लेकिन अगर वह इसकी कोई और तावील करके जान छुड़ाना चाहे तो वह कतअन मकबूल नहीं हो सकती कि कोई लाख तावील करे उनका दूसरा एहतिमाली मअ़नी मतसूर नहीं, मसलन: पहली अलामत जिसमें "अजीबुल ख़िलकत जानवरों" की नक्काली करती हुई शबीह और इस शबीह के सर पर सुनहरा ताज, या शुअ़बा सिहत के मोनोग्राम में सांप, या सींग, खोपड़ी, हड्डियां और मख़्सूस पुरअस्रार हिंदसे। ऐसी अलामात को मिटाकर मुतबादिल शनाख़्त बनाना, या उनकी तरफ़

तवज्जोह दिलाकर उन्हें बदलना बहरहाल ज़रूरी है।

दूसरी क़िस्म उन अलामात की है जिनकी तावील मुम्किन है। उनके दूसरे मतलब भी हैं या उन्हें किसी मतलब के बग़ैर भी इस्तेमाल किया जाता है। जैसे तिकोन, पंज गोशा सितारा या ऐसे अंग्रेज़ी हुरूफ़ (o,e,Q वग़ैरा) जिनसे आंख या तिकोन बनती है। बिला शुब्हा यह आम इस्तेमाल के नुक़ूश, इशकाल और हुरूफ़ हैं। इनकी एक मख़्सूस शक्ल के अलावा इस्रार नहीं किया जा सकता कि वह बिलयक़ीन ही शैतानी अलामात हैं या ज़रूर ही ग़लत मतलब में इस्तेमाल होती हैं। ऐसा करना ख़ुसूसन ग़ैर मग़रिबी मुआशरों में इस बात पर ज़ोर देना नाइंसाफ़ी होगी। इन मुशतरक और मुब्हम अलामात को अक्सर डीज़ाइनर किसी ख़ास मतलब के बग़ैर आराइशी शक्ल समझ कर डीज़ाइन कर लेते हैं और इस्तेमाल करने वाले भी बेख़्याली और बेध्यानी में इस्तेमाल करते हैं। हमारे इस मज़मून में इस तरह के लोगों पर तअ़रीज़ भी हरगिज़ मक़्सूद नहीं, चे जाएकि हम ऐसी तसरीह करें। नियतों का हाल जानने वाला उस पर गवाह है। क़ारईन भी एहतियात करें। अफ़रात व तफ़रीत से बचें। ग़ैर वाक़ई और फ़र्ज़ी बहसों में न उल्झें। न किसी को बिला वजह मूरिदे इल्ज़ाम ठहराएं। हमें फ़ित्ने के ख़ातमे के लिये काम करना चाहिये। नया फ़ित्ना खड़ा करके नए मसाइल में उलझना दानिश्मंदी है न दीनदारी।

(3) इन अलामात की तरह उन्हें इस्तेमाल करने वाले भी दो तरह के हैं: मग़रिब के कुछ इदारे और कम्पनियां बिला शुब्हा जान बूझ कर ऐसा करते हैं। उनके चलाने वाले इन अलामतों को अपने मोनोग्राम या पेशानी पर सजाकर शैतान की मदद हासिल करने के साथ दुनिया को शैतानी असरात से आलूदा करना चाहते हैं।

अमरीका व यूरप में बनी इस्राईल के सामरियत ज़दा अफ़राद इस मुहिम को मक़सद बना कर चला रहे हैं। जबकि हमारे यहां ज़्यादा तर लोग और कम्पनियां नासमझी में और दूसरों की देखा देखी यह सब कुछ करती हैं। उनको हक़ीक़त का इल्म नहीं होता, बल्कि अक्सर के वहम व गुमान में भी नहीं होता कि वह इतनी बेजा हरकत की मुर्तकिब हो रही हैं। लिहाज़ा उनका हम पर हक़ बनता है कि हम उन्हें हक़ीक़त से आगाह करें, न कि पहली मर्तबा ही उन पर एतिराज़ात की लाठी लेकर बरस पड़ें। अह्ले इल्म और दाइयाने दीन और दीनदार हज़रात को इंसानियत के लिये रहीम व शफ़ीक़ होना चाहिये न कि बदमिज़ाज व ग़ज़बनाक।

(4) ज़ेरे नज़र तहरीर में शैतान और दज्जाल या शैतानी अलामात और दज्जाली अलामात हम मअ़नी और हम मतलब हैं। एक के ज़िक्र का मतलब दूसरे का तज़किरा है और एक से मंसूब अलामत दूसरी की पहचान है। क़ारईन के लिये यह बात तशवीश का बाइस नहीं होनी चाहिये कि किसी अलामत के ज़िम्न में शैतान का तज़किरा है और कहीं दज्जाल की तरफ़ वही चीज़ मन्सूब की गई है। इसलिये कि यह सिर्फ़ बड़े छोटे का फ़र्क़ है, वर्ना इंजील की तसरीह के मुताबिक़ दज्जाल की सारी ग़ैर मअ़मूली क़ुव्वतों का राज़ यह होगा कि शैतान ने अपनी सारी ताक़तें उसे सौंप दी होंगी। इसलिये ज़ेरे नज़र तहरीर में जब किसी चीज़ की इनमें से किसी एक की तरफ़ निस्बत की जाए तो वह दूसरे के लिये भी ख़ुद बख़ुद समझी जाए। इनमें से एक तारीकियों की तरफ़ बुलाता है तो दूसरा तारीकियों में फंसाने का जाल है। एक बनी आदम को जहन्नम के गढ़े में गिराना चाहता है तो दूसरा इसमें उसका मुआविन और दस्ते रास्त है। किताब व सुन्नत में दोनों से अल्लाह की पनाह चाहने और

दोनों के फ़ित्ने से अपने आप को बचाने और उनके ख़िलाफ़ जिहाद की तरग़ीब दी गई है।

अब आइये! इन अलामात की फेहरिस्त शुरू करते हैं। इनका पसमंज़र, इनके पीछे छिपा फ़लसफ़ा और मिसालें तो साथ साथ ज़िक्र होंगी, अलबत्ता इन अलामात को फैलाने का मक़्सद इजमालन साथ साथ और तफ़सीलन आख़िर में ज़िक्र होगा। वहीं हम यह भी समझने की कोशिश करेंगे कि इन पुरअस्रार अलामात की भरमार और शैतानी निशानात की यलग़ार के सामने बंद कैसे बांधा जाए? इनका तोड़ कैसे हो? और इनके शर से बचना और बचाना क्योंकर मुम्किन हो सकता है?

ताजे ज़र्री व हैवाने अजीब

पहली अलामत - सुनहरा ताज और अजीबुल खि़ल्कत जानवरः

ताज उर्फ़े आम में शान व शौकत और फ़ख़्र व गुरूर की शाही निशानी समझा जाता है। खुसूसन जब सोने का हो तो असराफ़, किब्र और गुरूर व नुख़्वत का मुतकब्बिराना औनी इज़हार है। जब मर्द को सोने की अंगूठी और चांदी के कंगन की इजाज़त नहीं तो ताज की इजाज़त कैसे होगी? ख़ास कर सोने का ताज तो कोई ऐसा शख़्स पहन ही नहीं सकता जिसे आखि़रत में इज़्ज़त का ताज पहनने की अदना सी भी ख़्वाहिश हो। एक मुसलमान के लिये तो अमामा ही वह ख़ूबसूरत, दीदाज़ेब और वक़ार व इज़्ज़त की बाबरकत व पुर नूर अलामत है जो उसके लिये काफ़ी है। जिस चीज़ को जनाब नबी करीम सल्ल० ने पसंद फ़रमाया, ज़ेब तन फ़रमाया और उसे "ताज" कहा, इससे बढ़कर सर की ज़ीनत क्या हो सकती है? मगर शैतान ने अपने लिये और अपने चेलों के लिये जिस चीज़ को पसंद किया है, वह फ़िरऔनों, दुनिया परस्तों और मुतकब्बिरीन की अलामत है।

यही अलामत इसके सबसे बड़े आलाकार की है जिसे पूरी दुनिया का बेमहार बादशाह बनाने के लिये शैतानी कुव्वतें पूरा ज़ोर लगा रही हैं और उसके ख़ुरूज से पहले उसकी मख़्सूस अलामतों को कुर्रहये अर्ज़ी के बाशिंदों के लिये मानूस और जानी पहचानी बनाने की कोशिश कर रही हैं। आप को शायद इस पर यक़ीन न आए......मअ़मूल के मुताबिक़ दिखाई देने वाली चीज़ों के बारे में ग़ैर मअ़मूली बातों पर यक़ीन आता भी नहीं......लेकिन मअ़मूल के मुताबिक़ नज़र आने वाली चीज़ें किसी अक़्ली तौजीह और फ़ित्री

मुनासिबत के बरख़िलाफ़ हों तो इंसान सोचने पर मजबूर हो ही जाता है। हम आप से यही उम्मीद रखते हैं कि आप तवज्जोह दिलाए जाने के बाद ऐसे इज्तिमाई मौज़ूआत पर ग़ौर व फ़िक्र से लातअ़ल्लुक़ नहीं रहेंगे, जिनका सामना पूरे आलमे बशरियत को है।

सुनहरे ताज की शैतान या उसके नुमाइंदाए आज़म (दज्जाले अक्बर) से क्या मुनासिबत है? ताज के नीचे यह नामानूस क़िस्म की नागवार हैवानी शबीह क्या है? इसको दोनों तरफ़ से सहारा देने वाले तीन तीन जानवरों से मुरक्कब फ़र्ज़ी हैवान किस दुनिया से तअ़ल्लुक़ रखते हैं? क्या दज्जाल जब ज़ाहिर होगा तो उसके सर पर ताज होगा? इन सब चीज़ों का पसमंज़र समझने के लिये हम "समावियात" और "दज्जालियात" दोनों से मदद लेंगे। इंजील की आख़िरी किताब "यूहन्ना आरिफ़ का मुकाशिफ़ा" में चंद आयात ऐसी हैं जो ताज के अलावा इन अजीबुल ख़िल्क़त जानवरों की हक़ीक़त से भी पर्दा उठाती हैं, जिन्होंने इस शबीह को दोनों तरफ़ से थाम रखा है, जिनके सर पर ताज धरा है। इस किताब के शुरू में है:

"यसूअ़ मसीह का मुकाशिफ़ा जो उसे ख़ुदा की तरफ़ से इसलिये हुआ कि अपने बंदों को वह बातें दिखाए जिनका जल्द होना ज़रूरी है।"

इस मुकाशिफ़ा में सात फ़रिश्तों के तज़किरे के बाद शैतान के बारे में जो अल्लाह के नेक बंदे यूहन्ना आरिफ़ को "कश्फ़" की हालत में अज़दहा जैसा नज़र आता है, का तज़किरा है। शैतान के तज़किरे के मुत्तसिल बाद दज्जाल का तज़किरा है जो समंदर से निकलते हैवान की शक्ल में उस वक़्त की नेक हस्ती यूहन्ना आरिफ़ को मुकाशिफ़ा के दौरान दिखाया गया। याद रहे कि दज्जाल का मसकन समंदर में है और वह "नीम इंसान, नीम हैवान, नीम जिन्न"

किस्म की दोग़ली मख़्लूक़ है। अब आगे चलते हैं। मुकाशिफ़ा में है:

"और मैंने एक हैवान को समंदर में से निकलते हुए देखा। उसके दस सींग और सात सर थे और उसके सींगों पर दस ताज और उसके सरों पर कुफ़्र के नाम लिखे हुए थे। और जो हैवान मैंने देखा उसकी शक्ल तेंदुए की सी थी और पांव रीछ के से और मुंह बब्बर का सा। और उस अज़्दहा ने अपनी कुदरत और अपना तख़्त और अपना बड़ा इख़्तियार उसे दे दिया। और मैंने उसके सरों में से एक पुरगोया ज़ख़्म कारी लगा हुआ देखा, मगर उसका ज़ख़्म कारी अच्छा हो गया और सारी दुनिया तअज्जुब करती हुई उस हैवान के पीछे हो ली। और चूंकि उस अज़्दहा ने अपना इख़्तियार उस हैवान को दे दिया था, बस इसलिये उन्होंने अज़्दहा की परसतिश की और उस हैवान की भी यह कह कर परसतिश की कि उस हैवान की मानिंद कौन है? कौन उससे लड़ सकता है? और बड़े बोल बोलने और कुफ़्र बकने के लिये उसे एक मुंह दिया गया और उसे बयालीस महीने तक काम करने का इख़्तियार दिया गया।" (मुकाशिफ़ा: बाब13, आयत 2 ता 8, नया अह्दनामा: स0251)

इन आयात में कई बातें ग़ौर करने की हैं। हैवान के सर पर कुफ़्र के नाम (यअ़नी अक़्वामे मुत्तहिदा, यूरपी यूनियन, जीसक्स, जीऐट या मग़रिबी मुमालिक के "नाटो" जैसे किसी इत्तिहाद में शामिल मुमालिक के नाम) दर्ज होना, अज़्दहा (यअ़नी इबलीस) की तरफ़ से अपना इख़्तियार उस हैवान को देना, उस हैवान की तरफ़ से अपनी और अज़्दहा की परसतिश करवाना, कुफ़्र बकने (यअ़नी झूटी ख़ुदाई का दावा करने के लिये) के लिये उसको एक मुंह मिलना, (सर पर ज़ख़्मकारी लगने से शायद उसका एक आंख से महरूम होना मुराद है, वल्लाहु आलमु बिस्सवाब) उसकी शुअ़बदा बाज़ियों

देख कर लोगों का यह कह कर उसके पीछे चल पड़ना कि उस हैवान से कौन लड़ सकता है? वग़ैरा वग़ैरा......बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जो "अहादीसुल फ़ितन" और उनकी असरी ततबीक़ से शग़फ़ रखने वालों के लिये फ़िक्र के बहुत से दरीचे खोलती हैं, लेकिन हम यहां सिर्फ़ उस हैवान की शक्ल व सूरत और उसके ताज पर तवज्जोह देंगे क्योंकि शैतान की आलाकार दज्जाली कुव्वतों ने उस पर ग़ैर महसूस तरीक़े से इतनी तवज्जोह दी है कि उसकी शबीह बहुत सी चीज़ों पर शैतानी अलामत के तौर पर दज्जाल की आमद से पहले उसके लिये ज़ह्न साज़ी के हवाले मौजूद होती है। इस अलामत की तशहीर में सबसे ज़्यादा हिस्सा "ब्रिटिश कालिज आफ़ हेरलड्री" (British College of Heraldry) का है। यह बर्तानिया का क़वी इदारा है जो सरकारी अफ़सरान और मुलाज़िमीन के लिये वर्दियां डीज़ाइन करता है। उसने अपनी गुज़िश्ता कई सदियों की तारीख़ के तनाज़ुर में "राइल कोट आफ़ आनर्ज़" डीज़ाइन किया है। इसमें वह शबीह है जिसके सर पर ताज और जिसके दाएं जानिब घोड़े की शक्ल का और बाएं जानिब शेर से मुशाबा जानवर नज़र आता है।

यह शबीह बर्तानवी अफ़सरान की वर्दियों, शाही इदारों और तालीमी जामिआत के मोनोग्राम से होती हुई सिग्रेट के पैकिटों और शराब की बोतलों पर आन पहुंची और यहां ऐसी जमी कि उनकी पहचान बन गई। फिर इस नामानूस "शबीह" के खुलासे के तौर पर "ताज" को मुख़्तलिफ़ इदारों के मोनोग्राम और कम्पनियों की मसनूआत के ज़रीए "रायल आर्ट", "किंग स्टाइल" और "क्राउन वरायटी" का नाम देकर फैलाया और आम किया गया, हत्ता कि हमारे यहां की बैकरियों, बुल्डोज़रों और तअ़लीमी इदारों को तो रहने दीजिये, बअ़ज़ मुस्लिम मुमालिक के इदारों जो निजी नहीं, सरकारी हैं,

के मोनोग्राम पर भी बग़ैर सोचे समझे "सुनहरा ताज" नक़्श करना शुरू कर दिया। मसलनः राक़िम के सामने उस वक़्त एक बिरादरे इस्लामी मुल्क के "महकमए अम्ने आम" का मोनोग्राम मौजूद है। उसके बीच में आंख की शबीह और उस शबीह के ऐन ऊपर सुनहरा ताज है। यह नक़्श इस इदारे की गाड़ियों पर भी सब्त है और हज व उम्रा के ज़ाइरीन उसे आम मुलाहज़ा कर सकते हैं। कहा जा सकता है कि यहां बादशाही निज़ाम है। यह ताज बादशाहत की अलामत है, लेकिन सोचने की बात यह है कि इस इस्लामी मम्लिकत के बादशाह तो ताज पहनते ही नहीं, और हरमैन के ताजदार सल्ल0 ने तो सुनहरा ताज (जो ज़ाहिर से सोने का है और सोना मर्द के लिये मम्नूअ़ है) पहनने की इजाज़त ही नहीं दी, तो इसे सरकारी मोनोग्राम में लगाना ग़फ़लत के अलावा और क्या हो सकता है? ग़फ़लत तो किसी से भी हो सकती है। इस पर कोई मलाल नहीं। अलबत्ता तवज्जोह दिलाए जाने के बाद ग़लती पर इसरार अच्छी बात नहीं। चलें मान लिया कि इस बिरादर मुल्क में बादशाहत का निज़ाम है और ताज बादशाहत की अलामत है, लेकिन फिर इस बात का क्या जवाब दिया जाएगा कि इसी क़ाबिले एहतिराम मुल्क के एक और इदारे "अद्दिफ़ाउल मंदनी" (शहरी दिफ़ाअ़) के मोनोग्राम में जज़ीरए नुमाए अरब के वसत में तिकोन सब्त है। इस तिकोन की यहां क्या मुनासिबत है? अरब भाइयों के मैडीकल स्टोरों में जिनका नाम "सैदलिया" होता है, सांप की शबीह लाज़मी नमूने के तौर पर मौजूद होती है। सांप का दवा और शिफ़ा के शुअ़बे से क्या तअ़ल्लुक़?

बात "सुनहरे ताज" की हो रही थी। कहीं कहीं तो इसकी फ़कत शबीह होती है। जैसे शैल, डाइयू और वाल्ज़ के लोगो में, इसको यक़ीनी तौर पर ताज कहना मुश्किल है, लेकिन कहीं कहीं

वाज़ेह तौर पर "ताज" ही होता है, जो शैताने अक्बर की तरफ से आलमी बादशाहत के लिये नामज़द वाहिद उम्मीदवार "दज्जाले आज़म" की बेबुनियाद बादशाहत के क़याम के लिये लोगों के ज़ह्न हमवार करके उनमें दज्जाल की उंसियत का बीज बोने के लिये क़िस्मा क़िस्म शक्लों में फैलाया जाता है। आपने ब्लैक वाटर के मोनोग्राम को ग़ौर से देखा है। यह चीते का पंजा मालूम होता है, लेकिन दरहक़ीक़त इस पंजे को ताज की शक्ल देकर बेज़वी दाइरे में दिखाया गया है। खुसूसन उन तिजारती या तालीमी इदारों में जो होते तो मश्रिक़ के बासी और ज़ात के जट हैं, लेकिन उन्हें "शाही महल", "शाही बैकरी", "शाही तआमगाह" ग़र्ज़ कि हर चीज़ को "रायल मैड" बनाने या "गोल्डन क्राउन" के साए तले पनपता हुआ दिखाने का शौक़ होता है। हमारे यहां देखा देखी और रवा रवी में शाहों की यह रिवायत फुटपाथों ने सजानी शुरू कर दी है। इस आजिज़ को तलाश करते करते ऐसे मग़रिबी इदारे का मोनोग्राम भी मिला जो "थ्री इन वन" का नमूना था। यअ़नी इसमे ताज का डीज़ाइन इस तरह बनया गया था कि दाएं बाएं दो सींग बन जाएं, बीच में दो सांप एक असा से चिमटे हुए हों। बताइये "बिरादरी" ने कोई कसर छोड़ी है?

ग़ौर किया जाए तो ताज की शबीह मलिका बर्तानिया से तो जुड़ती है कि उसकी शाही कुर्सी में तख़्ते दाऊदी जुड़ा हुआ है, अजीबुल ख़िल्क़त जानवरों की हैवानी ताक़त से फ़ाएदा उठाने का वह्म बरतानवी सरकार से मेल खाता है कि उसने ख़ून आशाम हैवानों की तरह पूरी दुनिया के वसाइल चूसे हैं, लेकिन इन दोनों चीज़ों का अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 के मानने वालों से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होना चाहिये। उन्हें फ़िरऔनी ताजों की जगह रहमानी

अमामों को रिवाज देना चाहिये। अपने दिल में भी, अपने सर पर भी और अपने मुआशरे पर भी। इससे अल्लाह की रहमत मुतवज्जोह होती है, नबी अलै0 की सुन्नत ज़िंदा होती है और शैतानी असरात का ख़ातमा होता है।

☆☆☆

इक्लौती आंख और तिकोन

दूसरी अलामत - इक्लौती आंखः

हदीसे पाक की सबसे मुस्तनद किताब बुख़ारी शरीफ़ में है नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः "मैं तुम्हें दज्जाल के बारे में आगाह करना चाहता हूं। दुनिया में कोई नबी ऐसा नहीं आया जिसने अपनी क़ौम को दज्जाल की आमद और उसके शर से महफ़ूज़ रहने के हवाले से ख़बरदार न किया हो, लेकिन मैं तुम्हें ऐसी बात बताता हूं जो इससे पहले किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई। वह बात यह है कि दज्जाल की एक आंखी होगी और अल्लाह की एक आंख नहीं।"

(सही बुख़ारी, किताबुल अंबियाः 1/47)

एक आंख वाला होना सख़्त ऐब है, लेकिन दज्जाल इस क़बीह ऐब के बावजूद ख़ुदाई का दावा करने से नहीं शर्माएगा। चूंकि झूट और फ़रेब उसकी सरश्त में शामिल है, इसलिये वह अपने ख़ुरूज से पहले अपने चेलों के ज़रीए इक्लौती कानी आंख को दो आंखों के नशीले हुस्न से ज़्यादा हसीन, दो आंखों की ताक़त से ज़्यादा ताक़तवर और जुड़वां आंखों की बनिस्बत इक्लौती आंख को ज़्यादा आबदार व ताबेदार बावर करवाने की कोशिश कर रहा है। इस ग़र्ज़ के लिये इक्लौती आंख को दुनिया भर में मुतआरिफ़ करवाया जा रहा है। कहीं उसे तीसरी आंख (Third Eye) का नाम दिया जाता है, कहीं सब कुछ देखने वाली आंख (All Seeing Eye) का और कहीं प्रस पर्दा रह कर घूरते रहने वाली "मैसोनिक लार्ड की आंख" का लक़ब दिया जाता है, जो कमांडर और कंट्रोल की अलामत है। ताक़त और बसीरत का मर्कज़ है। रफ़ता रफ़ता यह बदनुमा चीज़

ताक़त, ज़िहानत और नाक़ाबिले शिकस्त कुव्वत की अलामत बना दी जाएगी। बच्चों के कार्टून हों या अख़्बार के इश्तिहारात, कम्पयूटर के ग्राफ़िक डीज़ाइन हों या फ़िल्मों, गानों की सी डीज़, रिसालों के सर वर्क़, वीडियो गेम्ज़ हों या टीवी प्रोग्राम, आपको यह आंख मुतअ़ल्लिक़ा या ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ा जगहों पर बल्कि बग़ैर किसी तअ़ल्लुक़ और मुनासिबत के दिखाई देगी। मल्टी नेशनल कम्पनियों के मोनोग्राम में तो डीज़ाइनर्ज़ को गोया इसके अलावा कोई डीज़ाईन सूझता ही नहीं, उनकी मरग़ूब तरीन आराइशी अलामत यही इक्लौती आंख है, और क्यों न हो कि यह कम्पनियां जिस सरमायादार और सरमाया परस्त क़ौम के हाथ में हैं, उसके नज़दीक आंख का यह निशान "इक्लौते उलूही मर्कज़" की अलामत है, जो एक नए और आलमी सैकूलर निज़ाम (Novus ordo Seclorum) की चोटी की ताक़त है, जो गुमनाम और वहशतनाक दूर इफ़तादा और वीरान समुंद्री जज़ीरे में मुक़ीद है, लेकिन इसके मुतअ़ल्लिक़ हमें बावर करवाया जा रहा है कि वह बुलंदी पर रह कर चौकसी से सबकी निगरानी कर रही है। इसकी कराहियत और नफ़रत को ख़त्म करने के लिये मुख़्तलिफ़ भौंडी हरकतें की जाती हैं। मसलनः मुख़्तलिफ़ मक़्बूल शख़्सियात, अदाकार और कई माडल्ज़ की ऐसी तसवीरें ली जाती है, जिसमें उनके बाल उनकी एक आंख को छिपाए हुए हों और ज़ुल्फ़ों के घने साए से बच कर उभरने वाली एक आंख हुस्न का इस्तिआ़र बनी हुई हो। हेयर स्टाइल के ग़ैर शरई फ़ैशनों में तो गोया महबूब की ज़ुल्फ़ें दराज़ होते ही उसकी एक आंख ग़ायब हो जाती है। कुछ मक़्बूल अवाम शख़्सियात की तसावीर एक तरफ़ से (वन साइडिड) लेकर उन्हें रिसालों के सरवर्क़ पर छिपाया जाता है। परिंदों और हैवानात, मसलनः अमन की आशा "फ़ाख़्ता" या

जारिहाना ताक़त की अलामत "उक़ाब" की ऐसी तसवीर या आर्ट वर्क बनाया जाता है, जिसमें वह एक तरफ़ देख रहे हों और एक जानिब से उनकी सिर्फ़ एक आंख नज़र आ रही हो। अमरीका के बेशतर सरकारी इदारों के मोनोग्राम में उक़ाब मौजूद होता है और चूंकि यह उक़ाब एक तरफ़ देख रहा होता है, लिहाज़ा खुद बखुद यक चश्म होता है। कबूतर और फ़ाख़्ता की ऐसी शबीहें तो शुमार नहीं की जा सकतीं जो "तजरीदी आर्ट" के नाम पर बनाई जाती हैं और उनमें सिर्फ़ एक आंख दिखाई जाती है। यह सिर्फ़ आर्ट्स कौंसिलों में नहीं होतीं, बसों, कोचों और ट्रकों के "ट्रांसपोर्ट आर्ट" पर भी बकसरत होती हैं। टी शर्ट, पी कैप और ग्लासों प्यालों में भी एक आंख वाला उक़ाब आपको जा ब जा मिलेगा, जो दाएं बाएं तरफ़ देखने के बाइस ग़ैर महसूस तौर पर यकचश्म जारिहाना और क़हर अंगेज़ हैवानी ताक़त का निशान है। ब्लैक वाटर के मोनोग्राम को देखिये। इसमें आंकदे के अंदर चीते का पंजा है। यह उस शक्ल में बनाया गया है कि वह शैतानी ताज मालूम होता है। गोया कि ख़बासत दर ख़बासत है। "वीज़न" का लफ़्ज़ तो इतनी बुरी तरह इस्तेमाल हुआ है कि अक्सर व बेशतर उसके "O" में आंख ज़रूरी बनी हुई होती है। इस मज़मून के शुरू में सोनी ऐरिक्सन के मोनोग्राम का ज़िक्र हुआ। इसमें मौजूदा आंख ग्लोब की शक्ल की है। इस पर पर्दा रखने के लिये इसके बीच में से एक लहर गुज़ारी गई है, लेकिन पाकिस्तान में पेट्रोल और गैस की एक नई कम्पनी लांच हुई है जिसका मोनोग्राम ही गोल सब्ज़ा दायरा है। शीशे पर उभरा हुआ गोल सब्ज़ा दायरा। मुस्तनद रिवायात के मुताबिक़ दज्जाल की एक आंख सब्ज़ शीशे जैसी होगी। (मुस्नद अहमद हंबल: 183, 21 व मज्मउज़्ज़वाइद:1/337, अत्तारीखुल कबीर अलइमाम

अलबुख़ारीः हदीसः1615) इस शीशे में रौशनी जैसी चमक भी होगी। क्योंकि दूसरी हदीस में इसे चमकते सितारे के साथ तश्बीह दी गई है। इन सारी कार्रवाइयों की बदौलत इंसान एक आंख से हर तरह मानूस होता जा रहा है। आपको अगर इस अम्र में मुबालिग़ा महसूस हो तो आप नेट पर चले जाएं और "शैतानी आंख" या "इक्लौती आंख वाले लोगो" जैसा कोई लफ़्ज़ लिख दीजिये। आप को इतनी बेशुमार शबीहें और ऐसे एसे इदारों के लोगो देखने को मिलेंगे कि आपको इस तहरीर में बयान किये गये इक्तिशाफ़ी निकात मुबालग़े के बजाए हक़ाइक़ से कम मअ़लूम होंगे। कुछ मिसालें हम चौथी अलामत "तिकोनी आंख" में भी देंगे।

यह तो एक पहलू हुआ। यअ़नी "हक़ीक़ी आंख" की मुख़्तलिफ़ शक्लों का। अब दूसरे पहलू की तरफ़ आते हैं। तशहीरी इदारे मुख़्तलिफ़ इदारों और उनकी मस्नूआत की तशहीर के लिये गोल या बेज़वी दाइरे को तज़ईन के लिये इस्तेमाल करते हैं। आर्टिस्ट और आर्ट मास्टर दाइरा या नीम दाइरा को तज़ईन का बेहतरीन ज़रीआ समझते हैं। ज्योमेटरीकल इशकाल की इस जमालियाती ख़ुसूसियत को काम में लाते हुए दज्जाली कुव्वतें उसे गुमनाम मक़ाम में पोशीदा मावराई ताक़त और "तबाही के देवता" की नुमायां तरीन अलामत की शबीह के लिये इस्तेमाल कर रही हैं। आप अपने गर्द व पेश पर नज़र रखें तो आप नोट करेंगे कि यह अलामत अख़्बार, चैनल्ज़, इश्तिहारात, साइन बोर्ड, लोगो, मोनोग्राम वग़ैरा में इस कसरत से है गोया दुनिया को "एक आंख वाले देवता" की निगरानी का भरपूर तअस्सुर दिया जा रहा है। कोई शक नहीं कि यह तअस्सुर बातिल है। अल्लाह रब्बुल आलमीन के सिवा कोई नहीं जो हर जगह मौजूद हो। हर जानदार और बेजान का निगरान हो। हर अदना या आला

मख़्लूक़ का राज़िक़ व मेहरबान हो। इक्लौती आंख वाले झूटे दावेदार की यह औक़ात नहीं कि वह सारी दुनिया को अपनी निगरानी में ले सके। उसके सेटेलाइट, उसके खुफ़िया कैमरे, उसके लिये जासूसी करने वाले "जस्सास" या "हस्सास इदारे", मअ़लूमात फ़राहम करने का ज़रीआ बनने वाले "नादिर" और "ग़ैर नादिर" इदारे सब धरे रह जाएंगे और हाकिमियते आला एक वहदहु लाशरीक की होगी जिसकी नाक़ाबिले शिकस्त खुदाई अज़ल है और अबद तक रहेगी।

तीसरी अलामत - तिकोनः

रियाज़ी और ज्योमेटरी में मुसल्लस की बहस में "मालूम ज़ावियों और ज़िलों" से "नामालूम ज़ावियों और ज़िलों" तक रसाई बड़ी दिलचस्प मश्क़ समझी जाती है। इंजीनियर्ज़ और कारीगरों के ज़ेरे इस्तेमाल "प्रकार और गुनिया" दो ऐसे औज़ार हैं जो पैमाइश नापने, दुरुस्त ज़ाविये क़ाइम करने और खुतूत व दाइरों को मुस्तक़ीम हालत में रखने के लिये सिक्का बंद आलात हैं। मिस्त्री लोग कहते हैं "जो चीज़ गुनिया में है वह दुरुस्त है, बदगुनिया चीज़ दुरुस्त नहीं हो सकती।" हैकल सुलैमानी के मेअ़मार तअ़मीर के वक़्त इन्ही औज़ारों को सुतून खड़ा करने और इन सुतूनों पर मेहराबों और छतों का वज़्न तक़सीम करने के लिये मुसल्लस के क़वानीन से काम लेते थे। हैकल की तअ़मीर में इंसानों के साथ जिन्नात ने भी हिस्सा लिया था। इस तअ़मीर की निगरानी अल्लाह के सच्चे नबी सय्यदना हज़रत सुलैमान अलै0 करते थे। अल्लाह तआला ने इंसान व जिन्नात को उनके ताबेअ़ कर दिया था। एक क़ौल के मुताबिक़ दज्जाल इस दौर की पैदावार है। उसकी मां "जन्निया" थी। यअ़नी जिन्नात की नस्ल से एक मोनिस फ़र्द। आप आं मुहतरमा को भूतनी या चुड़ैल भी कह सकते हैं जो उसके बाप पे आशिक़ हो गई। (मुलाहज़ा होः बरज़ंजी,

अल्लामा मुहम्मद रसूल, अलइशाअतुल अशरात अस्साअ, स0:217: "كَانَتْ أُمُّهُ جِنِّيَّةً، فَعَشِقَتْ أَبَاهُ، فَأَوْلَدَتْ لَهُ شِقًا۔" अह्ले इल्म तवज्जोह फ़रमाएं कि इश्क़ नामुराद के बाद निकाह बामुराद का तज़किरा नहीं है। فَعَشِقَتْ और فَوَلَدَتْ में बीच की कड़ी ग़ाइब है।) इश्क़ मिजाज़ी अपनी जिंस से हो तो भी तबाही का पेश ख़ेमा होता है। ख़िलाफ़ जिंस से हो तो क्या कुछ न करेगा? ख़ाक का आतिश से जोड़ ही क्या है? एक बछी जाती है, दूसरी बढ़को पर बढ़कीं मारे तो भी चैन न आए। फ़ुक़हाए किराम ने लिखा है कि निकाह के जवाज़ के लिये फ़रीक़ैन का एक ही नोअ़ से होना शर्त है। ख़िलाफ़ जिंस व नोअ़ से निकाह नहीं होता। मसलनः इंसान और जिन्नात दो अलग अलग मख़्लूक़ात हैं और ख़ुश्की में बसने वाला इंसान और पानी में रहने वाला इंसान या जलपरी दो अलग अलग नोअ़ हैं। इनका बाहमी निकाह जाइज़ नहीं। (देखिये: शामियल मअ़रूफ़ रुदाल मुहतारः जि03, स03) जब जिन्नाती आशिक़ा ने अपने ख़ुफ़िया ताक़त के बलबूते पर इंसानी मअ़शूक़ को राम कर लिया तो ख़ाक व आग के इस नाजाइज़ इम्तिज़ाज से "अहरमुल हराम", "शर्रुश्शुरूर" और "अफ़तन अलफ़ितन" यअ़नी जनाब दज्जाले अक्बर नमूदार हुए। दूसरे क़ौल के मुताबिक़ यह हज़रत आदम व हज़रत नूह अलै0 के दर्मियानी अर्से की पैदावार है। इसलिये बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है "أنذره نوح والنبيون من بعده" (बाब हज्जतुल विदाअ़, रक़मुल हदीसः 4402) जिस चीज़ से नूह अलै0 और बाद के अंबिया अलै0 डराते रहे, इस चीज़ को उनके दौर में मौजूद होना चाहिये। एक दूसरी हदीस में इर्शाद हैः "مابين خلق آدم الى قيام الساعة خلق أكبر من الدجال۔" (सही मुस्लिम, बाब क़स्सतुल जस्सासा, रक़मुल हदीसः 2940) "हज़रत आदम की पैदाइश से लेकर

क़्यामत तक के दर्मियान दज्जाल से बड़ी मख़्लूक़ नहीं।" तवज्जोह रहे कि इस रिवायात में दज्जाल से बड़ा फ़ित्ना कोई नहीं, के बजाए दज्जाल से बड़ी यअ़नी लम्बी उम्र की कोई और मख़्लूक़ नहीं, का ज़िक्र है। واللہ اعلم بالصواب۔

जादू पर तहक़ीक़ करने वालों का कहना है कि अगर जाइज़ रूहानी अमलियात में नाजाइज़ सिफ़ली अमलियात को ख़लत कर दिया जाए तो "तिलस्म" वजूद में आ जाता है। यअ़नी ख़ैर व शर का ऐसा घुमाव झर लो जिसकी कोई तौजीह न की जा सके। जैसा कि सामरी जादूगर ने हज़रत जिब्रील अलै0 के घोड़े के क़दमों तले से मिट्टी लेकर बछड़े के बुत में फूंक दी तो तिलस्मी ढांचा वजूद में आ गया था। सोने का बेजान बछड़ा लेकिन आवाज़ देता था जानदार से ज़्यादा ज़ोरदार। आम लोग जब इस राज़ को नहीं समझते तो ज़ईफ़ुल एतिक़ादी इनको शिर्क और तवहहुम परस्ती तक ले जाती है। दज्जाल जब इंसान व जिन्न, ख़ाक व आतिश के मिलाप से पैदा हुआ तो उसमें नीम इंसानी और नीम जिन्नाती सलाहियतें वजूद में आ गईं। ऊपर से ग़ज़ब यह कि ख़बीस शयातीन की मदद करते और तरह तरह के मुहय्यरुल उक़ूल काम उससे करवाते थे। उस पर ख़ल्के ख़ुदा फ़ित्ने में पड़ने लगी तो हज़रत सुलैमान अलै0 ने उसे क़ैद में डाल दिया। (हवाले के लिये दर्जे बाला माख़ज़ मुलाहज़ा हो: "وَكَانَتِ الشَّيَاطِيْنُ تَعْمَلُ لَهُ الْعَجَائِبَ، فَحَبَسَهُ سُلَيْمَانُ النَّبِيُّ عَلَيْهِ السَّلَامُ، وَلَقَّبَهُ الْمَسِيْحَ۔") अब जब अल्लाह तआला की मर्ज़ी होगी तो फ़ित्नों के ज़ोर के दौर में यह फ़ित्नों का फ़ित्ना नमूदार होगा। इसके मुक़य्यद होने के बाद शयातीन ने लोगों को यह बावर कराया कि उसकी सारी ताक़त जादू में मुज़मर थी, बल्कि वह यहां तक चले गए कि मआज़ल्लाह हज़रत सुलैमान अलै0 को इंसानों और जिन्नात से

काम लेने की जो कुदरत अल्लाह तआला की तरफ़ से अता की गई थी, वह भी खुदा नख़्वास्ता जादूई अमलियात के बलबूते पर थी। उनके प्रोपेगंडे के मुताबिक़ हैकल के मेअ़मार इसी जादू के बलबूते पर ऊंचे ऊंचे सुतूनों पर बड़ी बड़ी मेहराबें बनाते थें। बड़े बड़े चट्टान नुमा पत्थरों को रूई के गालों या परों से भरे हुए तिकोन की तरह उठा कर बुलंदी तक ले जाते और एक दूसरे के ऊपर जमा देते थे। झूट के इस पुलिंदे के मुताबिक़ मिस्र के अहराम में बड़े बड़े जिन्नाती साइज़ के पत्थर इसी जादूई तसख़ीर के ज़रीए एक दूसरे पर रखकर तिकोन की शक्ल में मस्नूई पहाड़ खड़े करने के लिये इस्तेमाल किये गए। यह सब शयातीन का कुफ़्र है। इस कुफ़्र के मुताबिक़ तिकोन, प्रकार और गुनिया "आज़ाद जादूई मेअ़मारों" की ज़ाहिरी अलामतें हैं और उनकी बातिनी कुव्वतें जादू के वह जंतर मंतर, टोने टोटके, नक़्श व ज़ाइचे हैं जो किसी क़दीम नुस्ख़े में दर्ज हैं। यह क़दीम नुस्ख़े कहां हैं? किसी ख़ज़ाने भरे संदूक़ में दफ़न हैं या मुतबर्रक इस्राईली आसारे क़दीमा के साथ गुम हो चुके हैं या "इल्मे क़बाला" (इसका तलफ़्फ़ुज़ "कबाला" भी किया जाता है) माहिर यहूदी सिफ़ली आमिलों के पास मुहर्रिफ़ हालत में सीना ब सीना चले आ रहे हैं। जितने मुंह उतनी बातें। जितने काले झूट उतनी लम्बी ज़बानें। बीसवीं तावीलात और फ़रसूदा जवाबात हैं जो इस मौक़ा पर यहूद के झूट के आदी उलमाए सू करते हैं। झूट को सच बनाने के लिये जितनी भौंडी तावीलें ढूंढी जा सकती हैं, तक़रीबन सब ही घड़ी गई हैं और चूंकि जादूई अमलियात का क़दीम मजमूआ किसी के पास नहीं, न होगा, क्योंकि वह सय्यदना सुलैमान अलै० के पास कभी था ही नहीं, इसलिये कुछ ज़ाहिरी अलामात पर गुज़ारा करने के लिये उन्हें जादूई असरात का हामिल क़रार देकर

दुनिया में जाबजा फैलाया जा रहा है। इन अलामात में "मुसल्लस" यअनी तिकोन फेहरिस्त के ऊपर वाले सिरे पर आती है। इसके पीछे छिपी "दज्जाली सर्री" रिवायात को लोग नहीं जानते, इसलिये बैज़वी आंख या मुस्तत़ीलई तिकोन डीज़ाइनों और आर्टिस्टों का पसंदीदा इंतिख़ाब है। आजकल आप तिकोन की एक ख़ास शक्ल को जाबजा देखेंगे। यह तीन तीर हैं जो तिकोन के तीन ज़िला के तौर पर एक दूसरे की दुम के पीछे मुसल्लस की शक्ल में घूम रहे हैं। कोई ज़रूरी नहीं कि यह डीज़ाइन बनाने और छापने वाले हज़रात इस अलामत की मक़सदियत से आगाह हों। हमारा गुमान यही है कि उनकी अक्सरियत तिकोनी डीज़ाईन को सोचे समझे बग़ैर बहुत सी ऐसी कम्पनियों या इदारों के मोनोग्राम में भी डाल देते हैं जिनका इस शैतानी सिलसिले से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होता। न वह इस दज्जाली अलामत की तरवीज से कोई दिलचस्पी रखते हैं।

आपको इस बयान में मुबालिग़ा या शिद्दते एहसास नज़र आए तो जल्दी में कोई फ़ैसला न कीजिये। अपने गिर्दा गिर्द ग़ौर कीजिये। मोटरवे पर तिकोन के बीच में कैमरा नस्ब होता है और नीचे लिखा होता है: "कैमरे की आंख आप को देख रही है।" मुझे ख़दशा है कि मुस्तक़बिल में "कैमरे की आंख" की जगह "इक्लौती आंख" ले लेगी। आप कह सकते हैं कैमरे की एक ही आंख होती है, लेकिन अर्ज़ है कि वह तो गोल होती है, तिकोन नहीं होती। तिकोन में मुक़य्यद इक्लौती आंख जो रौशनियां बिखेरती है, यह मुख़्तलिफ़ अमरीकी इदारों के मोनोग्राम में बिला वजह नस्ब नहीं होती। अमरीका जैसे तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्क के सरकारी इदारों के मोनोग्राम में कोई चीज़ इतने तकरार और तसलसुल से बिला सबब तो नहीं हो सकती। यह बरमूदा तिकोन में मुक़य्यद आंख वाले देवता का

अलामती इस्तिआरा भी तो हो सकती है। आप को इस बात पर यक़ीन न आएगा, लेकिन हम आपको यह नहीं कहेंगे कि यहूदी फ़िल्म साज़ कम्पनियों ने इसे गानों और फ़िल्मों के टाइटल पर नस्ब करने से लेकर एहराम की शक्ल में तअ़मीर कर्दा इमारात की शक्ल में एक मुहिम की तरह फैलाया है। यह इमारात अमरीका व यूरप में भी हैं, दुबई में "वाफ़ी शापिंग माल" की शक्ल में भी, और अर्ज़ करने की इजाज़त हो तो बताए देते हैं कि पाकिस्तान में भी बननी शुरू हो गई है। आप हम से इसका सुबूत तलब करेंगे। आपको हक़ है कि ज़रूर तलब करें, लेकिन आप ऐसी चीज़ का सुबूत इस आजिज़ से तलब करके क्या लुत्फ़ उठा सकते हैं जो जाबजा अपना सुबूत आप को खुद देती और अपना आप मनवाती है। यह तहरीर जिस दिन लिखी, शाम को अहसन आबाद के साइट एरिया की तरफ़ चहल क़दमी के लिये निकले तो "बैंक अलहबीब" के साथ ही तिकोनी इमारत का जदीद तरीन डीज़ाइन हमारी तवज्जोह अपनी तरफ़ खींच रहा था। अगले दिन पी आई डी सी के पास सुल्तानाबाद के पुल की कमर पर पहुंचे तो सामने एक इमारत की चोटी पर तिकोनी एहराम सबसे ऊपर तअ़मीर किया गया नज़र आ रहा था। ख़ैर! आप इन सब चीज़ों को तसलीम न करने का हक़ रखते हैं, लेकिन हम आप से ज़बरदस्ती अपनी बात मनवाना नहीं चाहते। हम इसके सुबूत में कई दर्जन से ज़्यादा तिकोनी आंख वाली इन तसावीर का हवाला भी नहीं देंगे जो अमरीका व यूरप में मुक़ीम मुसलमानों ने जमा की हैं और मेरे लेपटाप में इस वक़्त मौजूद हैं। हम शैतान के पूजाघरों से लेकर वीटीकन सिटी में बैठे सलीब के मुहाफ़िज़ पोप साहब की नशिस्तगाह की पुश्ती दीवार पर नस्ब इसी अलामत के पीछे छिपे राज़ पर भी इस्रार नहीं करेंगे। हम आपसे यह भी नहीं

कहेंगे कि आप नेट पर जाए और फिर "शैतानी मुसल्लस" (Satanic Triangle) का लफ़्ज़ लिख दें, आप को जवाब में खुद मग़रिब के ग़ैर मुस्लिम अफ़राद की जमा कर्दा जो मालूमात मिलेंगी उसमें यह शैतानी मुसल्लस सैंकड़ों मुख़्तलिफ़ शक्लों में दिखाई देगी। हम आप से यह भी नहीं कहते कि ड्राइंग रूमों के फ़र्श पर बिछे क़ालीन से लेकर बेडरूमों में बिछी चादरों और तिकोन तक, आराइशी अशया में यह मुसल्लस क्यों पाई जाती है? मैं आप से यह सब शंवाहिद व क़राइन मानने को नहीं कहता, मेरी आप से फ़क़त इतनी दरख़्वास्त होगी यह मज़मून मुकम्मल होने तक हमारे साथ चलते रहिये। हम कज बहसी से बचते हुए तहक़ीक़ व मुशाहिदे क़े ज़रीए हक़ीक़त तक रसाई की कोशिश मिल जुल कर करते हैं। और इस ग़र्ज के लिये दज्जाल की नुमाइंदा क़ौमे यहूद के नज़दीक "मुसल्लस" की हैसियत पहचानने से अच्छा नुक्तए आग़ाज़ और क्या होगा? तो आइये! इसी से बिस्मिल्लाह करते हैं।

मुसल्लस का राज़

यहूदी रिवायात और रुसूम व रिवाज को देखा जाए तो "मुसल्लस" का एक ख़ास मफ़हूम व मतलब है। इसके तीन कोने तीन ज़बरदस्त सिफ़ात की तर्जुमानी करते हैं जो ज़ाहिर है कि झूटी हैं, लेकिन झूट को सच करना ही तो फ़ित्नए दज्जालियत की अस्ल बुन्याद और खुसूसियत है। वह तीन चीज़ें यह हैं: (1) खुद मुख़्तारी। (2) ताक़त। (3) ज़िहानत। यहूदी शारिहीन इसकी तशरीह अपने मख़्सूस अंदाज़ में कुछ इस तरह करते हैं:

"फ़ित्रत में मौजूद तमाम अशया "खुदाई सिफ़त खुद मुख़्तारी" का नतीजा हैं और यही वह क़ानूने कुदरत है जो तमाम चीज़ों को "वजूद का जवाज़" फ़राहम करता है। फिर हर चीज़ के पास "ताक़त और दानिश" का एक दर्जा आ जाता है जो इर्तिक़ाए तरक़्क़ी को मुम्किन बनाता है। बिलआख़िर सिफ़त ज़िहानत के तहत इसको हत्मी शक्ल मिल जाती है। जिस तरह जिस्मानी दुनिया में ऐसा होता है, बिल्कुल वैसे ही काइनात में भी हर मख़्लूक़ चीज़ के यही तीन इंतिसाबात होते हैं। तमाम मज़ाहिब में मुख़्तलिफ़ नामों से इन तीन इंतिसाबात का हवाला मिलता है: (1) ईसाइयत में बाप बेटा और रूहुल कुद्स। (2) मिस्री रिवायात में ओसाइरस, आइसीस और होर्स। (3) हिंदू मत में बरहमा, विशनू और शिवाजी। (4) हुर्मुज़ और अहरमन फ़ारसी रिवायात में। (5) बुधा, सिंगाह और धर्मा बुध मत में। (6) ज़ीवस, ईथन्ज़ और अपोलो यूनानी मज़हबियात में।

"अहराम सिर्फ़ एक मुसल्लस नहीं है, बल्कि यह मुरब्बा भी है क्योंकि इसकी चार अतराफ़ हैं। 7=4+1। सात के अदद को ईसो

टेरीज़म (वह निज़ाम जिसमें एक "मख़्सूस गिरोह" को "मख़्सूस इल्म" के काबिल समझा गया हो) में एक ख़ास अहमियत हासिल है, क्योंकि वह "शुऊर व मअ़रिफ़त के सात मराहिल" की तरफ़ इशारा करता है। जो पहले खुदाई शुऊरे आज़ादी व खुद मुख़्तारी के साथ मिल कर एक ख़ास तरतीब से दोबारा एक साथ आते हैं। इस खुदाई शुऊरे आज़ादी व खुद मुख़्तारी को हिंदू मत में आतमान का नाम दिया गया है।"

आपने इक़्तिबास मुलाहज़ा किया। इसमें जाबजा इबहाम और अजनबियत व ना मानूसियत है। इसमें इस्तेमाल शुदा गाढ़ी इस्तिलाहात ज़ू मअ़नी हैं। इस पर मुस्तज़ाद वह अलफ़ाज़ हैं जो इंतिहाई मअ़नी खेज़ हैं। मसलनः "खुदाई सिफ़त खुद मुख़्तारी का नतीजा", "ताक़त व दानिश का एक दर्जा", "शुऊर व मअ़रिफ़त के सात मराहिल", "मख़्सूस गिरोह का मख़्सूस इल्म"......यह सब कुछ दरअसल गोरख धंदा है। दज्जाल के पैरूकार सहीवनी दिमाग़ों और रूहानी यहूदियों का डाला हुआ बखेड़ा है। सीधी सी बात है कि तिकोन तीन दज्जाली सिफ़ात की नुमाइंदा अलामत है, (1) अल्लाह रब्बुल आलमीन की हाकिमियत से आज़ादी व खुद मुख़्तारी। (2) शैतानी और जादूई ताक़त। (3) अय्याराना व मक्काराना ख़सलत। इन तीनों की मदद से झूटे खुदा की झूटी खुदाई का नक़्क़ारा बजाया जा रहा है और इस पर वह रखने के लिये इसे कभी "मख़्सूस गिरोह को हासिल मख़्सूस इल्म" कहा जाता है और कभी दूसरे शिर्किया मज़ाहिब से इश्तिराक का सहारा लेकर धोका दिया जाता है।

यहूदियत और यहूदी रिवायात क बग़ौर मुतालआ किया जाए तो "मुसल्लस के भेद" से एक और तरह से भी पर्दा उठता है। अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार और दज्जाल से मदद की उम्मीदवार इस क़ौम

की जाहिलाना फ़लसफ़े के मुताबिक़ काइनात की हक़ीक़त एक मुसल्लस है। इसमें ख़ुदा की ज़ात सबसे ऊपर है, जबकि नीचे एक जानिब "तसव्वुरात" की और दूसरी तरफ़ "मौजूदात" की दुनिया है। यह मुसल्लस की एक सादा सी तशरीह जो वाज़ेह है और समझ में आती है। इसमें उलझन या पेचीदगी उस वक़्त पैदा होती है जब इस सीधी मुसल्लस के ऊपर उल्टी मुसल्लस रख दी जाए जैसा कि इस्राईल के झंडे में है, इससे छः कोनों वाला सितारा बन जाएगा जिसके मुतअ़ल्लिक़ सब जानते हैं कि यहूदियों का ख़ास निशान है, लेकिन यह जानने वाले बहुत कम हैं कि यह निशान जिन दो अज्ज़ा से मिल कर बने हैं, इनमें दूसरे मुसल्लस से क्या मुराद है? दूसरी मुसल्लस जो पहले "मुस्तक़ीम मुसल्लस" के ऊपर "मअ़कूस मुसल्लस" की शक्ल में सब्त है। इसका सबसे निचला किनारा दज्जाल को, दाएं तरफ़ का ज़िहानत और बाईं तरफ़ का ताक़त को ज़ाहिर करता है। गोया कि अल्लाह की हाकिमियत के मुक़ाबले में दज्जाल की हाकिमियत को ज़ाहिर किया गया है। इन मुसल्लसों के ऊपर नीचे दो नीली पट्टियां हैं।

दर्ज बाला तश्रीह के तनाज़ुर में ऊपर की नीली पट्टी आसमान को ज़ाहिर करती है जहां अल्लाह रब्बुल आलमीन मौजूद है और नीचे की पट्टी समंदर को जहां किसी जगह दज्जाल मलऊन पोशीदा है। सच्चा ख़ुदा आसमान की बुलंदियों में अर्शे अज़ीम पर अपने जलाल व जमाल और इज़्ज़त व किब्रियाई के साथ मौजूद है और ख़ुदाई का झूटा दावेदार समंदर की पनाहों में किसी नामालूम जज़ीरे की अंधेरियों में मुक़य्यद है। अल्लाह पाक वह्दहू ला शरीक है, बेऐब और बेनियाज़ ज़ात है, आसमानों व ज़मीनों का नूर है, मुहब्बत व

शफ़क़त का सर चश्मा है। इंसानियत को गुमराही के अंधेरों से हिदायत की नूरानी रौशनियों की तरफ़ ले जाता है। मुआफ़ करता है और मुआफ़ करने को पसंद करता है। जबकि ख़ुद को अल्लाह तआला की महबूब क़ौम कहने वाले बनी इस्राईल ने अपने गुनाहों के सबब अल्लाह की रहमत से मायूस होकर जिसे "मसीहाए आज़म" और "नजात दहिंदा" माना है, वह ख़ब्बीस और रज़ील क़िस्म की एक नीम वह्शी मख़्लूक़ है, तमाम ऐबों का ऐब बल्कि उयूब की खुड है, उसकी ज़ात नफ़रत व ज़लालत का मंबअ़ है, वह इंसानियत को दिज्ल व फ़रेब और धोका व फ़्राड से रहमत व मग़फ़िरत की छतरी तले से निकाल कर अंधेरी तारीकियों की तरफ़, ख़ुशहाली और कामियाबी से महरूम करके बर्बादी और रुसवाई की तरफ़ ले जाने को अपना मिशन बनाए हुए है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त, ज़ुल जलाल वलइक्राम है। ख़ालिक़ुस्समावात वलअर्ज़ है। हयी व क़य्यूम है। लायज़ाल वला यमूत है। उसकी सच्ची ख़ुदाई के मुक़ाबले में सिफ़ली ज़मीनी मख़्लूक़ की झूटी ख़ुदाई के ज़रीए अल्लाह की काइनात और उसकी मख़्लूक़ पर अपना जाबिराना तसल्लुत क़ाइम करना सीधी मुसल्लस पर उल्टी मुसल्लस का "भेद" है। कभी यह मुसल्लस अकेली होती है और कभी दूसरी मुसल्लस के साथ। कभी यह सीधी होगी और कभी उल्टी। हर सूरत में यह शर का राज़ और बदी का पैग़ाम अपने अंदर छिपाए हुए होती है।

यहां वाज़ेह रहे कि यहूदी शारिहीन धोका देने के लिये कहते हैं: "तीन का अदद ख़ुदा की तरफ़ मंसूब तीन चीज़ों की तर्जुमानी करता है"......लेकिन उनकी तहरीरात में ख़ुदा से मुराद अल्लाह रब्बुल आलमीन नहीं, उनका झूटा मसीहा यअ़नी दज्जाले आज़म है जिसे

वह "काइनात का अज़ीम तरीन मेअ्मार" "ऌतमंज तबीपजमबज व न्दपअमतेम" कहते हैं। वह मेअ्मार जो हैकल सुलैमानी की तअ्मीर में शरीक था और फिर उसे सुलैमान बादशाह (अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) ने शैतानी करतूतों की बिना पर जज़ीरे में कैद कर दिया था। वह अपने इस झूटे मसीहा को मुख़्तसरन "G" के हुरुफ से तअ्बीर करते हैं। आप अगर न्यूयार्क गए हों (जिसे ज्यो यर्क कहना चाहिये) तो वहां मुजस्समा आज़ादी के नीचे बनाई गई प्रकार, गुनिया और तिकोन मुलाहज़ा कीजिये और फिर किसी तअ्लीम याफ्ता अमरीकी से पूछ लीजियेगा कि G का हुरुफ किसकी तरफ इशारा है। इससे अगर God मुराद है तो इसे इन दो औज़ारों से बनने वाली तिकोन के बीच में क्यों लिखा गया है? अल्लाह अहकमुल हाकिमीन का पाक नाम तो मुजस्समे की चोटी पर होना चाहिये जैसा कि मुसलमान उसे मीनारों की आखिरी बुलंदी पर इज़्ज़त व एहतिराम से नस्ब करते हैं। आप लोगों ने जो कि "In God we Trust" के दावेदार हों, और कोई मुअ़ज़्ज़ज़ जगह नहीं मिली तो उसे अपने नोट पर लिख दिया जो दिन में हज़ारों हाथों में मस्ला जाता है। आप लोगों ने यहां भी "G" की अलामत को मुजस्समा की जड़ में मिस्त्रियों के नाम के साथ लिखा है। आख़िर क्यों? इस क्यों का जवाब अमरीकन ग्रेजूएटों के पास नहीं, क्योंकि अमरीकन क़ौम ने अपनी सोच व फ़िक्र उनके पास गिरवी रखवा दी है जो उसके और पूरी इंसानियत के दुशमन हैं। इसी आंख के पुजारियों के पास जो उन्हें इक़्तिदार की चोटी से घूर रही है और जिससे गंदी और हराम ताक़त की किर्नें फूट रही हैं। यही वह जगह है जहां से हम एक और मशहूर दज्जाली अलामत की तरफ

मुंतक़िल हो सकते हैं जो कि ऊपर बयान की गई दूसरी और तीसरी दो मशहूर अलामतों (आंख और तिकोन) के मिलाप से वजूद में आती है।

☆☆☆

तिकोनी आंख

चौथी अलामत - तिकोन में मुक़ीद आंख:

आपने कभी एक डालर के नोट की पुश्त पर नज़र डाली है? नहीं डाली तो यक़ीन मानिये कि वहां ऐसी शैतानी और जादूई अलामत है जो अपने तईं आप पर नज़र डाल रही है। नबी करीम सल्ल0 ने अलमसीहुद्दज्जाल (मसीह काज़िब) की निशानी बताई है कि वह "यक चश्म" यअ़नी एक आंख रखने वाला होगा। डालर की पुश्त पर एहरामी तिकोन की बुलंदी पर मस्नूई रौशनियों की फ़र्ज़ी किर्नें बिखेरती आंख वही इक्लौती आंख है जिसे "यहूदी दज्जाली इस्तिलाहात" और "मैसोनिक डिक्शनरी" में "सब कुछ देखने वाली आंख" (All Seeing Eye) कहा जाता है। इसको एहराम की चोटी पर नस्ब करने का मतलब यह है कि यह ताक़त व इक़्तिदार की बुलंदी पर फ़ाइज़ होकर चौकसी से सबकी निगरानी कर रही है। तिकोनी एहराम की चोटी पर नस्ब तेज़ शुआएं ख़ारिज करती यह पुरअस्रार आंख सिर्फ़ अमरीकी करंसी पर ही नहीं, कुछ दीगर अमरीकी सरकारी इदारों के मोनोग्राम में भी पाई जाती है और ख़ूब वज़ाहत के साथ पाई जाती है। मसलनः अमरीका का एक सरकारी इदारा है "इंफ़ारमेशन अवेयरनेस डिपार्टमेंट" (Information Awareness Department) उसके मोनोग्राम में ग्लोब दिखाया गया है। ग्लोब के साथ एहराम है और एहराम की चोटी पर नस्ब एक आंख है......इक्लौती आंख......जो पूरी दुनिया पर बरमूदा तिकोन से हासिल कर्दा हस्सास शुआएं डाल रही है। इस तरह का डीज़ाइन मुतअ़द्दद अमरीकी इदारों के "लोगो" में पाया जाता है। यह

महज़ इत्तिफ़ाक़ है या किसी तयशुदा मंसूबे का हिस्सा......? इसको जांचने के लिये हमें इस बात की खोज लगानी पड़ेगी कि यह आंख है क्या? आइये! ज़रा यहूदी शारिहीन की तहरीरात को देखते हैं। यह बात ज़हन में रखिये कि वह अस्ल राज़ ज़ाहिर नहीं करते, बात घुमा फिरा कर कहते हैं। एहराम और उस पर मौजूद इक्लौती आंख के फ़ल्सफ़े को यहूदी कौम के ज़ुअ़मा यूं बयान करते हैं:

"सियासत इस तमाम तरीक़ाकार की एक छोटी इकाई है और बादशाह या हुक्मरान को इस एहराम की चोटी पर होना चाहिये जो (बादशाह) "आज़ादी व ख़ुद मुख़्तारी का तर्जुमान" है। वुज़रा और अअ़याने हुकूमत, मुहब्बत और दानिश के तर्जुमान (जोकि इस हुक्मरान के मंसूबे को पायए तकमील तक पहुंचाने में मददगार होते हैं) और आम आबादी जो कि बादशाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ एहकामात बजा लाती है, एक कौम की सूरत इख़्तियार करती है (इससे तीसरे शुऊर की तरफ़ इशारा है यअ़नी ज़िहानत जो कि शक्ल बनाती है) यह "आक़िलाना फ़ल्सफ़े" के मुताबिक़ हुकूमत की बेहतरीन शक्ल है।"

आपने इक़्तिबास पढ़ लिया? इसमें कुछ मुब्हम इस्तिलाहात हैं। इनका आप क्या मतलब समझे? ख़ूब समझ लीजिये कि "आज़ादी व ख़ुद मुख़्तारी" से यहां मुराद अल्लाह रब्बुल आलमीन के क़वानीन से आज़ादी और बेलगाम शहवत परस्ताना ख़ुद मुख़्तार ज़िंदगी है। बादशाह से मुराद बर्तानिया की मलिकए उज़्मा या इस्राईल का वज़ीरे आज़म नहीं, दज्जाले अक्बर है, जो ग्लोबल वीलेज का प्रेज़ीडंट और जदीद फ़ित्ना ज़दा दुनिया का सरबराहे आज़म बनने के लिये बेताब है। वुज़रा से मुराद दज्जाल की आलमी तन्ज़ीम "फ़्रीमैसन" के ग्रेंड मास्टर और डिप्टी मास्टर्ज़ हैं। आम आबादी जो बादशाह की मर्ज़ी

के मुताबिक़ काम बजा लाती है, वह "जिन्टाइल" और "गवीम" हैं यअ़नी ग़ैर यहूदी आबादी जिसके मुतअ़ल्लिक़ 70 मुन्तख़ब अफ़राद पर मुशतमिल ग्रेंड ज्यूरी और 12 मुंतख़ब सरदारों पर मुशतमिल सुपर बाडी (हज़रत मूसा अलै0 ने अपने साथ कूहे तूर पर लेजाने के लिये सत्तर अफ़राद मुंतख़ब किये थे और बनी इस्राईल के बारह क़बीलों के बारह सरदार थे जो नक़ीब कहलाते थे) फ़ैसला करेगी कि इनमें से कितनों को ज़मीन पर रहना चाहिये और कितने ज़मीन की कमर पर बोझ हैं जिनका सफ़ाया कर देना ज़रूरी है।

तिकोन और उसमें नस्ब आंख डालर की शक्ल में दुनिया भर में गर्दिश तो कर रही थी, अब मुख़्तलिफ़ शक्लों में मुनासिब और ग़ैर मुनासिब, मुतअ़ल्लिक़ और ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ अंदाज़ में, न्योन साइन, होर्डिंग बोर्ड, मोनोग्राम, लोगो वग़ैरा में नज़र आने लगी है। कम्पयूटर प्रोग्राम्ज़, फ़िल्म, थियेटर, टीवी चैनल्ज़, मौसीक़ी और ड्रामों के स्टेज, अदाकारों के लिबास में भी यह अलामत खुदी हुई मिलेगी। हद तो यह है कि पोप साहब की नशिस्तगाह की पुश्ती दीवार तक भी इस दो आतिशा दज्जाली अलामत (यअ़नी अलामत दर अलामत......तिकोन और उसमें आंख) की रसाई हो चुकी है और वहां भी यह बाप को घूरती, ताड़ती और कुछ कहती नज़र आएगी। मग़रिब में तो शैतान के ऐसे चैले भी मौजूद हैं जो ऐसी मनहूस अलामात को मुतबर्रक समझ कर अपने जिस्म पर गुदवा लेते हैं या फिर मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर उंगलियों से यह शक्ल बना कर "ताक़त के इस इक्लौते मर्कज़" से "मावराई ताक़त" हासिल करने की कोशिश करते हैं, जो खुद तो समंदर की अंधेरियों में कहीं मुक़य्यद है और दूसरों को रौशनियों से मुनव्वर और ताक़त से बहरहवर करने का झांसा देता है। उंगलियों से मुसल्लस बनाने के लिये फ़िल्मा ज़दा

लोग दोनों अंगूठों और शहादत की उंगलियों को ख़ास अंदाज़ में जोड़ते हैं। शहादत की उंगली और बीच की उंगली को जोड़कर हथेली की पुश्त को अपनी तरफ़ किया जाए तो भी तिकोन वजूद में आ जाती है। इसे आप इत्तेफ़ाक़ भी कह सकते हैं कि बेध्यानी में उंगलियों से खेलते हुए ऐसी शक्ल बन गई......लेकिन......इसका क्या करें कि वह इस दस्ती तिकोन को एक आंख के सामने लाकर तस्वीर खिंचवाते हैं। इस तरह आख़िरी नतीजे के तौर पर फ़र्ज़ी तिकोन की खिड़की (window) में से हक़ीक़ी आंख झांक रही होती है। खिड़की के लफ़्ज़ से आप के ज़ह्न में कोई दरीचा तो नहीं खुला? जी हां! विंडोज़ के मअ़नी खिड़की के हैं और कम्पयूटर स्क्रीन की खिड़की से दुनिया भर को झांक कर देखने का काम खुद बिलगेट्स के मुताबिक़ इस लफ़्ज़ की अस्ल "वज्हए तस्मिया" है।

अह्ले इस्लाम पर लाज़िम है कि शिर्क व कुफ़्र और जादू टोने की इस शैतानी अलामत को मिटाने और रहमानी अलामात को फ़रोग़ देने के लिये काम करें। हमारी यह मुराद नहीं कि ट्रेफ़िक के निशानात में तिकोन का इस्तेमाल दुरुस्त नहीं, न हमारा मतलब यह है कि सूई गैस या सी एन जी गैस का अलामती डीज़ाइन तिकोन और तिकोन के बीच में जलती आग की शक्ल में नहीं होना चाहिये। यह भी हम नहीं कहते कि A के हुरुफ़ को मुख़्तलिफ़ तिकोनी शक्लें देकर जो मोनोग्राम बनाए जाते हैं, मसलनः वारिद काया ऐ आर वाई का मोनोग्राम, इनको बिलक़स्द दज्जाली तिकोन की शक्ल दी गई है। नहीं! हम यह नहीं कहते। हमारी इस तहरीर का हरगिज़ यह मतलब नहीं कि एहतिमाल को भी लाज़मी हक़ीक़त माना जाए। न हमारा मक़्सद यह है कि तिकोन की तरह की हर शक्ल मसलनः अलाइड बैंक का नया डीज़ाइन इसी पसमंज़र के तहत बनाया गया है, न हम

यह कहना चाहते हैं कि हर बैज़वी तज़ईन मसलनः यू बी ऐल का नया लोगो, या हर गोल शक्ल जैसे आज या क्यू टीवी का मोनोग्राम, यह भी लाज़िमन आंख ही हैं। हमारा यह मतलब भी नहीं कि हमारे यहां एक मअरूफ़ आयल कम्पनी के लोगो में A की शक्ल के अंदर यकचश्म उक़ाब क़सदन बनाया गया है। नहीं! दूसरी ज्यो मैट्रीकल इशकाल की तरह यह इशकाल और हुरूफ़ भी दुरुस्त मक़ासिद के लिये इस्तेमाल हो सकते हैं, लेकिन डालर की तरह तिकोन में आंख नक़्श करना या ज्यो मौसीक़ी चैनल की तरह इसमें शोअ़ले भड़का कर आग को सिफ़्ली ख़्वाहिशात के उभारने का ज़रीआ बना कर दिखाने की आख़िर क्या तुक है? इंसान को मुतशद्दिद नहीं होना चाहिये। एतिदाल अच्छी चीज़ है। लेकिन मुतसाहिल या मुतग़ाफ़िल होना भी तो कोई अच्छी बात नहीं। आप अगर वह्म और हक़ीक़त में फ़र्क़ करने के लिये इन्हें कसौटी पर परखना चाहते हैं तो नेट पर जाएं और "शैतानी आंख" (satanic eye) या "इबलीसी तिकोन" (dole triangle) लिख दें फिर तमाशा देखिये कि हज़ारों नहीं तो सैकड़ों शबीहें आप के सामने रक़्स करती हैं या नहीं?

लहराता सांप और आतिशीं अज़दहा

पांचवीं अलामत - सांप और अज़दहाः

सांप तमाम जानवरों में मूज़ी, ईज़ा पसंद और ख़ौफ़नाक व ज़ह्रनाक समझा जाता है। जानवर इंसान से वफ़ादारी में बेमिसाल हैं लेकिन यह जानवर है जो हर ज़ी रूह का खुला दुशमन है। शायद यही वजह है कि शैतान के लिये जो बनी आदम का खुला दुशमन है, इसी मूज़ी जानवर की शबीह पसंद की गई है। तौरात की पहली सूरत "पैदाइश" जिसमें काइनात की इब्तिदा और अव्वलीन तख़्लीक़ का ज़िक्र है, इसके शुरू की यह आयात मुलाहज़ा फ़रमाइयेः

"और सांप कुल दशती जानवरों से जिनको ख़ुदावंदे ख़ुदा ने बनाया था चालाक था और उसने औरत से कहाः क्या वाक़ई ख़ुदा ने कहा है कि बाग़ के किसी दरख़्त का फल तुम न खाना। औरत ने सांप से कहा कि बाग़ के दरख़्तों का फल तो हम खाते हैं। पर जो दरख़्त बाग़ के बीच में है, उसके फल की बाबत ख़ुदा ने कहा है कि तुम न तो उसे खाना और न छूना वर्ना मर जाओगे। तब सांप ने औरत से कहा कि तुम हरगिज़ मरोगे। बल्कि ख़ुदा जानता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगे तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी। और तुम ख़ुदा की मानिंद नेक व बद के जानने वाले बन जाओगे। औरत ने जो देखा कि वह दरख़्त खाने के लिये अच्छा और आंखों को ख़ुशनूमा मअ़लूम होता है और अक्ल बख़्शने के लिये ख़ूब है तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने शौहर को भी दिया और उसने खाया। तब दोनों की आंखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि वह नंगे हैं और उन्होंने इंजीर के पत्तों को सी कर अपने लिये लुंगियां

बनाई। और उन्होंने ख़ुदावंद की आवाज़ जो ठंडे वक़्त बाग़ में फिरता था सुनी और आदम उसकी बीवी ने आपको ख़ुदावंद के हुज़ूर से बाग़ के दरख़्तों में छिपाया। तब ख़ुदावंदे ख़ुदा ने आदम को पुकारा और उससे कहा कि तू कहां है? उसने कहाः मैंने बाग़ में तेरी आवाज़ सुनी और मैं डरा क्योंकि मैं नंगा था और मैंने अपने आप को छिपाया। उसने कहा तुझे किसने बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस दरख़्त का फल खाया जिसकी बाबत मैंने तुझको हुक्म दिया था कि उसे न खाना? आदम ने कहा कि जिस औरत को तूने मेरे साथ किया है उसने मुझे इस दरख़्त का फल दिया और मैंने खाया। तब ख़ुदावंद ख़ुदा ने औरत से कहा कि तूने यह क्या किया? और ख़ुदावंद ख़ुदा ने सांप से कहा इसलिये कि तूने यह किया तो सब चौपायों और दशती जानवरों में मलऊन ठहरा। तू अपने पेट के बल चलेगा और अपनी उम्र भर ख़ाक चाटेगा। और मैं तेरे और औरत के दर्मियान और तेरी नस्ल और औरत की नस्ल की दर्मियान अदावत डालूंगा। वह तेरे सर को कुचलेगा और तू उसकी ऐड़ी पर काटेगा।"

(पैदाइशः बाब3, आयतः1 ता 16)

इस मफ़हूम की रिवायात मुफ़स्सिरीन ने भी नक़्ल की हैं जो मशहूर तफ़ासीर में मौजूद हैं। मसलन देखियेः तफ़सीर इब्ने कसीरः1/218, तफ़सीर तबरीः1/336, तफ़सीरे किशाफ़ः1/128 वग़ैरा।

क़ुर्आन मजीद में ज़िक्र है फ़िरऔन के दरबार में जब जादूगरों ने अपनी लाठियां और रस्सियां मंतर पढ़कर ज़मीन पर डालीं तो वह सांप की शक्ल में बदल गईं और ऐसा लगा कि हज़रत मूसा अलै० की तरफ़ तेज़ी से दौड़ रही हैं। इससे मालूम होता है जादू की दुनिया में सांप की ख़ास अलामती अहमियत है और यह सिफ़्ली ताक़त

और शैतानी कुव्वत की नुमाइंदा शबीह है। दुनिया की तक़रीबन तमाम क़ाबिले ज़िक्र ज़बानों के महारों और इस्तेआरों में सांप बदी और तकलीफ़ का दूसरा नाम माना जाता है। माहिरीने तअ़बीर के नज़दीक ख़्वाब में सांप नज़र आना बहुत बुरी अलामत समझा जाता है। ग़र्ज़ यह कि सांप या उसकी शबीह शर ही शर है। यह शैतान की फ़ितरी दुशमनी और ज़हरीली ताक़त का इस्तेआरा है, लेकिन इस सबके बावजूद उसकी नामानूस और वहशतनाक शक्ल को जिसे नफ़रत, कराहत और अज़िय्यत की अलामत समझा जाता है, इन इदारों की मानूस अलामत बना कर पेश करने की कोशिश की जा रही है जो इंसानियत के ख़ादिम और मुहसिन समझे जाते हैं। सिहत और महकमा हाए सिहत से सांप जैसी मूज़ी मख़्लूक़ का क्या तअ़ल्लुक़ हो सकता है? लेकिन आलमी इदारए सिहत से लेकर मैडीकल स्टोर, लेबारट्रीज़ और शुअ़बए सिहत से मुतअ़ल्लिक़ा इदारों तक आप को यह जानवर कुंडली मारे, जिस्म लहराते, बल खाते या फन उठाए नज़र आ रहा होगा। सोचिये तो सही मसीहाई का मरहम बांटने और बीमारी का तिर्याक़ तक़सीम करने वालों से इस मूज़ी मख़्लूक़ और करीहुल फ़ितरत शबीह का क्या वास्ता हो सकता है? लेकिन दजल इसी को तो कहते हैं कि खुला दुशमन, मुहसिन व मुश्फ़िक़ हमदर्द के रूप में पेश किया जाए। ताकि लोग इससे नफ़रत न करें, इससे मानूस हो जाएं। उन्हें इससे घिन न आए, उंसियत महसूस करने लगें। सांप की तरह बल खाती लहरें जो रस्सियों की शक्ल में होती हैं, भी जादू और शैतान से मंसूब अलामत हैं, जैसे कि पेप्सी के लोगो में दिखाई गई हैं। शैतान की यही शक्ल फ़ाइटर्ज़, रीसेलर्ज़ और हीरोज़ के लिबास पर अज़दहा की शक्ल में पेश की जा रही है और कुव्वत व ताक़त का सिम्बल मानी जाती है। अंग्रेज़ी हर्फ़

A को जिस तरह तिकोन के डीज़ाइन में और e, o या Q को आंख के लिये इस्तेमाल किया जाता है, इस तरह S के हर्फ़ को बआसानी सांप की अलामती शक्ल बना लिया जाता है। इस S के सिरे पर एक नुक़्ता भी लगा दें तो यह बिल्कुल तैयार सांप है जैसा कि "सुपर" नाम के चैनल्ज़ या सुपर स्टोर की पेशानी पर बआसानी दिखाया जा सकता है। जिस दिन इस आजिज़ ने तहरीर लिखी उसके अगले रोज़ एक सी एन जी स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो सामने स्टोर की पेशानी पर "सुपर मार्ट" लिखा हुआ था और सुपर की शक्ल में सांप अपने सर पर मौजूद ज़हरीले नुक़्ते के साथ लहरा रहा था। वापसी में सड़क की दूसरी जानिब सी एन जी स्टेशन पर रुके तो उस पर सी एन जी के नाम मुख़फ़्फ़फ़ "S" की शक्ल में जाबजा सजा हुआ था। ऐस को खूबसूरत शक्ल देने के लिये जो डीज़ाइनिंग की गई थी उसमें और सांप में बस ज़हर की पोटली का फ़र्क़ था और कोई कसर न थी। क्योंकि एस के शुरू में लगा हुआ नुक्ता एक नुक़्ते वाले गंजे सांप की हूबहू नक़्क़ाली कर रहा था। सांप दूसरी दज्जाली अलामतों में से इस एतिबार से कुछ आगे की चीज़ है कि बअ़ज़ जाहिल और तवहहुम परस्त फ़िर्क़े अज़दहा में खुदाई कुव्वतों की कारफ़रमाई तसलीम करके उसकी पूजा शुरू कर देते हैं। यअ़नी उसे देवताओं का अवतार समझते हैं। दरहक़ीक़त शैतान उनसे अपनी इबादत करवा रहा होता है। जैसा कि कुछ बदनसीब सूरज की पूजा करते हैं, तो शैतान सूरज के सामने इस रतह खड़ा हो जाता है कि सूरज उसके दो सींगों के बीच में आ जाता है। इस तरह वह अपनी अना की तसकीन कर लेता है कि मेरे वरग़लाने पर जो बनी आदम सूरज की या किसी और चीज़ की पूजा कर रहे हैं, वह गोया कि मेरी पूजा कर रहे हैं। हज़रत आदम अलै0 से दुशमनी का अह्द भी पूरा

हो जाता है और उसकी झूटी अनानियत को तसल्ली भी मिल जाती है। पस इब्ने आदम को ज़ेब नहीं देता कि अपने आबाई दुशमन की शबीहें सजाता फिरे या उसके शैतानी असरात वाली शक्लों को आवेज़ां करके दुशमन की खुशी में इज़ाफ़े का बाइस बने।

☆☆☆

जादू के औज़ार

छटी अलामत - खोपड़ी और हड्डियां:

जो लोग जादू जैसा गंदा काम करते हैं उनके पास जंतर मंतर का जाप करते वक़्त मुर्दे की खोपड़ी या हड्डियां ज़रूर मौजूद होती हैं। उरफ़े आम में जब दो हड्डियां क्रास में बना कर उनके बीच में खोपड़ी सब्त की जाए तो यह ख़ौफ़ व ख़तरे की अलामत समझी जाती हैं, लेकिन मज़ेदार सवाल यह है कि दहशत और शयतनियत की यह अलामत बच्चों की टोपियों, नौजवानों की शर्टों या चाए की प्यालियों पर क्यों चस्पां की जाती है? जो चीज़ सालहा साल से सिफ़ली आमिलों और जादू टोने करने वालों की नापाक ख़ल्वत गाहों के साथ मख़्सूस थी, वह आहिस्ता आहिस्ता सर और सीने पर क्यों सजाए जाने लगी है? जादू, ख़तरनाक क़िस्म के शिर्किया टोटकों और ईमान सलब कर लेने वाले अमलियात के साथ मख़्सूस यह अलामत अपने पीछे मख़्सूस जादूई असरात छोड़ जाती है। सबसे बुरा असर ज़ह्नों का मस्ख़ हो जाना है। अल्लाह रब्बुल आलमीन की रहमत से मायूस हो जाना और दज्जाल के फ़ित्ने में मुबतला होकर दुनिया परस्त, माद्दा परस्त और मफ़ाद परस्त बन जाता है। कुर्रहये अर्ज़ के बाशिंदे इन अलामतों की जादूई तासीर के सबब दर्जे बाला रूहानी अमराज़ में मुब्तला होते जा रहे हैं और उन्हें नहीं मालूम कि उनमें या उनकी मअ़सूम औलाद में इन बातिनी बीमारियों के जरासीम की नुमू का सबब क्या है और इसका इलाज कैसे हो सकता है? मुर्दे की खोपड़ी और हड्डियों (स्कल एण्ड बोन्ज़) के साथ एक अदद भी आप लिखा हुआ देखेंगे 322......यह पुरअस्रार अदद शैतानी असरात

का हामिल और 666 के बाद सबसे बड़ा शैतानी अदद है। खोपड़ी और हड्डियां इस हिंदसे के साथ मिल कर ऐसा जादूई नक़्श तशकील देती हैं जो गंदे और नापाक असरात का हामिल है। इंसान का ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त है। ख़ैर और शर सिर्फ़ और सिर्फ़ उसी के हाथ में है। नेकी और बदी की तमाम कुव्वतें उसके क़ब्ज़ए कुदरत में और उसके अम्र के मातहत व ताबेअ़ हैं। उलमाए इस्लाम ने फ़रमाया है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से ख़ैर और मदद तलब करने वाली या बदी और शर से महफ़ूज़ रहने की दुआ पर मुशतमिल मुक़द्दस आयात व कलिमात को चंद शराइत के साथ बतौर तअ़वीज़ या बरकत साथ रखना दुरुस्त है। मुबारक आयात और मस्नून कलिमात और मासूर दुआओं को छोड़ कर जादूई शबीह सर या सीने पे सजा लेना या खाने पीने क बर्तनों पर नक़्श कर लेना कहां की दानिशमंदी है? (1) इन्हें मुअस्सिर बिज़्ज़ात न समझें। मुअस्सिर हकीकी सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल आलमीन है। (2) दर्ज शुदा कलिमात मालूम अलमअ़नी और सहीहुल मअ़नी हों। अजनबी ज़बानों के ग़ैर मअ़लूम अलमअ़नी अलफ़ाज़ या शिर्किया कलिमात न हों जिनमें ग़ैरुल्लाह से मददे मांगी गई हो। (3) जाइज़ मक़्सद के लिये ही तअ़वीज़ किया जाए। नाजाइज़ काम के लिये नहीं। अब यह हमारी नावाक़फ़ियत है कि मुतबर्रक कलिमात से इस्तिफ़ादा करते हुए इन शराइत का ख़्याल नहीं रखते और दुशमन के तरीक़े कार से वाक़फ़ियत नहीं होती तो ऐसे नुक़ूश या ख़ाकों की इशाअ़त का वास्ता बन जाते हैं जिनमें रहमानी नहीं, शैतानी असरात होते हैं। इसका हल यह है कि अह्ले हक़ उलमाए दीन से रब्त रखा जाए। ज़िंदगी के अहम काम उनसे पूछ पूछ कर किये जाएं। दुख सुख में उनसे रहनुमाई ली जाए। उनके हल्क़े से जुड़ कर, उनकी इस्लाही

तरबियत से फ़ाएदा उठा कर अपना अक़ीदा और अमल दुरुस्त किया जाए। ताकि जब दुनिया से जाने का वक़्त आए तो ईमान की क़ीमती पूंजी सलामत हो। उसे कोई लटीरालवट कर न ले गया हो।

☆☆☆

जादूई निशानात

सातवीं अलामत - बकरे के सींग, उल्लू के कानः

बकरे या बैल के दो सींग या उल्लू के कान भी जादूई निशानात में से हैं। आज तक यह जिन्नात के साथ मख़्सूस थे या डरावनी मख़्लूक़ात, देव, भूत वग़ैरा की अलामत समझे जाते थे। अब यही डरावनी चीज़ इतनी माडरन हो गई है कि सदरे अमरीका भी ताक़त व इक़्तिदार के इज़हार के लिये अवाम के पुरजोश इस्तिकबालिया नअ़रों का जवाब देने के लिये हाथ हिला कर जवाब देना चाहिये तो बीच की दो उंगलियां अंगूठे से बंद करके किनारे की दो उंगलियां (शहादत की उंगली और छुंगलिया) खड़ी कर लेता है। लोग समझते हैं वक्ड़ी से मिलती जुल्ती कोई शक्ल या वक्ड़ी का एडवांस डीज़ाइन बनाया है। दरहक़ीक़त वह शैतान की जय बोल रहा होता है और अपनी शोहरत, इज़्ज़त और मंज़िलत को शैतान की अता समझ कर उसके शुक्रिये का इज़हार कर रहा होता है। मुसलमान कलिमे की उंगली बुलंद करके एक अज़ीम अल्लाह की वहदानियत का इक़रार व इज़हार करते हैं। नमाज़ में भी और आम ज़िंदगी में भी। हर नमाज़ी दिन में कम अज़ कम ग्यारह मर्तबा तशहहुद के दौरान उंगली से तौहीद का इशारा करता है। हदीस शरीफ़ में आता है: "यह उंगली शैतान पर लौहे से ज़्यादा सख़्त और भारी होती है।" (मुस्नद अहमद, बरिवायत इब्ने उमर रज़ि0:2/498) जबकि शैतान के पुजारी अल्लाह के मुक़ाबले में झूटे ख़ुदा के प्रचार के लिये दो उंगलियों से शैतान के सींग की तरफ़ इशारा करके अपनी वफ़ादारी का इज़हार करते हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी अकरम

सल्ल0 ने, जबकि आप सल्ल0 हज़रत आइशा रज़ि0 के हुज्रे के दरवाज़े के पास खड़े हुए थे, अपने हाथ से मश्रिक़ की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया: "फ़ितना यहां से होगा जहां से "शैतान का सींग" निकलेगा।" (बुख़ारी शरीफ़, बाब माजा फ़ी बैति अज़्वाजिन्नबी सल्ल0, रक़मुल हदीस:3104)

हदीस शरीफ़ में सूरज के तुलूअ़ और ग़ुरूब के वक़्त नमाज़ पढ़ने से मना किया गया है और वजह यह बयान की गई है: " فَإِنَّهَا تَطْلُعُ بَيْنَ قَرْنَيْ شَيْطَان، وَتَغْرُبُ بَيْنَ قَرْنَيْ شَيْطَان" कि सूरज शैतान के सींगों के दर्मियान तुलूअ़ और ग़ुरूब होता है। यअ़नी तुलूअ़ और ग़ुरूब के वक़्त सूरज की तरफ़ पुश्त और कुर्रये अर्ज़ की तरफ़ मुंह करके उस तरफ़ खड़ा होता है कि सूरज की टिकिया उसके सींगों के बीच में आ जाए। सूरज के पुजारी जब "सन गाड" से मन्नतें माने और मुरादें मांगते हैं तो शैतान को दिल बहलाने का मौक़ा मिल जाता है कि चलो मुझे कुछ वहमियों ने बड़ा मान लिया, कि बिला वास्ता न सही तो बिल वास्ता मेरी इबादत कर रहे हैं। अगर्चे शैतान की बिला वास्ता इबादत करने वाले भी इस फ़ित्ना ज़दा दौर में कम नहीं, ज़माना क़दीम के जाहिली दौर से कुछ ज़्यादा ही हैं। उसको यह आजिज़ इंशा अल्लाह एक मुस्तक़िल मज़मून में बयान करेगा, लेकिन शैतान जैसे ख़ुद फ़रेब की झूटी अना की तसकीन के लिये बिल वास्ता इबादत ही काफ़ी है। जो वह अपने सींगों के दर्मियान सूरज फंसा कर करवा लेता है। इससे मअ़लूम हुआ कि "सींग" शैतान की मख़्सूस अलामत और पहचान है। यह सींग बकरे के हों या बैल के, बहरे सूरत अलामती तश्बीह के तौर पर एक ही चीज़ की नुमाइंदगी करते हैं और वह चीज़ किसी भी तरह ख़ैर नहीं, "सर्रे कसीर" से इबारत है।

अब ज़रा दजल की इंतिहा मुलाहज़ा कीजिये। ख़बीस शयातीन और करीहुल मंज़र जिन्नात के दो सींग जिहालत और नफ़रत की अलामत थे, लेकिन शैतान से हराम ताक़त और नाजाइज़ मदद हासिल करने के ख़्वाहिशमंद तागूत के पुजारियों ने उसे कामयाबी और शोहरत का टोटका बना दिया है। कभी आप किसी फ़ूड रेस्टोरंट पर जाएं तो दाईं बाईं ग़ौर से नज़र डालियेगा। साइन बोर्ड पर या उसके करीब ही इंसानी हाथों से बनाए गए सींग बिला वजह, बिला मौक़ा और बग़ैर किसी मुनासिबत के मुंह चुड़ाते नज़र आएंगे। अगर ऐसा हो तो रेस्टोरंट के मालिक को कम अज़ कम एक मर्तबा समझाने की कोशिश कीजियेगा कि अल्लाह ख़ैरुर्राज़िक़ीन का पाक नाम और ख़ाना कअ़बा, रौज़ए अतहर या मस्जिदे अक़्सा की मुक़द्दस शबीह को छोड़ कर तुमने यह किसकी नुमाइंदा शबीह यहां टांग ली है? कम अज़ कम एक मर्तबा समझाना तो आप पर फ़र्ज़ है। इसके बाद भी जब तक उसे बात समझ न आए, समझाने की कोशिश करते रहना ईमान का तक़ाज़ा है। अल्लाह व रसूल से मुहब्बत की अलामत और शैतानुल ऐन और दज्जाल के पैरूकारों से नफ़रत की अलामत है। याद रखिये! अल्लाह के लिये मुहब्बत और अल्लाह के लिये नफ़रत ऐसी चीज़ है जो उस दिन अर्श का साया नसीब करवा देगी जिस दिन अर्श के अलावा कोई साया न होगा और इब्ने आदम उस दिन से ज़्यादा साए का मुहताज कभी न हुआ होगा।

☆☆☆

शतरंज की बिसात

आठवीं अलामत - डबल इस्क्वायरः

आजकल अस्ली और मस्नूई हर तरह की टाइलों का बहुत रिवाज हो गया है। रंगारंग कुदरती पत्थरों के साथ तरह तरह की रंग बिरंगी मस्नूई टाइलों की बीसवीं अक़्साम भी "زُخْرُفَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا" (दुनिया की बनावटी ज़ेब व ज़ीनत) की अक्कासी करती हैं। मुस्लिम उम्मा के सरमाया दारे अस्हाबे ख़ैर की दौलत का बहुत हिस्सा बैतुल ख़लाओं की आराइश व तज़ईन या दूसरे लफ़्ज़ों में ख़बीस जिन्नात के मस्कन को सजाने संवारने पर ख़र्च हो रहा है। कमरों की दीवारें और सिहन का फ़र्श तो रहने दीजिये, बैतुल ख़ला और गुस्लख़ाने जिस शान संवारे जा रहे हैं, इससे यूं मालूम होता है कि पूरी दुनिया में फ़िक्र व ग़म से आज़ाद और इज़ाफ़ी अमवाल को ख़र्च करने के लिये हमा वक़्त आमादा और तैयार अगर कोई है तो बस अह्ले इस्लाम हैं जिनहें न किसी दुशमन की दुशमनी का सामना है और न हाल या मुस्तक़बिल में उन्हें किसी क़िस्म का चैलंज दरपेश है। ग़ौर फ़रमाइये! फ़ित्ने में मुब्तला होने की इससे ज़्यादा अफ़सोसनाक और क़ाबिले रहम सूरत और कोई होगी......?

आजकल तो मुतनव्वअ़ अक़्साम व अनवाअ़ के कुदरती पत्थरों और मस्नूई मवाद की बनी हुई इतनी टाइलें वजूद में आ गई हैं कि उनका शुमार मुश्किल है, लेकिन एक ज़माना था कि एक ख़ास तरह की दो रंगी टाइलें बहुत मक़्बूल थीं। जी हां! सिर्फ़ दो रंगी। यअ़नी सियाह और सफ़ेद ख़ानों पर मुशतमिल। आज से तीस चालीस साल क़ब्ल तक फ़र्श की तज़यीन का यह अंदाज़ बहुत मक़्बूल था। अब

यह पेट्रोल पम्पों और फास्ट फूड रेस्टोरंट्स की पेशानी से लेकर गाड़ियों के मडगार्ड और यूनिट तक में रंग और शक्ल बदल कर नज़र आता है। कुछ अर्से बाद शायद अस्ल रंग (काले और सफ़ेद चौकरख़ाने) में दोबारा आ जाएगा। टोपियों और टी शर्टों और शापर्ज़ में भी नुमूदार होना शुरू हो गया है। फ़िलहाल यह कम या मतरूक हो गया है। अब सियाह और सफ़ेद की जगह सुर्ख़ और सफ़ेद या नीले और सफ़ेद चौकोर ख़ाने तज़ईन के लिये इस्तेमाल होते हैं, लेकिन दुनियां में दो क़िस्म की जगहें ऐसी हैं जहां इसी ख़ानेदार डीज़ाइनिंग का चलन है और वहां अब तक शतरंज के बिसात जैसे दो रंगे चौकोर ख़ानों को ही तरजीह दी जाती है। एक तो शैतान की इबादतगाहें और दूसरी शैतान के चेलों की इज्तिमाअ़ गाहें यअ़नी फ़्रीमैसन लाजिज़। ज़ेल में हम फ़र्श पर बिछे इन दो रंगों और फ़र्श पर सामने खड़े उन दो सुतूनों की ग़र्ज़ व ग़ायत समझने की कोशिश करेंगे। यहां हम आप को यह भी बताते चलते हैं कि मज़कूरा बाला दो जगहों के अलावा बअज़ अमरीकी सरकारी इदारों के फ़र्श पर भी यही "सादा डीज़ाइनिंग" पर मुशतमिल निशान मौजूद होता है। क्यों? इसके जवाब की तलाश आप पर छोड़ देते हैं।

दुनिया में अज़ल से ख़ैर व शर, हक़ व बातिल और नूर व ज़ुल्मत यअ़नी हिदायत व ज़लालत में जंग चली आ रही है। हिदायत की दावत देने वाले नेक बख़्त लोग जितने नेक आमाल करते और उनकी तरग़ीब देते हैं, दुनिया में उतना ही अल्लाह की रहमत बरसती है। ख़ैर व बरकत बढ़ती है। जितना अल्लाह का नाम लिया जाता है, काइनात में भी और इंसान के दिल में भी नूर और रौशनी (इनर्जी) में इज़ाफ़ा होता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ही आसमानों और ज़मीनों का नूर है। इसके बरअक्स जब अल्लाह तआला की

नाफ़रमानी होती है, गुनाहों का इर्तिकाब किया जाता है, शैतान के नक़्शे क़दम पर चला जाता है, उतना ही ख़ैर व बरकत से महरूमी और अल्लाह तआला की नज़रे रहमत से दूरी होती है। शैतान का इब्ने आदम से इंतेक़ाम पूरा होता है। ज़मीन पर शर व ज़ुल्मत फैलती है। इंसान के अंदर से हिदायत का नूर कम होता और उसकी रूहानी ताक़त कमज़ोर होती है। फिर जो आदमी अपने नेक आमाल की बदौलत अल्लाह तआला से जितना क़रीब होता है, इतना अल्लाह तआला उसकी मदद फ़रमाते हैं। ज़िंदगी के कठिन मराहिल में उसकी ग़ैबी नुसरत होती है। उसके दिल पर सकीना व इतमीनान नाज़िल होता है। कभी कभार उसके हाथ पर अल्लाह तआला के हुक्म से करामत भी ज़ाहिर होती है। इसके बरअक्स जो शख़्स शैतान की पूजा करके उसके क़रीब होना चाहता है, जादू या सिफ़ली अमलियात करके शैतान की आरज़ी, फ़ानी और बातिल ताक़त से मदद लेना चाहता है तो शैतान अपनी महदूद ताक़त और क़यामत तक मिलने वाली महदूद मुहलत के बलबूते पर उसकी हराम ख़्वाहिशात की तकमील और नाजाइज़ मक़ासिद में एक हद तक (यअ़नी जितनी क़ादिर मुतलक़ ने उसे छूट दी है) मदद करता है। ऐसे शख़्स के हाथ पर ग़ैर मअ़मूली शुअ़बदे भी कभी ज़ाहिर करवाता है। इसे "इस्तिदराज" (मुहलत और ढील) कहते हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मदद हासिल करने के लिये आला तरीन रूहानी अक़्दार अपनानी पड़ती हैं। उस्वए हुस्ना पर अमल करना पड़ता है। अल्लाह की मख़्लूक़ की बेलोस ख़िदमत और ख़ैरख़्वाही करनी पड़ती है, जबकि शैतान की मदद हासिल करने के लिये नफ़्स परस्ती पर मुशतमिल हैवानी काम करने पड़ते हैं। संगदिल और ख़ुद ग़र्ज़ बन कर शर और फ़साद पर मुशतमिल करतूत दिखाने पड़ते हैं। "काली माता" या

"लोना चमारी" के क़दमों में बेगुनाह इंसानी खून की भेंट चढ़ानी पड़ती है, तब कहीं जाकर शैतान किसी को अपना हीला बनाता है।

अल्लाह तआला जब किसी को अपना वली बना लेते हैं तो उसे अपनी रहमत से कभी मायूस नहीं करते। अल्लाह तआला से ज़्यादा सच्चा, वफ़ादार और मुरव्वत व लिहाज़ रखने वाला कौन होगा? लेकिन शैतान जब किसी को चेला बना लेते है तो उससे कभी वफ़ा नहीं करता। वह उससे मज़ीद गंदी हरकतें करवाने के लिये उसकी मदद रोक देता है या अगले दर्जे में तरक़्क़ी पाने के लिये उसे मज़ीद गंदी हरकतों पर उकसाता है। और फिर लज़्ज़त, शह्वत और हैवानियत का आदी यह बदनसीब शख़्स अपना मक़ाम फिर से हासिल करने के लिये नई नई सिफ़ली तदबीरें और हराम टोने टोटके करता है। इनमें से बहुत सी रुसूमात सियाह और सफ़ेद ख़ाने दार फ़र्श पर की जाती हैं। इंफ़िरादी भी और इज्तिमाई भी। इन सिफ़ली हरकतों में इंसानियत और अख़्लाक़ से आरी होकर हर ऐसा काम किया जाता है जो शैतान को ख़ुश और मुतवज्जोह करे। आग के गिर्द बरहना रक़्स, तेज़ मौसीक़ी की शह्वत अंगेज़ धुन, घुप अंधेरे में शैतानी हरकतें, नापाकी और नजासत की हालत में काले करतूत और सबसे ज़्यादा ख़तरनाक यह कि बेक़सूर इंसानी जानों की भेंट......यह आख़िरी सबसे ज़्यादा ख़तरनाक, शैतान को सबसे ज़्यादा ख़ुश करने वाला और शैतान के चेलों को सबसे ज़्यादा शैतानी क़ुव्वत फ़राहम करने वाला है। पाकिस्तान में यह अमल बलूचिस्तान में हिंगलाज के पहाड़ों में क़ाइम स्थानों में होता है और मग़रिब में शैतान की इबादतगाहों में। फ़र्क़ यह है कि पाकिस्तान व हिंदुस्तान और बंगलादेश में हक़ीक़ी इंसान की भेंट चढ़ाई जाती है जबकि मग़रिब में क़वानीन की सख़्ती के बाइस "डमी" से काम लिया जाता है।

मश्रिक़ हो या मग़रिब, यह अमल सियाह सफ़ेदख़ानों वाले फ़र्श पर होता है। इसको "डबल इसक्वायर" कहते हैं यअ़नी "दुहरा मुरब्बा"। एक मुरब्बा के ऊपर दूसरा मुरब्बा। खुफ़िया दज्जाली सोसाइटी की ज़बान में पहले मुरब्बे से रौशनी और दूसरे से अंधरा मुराद है। एक मुरब्बा मतलब है कि इस चीज़ का मुकम्मल इहाता करके इस पर क़ाबू पा लेना जो ठीक और जाइज़ है। एक मुरब्बा पर दूसरे मुरब्बा का होना इस बात की अक्कासी है कि इन सब पर कंट्रोल हासिल करना जो ठीक है और जो ग़लत है। वह सब कुछ जो जाइज़ है और नाजाइज़ है। वह सब कुछ जो मुस्बत है और जो मन्फ़ी है। यह अलफ़ाज़ दीगर ख़ैर और शर, बदी और नेकी, दोनों चीज़ों पर कंट्रोल का दावा जो ज़ाहिर है, में खुदाई के झूटे दावे के मुतरादिफ़ है। अंग्रेज़ी ज़बान की दो इस्तिलाहात "Fair and Square" और "Square Deal" इसी मफ़हूम से अख़्ज़ करते हुए मुतरत्तिब की गई हैं। बर्तानवी पार्लीमेंट की लाबी के ऐन वस्त में "डबल इसक्वायर" का मख़्सूस निशान है और इसके इर्दगिर्द दुनिया भर की पुलिस फ़ोर्सिज़ बजुज़ इस निशान के गिर्द सब्त हैं। यह डीज़ाईन इत्तिफ़ाकिया नहीं, इसी मफ़हूम के पेशे नज़र है कि दुनिया में हर चीज़ पर हमारा कंट्रोल है। जो ठीक है उस पर भी और जो ग़लत है उस पर भी। इन दो मुरब्बों के सामने दो सुतून भी होते हैं। यह भी इस मफ़हूम व मतलब की अलामती अक्कासी है। यअ़नी जो चीज़ फ़र्श पर पड़ी है वही चीज़ सामने खड़ी है। रौशनी और अंधेरा। नेकी और बदी। खूबी और ख़ामी और फिर इन दोनों पर मुकम्मल कंट्रोल का झूटा दावा। फिर झूटी ताक़त हासिल करने के लिये नाजाइज़ काम हत्ता कि बेगुनाह इंसानी खून की भेंट। रौशनी यअ़नी सफ़ेद मुरब्बा से ख़ैर और अंधेरे यअ़नी सियाह मुरब्बअ़

से शर मुराद है। दोनों साथ साथ क्यों हैं? अंधेरे के पुजारियों का रौशनियों की किर्नों से क्या तअ़ल्लुक़? इसके लिये पुर इस्रार दुनिया की खुफ़िया ज़बान से इस्तिफ़ादा करना होगा। आप यह न समझिये कि आजकल की मुहज़्ज़ब मग़रिबी दुनिया में किसी इंसान को शैतान के चर्नों में भेंट चढ़ाने जैसी ख़ौफ़नाक जाहिलाना हर्कत कहां और क्योंकर होती होगी? यह आजिज़ इंशा अल्लाह इस पर एक मुस्तकि़ल मज़्मून लिखने का इरादा रखता है जिसमें इन जगहों की निशानदही के अलावा दुनिया में सबसे बड़ी शैतानी क़ुर्बानगाह का तज़किरा भी होगा जो अमरीकी रियासत "कैलीफ़ोर्निया" के शहर सान फ्रांसिसको में एक जंगल में झील के क़रीब क़ाइम है। यह अलबत्ता ज़रूर है कि क़ानून की गिरफ़्त और मीडिया की नज़र में आने से बचने की जिद्द व जिह्द में उसे अगर असल इंसानी जिस्म न मिले तो पुतले से भी काम चलाया जाता है। इस पर क़राइन व शवाहिद के साथ गुफ़्तगू इंशा अल्लाह "बूहीमैन गिरू" वाले मज़्मून में होगी। अब हम क़ुर्बानगाह के फ़र्श के मख़्सूस रंग की हक़ीक़त, पसमंज़र और मख़्सूस फ़ल्सफ़ा की वज़ाहत की तरफ़ वापस आते हैं।

इस तरह के गंदे आमाल की ताक़त बढ़ाने में दीगर नाजाइज़ मुअस्सिर अनासिर मसलनः जनाबत की हालत में होना, शराब और दूसरी गंदी चीज़ों के हराम नशे में होना, हराम जानवरों या ज़ब्ह शुदा इंसान के ख़ून से छींटे देना वग़ैरा वग़ैरा......इस तरह का एक मुअस्सिर ज़रिया ख़ानेदार फ़र्श भी है जिसका अलामती मतलब यह होता है कि यह गंदे काम करने वाले बज़ुअमे ख़ुद ख़ुदा और उसके नूर से दूर होकर शैतान और उसकी तारीकी से मदद हासिल करना चाहते हैं, क्योंकि उनके मुताबिक़ शैताने लईन दरअसल जन्नत से निकाली गई ताक़तवर रूह (फ़रिश्ता) है और (मआज़ल्लाह) अल्लाह

रब्बुल आलमीन, अरहमुर्राहिमीन ने उसे जन्नत से निकाल कर उसके साथ नाइंसाफ़ी की थी। अब वह अपनी ग़ैर मअमूली ताक़त को इस्तेमाल करके नाइंसाफ़ी का बदला लेना चाहता है और हम उसकी ताक़त से इस्तिफ़ादा करके अपनी तक़दीर से नागवार चीज़ें ख़त्म करके अपनी मर्ज़ी की ज़िंदगी बनाना और मनचाही ख़्वाहिशात पूरी करना चाहते हैं।

क़ारईने किराम! यह है वह धोका जिसमें "शैतान के पुजारी" अपनी कम अक़्ली और बदनसीबी की वजह से गिरफ़तार हैं। उस दुशमन को दोस्त समझते हैं जो दो मुंह वाले कड़याले सांप की तरह है। एक से पुचकारता है तो दूसरे से डस्ता है। शैतान को इंसानी दुनिया में दख़ल अंदाज़ी का महदूद इख़्तियार है। यह इख़्तियार उस वक़्त किसी क़दर वसीअ़ हो जाता है जब शैतान के चेले मख़्सूस जादूई या शैतानी रुसूम अदा करते हैं। इन रुसूमात के लिये मख़्सूस वक़्त, मख़्सूस माहौल और मख़्सूस कैफ़ियात की तरह मख़्सूस जगह भी चाहिये। चौकोर ख़ानेदार फ़र्श इन्ही मख़्सूस जगहों में से एक जगह है। हैरत की बात यहे कि चौकोर ख़ानेदार मख़्सूस जगह फ़्रीमैसन लाजूं और इल्म "कबाला" के माहिर यहूदी मुल्हिदों की ज़ेरे निगरानी चलने वाले जादू घरों की तरह "वाइट हाउस" में भी पाया जाता है। आप हैरान न होइये! वाइट हाउस की तरह कैम्प डेविड में भी जादूई हिसार बांध कर इंसानी ज़ह्नों को मुसख़्ख़र करने वाले जादू और हिप्नाटिज़्म के माहिरीन इस तरह के फ़र्श को अपने खुफ़िया जादूई टोटकों की कामियाबी के लिये रूबा अमल लाई जाने वाली। "सिर्री रिवायात" का लाज़ुमी हिस्सा समझते हैं। अनवर सादात, यासिर अरफ़ात और परवेज़ मुशर्रफ़ जैसे हुक्मरानें को इस्तिक़बाल कैम्प डेविड में इसी ज़ह्नी दबाव की सौग़ात के साथ

किया जाता है जिसके मुतअ़ल्लिक़ हमारे माहिरीन का कहना है कि वहां आक्सीजन की कमी से होने वाले ज़ह्नी दबाव के तहत ऐसे फ़ैसले करते हैं। अलग़र्ज़ इस निशान और इस तरह की दीगर अलामात के अंदर नापाक जादूई असरात हैं। जिनसे महफ़ूज़ रहने के लिये अल्लाह की पनाह में आने, मुअ़व्वज़ैन पढ़ कर ख़ुद पर दम करते रहने, तअव्वुज़ के कलिमात पर मुशतमिल मस्नून दुआओं का विर्द करने और गुनाहों से बचते हुए, अपने गिर्द मस्नून आमाल का हिसार क़ाइम करने की ज़रूरत है।

भड़कते शुअ्ले और पुरअस्रार हिंदसे

नवीं अलामात - आग और शुअ्लेः

शैतान और तमाम जिन्नात आग से बने हैं। आग की फ़ितरत में भड़कना, तअ़ल्ली दिखाना, बरतरी ज़ाहिर करना और अपना आप मनवाना है। शैतान इंसान का ऐसा दुशमन है कि उसकी तरफ़ जो चीज़ें भी मंसूब हैं, उसने इंसान को गुमराह करके तक़रीबन उन तमाम चीज़ों की परस्तिश करवाई है। दुनिया में बहुत से फ़िर्के आग, सांप, अज़दहा, बैल, उल्लू वग़ैरा की परस्तिश करते हैं वर्ना कम अज़ कम उन हक़ीर व ख़सीस और फ़ानी व आजिज़ चीज़ों को मुक़द्दस या अज़्मत के क़ाबिल जानते हैं। मजूसी हज़ारों साल से इस आग की परस्तिश करते आए हैं जिसको वह अपने हाथों जलाया करते थे और फिर उसे बुझने से महफ़ूज़ रखने के लिये जतन किया करते थे। हिंदुस्तान और अफ़्रीक़ा के बहुत से क़बाइल सांप या अज़दहे को ताक़त व क़ुव्वत का मंबअ़ और देवताओं का औतार क़िस्म की मख़्लूक़ समझते हैं। शैतान की तरफ़ से इंसान को गुमराह करने और उसे बहका कर धोका देने के बाद उस पर हंसने का सिलसिला ज़मानए क़दीम के तारीक दौर पर ख़त्म नहीं हुआ, आज की मुतमद्दिन और तरक़्क़ी याफ़्ता समझी जाने वाली दुनिया में भी शैतान से मंसूब अलामतों को मुक़द्दस समझा जाता है और इस तरह शैतान की तअ़ज़ीम करके उससे अपनी ख़्वाहिशात के हुसूल में मदद मांगी जाती है। फ़िल्म इंडस्ट्री और पाप म्यूज़िक की काली दुनिया में तो ख़ुसूसियत से अदाकारों और गुलूकारों के मुंह से शैतान की पूजा या उसकी तअ़ज़ीम पर मुशतमिल गाने के बोल या मुकालिमे

कहलवाए जाते हैं। यह बोल आहिस्ता आहिस्ता ज़बान ज़द आम हो जाते हैं। शाइक़ीन और नाज़िरीन तफ़रीह तफ़रीह में वह कुछ कह जाते हैं जिससे शैतान और शैतानी क़ुव्वतों का मक़सद पूरा हो जाता है। इसी तरह उनमें शैतानी अलामात भी मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से रंग और हय्यत बदल बदल कर पेश की जाती हैं। इनमें इक्लौती आंख और तिकोन के अलावा आग की कारफ़रमाई बहुत ज़्यादा होती है। आज के दौर में इंसान की बदनसीबी है कि कुछ लोग इस अलामत को इतना फैलाना चाहते हैं कि "आग" चैनल में ही नहीं, बहुत से दीगर मनाज़िर बल्कि गाने और फ़िल्मों की कैसिटों, सी डीज़ के टाइटल में किसी न किसी शक्ल में आग जलती हुई या उसकी लपटें भड़कती हुए नज़र आती हैं। यह सिर्फ़ इंसान की सिफ़ली हैवानी ख़्वाहिशात को भड़कता हुआ दिखाने का इस्तेआरा नहीं, बल्कि शैतान के मर्कज़ी माद्दए तख़्लीक़ को इंसान के लिये मुअज़्ज़म व मुकर्रम बना कर दिखाने की अलामती कोशिश है। इस कोशिश के नताइज से आख़िरी फ़ाएदा बदी की ताक़तों का मंबअ़ व महवर "दज्जाले अक्बर" उठाएगा।

वाक़िआ यह है कि आज के दौर के वालिदैन पाप म्यूज़ि सुनते और फ़िल्में देखते वक़्त या अपने बच्चों को इसकी इजाज़त देते वक़्त सिर्फ़ अमली गुनाह ही नहीं कर रहे, अक़ीदे से इंहिराफ़ और शैतान के पुजारियों के आलाकार भी बन रहे होते हैं। इसकी कुछ तफ़सील हम अल्लाह की मदद से "दज्जाल 2" में बयान कर चुके हैं। हक़ीक़त वाक़िआ यह है जदीद तहज़ीब में फ़ैशन समझी जाने वाली यह चीज़ें सिर्फ़ फ़िस्क़ व फ़ुजूर ही नहीं, शिर्क व शैतान परस्ती की तअ़लीम भी दे रही हैं। मुतमद्दिन दुनिया की इन रौशनियों में क़दीम जाहिलियत की ख़ौफ़नाक तारीकियां छिपी हुई हैं। सिर्फ़ अंदाज़ बदल

गया है, शैतान की इंसान दुश्मन असलियत और उसकी शिर्किया मुहिम नहीं बदली। वह आज भी आदम के बेटों से इंतेक़ाम लेने के लिये उन्हें ख़िलाफ़े शर्अ़ चीज़ों में लगा कर अपनी झूटी अना की तसकीन कर रहा है। इस फ़ितनाज़दा दौर में तो शरीअ़त के ख़िलाफ़ जो भी चीज़ हो, उससे सख़्त एहतियात करने और अल्लाह की पनाह में आने की ज़रूरत है। ख़ुसूसन मग़रिबी तहज़ीब जो जाहिलियते जदीदा की बोदी बुन्यादों पर खड़ी है। मग़रिबी मौसीक़ी, मग़रिबी फ़ुनून लतीफ़ा, आर्ट, अदब, कल्चर वग़ैरा मग़रिबी फ़िल्मी दुनिया की बेहूदा रिवायात और नित नई शैतानी ईजादात तो हैं ही सरापा फ़ितना। फ़ितनों के इस दौर में और गुनाहों से भरी इस दुनिया में, इंसानों को अल्लाह की रहमत के नूर की ज़रूरत है न कि आग की लपटों की। वही आग जिसके बारे में हुक्म है जिस चीज़ को छूती हो उसे क़ब्र में न लगाया जाए ताकि जन्नत के बाग़ में जहन्नम की तख़्ती न आए। इस आग से और नफ़सानियत और शहवानियत की इस अलामत से हमें दूर रहने की ज़रूरत है। अल्लाह की रहमत उसकी याद से, उसका ध्यान जमाने से और उसकी तरफ़ दिल की तवज्जोह जमाने से उतरती है। जो लोग अल्लाह को याद करते हैं उन पर तो इसकी रहमत की बरसात उतरती है। हमें ऐसे लोगों से जुड़ना चाहिये। उनकी सोहबत की बरकत से इस्तिफ़ादा करना चाहिये।

☆☆☆

शैतानी हिंदसे

दसवीं अलामत - पुरअस्रार हिंदसे:

माहिरीन लिसानियात के मुताबिक़ एक ही ज़बान को लिखने के एक से ज़्यादा रसमुल ख़त हो सकते हैं। नीज़ एक ही ज़बान को हुरूफ़ और हिंदसों दोनों की मदद से लिखा जा सकता है। इस तरह से कि हर हर्फ़ की कोई क़ीमत मुक़र्रर कर ली जाए जो ज़ाहिर है हिंदसे की शक्ल में होगी। मसलनः अरबी ज़बान को ले लीजिये। इसके हर्फ़ के लिये आप अगर कोई हिंदसा मुक़र्रर कर लें तो हुरूफ़ के बजाए हिंदसों के ज़रीए माफ़ी अज़्ज़मीर का इज़हार किया जा सकता है। मसलन अरबी के 29 हुरूफ़े तहज्जी हैं। अगर पहले नौ हुरूफ़ के लिये इकाई के हिंदसे, अगले नौ हुरूफ़ के लिये दहाई के हिंदसे और उसके बाद वाले हुरूफ़ के लिये सैकड़े के हिंदसे मुक़र्रर कर लिये जाएं तो जो बात अलिफ़, ब, ज,......हुरूफ़ के ज़रीए की जा रही थी वही 1,2,3......हिंदसों के ज़रीए भी बोली या लिखी जा सकती है। उसको "अजबद का निज़ाम" कहते हैं। यअ़नी हुरूफ़ के बजाए हिंदसों में लिखना। एक आयत या जुम्ले में अगर दस हुरूफ़ इस्तेमाल होते हैं, उन हुरूफ़ के क़ाइम मक़ाम दस हिंदसों को अगर तरतीब देकर जमा कर लिया जाए तो जो हासिल आएगा, वह एक तरह का कोड होगा जिसमें उन हुरूफ़ की तासीर जमा होगी जिन्हें मुख़्तसर करने के लिये अअ़दाद की शक्ल में लिख लिया गया था। सहीहुल अक़ीदा और मुत्तबेअ़ शरीअ़त आमिल हज़रात जो तअ़वीज़ लिखते हैं, उसमें मुख़्तलिफ़ ख़ानों में लिखे हुए अअ़दाद मुख़्तलिफ़ कलिमात के हुरूफ़ का मुतबादिल होते हैं। यह कलिमात अगर

सहीहुल मअ़नी हैं या किसी आयत या दुआ का मुख़फ़्फ़फ़ हैं तो यह तअ़वीज़ इन्ही असरात का हामिल होता है जो असरात इन असल कलिमात या दुआओं में पाए जाते थे। तअ़वीज़ चूंकि बार बार लिखने होते हैं, इसलिये तिवालत से बचने के लिये यह मुख़्तसर तरीके कार अपना लिया जाता है। यह तो हुआ रहमानी अमलियात का तरीके कार। इसके बरअक्स शैतानी या सिफ़ली काम करने वाले जो अअ़दाद इस्तेमाल करते हैं उनके पसे पुश्त वह गंदे जादूई जंतर मंतर होते हैं, जिनमें शैतान या बदरूहों या देवी देवताओं से मदद मांगी जाती है। यह कुफ़्र व शिर्क का वह गोरख धंदा है जिसमें इस काइनात की उन मावराउत्तबई सिफ़ली ताक़तों से नाजाइज़ मक़ासिद में तआ़वुन हासिल करने की कोशिश की ज़ाती है जिन्हें अल्लाह तआला ने अपनी पोशीदा हिक्मत के तहत इंसानी दुनिया में किसी हद तक मुदाख़लत की छूट दे दखी है। फिर जिस तरह रहमानी अमलियात में मशहूर मुतबर्रक कलिमात के अअ़दाद मशहूर हो गए हैं। मसलनः बिस्मिल्लाह शरीफ़ के अअ़दाद "या अल्लाह" और "मुहम्मद" के पाक नामों के अअ़दाद, इसी तरह सिफ़ली अमलियात में कुछ अअ़दाद मशहूर हैं। मुख़्तलिफ़ शिर्किया कलिमात के तनाज़ुर में तरतीब दिये गए यह अअ़दाद मुख़्तलिफ़ शैतानी और जादूई असरात रखते हैं। आज हम इस तरह के चंद इबलीसी हिंदसों का तज़किरा करेंगे जिसे शैतान के पुजारी चुपके चुपके मज़मूम मक़ासिद के तहत पूरी दुनिया में फैला रहे हैं।

पहला शैतानी हिंदसा - 666:

इन अअ़दाद में सबसे मशहूर शैतानी अदद छः सौ छियासठ (666) है। इसका पसमंज़र और इबलीस के साथ उसके तअ़ल्लुक को बयान करने के लिये हम कोशिश करेंगे कि क़दीम तरीन मज़हब

हवालों के साथ जदीद मगरिबी मुसन्निफ़ीन की तहरीरात से भी इक़्तिबासात पेश करें ताकि बात को इस्तिनाद में गूंध कर तौसीक़ से नथी करके आगे बढ़ाया जा सके। तो आइये! सबसे पहले इंजील का एक हवाला देखते हैं। फिर उसमें मौजूद चंद अहम इशारों का मतलब और उनकी ततबीक़ व तशरीह समझने की कोशिश करेंगे, जिनसे तारीख़ और असरी इक्तिशाफ़ात आहिस्ता आहिस्ता पर्दा उठा रहे हैं और जिनकी तरफ़ यह आजिज़ अपने कालमों में पहले भी इशारा कर चुका है। इंजील आख़िरी किताब "यूहन्ना आरिफ़ का मकाशिफ़ा" में दर्ज है:

"फिर मैंने एक और हैवान को ज़मीन में से निकलते हुए देखा। उसके "बर्रा" के से दो सींग थे और अज़दहा की तरह बोलता था। यह पहले हैवान का सारा इख़्तियार उसके सामने काम में लाता था और ज़मीन और उसके रहने वालों से इस पहले हैवान की परसतिश कराता था, जिसका ज़ख़्मे कारी अच्छा हो गया था। और वह बड़े बड़े निशान दिखाता था। यहां तक कि आदमियों के सामने आसमान से ज़मीन पर आग नाज़िल कर देता था। ज़मीन के रहने वालों को इन निशानों के सबब से जिनके इस हैवान के सामने दिखाने का उसको इख़्तियार दिया गया था, इस तरह गुमराह कर देता था कि ज़मीन के रहने वालों से कहता था जिस हैवान के तलवार लगी थी और वह ज़िंदा हो गया उसका बुत बनाओ। और उसे इस हैवान के बुत में रूह फूंकने का इख़्तियार दिया गया ताकि वह हैवान का बुत बोले भी और जितने लोग उस हैवान के बुत की परस्तिश न करें, उनको क़त्ल भी कराए। और उसने सब छोटे बड़ों, दौलतमंदों, ग़रीबों, आज़ादों और गुलामों के दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक एक छाप करा दी। ताकि उसके सिवा जिस पर निशान यअ़नी उस हैवान

का नाम या उसके नाम का अदद हुआ और कोई ख़रीद व फरोख़्त न कर सके। हिक्मत का यह मौक़ा है। जो समझ रखता है वह उस हैवान का अदद गिन ले क्योंकि वह आदमी का अदद है और उसका अदद छः सौ छियासठ है।"

(मुकाशिफ़ाः बाब13, आयत नम्बर 11 से 18)

इस इबारत में दो हैवानों का ज़िक्र है। "पहले हैवान" का तज़किरा हम पहली अलामत "ताज पोश शबीह" के ज़िम्न में कर चुके हैं कि इससे मुराद दज्जाल है। दूसरे हैवान से कौन मुराद है? यह अहम सवाल है। इसका जवाब अगर हम मसीही शारिहीन के यहां तलाश करें तो वह ज़बरदस्त कन्फ़्यूज़न का शिकार दिखाई देते हैं। 1957 ई० का छपा हुआ इंजील का जो नुस्ख़ा इस वक़्त मेरे सामने है। उसके हाशिये में हमें दर्ज बाला दो हैवानों के मुतअ़ल्लिक़ यह तशरीहात लिखी हुई मिलती हैं:

O......"यह हैवान बेईमानों का लशकर है जो शुरू से दुनिया के आख़िर तक खुदा के बंदों को सताते हैं। सात सौ सात बादशाह यअ़नी सात ज़ोरआवर बादशाहतें हैं। सातवीं बादशाहत "गुनाह के इस शख़्स" के साथ दुनिया के आख़िर में ज़ाहिर होगी।"

O......"यह दूसरा हैवान बुत परस्त, काहिन और जादूगर लोग हैं, क्योंकि वह बुतपरस्ती को थामते और बादशाहों को बहकाते थे।"

O......"वह हैवान या बुतपरस्त रूह है जो सात पहाड़ों पर बरसा था या शैतान का इख़्तियार है जो मसीह के दुनिया में आने से पहले निहायत बड़ा था, लेकिन मसीह के ज़ाहिर होने के बाद कम हुआ, मगर दुनिया के आख़िर में जब वह "गुनाह का शख़्स" आएगा शैतान फिर सारी ताक़त से उठेगा।"

इन इबारात में "गुनाह के शख़्स" से "दज्जाले अक्बर" मुराद

है। इसे मज़कूरा बाला आयात से क़ब्ल की आयात और बाद की आयात में पहला हैवान कहा गया है। दूसरे हैवान से जो इस पहले हैवान यअ़नी "अलमसीहुद्दज्जाल" की मदद करेगा, वह ताक़त मुराद है जो दज्जाली तहज़ीब की अलमबरदार होगी। उसे हर अव्वल दस्ता के तौर पर काम करेगी, उसके निकलने से पहले उसके लिये राह हमवार करेगी और उसके निकलने के बाद उसकी बुन्यादी ताक़त और दस्त व बाज़ू होगी। ज़ाहिर है कि यह क़ौमे यहूद की तशकील कर्दा "सहीवनी ताक़त" है जिसका मर्कज़ अमरीका, बर्तानिया और इस्राईल की तिकोन में है। मसीही शारिहीन वह्य के सच्चे इल्म से महरूमी के सबब अपनी मसीही बिरादरी को इंजील की हिदायत इस तफ़सील व तशरीह से नहीं पहुंचा सके जैसा कि अह्ले इस्लाम के उलमाए किराम ने फ़रीज़ा अंजाम दिया है और देते चले आए हैं। हैवान से "बुत परस्त रोमा" हरगिज़ मुराद नहीं, रूम वाले इंजील के नुज़ूल के वक़्त बुत परस्त थे मगर अब तो वह ईसाई हो चुके हैं, लिहाज़ा इससे लाज़मी तौर पर शैतानी कुव्वतें मुराद हैं जो दज्जाल की मदद करेंगी। इनकी मदद से जब दज्जाल दुनिया के वसाइल पर इख़्तियार हासिल करेगा तो वह हर फ़र्द को और दौलत की हर इकाई को अपने तसल्लुत और निगरानी में रखने के लिये जो दो काम करेगा, उनकी तरफ़ इंजील की इन आयात में इशारा कर दिया गया है। इंजील के मुताबिक़ इनमें से पहली चीज़ है, हर शख़्स के दाहिने हाथ या माथे पर छाप और दूसरी वह निशान यअ़नी उस हैवान का नाम या उसके नाम का अदद कि जिसके बग़ैर दुनिया में कोई लेनदेन न हो सकेगा। अगर आज की दुनिया पर नज़र डाली जाए तो इन दो चीज़ों में से पहली चीज़ का मतलब वह "डीवाइस" है जो हर शख़्स के जिस्म में कहीं लगी होगी या शनाख़्ती कार्ड में चस्पां होगी।

उसका रब्त सेटेलाइट से होगा और निगरानी में होगा। दूसरी चीज़ वह "चिप" है जो क्रेडिट कार्ड या इलेक्ट्रानिक मिनी की किसी तरक़्क़ी याफ़्ता शक्ल में नस्ब होगी और पूरी दुनिया में इसके बग़ैर लेने देन न हो सकेगा और इसके ज़रीए वही लेन देन कर सकेगा जो उस शैतानी हैवान यअ़नी दज्जाल अअ़ज़म और उसके यहूदी हरकारों की नज़र में "शफ़्फ़ाफ़" होगा। यह फ़क़त हमारा तज्ज़िया नहीं, मग़रिब के कुछ बेदार मग़्ज़ क़लमकार भी यही कुछ कहते हैं। डाक्टर जान कोलमैन मशहूर मुहक़्क़िक़ मुसन्निफ़ हैं, उनकी कई किताबें शोहरत व मक़बूलियत हासिल कर चुकी हैं। वह अपनी किताब "Conspirators Hierarchy" में मुस्तक़बिल की दुनिया और उस पर नाफ़िज़ आलमी हुकूमत का नक़्शा कुछ इस अंदाज़ में खींचते हैं:

"हर शख़्स के ज़हन में यह अक़ीदा रासिख़ कर दिया जाएगा कि वह (मर्द या औरत) एक आलमी हुकूमत की मख़्लूक़ है और उसके ऊपर एक शनाख़्ती नम्बर लगा दिया जाएगा। यह शनाख़्ती नम्बर बर्सल्ज़, बेल्जियम, के नेटो कम्पयूटर में महफ़ूज़ होगा (जी हां! इसी सुपर कम्पयूटर में जहां नादिर और दीगर इदारों के पास जमा शुदा डेटा महफ़ूज़ होता है। राक़िम) और आलमी हुकूमत की किसी भी ऐजंसी की फ़ौरी दस्तरस में होगा। सी आई ए, एफ़ बी आई, रियासती और मक़ामी पुलिस ऐजंसियों, आई आर एस, फ़ीमा, सोशल सैक्यूरिटी वग़ैरह की मास्टर फ़ाइलें वसीअ़ करके उनमें लोगों के कवाइफ़ का अंदराज़ अमरीका में तमाम शहरों के ज़ाती रिकार्ड के अंदाज़ में किया जाएगा।"

"मआ़शी निज़ाम, हुक्मरान तब्क़े का मरहून मन्नत होगा। वह सिर्फ़ इतनी ख़ूराक और ख़िदमात की इजाज़त देगा जिससे अवाम

यअ़नी गुलामों की ज़िंदगी बरक़रार रहे। तमाम दौलत कमेटी आफ 300 (फ़्री मैसन्री) के मुम्ताज़ अरकान के हाथों में दी जाएगी। हर फ़र्द को ज़हन नशीन करा दिया जाएगा वह अपनी बक़ा के लिये रियासत का मुहताज है।"

"तबक़ए अशराफ़िया के अलावा किसी के हाथों में नक़दी या सिक्के नहीं दिये जाएंगे। तमाम लेन देन सिर्फ़ और सिर्फ़ क्रेडिट कार्ड के ज़रीए होगा। (और आख़िरकार उसे माइक्रो चिप प्लान्टेशन के ज़रीए किया जाएगा।) "क़ानून तोड़ने वालों" के क्रेडिट कार्ड मुअत्तल कर दिये जाएंगे। जब ऐसे लोग ख़रीदारी के लिये जाएंगे तो उन्हें पता चलेगा कि उनका कार्ड "ब्लैक लिस्ट" कर दिया गया है। वह ख़रीदारी या ख़िदमात हासिल नहीं कर सकेंगे। पुराने सिक्कों से तिजारत को ग़ैर मअ़मूली जुर्म क़रार दिया जाएगा और इसकी सज़ा मौत होगी। ऐसे क़ानून शिकन अनासिर जो ख़ुद को मख़्सूस मुद्दत के दौरान पुलिस के हवाले करने में नाकाम रहें, इनकी जगह सज़ाए क़ैद भुगतने के लिये उनके किसी घर वाले को पकड़ लिया जाएगा।"

इन तीन इक़्तिबासात में से पहले इक़्तिबास में "छाप" की और दूसरे में इस निशान या "अदद" की तशरीह है जिसके बग़ैर कोई आठ आने की मूंग फली या दो रूपये की गाजरें भी न ख़रीद सकेगा। आप को अगर कहीं से बर्तानिया का पौंड हाथ लगे तो उसे उल्टा करके ग़ौर करें। उस पर 666 के हिंदसे की शबीह मिलेगी जो आहिस्ता आहिस्ता मुस्तक़बिल में वज़अ़ किये जाने वाले डीज़ाइन में मज़ीद वाज़ेह हो जाएगी। मुख़्तलिफ़ मल्टी नेशनल कम्पनियों की मस्नूआत पर जो "कोडबार" छपा हुआ होता है उसे कभी तवज्जोह से देखें। "6" का हिंदसा तीन मर्तबा तकरार के साथ आप को दुनिया की मअ़सियत पर दज्जाली तसल्लुत की धीरे धीरे बढ़ती हुई

गिरफ़्त की तरफ़ मुतवज्जोह कर रहा होगा।

दूसरा शैतानी हिंदसा:

666 के बाद सबसे बड़ा शैतानी हिंदसा 322 है। यह उमूमन जादूगरों के मशहूर हथियार "खोपड़ी और हड्डियां" के साथ दर्ज होता है। यहूदियों के ख़ुफ़िया जादूगरी इल्म "कबाला" में इसकी ख़ास अहमियत है और इसे इंतिहाई कारगर और मुअस्सिर असरात का हामिल समझा जाता है। 666 और 322 के बाद शैतानी जादूई अअ़दाद की फ़ेहरिस्त में 13 और 33 आते हैं। इन अअ़दाद को भी फ़्री मैसन के सामराजी जादूई माहिरीन ने अपने लिये ख़ुफ़िया निशान ठहराया है। क़ौमे यहूद की सिर्री जादुई रिवायात और इन अअ़दाद का आपस में गहरा तअ़ल्लुक़ है। तअ़ल्लुक़ अमरीका के सरकारी इदारों और निजी कम्पनियों के निशानात में वाज़ेह तौर पर देखा जा सकता है। मसलनः अमरीकी स्टेट आफ़ डिपार्टमेंट के निशान में दो चीज़ें आपको वाज़ेह और मुम्ताज़ नज़र आएंगी जो अमरीकी डालर की तरह अमरीकी इदारों की पहचान में हैं: उक़ाब और सितारे। इन दोनों में किसी न किसी तरह 13 का अदद पाया जाता है। उक़ाब के दाईं पंजे में तीर और बाएं में टहनी है। तीर 13 हैं और टहनी के पत्ते भी 13 हैं। सितारों को गिनें तो उनका अदद भी 13 है। फ़िल्मों और गानों में भी दूसरी दज्जाली अलामात के साथ साथ इस अदद की कारफ़रमाई दिखाई दे ही जाती है। मसलनः अमरीका में बसने वाले कुछ मुसलमान मुहक़्क़िक़ीन के मुताबिक़ मशहूर अमरीकी गुलूकारा मेडोना जिसको अमरीकी मीडिया के नामवर नाम (जो ज़ाहिर है कि शैतानी सहीवनी गिरोह से तअ़ल्लुक़ रखते हैं) सहर अंगेज़ बताते हैं, उसके गानों की मक़्बूलियत में उसकी सलाहियत और यहूदी मीडिया की हिमायत के अलावा "कबाला" के "सिर्री

इल्म" के माहिर यहूदी साहिरीन का भी ख़ास अमल दख़ल है। अमरीका में मुक़ीम वह मुसलमान जो दज्जाल की शैतानी मुहिम से आगाही रखते हैं, उनके मुताबिक़ यह औरत खुद भी शैतानी मज़हब की पैरूकार है। उसके शौहर से जुदाई का सबब उसका शैतानी मज़हब ही था और यह दूसरों को भी शैतान की गुलामी में मुब्तला करने की तग व दौ में लगी रहती है। इसके गानों में शैतान की पूजा पाट होती है और एक से ज़्यादा ऐसे शवाहिद और क़राइन पाए जाते हैं जिनसे साफ़ मअ़लूम होता है कि यहूदियों की आलाकार यह साहिरए आलम शैतान की पूजा की तरफ़ सामईन और नाज़िरीन को ग़ैर महसूस तौर पर माइल कर रही है। उसके गानों के लिये तैयार कर्दा स्टेज के लिये इतने ही क़दमचे होते हैं जितने फ्री मैसनरी के जादूई घरों की सीढ़ियों में यअ़नी तेरह अदद। 52 साल की उम्र में लटके हुए बदन की खपंजी खिंची हुई सरजरी करवा कर शैतानी हरकतों को फिर से ज़िंदा करने वाली यह कम नसीब ख़ातून गाने में कभी कुत्ता बन जाती है, कभी कव्वा, कभी काली माई जैसी मख़्लूक़, इसके मशहूर गानों के (Back) बेक ट्रेक पर शैतान को पुकारने की आवाज़ साफ़ सुनाई देती है यअ़नी सामने के अलफ़ाज़ (फ़ारवर्ड ट्रेक) कुछ और हैं और पीछे गाने के अलफ़ाज़ कुछ और हैं जिसमें शैतान को मदद के लिये पुकारा जा रहा होता है। "दज्जाल 2" में "दज्जाली रियासत के क़याम के लिये ज़ह्नी तसख़ीर की कोशिश" के उन्वान के तहत इसे तफ़सील से बयान किया जा चुका है। यह सारा गोरख धंदा यहूदी मीडिया ने फ़िल्म और मौसीक़ी की दुनिया को कंट्रोल करने वाले यहूदी माहिरीन के साथ मिल कर बनाया है और उनके फैलाए हुए यह जादूई और शैतानी अअ़दाद दरहक़ीक़त ख़ुदा के मुक़ाबले में शैतान की इबादत और उससे

इस्तिआनत का भौंडा इस्तेआरा हैं। चूंकि शैतानी कुव्वतें फ़रेबी और फ़ानी हैं, उसका जाल मकड़ी के जाले से भी ज़्यादा बोदा और कमज़ोर है, इसलिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त पर कामिल यक़ीन और उसकी मदद को हासिल करने वाले शरई अअ़माल इस शैतानी सिलसिले के तार व पोद को यूं बिखेर डालते हैं गोया वह कभी थे ही नहीं।

औंधा सितारा

ग्यारहवीं अलामत - औंधी नोक वाला सिताराः

मज़मून के शुरू में हमने अर्ज़ किया था कुछ अलामतें ज़िम्नी हैं। उनको हम आख़िर में बयान करेंगे। ज़िम्नी का एक मतलब यह है उसको शैतान के परसतार मख़्सूस मतलब में भी इस्तेमाल करते हैं और आम इस्तेमाल भी यक्सां तौर पर होता है। गोया यह आधो आध का मुआमला है। इन अलामात में सरे फ़ेहरिस्त पांच कोनों वाला औंधा सितारा है। यह अगर्चे दीगर ज्योमैट्रीकल इशकाल की तरह एक ख़ूबसूरत और जपती हुई शक्ल है जो बेधड़क मुख़्तलिफ़ उन्वानात और हवालों से इस्तेमाल होती है और होनी भी चाहिये कि किसी चीज़ को बिला वजह मशकूक या मतरूक क़रार नहीं दिया जा सकता, लेकिन इसका क्या किया जाए कि उसकी एक ख़ास सूरत यह पस पर्दा रहकर "न्यू वर्ल्ड आर्डर" नाफ़िज़ करने वालों के पुरअस्रार जादूई हथियारों में से एक हथियार के तौर पर भी इस्तेमाल होती है। ज़िम्नी अलामात में शुमार किये जाने की वजह यह है इस आजिज़ की तहक़ीक़ के मुताबिक़ यह सिर्फ़ उसी सूरत में शैतानी निशान क़रार दिया जाता है और जादू की रुसूमात में इस्तेमाल होता है जब यह पंजगोशा सितारा "औंधा" हो। औंधा होने से मुराद यह है कि उसकी पांचवीं नोक बिल्कुल नीचे की तरफ़ हो। इस सूरत में ख़ुदबख़ुद उसकी ऊपर की दो नोकें बकरे की सींग की शक्ल में ऊपर उठ जाती हैं, दो बकरे के कान की शक्ल में दाएं बाएं मुड़ जाती हैं और पांचवीं में बकरे की ठोड़ी समा जाती है। इस मख़्सूस

हय्यत में यह शैतान के चेहरे की शबीह बन जाती है और शैतानी रूहों को हाज़िर व ग़ाइब करने या अंधेरे की ताक़तों से मदद लेने और तिलिस्माती कामों में माफ़ूकुल फ़ितरत हराम तासीर पैदा करने के लिये इस्तेमाल होती है। सिफ़ली जादूगरों की सामरी रिवायात के मुताबिक़: "जब उसके गिर्द दाइरा खींचा हो तो यह अलामत अनासिर अरबआ (ज़मीन, पानी, हवा और आग) की नुमाइंदगी करती है जिनका एक रूह (जन्नत से निकाली हुई बदरूह यअ्नी शैतान) इहाता किये हुए होती है। तब यह मज़बूत अलामत में तबदील हो जाती है जिसकी पकड़ से निकलना माहिर रूहानी शख़्सियात यअ्नी सिफ़ली आमिलीन के अलावा मुश्किल होता है।" शैतान के हीले बुराई को अलामती तौर पर ज़ाहिर करने और शैतान से मदद हासिल करने के लिये उसकी एक नोक नीचे रख कर इस्तेमाल करते हैं, चाहे उसके गिर्द दाइरा हो या न हो, जबकि आम लोग जिनका इस शैतानी चक्कर से वास्ता नहीं, उसे एक नोक ऊपर रखकर या बग़ैर किसी ख़ास सिम्त में रुख़ दिये, उसे इस्तेमाल करते हैं, नोक या दाइरे के फ़लसफ़े का उन्हें इल्म नहीं होता, तो वह महज़ आराइशी अलामत के तौर पर उसे मुख़्तलिफ़ शक्लों में सजाते हैं। उन्हें इसमें मुज़मर मुतज़ाद हक़ीक़त की ख़बर ही नहीं होती। शैतान और उसके चेलों की ज़िल्लत और रुसवाई की इंतिहा मुलाहज़ा कीजिये कि अह्ले ईमान तो अल्लाह की तौहीद और बड़ाई डंके की चोट पर बयान करते हैं, तलवारों के साए तले और संगीनियों की नोक पर उसकी गवाही देते हैं, शैतान के पुजारी इसके बरअक्स चोरी छिपे, लोगों की बेख़बरी से फ़ाएदा उठा कर उसकी किसी अलामत को चोर ज़मीरों की तरह पीछे रह कर फैलाते हैं, उनमें इतनी सकत

नहीं कि अपने झूटे मअ़बूद का कोई वस्फ़ अगर हक़ीक़ी है तो उसे हक़ समझ कर हक़ीक़त की तरह खुल कर बयान कर सकें। ज़िल्लत बल्कि लअ़नत की इससे बदतरीन सूरत और क्या होगी जो शैतान के पीछे चलने वालों का मुक़द्दर है।

अंजामे गुलिस्तां क्या होगा?

बारहवीं अलामत - उल्लू के कानः

उर्दू के एक मशहूर शेअ्र का मिस्रा है जो किसी क़ौम के अस्बाबे ज़वाल की मुख़्तलिफ़ वजूह में से एक अहम वजह बयान करता है। आपने भी सुना होगा -

हर शाख़ पे उल्लू बैठा है, अंजामे गुलिस्तान क्या होगा?

उल्लू को हमारे यहां हिमाक़त, ग़बावत और हिक़ारत का दूसरा नाम समझा जाता है, "हुमा" नामी परिंदा किसी के सर पर बैठ जाए तो उसकी ख़ुशनसीबी की इंतिहा और उल्लू का किसी घर में बसेरा करना बदनसीबी की अलामत क़रार दिया जाता है, लेकिन अह्ले मग़रिब के पैमाने जिस तरह हम मश्रिक़ के बासियों से लेनदेन में मुख़्तलिफ़ हैं, उसी तरह यहां भी उनका अरफ़ व दस्तूर हमारे रिवाज और ज़बान से अलग है। ख़ुसूसन वह अह्ले मग़रिब जो इस्लामी दुनिया को तो क़दामत परस्ती का तअ्ना देते हैं, लेकिन ख़ुद बदतरीन क़िस्म की तो हम परस्ती में मुब्तला हैं। उल्लू की ख़िल्क़त चूंकि कुछ इस तरह की है कि उसे दिन को कुछ नज़र नहीं आता, रात होती है तो अंधेरा उसके लिये रौशनी का काम करता है, इसलिये यह दिन को वीरानों में बसेरा करता और रात को अपनी सरगर्मियों पे निकलता है। बस इसी चीज़ ने उसे जादूगरों और शयतनियत परस्तों के लिये पुरअस्रार और मन्फ़ी सरगर्मियों के लिये कारआमद बना दिया है। इस ग़रीब को ख़बर भी न होती होगी कि उसके बसरी ऐब और तन्हाई पसंदी को फ़रेबी और वह्मी सामरियत

परस्तों ने कैसा रंग दे दिया है? तवह्हुम परस्तों के नज़दीक उसकी मक़बूलियत, तासीर और तक़द्दुस का अंदाज़ा इस अम्र से बख़ूबी हो सकता है कि वह उसे या उसके मुख़्तलिफ़ अअ़्ज़ा को जादू टोने में तासीर के लिये इस्तेमाल करने के अलावा उसे मावराई ताक़त के हुसूल का ज़रीआ़ समझते हैं। अमरीका जैसे मुहज़्ज़ब मुल्क में इन वह्मी तसव्वुरात की कारफ़रमाई इस हद तक ऊंची सतह पर है कि अमरीका के डालर के एक कोने पर एक छोटा सा उल्लू (यअ़नी उल्लू का पट्ठा) जाली से झांक रहा है। अमरीका के नेशनल प्रेस क्लब के मोनोग्राम में एक दर्मियाने साइज़ का उल्लू पूरी शाने हिमाक़त के साथ बिराजमान है, जबकि वाशिंगटन डी सी की इमारत का आर्किटेक्चर फ़ज़ा से मुलाहज़ा किया जाए तो एक देवहैकल उल्लू यअ़नी ठीक ठाक क़िस्म का अज़ीमुल जुस्सा उल्लू आंखें मटकाए दिखाई देता है। अमरीका में शैतान परस्तों का एक गिरोह है जिसने अपने क्लब (बोहीमैन गरवू, सान फ़्रांसिस्को, कैलीफ़ोर्निया) का तआ़रुफ़ी निशान ही उल्लू को क़रार दिया है। दुनिया में कुछ इमारतें ऐसी बन रही हैं जिनके बारे में अह्ले नज़र की राए है कि वह उल्लू के कान और आंखों की शबीह को मद्दे नज़र रखकर डीज़ाइन की गई हैं। गोया कि उल्लू बेचारे के दो ही अअ़्ज़ा हमारे यहां मज़हका खेज़ और नामुबारक समझे जाते थे। लम्बूतरे कान और ज़िहानत से महरूम, हिमाक़त से भरपूर गोल मटोल आंखें। ख़ैर से दोनों ही को मग़रिब में वह क़द्र व मंज़िलत मिली है कि कम ही किसी के हिस्से में आई होगी। शैतान परस्तों और दजल कारों की यह अलामत हमारे मख़्सूस उर्फ़ और रिवाज की बिना पर हमारे यहां कम इस्तेमाल होती है, लेकिन मग़रिब में इसका इस्तेमाल भी ज़ोरों पर है। इसलिये हम

ने उसे ज़िम्नी और ग़ैर मअरूफ़ निशानियों में शुमार किया है, वर्ना तो मग़रिब में उल्लू के पट्ठे तो बाक़ाएदा उसकी पूजा करते हैं। इस पर हम "बोहीमैन गरवू" पर लिखे गए मज़मून में इंशा अल्लाह तफ़सील से गुफ़्तगू करेंगे।

☆☆☆

बैनस्सुतूर से सुतूर की तरफ़

बारह शैतानी अलामात का तज़किरा तो मुकम्मल हुआ। दस असली और दो ज़िम्नी। यह किस्सा हमने क्यों छेड़ा और इस सारी दर्दे सरी का मक्सद क्या है? फिर सबसे बढ़कर यह कि इस शैतानी मुहिम का शिकार होने से हम कैसे बच सकते हैं? रहमान का बंदा होने की हैसियत से हम पर इस शैतानी किस्म और दज्जाली फ़िल्ने के मुकाबले के हवाले से कुछ ज़िम्मादारियां भी आइद होती है या हम यूंही खुद को और इंसानियत को शैतानी मुहिम्मात के सामने बेदस्त व पा हद्फ़ बनता देखते रहें? इन सवालात का जवाब हम इन सुतूर के बैनुस्सुतूर में देते रहे हैं। अब मौका आ गया है कि इसकी तफ़सीली वज़ाहत कर देनी चाहिय, लेकिन इससे भी पहले एक और सवाल निहायत अहम और ज़रूरी है। इस पर हस्बे मुकद्दर गुफ़्तगू करने के बाद हम इंशा अल्लाह दर्जे बाला निकात की तरफ़ लौट आएंगे।

इन अलामात के फैलाने से दज्जाली कुव्वतों का मक्सदः

कारईन के दिल में मज़मून की इब्तिदा से बल्कि उन्वान पढ़कर कुदरती तौर पर एक सवाल पैदा हुआ होगा। यअ्नी शैतानी कुव्वतों की तरफ़ इन दज्जाली अलामात को फैलाने का मक्सद किया है? यहूदी मीडिया और सहीवनी मंसूबा साज़ इससे क्या हासिल करना चाहते हैं? पस पर्दा रह कर इन मुशतबा अलामतों को रिवाज देने की मुहिम से यह दुशमने इंसानियत दज्जाली गिरोह चाहता क्या है?

शैतान के पुजारियों और शैतान के सबसे बड़े हथियार और शैतानी कुव्वतों के सबसे बड़े हिमायत याफ़ता हरकारे "दज्जाले

अक्बर'' के चेलों की तरफ़ से इन अलामात और निशानात को इशारों किनायों में फैलाने के दो बड़े मक़ासिद हैं। पहला तबइयाती है और दूसरा मावरउत्तबयाती। एक का तअ़ल्लुक़ ज़ाहिरी अस्बाब से है और दूसरे का बातिनी तासीरात से। हम बिसात भर कोशिश करेंगे कि दोनों की आसान तशरीह कर सकें।

(1)......दज्जाल के लिये मैदान हमवार करनाः

पहला मक़्सद है कि कुर्रहये अर्ज़ी के बाशिंदों ख़ुसूसन तरक़्क़ी याफ़्ता मग़रिबी मुमालिक और बिल ख़ुसूस मुस्लिम मुमालिक में दज्जाल के ख़ुरूज के लिये ज़ह्नों को हमवार करना ताकि जब सरापा दजल व फ़रेब इस फ़ित्नए उज़्मा का ज़ुहूर हो तो मुहज़्ज़ब इंसानी दुनिया इस ग़ैर मुहज़्ज़ब हैवानी शतूनगड़े से नामानूस न हो, न उसे अजनबी या अपने एहसास व शुऊर से दूर महसूस करे। उसके साथ मख़्सूस अलामतें इतनी मर्तबा उनकी नज़रों से गुज़री हों, कान में पड़ी हों, दिल व दिमाग़ में जगह बना चुकी हों कि उन्हें सब कुछ अपना अपना, देखा भाला और शुऊर व एहसास से क़रीब क़रीब महसूस हो। ख़ास कर वह अलामतें जो दरहक़ीक़त आम इंसानी अक़्ल और उर्फ़ आम में ऐब समझी जाती हैं। मसलनः अंदर को धंसी हुई या बाहर को उभरी हुई आंख......या उनसे नफ़रत की जाती है, मसलनः सांप, सींग, खोपड़ी और हड्डियां वग़ैरा......या उनके जादूई व शैतानी पस मंज़र की बिना-पर लोग उनसे कराहत महसूस करते हैं, मसलनः जादूई अअ़दाद या आग वग़ैरा......इन सबसे आज की मुहज़्ज़ब और तालीम याफ़्ता दुनिया ऐसी आशना और मानूस हो जाए और दज्जाल के ख़ुरूज से पहले ही हर तरफ़ दज्जालियात का ऐसा चर्चा हो जाए कि हर बड़ा छोटा इस फ़ितने की हश्र सामानियों को मअ़मूल की चीज़ और इंसानियत के इस दुश्मन को बनी नोअ़

इंसानी के लिये खैर ख्वाही का मुजस्सम रूप समझने लगे। इसकी एक मिसाल हम दूसरी अलामत "इक्लौती आंख" में दे चुके हैं। एक आंख को इतना मशहूर किया जा रहा है कि रफ़्ता रफ़्ता दो आंखें हसीनों का हुस्न और जबीनों का इस्तिआरा नहीं बल्कि एक आंख हुस्न की अलामत और ताक़त का मंबअ़ समझी जाने लगेगी। यही वह दजल व फ़रेब होगा जिसका शिकार इंसानियत अपनी तारीख़ में कभी नहीं हुई होगी।

(2)......शैतान से मदद हासिल करना:

दूसरा मक़्सद पुरअस्रार है और मावराउत्तबइयात से तअ़ल्लुक़ रखता है। शैतान के चेले इन अलामात से न सिर्फ़ यह कि शैतानी ताक़त और शैतान की हिमायत हासिल होने का यक़ीन रखते हैं बल्कि इसमें ऐसी शैतानी तासीर के क़ाइल हैं जो शैतान की तवज्जोह खींचती है और इसे ख़ुदा की तरफ़ से बतौर आज़माइश व मुहलत दी गई, गंदी ताक़त को शैतान के पुजारियों के हक़ में इस्तेमाल करने की दरख़्वास्त करती है। यूं समझिये जिस तरह मुसलमान मुक़द्दस मक़ामात की शबीह या मुतबर्रक कलिमात का अक्स अल्लाह तआला की रहमत और उसकी तरफ़ से नाज़िल शुदा बरक़त के हुसूल के लिये शाए करते, फैलाते और आवेज़ा करते हैं, शैतान के चेले बिल्कुल इसी तरह इस लईन को ख़ुश या मुतवज्जोह करने के लिये इन अलामात को फैलाने और उनकी तशहीर करके लोगों को उनसे मानूस करते हैं ताकि शैतान अपनी औक़ात के अंदर रहते हुए उनकी नाजाइज़ सिफ़ली ख़्वाहिशात की तकमील में उनकी मदद करे और इसके बदले यह ज़्यादा से ज़्यादा दौलत व शोहरत हासिल कर सकें और हत्तल वसीअ़ हैवानी लज़्ज़त और शहवत पूरी कर सकें।

O......O......O

अस्ल मक्सद की तरफ़:

इस सवाल के जवाब से फ़ारिग़ होने के बाद हम इस तहरीर के अस्ल मक्सद की तरफ़ लौटते हैं। शर का तज़्किरा शर ही फैलाता है, यह ख़ैर सिर्फ़ उसी वक़्त बन सकता है जब शर की तरदीद की जाए, हक़ का गुर्ज़ बातिल के सर पर इस ज़ोर से मारा जाए कि उसका भेजा निकल जाए, जब हमने यह समझ लिया और महज़ अंदाज़े क़्याफ़े से नहीं, शवाहिद व क़राइन की रू से समझ लिया कि इन पुरअस्रार अलामात के पीछे "अस्रार" वग़ैरा कुछ नहीं, महज़ शैतान की रुसवाई और बनी आदम से इंतेक़ाम की दासतान है तो अब हमें जिस अलामत के बारे में यक़ीन हो......मज़्मून के आग़ाज़ में कह दिया गया था कि यक़ीनी बात का एतिबार है, वह्मी शक व शुबहात की कोई हैसियत नहीं,......तो जो अलामात यक़ीनी हैं उनसे बचना चाहिये। इंसानियत को बचाने की कोशिश करनी चाहिये......लेकिन क्या एक मुनज़्ज़म मुहिम के सामने इतना काफ़ी होगा? क्या हम हमेशा दिफ़ाअ़ ही करते रहेंगे? इस तरह तो यह दुनिया अंधेरी वारदातों का शिकार होकर शैतान की बस्ती बन जाएगी। वाक़िआ यह है कि हमें भी अल्लाह तआला को राज़ी करने या शयतनत को धुतकारने और उसके आलाकारों को नाकाम बनाने के लिये महज़ अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर हाथ पैर हिलाने पड़ेंगे। अल्लाह तआला की शान बहुत बुलंद है। वह बंदे के उस अमल से राज़ी होते हैं जो ख़ुलूस से भरा हुआ और मशक़्क़त व आज़माइश का सामना करते हुए जगह और माहौल की मुनासिबत से इख़्तियार किया जाए। फ़ितनों के इस दौर में इंसानियत को फ़ित्नों से बचाने की कोशिश (इंशाअल्लाह) अल्लाह तआला के क़ुर्ब और उसकी रज़ा हासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ साबित होगी। इसके

लिये हमें मरहला वार दर्ज ज़ेल तरतीब इख़्तियार करनी चाहिये ताकि न हम ख़ौफ़ज़दा हों और न किसी और को मरऊब व ख़ौफ़ज़दा करें। हम हक़ के अलमबरदार हों और बिला ख़ौफ़ व झिझक अपना फ़र्ज़ अंजाम दें। इस सिलसिले में हम बिरादराने इस्लाम की ख़िदमत में चंद बातें अर्ज़ करेंगे। यह गुज़ारिशात दरअसल फ़ित्नों के इस दौर में एक तरह का मरबूत और मुरत्तब लाइहा अमल हैं जिसके मुताबिक़ ज़िंदगी का मअ़मूल बनाने से इंशा अल्लाह तआला फ़ितनों से हिफ़ाज़त भी रहेगी और अल्लाह तआला की मुहब्बत व नुसरत भी हासिल होगी। दज्जाल 1 और 2 में इस तरह की तदाबीर बयान की जा चुकी हैं। यहां उस्लूब कुछ अलग है और नौइयत भी एक तरह से अलग है। इंफ़िरादी भी है और इज्तिमाई भी।

पहली और आख़िरी बात

इस शैतानी मंसूबे और दज्जाली मुहिम के ख़िलाफ़ लाइहा अमल के निकात तरतीब वार कुछ यूं हैं। इसमें से पहली और आख़िरी बात पूरी बहस का खुलासा और जान हैं।

पहली बातः सच्ची तौबा निहायत ज़रूरी हैः

सबसे पहले तो हमें हर तरह के गुनाहों से सच्ची तौबा करनी चाहिये। इस फ़ितना ज़दा दौर में सच्ची तौबा और रुजूअ़ इलल्लाह हमें आज़माइशों से महफ़ूज़ रख सकता है। नीज़ अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिये अब तक बेख़बरी में अगर किसी शैतानी अलामत को अपने लिबास, जूते, इश्तिहार या किसी और शक्ल में बर्ता हो, ज़बान से इसका इज़हार किया हो तो इसको अल्लाह पाक मुआफ़ फ़रमा दें। आईंदा के लिये ऐसे आमाल को तौफ़ीक़ मिल जाए जो इन शैतानी आमाल को धुतकारने और उनके ख़िलाफ़ जिद्द व जिहद का ज़रीआ हों। शैतान को मक्र व फ़रेब मकड़ी के जाले की तरह इंतिहाई बोदा और उसके मंसूबे और चालें इंतिहाई कमज़ोर हैं। दिल की तवज्जोह से एक मर्तबा अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करने, उसकी किब्रियाई बयान करने या एक लाहौल पढ़ने की देर होती है, यह वावेला करता हो, सर में मिट्टी डालता हुआ भागता है। मग़रिबी दुनिया तो वह्ये इलाही की मुक़द्दस व मुबारक तअ़लीमात और उसके नूर व हिफ़ाज़ती हिसार से महरूम है। इसलिये वह शैतानी क़ुव्वतों की यलग़ार के सामने बहती चली गई। अहले इस्लाम को अल्लाह तआला ने बाबरकत किताब और सच्ची तालीमात दी हैं। मुस्लिम उम्मा के पास अल्लाह की किताब और नबी सल्ल0 के फ़रामीन

अस्ल हालत में मौजूद हैं, जिनमें आख़िरुज़्ज़मां के फ़ितनों की वज़ाहत खूब तफ़सील से की गई है, उसे चाहिये कि सारी दुनिया के लिये ख़ैर और सलामती की दाई बन जाए और मग़रिब के शैतान गुज़ीदा और सितम रसीदा इंसानों को गुनाहों और गुमराहियों के इस गढ़े से निकालने की कोशिश करे जिसमें शैतान के पैरूकारों और दज्जाल के आलाकारों ने इसे धकेलने की कोशिश जारी रखी हुई है। जब अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी तौफ़ीक़ से सच्ची तौबा नसीब हो जाए तो इसके बाद उस पर क़ाइम रहने के लिये दो काम कीजिये।

(2) इस्लाही हल्के से जुड़ जाइयेः

तौबा के बाद अगला काम यह है अपने "इल्म व अमल" को शरीअ़त व सुन्नत से क़रीब तर लाने की जिद्द व जिहद कीजिये। इसका आसान तरीक़ा यह है ऐसे इल्मी व इस्लाही हल्क़ों से जुड़ जाइये जहां अह्ले हक़ उलमाए किराम और मशाइख़े इज़ाम शरीअ़त व सुन्नत का नूर फैला रहे हैं और फ़ित्नों के इस दौर में अपने पैरों तले आने वाले उम्मतियों के ईमान की यूं हिफ़ाज़त कर रहे हैं जैसे मुर्ग़ी अपने नादान और कमज़ोर बच्चों की हिफ़ाज़त करती है। एक नो मुस्लिम पादरी से राक़िमुल हुरूफ़ ने पूछाः "जब आप कुफ़्फ़ार की सफ़ में थे और मुसलमानों को मुर्तद बाने की कोशिश कर रहे थे तो मुसलमानों में सबसे ज़्यादा किसी तबक़े को अपने काम में रुकावट समझते थे या हमारी किस तहरीक से ख़तरा महसूस करते थे?" उन्होंने बरजस्ता कहाः "दो क़िस्म के मुसलमानों को। एक वह जो मुसलमानों को मस्जिद से जोड़े। जो मस्जिद से जुड़ जाता है वह अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्ल0 से जुड़ जाता है और हम तो लोगों को अल्लाह और रसूल से दूर करना चाहते थे। दूसरे वह लोग जो जिहाद की बात करें। यअ़नी अमलन जिहाद करें या न,

लेकिन सिर्फ़ जिहाद को फ़र्ज़े ऐन बताएं, लोगों को यह समझाएं कि क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह शरई फ़राइज़ में से एक फ़र्ज़ है। यह हमारे लिये सबसे ज़्यादा ख़तरनाक थे। इनका कोई इलाज हमारे पास नहीं है।" मुहतरम क़ारईन! दरअसल न इल्मी और इस्लाही हल्क़ों, जो मसाजिद व मदारिस और ख़ानक़ाहों में क़ाइम होते हैं, से जुड़ने की बहुत सी बरकात हैं। एक अहम फ़ाएदा और अज़ीम बरकत यह होती है, इंसान की सबसे क़ीमती मताअ़ यअ़नी उसका ईमान महफ़ूज़ रहता है। उसको मस्नून आमाल से शनासाई पैदा होती है। मस्नूई ज़िंदगी अपनाने का शौक़ औरं रहमत पैदा होती है। यह ऐसी चीज़ है जिसकी बरकत से इंशा अल्लाह आप शर व फ़ितन और शैतानी मुहिम्मात के बातिनी व नफ़सियाती जरासीम से महफ़ूज़ रहेंगे।

(3) जदीदियत के झांसे में न आइयेः

इसके बाद जदीदियत के फ़ितने से बचने की कोशिश कीजिये। नई चीज़ों से मुतअस्सिर होने के बजाए अपने इस क़दीम और असली दीन और उसकी मुबारक तअ़लीमात से चिमटे रहने की फ़िक्र कीजिये जो बरहक़ और सरापा सिद्क़ है। जदीदियत का लेबल लगी चीज़ों ख़ुसूसन मग़रिब से आई हुई चीज़ों और मग़रिब ज़दा लोगों से बचिये। उनके नज़रियात व अफ़कार से भी और उनकी तहज़ीब व रिवायात से भी। यह लोग बातों बातों में इंसान को फ़ितने में मुब्तला कर देते हैं। मसलन मग़रिबज़दा दीनी स्कालर हमें "माडर्न इस्लाम" समझाने की कोशिश करते हैं जबकि माडर्न इस्लाम कोई चीज़ नहीं। इंसान या तो मुसलमान है या कुछ और है। बीच का दोग़ला रास्ता निफ़ाक़ है। इसी तरह नावल, कार्टून और फ़िल्मों के ज़रीए अह्ले मग़रिब अपने दज्जाली नज़रियात हमारे ज़ह्नों में उंडेलने की कोशिश करते हैं। वह जादूई एतिक़ादात की तरवीज के लिये फ़र्ज़ी मख़्लूक़

और वह्मी शख़्सियात के क़िस्से कहानियां लिखते और उन पर फ़िल्में बनाते हैं। उड़ने वाला अज़दहा, सींगों वाला नाक़ाबिले शिकस्त ह्योला, परों वाली ख़लाई मख़्लूक़, निचला धड़ घोड़े जैसा और ऊपर का इंसानों जैसा, मावराई ताक़तों की हामिल पुरअस्रार फ़र्ज़ी शख़्सियात, यह सब कुछ दरअस्ल इंसान को ज़ह्नी तौर पर मरऊब करने और नफ़सियाती शिकस्त और टूट फूट का शिकार करने के बाद उस पर क़ाबू पाने की कोशिशें हैं। लिहाज़ा खुद को और अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को फ़र्ज़ी नावल, कहानियां पढ़ने और फ़िल्में और कार्टून वग़ैरा देखने से बचाएं। नीज़ ऐसे नीम मज़हबी मग़रिबी स्कालरों के बयानात न सुनें जो खुद सीरते रसूलुल्लाह सल्ल० और उस्वए हसना से महरूम हैं। तहरीफ़ के नाम पर जदीदियत के फ़ित्ना उज़्मा का शिकार हैं और इस रास्ते से वह हमें अबाहियत और फिर दज्जालियत की तरफ़ ले जाना चाहते हैं, क्योंकि इसमें शक नहीं इस तरह की मख़्लूक़ से मुतअस्सिर इंसान तारीकी के अलमबरदार और नामानूस क़िस्म की फ़ित्ना बाज़ व फ़ित्ना परवर मख़्लूक़ "दज्ज़ाले अक्बर" का आसान तरीन शिकार होगा।

(4) शरीअ़त व सुन्नत को तर्ज़े हयात बनाइयेः

जो अल्लाह का कुर्ब चाहता है, वह शरीअ़त व सुन्नत को तर्ज़े हयात बनाए और शैतानी कामों और दज्जाली फ़ितने से अपने आप को बचाए। इन दोनों का फ़ितना शर और बातिल परस्ती का फ़ितना है। इसका इलाज ख़ैर को फैलाने और ख़ुदा परस्ती को आम करने में है। जहां शरीअ़त का हुक्म ज़िंदा होगा, हुज़ूर सल्ल० की सुन्नत पर अमल होगा, वहां शैतान शिकस्त खाएगा और वावेला करते हुए भागेगा। जहां इंसान गुनाह करेगा, हैवानात की तरह नफ़्स परस्ती में मुब्तला होगा, वहां शैतान का काम आसान होगा और इंसानियत

फ़ितना दज्जाल के फंदों में फंसती चली जाएगी। अल्लाह व रसूल से मुहब्बत करने वालों के लिये यह इम्तिहान का वक़्त और ग़ैरत दिखाने का लम्हा है कि वह अपने ख़ालिक़ व मालिक रब के दीन और अपने मुहसिन व मुशफ़िक़ नबी (सल्ल0) की उम्मत की हिदायत और इस्तिक़ामत के लिये क्या कुछ करते हैं और अपने और सारी दुनिया के दुशमनों और उनके चेलों के मुक़ाबले में कितनी मशक़्क़त उठाते और इस्तिक़ामत का मुज़ाहरा करते हैं?

(5) मस्नून आमाल और मस्नून दुआओं का एहतिमाम कीजियेः

अलावा अर्ज़ीः दज्जाल का फ़ितना शैतान का अज़ीम फ़ितना है। इससे दिफ़ाअ़ के लिये रहमानी हिसार में आना ज़रूरी है। रहीम व रहमान ज़ात की मदद और उसकी हिफ़ाज़त के हिसार में आने के लिये रहमतुल लिल आलमीन सल्ल0 की मुबारक सुन्नतों पर अमल, मत्तबअ़ सुन्नत मशाइख़ किराम की सोहबत और मस्नून आमाल ही वाहिद ज़रीआ हैं। सूरए कह्फ़ की इब्तिदाई दस आयात और आख़िरी रुकूअ़ के बारे में हदीस शरीफ़ में बताया गया है कि फ़ितनए दज्जाल और उसके ज़हरीले असरात व जरासीम के ख़िलाफ़ मज़बूत तरीन हिसार और मुअस्सिर तरीन हथियार है। इनका सुब्ह शाम विर्द कीजिये। इसी तरह उन दुआओं का भी एहतिमाम कीजिये जिन्हें मुहद्दिसीन की इस्तिलाह में "तअ़व्वुज़ात" कहा जाता है यअ़नी जिनमें "अऊज़" का लफ़्ज़ आता है और उनके ज़रीए हमारे मुहसिन हक़ीक़ी जनाब नबी करीम सल्ल0 ने हमें फ़ितनों और नागवार चीज़ों से पनाह मांगने की तलक़ीन व तअ़लीम की है। यह दुआः

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ، وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْعَجْزِ
وَالْکَسَلِ، وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّیْنِ

وَقَهْرِ الرِّجَالِ."

नीज़:

"اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّفِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ."

(सही बुख़ारी, किताबुद्दअ़वात:2/944)

आख़िरी बातः नज़रियए जिहाद को ज़िंदा कीजियेः

आख़िरी बात यह कि मनहूस शैतानी अलामात और मक्रूह दज्जाली निशानात की रोकथाम कीजिये। इसकी जगह अल्लाह की तस्बीह और तक़दीस को आम कीजिये। रहमानी शआ़इर का एहतिराम कीजिये। गुनाह छोड़ने और छुड़वाने की तरग़ीब दीजये और दज्जाली फ़ितने के वाहिद हल "जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह" के अज़ीम फ़र्ज़ की अदाइगी की फ़िक्र कीजिये। अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिये हलाल कमाइये और अपनी जान को अल्लाह के लिये क़ुर्बान करने के लिये तैयार रखिये। नज़रियए जिहाद को ज़िंदा कीजिये और क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह के साथ किसी न किसी दर्जे में जुड़ जाइये। जान, माल, ज़बान......दामे, दर्मे, सख़्ने......किसी न किसी शक्ल में फ़र्ज़ "क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह" अदा कीजिये। इससे ग़ाफ़िल रहना इज्तिमाई ख़ुदकशी है। यह ज़िल्लत वाली ज़िंदगी को क़बूल करने हसरतनाक़ मौत को दावत देने के मुतरादिफ़ है। लिहाज़ा हर हाल में इसमें किसी न किसी शक्ल में उससे जुड़े रहना ज़रूरी है। यह किसी भी इशकाल की बिना पर साक़ित नहीं है। रोज़े क़्यामत यह सवाल नहीं होगा कि नेकी की जिद्द व जिह्द में कितनी कामियाबी हासिल की? सवाल यह होगा कि नेकी फैलाने और बदी के ख़ातमे के लिये अपनी मक़दूर भर कोशिश क्यों नहीं की? हम सब को वह लम्हा याद रखना चाहिये जब हम से यह सवाल होगा, लाज़िमन होगा और

बरसरे आम होगा। फिर हमारे सामने ख़ैर के दाइयों और इस्लाम के सिपाहियों को एज़ाज़ात व इन्आमात मिलेंगे और ख़ैर व शर के मअ़रके फिसड्डीपन दिखाने वालों को हसरत और अरमान के अलावा चारा न होगा। हमें उस वक़्त की हसरत और नदामत से बचने के लिये आज की मुहलत से फ़ाएदा उठा लेना चाहिये। फ़ितनए अज़ीम के मुक़ाबले में क़लील अमल का अज्र इंशा अल्लाह बहुत अज़ीम और हमारे तसव्वुर से बालातर है।

ब्लैक वाटर से आर्टीफ़िशल वाटर तक

दज्जाली रियासत के क़याम के लिये फ़ितरी क़ुव्वतों को मुसख़्ख़र करने की इबलीसी कोशिशें:

फ़ारसी का मशहूर शेअ़र है: "ख़ामोशी मअ़नी दारद कि दर गुफ़तन नमी आयद" यअ़नी ख़ामोशी की भी एक ज़बान होती है जो बोलती ज़बानों से ज़्यादा मअ़नी ख़ेज़ और असर अंगेज़ होती है। हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी रहि0 अपने मुरीदीन और रुऊसा व उमरा की भरी महफ़िलों में ख़ामोश बैठे रहा करते थे। किसी ने पूछा: "हज़रत! आप बोलते नहीं कि हाज़िरीन को फ़ाएदा हो।" फ़रमाया: "जिसने हमारी ख़ामोशी से कुछ न समझा वह हमारे बोलने से भी कुछ न समझेगा।" सैलाब जब तबाहियों के दौर की इब्तिदा कर रहा था, तो अहबाब की एक महफ़िल में अज़ीज़म सय्यद अदनान काख़ील ने पूछा: "यह समझ नहीं आया कि सैलाब अज़ाब है तो सरहद और जुनूबी पंजाब में ज़्यादा क्यों आया है? यह दोनों इलाक़े तो दीनदारी के हवाले से मअ़रूफ़ हैं।" कुछ दोस्तों ने इस आजिज़ की तरफ़ देखा कि कुछ बोलेगा। मैं ख़ामोश रहा तो एक और साहब ने इस सवाल पर दूसरे सवाल की थप्पी लगाई: "हां! यह लोग सख़्त इब्तिला में हैं जबकि पंजाब के वह बड़े शहर जो माहे रमज़ान में भी अपनी कारसतानियों के हवाले से मअ़रूफ़ हैं, अमन व अमान से हैं।" अब बोलना कुछ ज़रूरी हो गया था लेकिन यह आजिज़ फ़क़त इतना कहकर ख़ामोश रहा: "अल्लाह तआला सबको अपने अमन व अमान में रखे।" बाद में शाह साहब को अलग करके कहा: "यह सैलाब, हैटी के ज़लज़ले और जद्दा के सैलाब की तरह मस्नूई है। इन

इलाक़ों के बाद यह आहिस्ता आहिस्ता और आगे बढ़ेगा, फिर सितमगर नामेहरबां, ख़ैरख़्वाह मेहरबानों के रूप में नाज़िल होना शुरू हो जाएंगे।''

अक़्लमंद के लिये इशारा काफ़ी होता। शाह साहब ने शायद दज्जाल 1 का मुतअ़ल्लिक़ा हिस्सा पढ़ रखा था। फिर उन्हें उस आजिज़ के मुख़्तसर तर्ज़े गुफ़्तगू से आगाही भी थी। मज़ीद कुछ न पूछा अलबत्ता इस्तिफ़ादा भरी नज़रों से मेरी तरफ़ देखा तो मैंने यह कह कर गुफ़्तगू ख़त्म कर दीः ''अन्क़रीब नेट पर और फिर अख़्बारों में यह बात आनी शुरू हो जाएगी लेकिन हस्बे मअ़मूल नज़रअंदाज़ कर दी जाएगी।'' इस वाक़िए को तक़रीबन दो हफ़्ते हो गए हैं। इस अर्से में हम अह्ले वतन के दुख दर्द समेटने और मक़्दूर भर ख़िदमत में मसरूफ़ रहे और बवजूह मुख़्तलिफ़ नामों से हमारे मज़ामीन छपते रहे। इंतेज़ार था कहीं से जमूद टूटे तो हम कुछ बोलें वर्ना फ़क़ीरों की कौन सुनता है? हत्ता कि वह ख़बर कल जुमा के दिन क़ौमी अख़्बारात के पहले सफ़्हे पर आ गई है जिसकी तरफ़ बंदा आज से तीन साल पहले ''दज्जाल1'' में क़ुदरती वसाइल पर दज्जाली क़ुव्वतों के क़ब्ज़े के तरीक़ेकार और उसके नताइज के उन्वान से तफ़सील से लिख चुका था। ख़बर का अक्स आप मज़मून के साथ देख रहे हैं। पहले ''दज्जाल1'' के दो पैराग्राफ़ पढ़ लीजिये, फिर इस ख़बर का मतन देख लीजिये। मुवाज़ना और नताइज का अख़्ज़ आपका काम है जबकि हल और लाइहा अमल मुतज़क्किरा किताब के अलावा कई मर्तबा बयान किया जा चुका है। ''दज्जाल 1'' सफ़्हा 261 पर अर्ज़ किया थाः

''अमरीकी साइंसदानों ने एक इदारा क़ाइम किया है जो मौसमों में तबदीली से बराहे रास्त तअ़ल्लुक़ रखता है। यह इदारा न सिर्फ़

मौसमों में तग़य्युर का ज़िम्मादार है बल्कि कुर्हे अर्ज़ में ज़लज़लों और तूफ़ानों के इज़ाफ़े का भी ज़िम्मादार है। इस प्रोजेक्ट का नाम Haarp यअ़नी "हाई फ्रीक्वेन्सी एक्टूवार वर्ल रीसर्च प्रोजेक्ट" है। इसके तहत 1960 ई0 के अशरे से यह तर्जुबात हो रहे हैं कि राकिटों और मस्नूई सय्यारों के ज़रीए बादलों पर कीमियाई माद्दे (बैरियम पाऊडर वग़ैरा) छिड़के जाएं जिससे मस्नूई बारिश की जा सके। यह सारी कोशिशें कुदरती वसाइल को कब्ज़े में लेने की हैं ताकि दज्जाल जिसे चाहे बारिश से नवाज़े जिसे चाहे कहत साली में मुब्तला कर दे। जिससे वह खुश हो उसकी ज़मीन में हरियाली लहराए और जिस से बिगड़ जाए वहां ख़ाक उड़े। लिहाज़ा मुसलमानों को कुदरती ग़िज़ाओं और कुदरती ख़ूराक को इस्तेमाल करना और फ़रोग़ देना चाहिये। यह हम सब के लिये बेदार का वक़्त है कि हम कुदरती ख़ूराक (मस्नून और फ़ितरी ख़ूराक) इस्तेमाल करें और मस्नूई अशया या मस्नूई तरीके महफ़ूज़ कर्दा अशया से खुद को बचाए जो आगे चल कर दज्जाली ग़िज़ाएं बनने वाली हैं।"

दो सफ़्हे बाद की इबारत भी देख लीजिये: "आपने महसूस किया होगा कि कुर्हे अर्ज़ के मौसम में वाज़ेह तबदीलियां आ रही हैं और मौसम और माहौल संगीन तबाही से दो चार हो रहे हैं। दुनिया भर में इस हवाले से मज़ामीन और साइंसी फ़ीचर्ज़ शाए हो रहे हैं। मज्मूई दर्जा हरारत में इज़ाफ़ से तूफ़ान, सैलाब और बारिशों की शर्ह ग़ैर मअ़मूली तौर पर मुतग़य्यिर हो गई है। अगर्चे इसको फ़ितरी अमल करार दिया जा रहा है लेकिन दरहकीकत यह तसख़ीर काइनात के लिये की जाने वाली उन शैतानी सांइसी तर्जुबात का नतीजा और मौसमों को काबू में रखने की कोशिशों का नतीजा है जो मग़रिब में जगह जगह मौज़ूद यहूदी सांइसदान हज़रत दाऊद की नस्ल से

आलमी बादशाह के आलमी ग़ल्बे की ख़ातिर कर रहे हैं।"

अब उस ख़बर का मुतालआ कर लीजिये जो नेट से होती हुई बिलआख़िर अख़्बारात के सफ़्हे पर आ गई है।

"पाकिस्तान में ग़ैर मअमूली बारिशों और उनके नतीजे में रूनुमा होने वाले सैलाब के अस्बाब तलाश करने वालों में वह लोग भी शामिल हैं जो माहौल कंट्रोल करने वाली ख़ुफ़िया अमरीकी टेक्नालोजीज़ पर नज़र रखते हैं। अमरीकी हार्प टेक्नालोजी पर हालिया सैलाब का इल्ज़ाम आइद किया जा रहा है। यह वह टेक्नालोजी है जिसके ज़रीए बालाई फ़ज़ा में बर्क़ी मक़्नातीसी लहरों का जाल बिछा कर मौसम के लगे बंधे ढांचे को तहस नहस कर दिया जाता है और इसके नतीजे में मूसलाधार बारिशें होती हैं। सैलाब आते हैं और बर्फ़बारी बढ़ जाती है। इसी टेक्नालोजी को इंजीनियर ज़लज़लों और समंद्री तूफ़ानों की पुश्त पर कारफ़रमा बताया जाता है। इंटरनेट पर मुख़्तलिफ़ ज़राए से मंज़रे आम पर आने वाली रिपोर्ट्स में बताया गया है कि पाकिस्तान में बारिशों के सिलसिले को हार्प टेक्नालोजी के ज़रीए दिया गया। सिर्फ़ चार दिनों में सब कुछ बदल गया। दुनिया भर के मौसमियाती माहिरीन ने भी इस हवाले से कुछ नहीं कहा था। कोई इंतिबाह भी जारी नहीं किया गया था। हार्प (हाई फ़्रीक्वेंसी एक्ट्यूआर वर्ल रीसर्च प्रोग्राम) अमरीकी फ़ौज का एक हस्सास प्रोग्राम है जो कई बरसों से मुतनाज़अ़ चला आ रहा है। 1997 ई0 में उस वक़्त के अमरीकी वज़ीरे दिफ़ाअ़ विलियम कोहन ने भी इस प्रोग्राम को मुतनाज़अ़ क़रार दिया था। बाख़बर ज़राए बताते हैं हार्प भी इन प्रोग्रामों का हिस्सा है जो 2020 तक पूरी दुनिया पर अमरीकी तसर्रुफ़ यक़ीनी बनाने के लिये शुरू किये गए हैं। इन ज़राए का दावा है कि मौसमियाती

निज़ाम के ढांचे को बदल कर बहुत से मुमालिक को शदीद मआशी बुहरान से दो चारा किया जा सकता है। रूस के मअरूफ़ स्कालर और स्ट्रीटजक कल्चर फ़ाउंडेशन के नाइब सरबराह आंद्रे अरीशैफ़ ने रूस के जंगलों में लगने वाली भयानक आग को भी अमरीकी हार्प टेक्नालोजी के इस्तेमाल का नतीजा क़रार दिया है। माहिरीन का कहना है कि ज़मीनी दरयाओं की तरह दो मील की बुलंदी पर बुख़ारात की शक्ल में भी दरया पाए जाते हैं। दुनिया भर में ऐसे दस फ़ज़ाई दरया हैं जिनका रास्ता रोक कर ग़ैर मअमूली बारिश और सैलाब की राह हमवार की जा सकती है। हार्प और दीगर मुतअल्लिक़ा टेक्नालोजीज़ की मदद से बारानी हवाओं के निज़ाम को ग़ैर मुतावाज़िन करके बारिश को क़ुदरती मक़ाम और डेड लाइन तबदील कर दी जाती है। यह सब माहौलियाती दहशतगर्दी के ज़ेल में आता है और ख़ुद अमरीकी माहिरीन और सियासतदान भी इस हवाले से ख़बरदार करते रहे हैं।"

(रोज़नामा उम्मतः जुमा 27 अगस्त 2010 ई०)

मुश्किलात तो आप ने सुन लीं। हल क्या है? सिर्फ़ "बी एंड बी" यअ़नी बुरूनाई और बहरैन वह बहुत छोटे और इंतेहाई मालदार मुस्लिम मुल्क ऐसे हैं कि अपनी दौलत का ख़ुम्स यअ़नी 20 फ़ीसद जो मअ़दनियात की ज़कात का शरई निसाब है, अदा करने लगें तो मुसलमानों को बैरूनी इम्दाद और बैरूनी इम्दाद को फ़ौजों की कोई ज़रूरत नहीं होगी न किसी से क़र्ज़ लेने और दुनिया भर में इम्दाद की दुहाई देने और ख़्वार फिरने का ख़तरा होगा, लेकिन मुसलमान हुक्मरान अपने उड़न खटोलों को नए सिरे से सोने से सुनहरा कर रहे हैं जिसकी जांच पड़ताल की भी किसी सियासी अदाकार को ज़रूरत है न सियासी हिदायत कार को हिम्मत कि "ब्लैक वाटर" के बाद

अब यह "आर्टीफ़िशल वाटर" क्या कुछ साथ ला रहा है और क्या कुछ बहा कर ले जाएगा? ख़बर आई है कि बुरूनाई के सुल्तान हसन बलक़ियवा की हिदायत पर 233 मिलियन डालर की मालियत की जहाज़ों को अज़सरे नो तज़ईन करके सोने से बनी हुई अशया से सजाया गया है और हर छोटे बड़े फ्रेम और फर्नीचर को ख़ालिस सोने की प्लेटों से तैयार किया गया है। मौसूफ़ 20 मिलियन डालर की जाईदाद के मालिक हैं। अगर वह और उनके तबक़े के मुसलमान ज़रदार उमरा......हमवतन हों या हम मज़हब......अपनी तिजोरी बंद, दौलत का ढाई फ़ीसद यअ़नी सिर्फ़ ज़कात भी अदा करें तो हम अमरीकी इम्दाद के थैलों से गिरा हुआ आटा सड़कों पर से चुन कर खाने और "यौमे दिफ़ाअ़" की जगह "साले दिफ़ाअ़" मनाने से बच सकते हैं लेकिन हम तो पहले से मौजूद "शह्बाज़ों" को बचाने के लिये "जमाल शाहों" को डुबोने से भी दरेग़ नहीं कर रहे। मुर्दों की क़ब्रों पर चिराग़ जलाए रखने के लिये ज़िंदों के घरों में अंधेरा किया जा रहा है। एन जी ओज़ के मुताबिक़ 72 हज़ार बच्चों की ज़िंदगी को ख़तरा है, इसलिये वह इम्दादी कार्रवाइयां जारी रखेंगी, लेकिन जो बच्चे इम्दादी कैम्पों से ग़ाइब हो रहे हैं या किये जा रहे हैं, उन्हें किस से ख़तरा है? इसका कोई ज़िक्र नहीं। ज़र्दारों को ज़रगिरी से फ़ुर्सत मिलने तक, "राज़दार" राज़ों के राज़ तक ही न पहुंच जाएं। ख़ुदा नख़्वास्ता हाकिम बदहन ज़र रहे न ऐटम का ज़र्रा। अल्लाह रहम करे। दुआ और दवा दोनों की ज़रूरत है। रुजूअ़ इलल्लाह और ख़िदमते ख़ल्क़ दोनों से दरीग़ न किया जाए। हमें अपने काम में लगा रहना चाहिये। ज़मीन वाले जो कुछ मंसूबे बनाएं आसमान वाले की बादशाही आसमानों और ज़मीनों पर क़ाइम दाइम है और उसकी तदबीर सब तदबीर करने वालों की तदबीर से बेहतर है।

नीली बर्फ़ और गर्म बारिश

"मस्नूई सैलाब" वाला मज़मून पढ़कर क़ारईन के दिलचस्प, मुतनव्वअ़ और मुख़्तलिफ़ तअस्सुरात मौसूल हुए। आज की मजलिस में आप को इन तअस्सुरात में शरीक करना चाहूंगा।

अक़ीदा और अक़ीदत:

बअ़ज़ ठेठ क़िस्म के दीनदार अहबाब का कहना था यह तो अल्लाह के कामों में मुदाख़लत है। इसका इख़्तियार किसी को कैसे हासिल हो सकता है? इन हज़रात की तवज्जोह उन अहादीस की तरफ़ नहीं गई जिनमें दज्जाल को दी गई उन ग़ैर मअ़मूली शुअ़बदा नुमा सलाहियतों का ज़िक्र है जो इससे भी आगे की चीज़ हैं और जिनकी बिना पर वह अपनी झूटी खुदाई का दावा करेगा। जिसको (यअ़नी मुनाफ़िक़ीन को) चाहेगा ख़ुशहाल व सरशार कर देगा और जिसको (यअ़नी मुख़्लिस मोमिन को) चाहेगा रोटी पानी बंद कर देगा। उसके साथ ख़ूराक के ज़ख़ीरे भी होंगे और जन्नत नुमा बाग़ भी। क़ुदरती वसाइल पर भी उसने क़ब्ज़ा कर रखा होगा और इंसानी ज़िंदगियों से खेलने पर भी क़ुदरत हासिल कर रखी होगी। दज्जाल को रहने दें। मग़रिब जहां दज्जाली तहज़ीब जनम लेकर फ़रोग़ पा रही है वहां देख लें। भेड़ से शुरू होने वाला क्लोनिंग का सिलसिला, गाए, ऊंटनी और इंसानों तक जा पहुंचा है। तो क्या इसे खुदाई इख़्तियारात का हुसूल कहेंगे? नहीं हरगिज़ नहीं! यह तो अल्लाह तआला की कमाले क़ुदरत और कमाले तख़्लीक़ का एक और सुबूत है। रब तआला ने न सिर्फ़ यह कि इंसान और दीगर जानदारों को पैदा किया बल्कि इंसान के जिस्म में ऐसे हज़ारों ख़लिये पैदा कर

दिये जिन से हर इंसान जैसे हज़ारों इंसान बन सकते हैं। क्लोनिंग के ज़रीए सांइसदानों ने अज़ खुद कोई चीज़ तख़्लीक़ नहीं की। अल्लाह की तख़्लीक़ कर्दा मख़्लूक़ के अंदर पहले से मौजूद एक पोशीदा चीज़ को ज़ाहिर करके अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की कुदरत का एक और मज़हर दुनिया के सामने लाया है। इसी अहसनुल ख़ालिक़ीन की शाने ख़ल्लाक़ियत का एक और पहलू दुनिया के साम्ने आशकार हुआ है। न यह कि हगने मूतने और लेबारट्रियों में पेशाब पाख़ाना का तज्ज़िया करके पैसा कमाने वाले साइंसदान मआज़ल्लाह खुदाई में शरीक हो गए हैं। बिल्कुल इसी तरह अगर आसमान पर मौजूद बादलों या ज़मीन पर पहले जमी बर्फ़ पर मक़्नातीसी शुआएं डाल कर उन्हें पिघला दिया जाए और पानी की एक बड़ी मिक़्दार जिसे अल्लाह तआला ने पहले से तख़्लीक़ कर रखा है, को एक दम इंसानी आबादियों पर छोड़ दिया जाए तो इस दज्जाली हरकत में खुदाई सिफ़त कहां से आ गई? यह तो बेगुनाह और सादा लौह इंसानियत को कुर्ब व अज़ियत में मुब्तला करने वाली शैतानी हरकत हुई जो दज्जाली कुव्वतों की इन काविशों का हिस्सा है जिसके मुताबिक़ वह अपनी झूटी खुदाई की राह हमवार कर रहे हैं। उनके इस इंसानियत सोज़ हरकत से न अक़ीदे के एतिबार से किसी वह्म में पड़ना चाहिये न उसे ख़िलाफ़े हक़ीक़त या ख़िलाफ़े अक़ीदे क़रार देकर नज़र अंदाज़ करना चाहिये।

ख़ौफ़ या उम्मीद?

बअ़ज़ लोगों का कहना था इससे ख़ौफ़ व हरास फैलेगा। अब आप ही बताइये दुशमन के आने की ख़बर देने से जो ख़ौफ़ फैलता है उससे तो मुज़ाहमत की उम्मीद पैदा होती है। अगर दुशमन से मुतमंइन हो लिया जाए तो इस बेजा ख़ुशफ़हमी और शिकस्त में

फ़ासला ही कितना रह जाता है? और दज्जाल तो ऐसा फ़ितना है कि तमाम अंबियाए किराम ने......हज़रत नूह अलै0 से लेकर ख़ातिमुन नबिय्यीन सल्ल0 तक......तमाम अंबियाए किराम ने इससे डराया है। क्या नबवी फ़राइज़ या मअ़मूलात में ख़राबी का अंदेशा हो सकता है? इससे तो इंशा अल्लाह ख़ैर जनम लेती है। वह ख़ैर जो ग़फ़लत के साथ जमा नहीं होती, जुस्तजू और आगाही से ही फूटती है। हमसे बेहतर तो मग़रिब के वह मुहक़्क़िक़ हैं जो इस तरह की चीज़ों पर नज़र रखते और दुनिया को उनसे आगाह करते रहते हैं। मग़रिब में उनकी तहक़ीक़ात को हाथों हाथ लिया जाता है और उनका तन्क़ीदी जाइज़ा लेने के साथ उन्हें क़द्र की निगाह से देखा जाता है। हमारे यहां दुशमन के अस्लहा ख़ाने पर नज़र नहीं रखी जाती। अगर कोई जुस्तजू करके खोज निकाल लाए तो उसे दीवाना क़रार दिया जाता है। दीवानगी का यह इल्ज़ाम उस वक़्त तक तवातुर से दिया जाता है जब तक दुशमन की यलग़ार फ़र्ज़ानों के सर पर नहीं आ पहुंचती!

बअ़ज़ हज़रात को जदीद साइंस की इंकिशाफ़ाती शुअ़बदा बाज़ियों पर इतना तअ़ज्जुब होता है कि वह एहसासे कमतरी में मुब्तला हो जाते हैं या उनका इंकार कर बैठते हैं। यह दोनों रद्दे अमल महल्ले नज़र हैं। अगर इंसान का चांद पर जाना साबित हो जाए तो इसमें इस्लामी अक़ाइद के ख़िलाफ़ कौन सी बात होगी या कौनसा मुअजज़ाना क़िस्म का कमाल होगा? क्या जिन्नात पलक झपकते में दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक नहीं चले जाते? चांद से भी ऊपर आसमानों पर जाकर फ़रिश्तों की बातें नहीं सुनते? इसमें कमाल क्या हुआ? उल्टा पत्थर का पत्थर खाकर मरदूद होकर भागते हैं। अगर जिन्नात बग़ैर किसी सवारी के ख़ला में चले जाते हैं तो आलमी तसख़ीर के मंसूबे पर अमल करने वाले कुछ बदनियत

इंसानों ने सवारी पर चढ़कर चांद तक रसाई हासिल कर ली तो इसमें इतनी बड़ी कौनसी बात है कि हम इसको शरई मुसल्लमात के ख़िलाफ़ और उसके इन्कार को सिहते एतिक़ाद के लिये लाज़िम क़रार देने लगें? शैतान को अगर अल्लाह तआला ने क़्यामत तक की उम्र और सारे बर्रे आज़मों में मौजूद हर शख़्स के दिल में वसवसा डालने की सलाहियत दे रखी है तो क्या शैतान के चेलों (शैतान का सबसे बड़ा चेला दज्जाले आज़म) को इस तरह की सलाहियत नहीं दी जा सकती? फिर ईमान वालों की आज़माइश ही क्या होगी? उन्हें इम्तिहान से गुज़रे बग़ैर जन्नत किस बुन्याद पर मिलेगी? मुसलमान का ईमान दो टूक और खरा होना चाहिये। इस तरह के शैतानी शुअ़बदा बाज़ों से उसको वसवसों का शिकार न होना चाहिये। अलबत्ता दलाइल व शवाहिद की बिना पर तहक़ीक़ व तजस्सुस और तन्क़ीद व तमहीस हमारा फ़र्ज़ है। आइये! अह्ले मश्रिक़ के मुशाहिदे और अह्ले मग़रिब के तज्ज़िये पर एक नज़र डालते हैं।

अह्ले मश्रिक़ का मुशाहिदाः

गुज़िश्ता दिनों आज़ाद कश्मीर के दूर दराज़ इलाक़ों में जाना हुआ। वहां के बहुत से लोगों ने बताया कि यहां बारिशें ज़्यादा नहीं हुईं। यहां जिस ग़ैर मअ़मूली सैलाब ने तबाही मचाई वह पहाड़ों पर जमी "नीली बर्फ़" के यक्दम पिघलने और फिर "गर्म बारिश" बरसने से हुआ। नीली बर्फ़ उस बर्फ़ को कहते हैं जो हर साल जमने और पिघलने वाली बर्फ़ के नीचे बीसियों फ़िट नीचे सदियों से जमी हुई है। "कील" और "दवारियां" नामी दूर दराज़ इलाक़ों के बड़े बुज़ुर्गों का कहना था कि एक धमाका हुआ जिससे उड़ने वाली बर्फ़ के टुक्ड़े मीलों दूर तक घरों में जा गिरे। इसके बाद "गर्म बारिश" हुई। इसमें भीगने से इंसान को सर्दी नहीं लगती, गर्मी लगती है।

मौजूदा सैलाब की इब्तिदा कशमीर से हुई थी और कशमीर के सैलाब की इब्तिदा "नीली बर्फ" और "गर्म बारिश" से हुई थी। पूरे पाकिस्तान में फिर जो कुछ हुआ इससे पहले नहीं हुआ था। जिस तरह हुआ वह किसी की समझ में नहीं आया। यह सब क्या है? कुदरती वसाइल और फ़ित्री मौसम को अपने क़ाबू में दुनिया देखेगी। नजाने उस वक़्त फ़क़ीर कहां होगा? इंसान समझना चाहे तो थोड़ा भी बहुत है। न समझने पर अड़ा रहे ज़्यादा भी कम पड़ जाता है।

अह्ले मग़रिब का तज्ज़िया:

मग़रिब में जो अह्ले नज़र दज्जाली कुव्वतों के आलाकार नहीं वह इस तरह की हरकतों पर नज़र रखते हैं, लेकिन यह आजिज़ भी पहले कह चुका है कि वह उसकी ग़र्ज़ व ग़ायत को ज़्यादा गहराई से नहीं समझते न उनकी तहक़ीक़ात के नताइज दजल व फ़रेब के उस पर्दे को चाक कर सकते हैं जो इंसानी तारीख़ के सबसे बड़े फ़ितने ने अपने आगे तान रखा है। उनके मुताबिक़ यह पुरअसरार नामअ़लूम कुव्वत जो मुख़्तलिफ़ मुल्कों के मौसमी हालात को हैरान कुन तौर पर तबदील करने में मुलव्विस बताई जाती है, आलमी माहिरीन के मुताबिक़ अमरीकी महकमा दिफ़ाअ़ का एक ख़ुफ़िया इदारा "हार्प" (Haarp) है। हार्प का पूरा नाम High Frequency Active Auroral Research Program है। मुख़्तसर अलफ़ाज़ में कहा जा सकता है कि हार्प मौसम पर कंट्रोल हासिल करने की जदीद तरीन सलाहियत है जिसके ज़रीए बालाई फ़ज़ा के एक मख़्सूस हिस्से को नपी तुली मिक़्दार में बर्क़ी तवानाई से निशाना बना कर हर क़िस्म के समंद्री तूफ़ान (Hurricane), घन गर्ज के साथ तूफ़ानी बारिश, सैलाब और बगूलों वाले तूफ़ान

(Tormadoes) के अलावा खुश्क साली से भी अह्ले ज़मीन को दो चार किया जा सकता है। आलमी सतह पर मौसमों को कंट्रोल करने वाला यह मराकिज़ अमरीकी रियासत अलास्का में काकोना के वीरान मक़ाम पर 25 करोड़ डालर की लागत से तक़रीबन 20 साल के अर्से में मुकम्मल किया गया है। 14 एकड़ रक़्बे पर फैला हुआ हार्प मर्कज़ 360 रेडिया ट्रांसमीटर्ज़ और 180 एन्टीना पर मुशतमिल है। 22 मीटर तक बुलंद यह एन्टीना तबाही के हथियार हैं जहां से कई अरब वाइस कुव्वत की बर्क़ी तवानाई हाई फ़्रीक्वेंसी रडियाई लहरों के ज़रीए ज़मीनी फ़ज़ा से ऊपर मौजूद बरक़ाई हुई हिफ़ाज़ती तह की जानिब फेंकती जाती है जिसे Lonosphere कहते हैं। कई ज़मीन पर ज़िंदगी के लिये सूरज की बालाए बफ़्शी ख़तरनाक ताबकारी हीटर है। दुनिया के जिस शुमाली ख़ित्ते से उसे बनाया गया है, वह इस लिहाज़ से आईडियल है कि सांइसदान वहां से बालाई फ़ज़ा की जानिब बर्क़ी तवानाई फेंकने और उसे ज़मीन पर वापस लाने में अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ कामियाब रहते हैं। इस मंसूबे का सबसे अहम खुफ़िया मक़्सद यही था कि Lonosphere को कैसे और कहां शुआओं के ज़रीए निशाना बनाया जाए कि ताबकार लहरें वापस ठीक उसी मक़ाम पर ज़मीन से टकराएं जहां साइंसदान चाहते हैं और इसके नतीजे में मतलूबा क़िस्म की तबाही या मौसम की तबदीली का हद्फ़ हासिल किया जाए? सूनामी में यह शुआएं हिद्फ़ पर थी जबकि कतरीना में हिद्फ़ से चौक गई थीं। जिस दिन इन शुआओं का हस्बे मंशा सौ फ़ीसद दुरुस्त इस्तेमाल दरयाफ़्त कर लिया गया जिस दिन बरमूदा तिकोन में कारफ़रमा मक़्नातीसी शुआओं पर मुकम्मल कंट्रोल हासिल कर लिया गया उस दिन दुनिया

झूटी खुदाई और मज़लूम इंसानियत पर नाजाइज़ तसख़ीर के सफ़्फ़ाकाना मुज़ाहरा का वहशतनाक मुज़ाहरा देखेगी।

तअ़बीर का फ़र्क़:

अमरीका के खुफ़िया मौसमियाती जंगी मंसूबे "हार्प" से मुतअ़ल्लिक़ मुतअ़द्दद दस्तावेज़ी किताबें लिखी जा चुकी हैं जबकि दस्तावेज़ी फ़िल्में भी बनाई गई हैं। इस सिलसिले की सबसे मशहूर किताब "इंजील्ज़ डोंट प्ले दिस हार्प, ऐडवांसिज़ इन टैसला टेकनालोजी" है। टैसला टेक्नालोजी पर यह आजिज़ "दज्जाल1" में तफ़सील से लिख चुका है। "दज्जाल1" ऐसी अजीब किताब है कि उसमें लिखी गई अक्सर बातों की मुशाहदाती तसदीक़ इतनी जल्द सामने आने पर कभी खुद मुसन्निफ़ को भी तअ़ज्जुब होने लगता है। मज़कूरा बाला किताब के मुसन्निफ़ निक बीकंच और जिन मैतिग ने पूरी दुनिया की मिल्कियत Lonsphere को अमरीकी फ़ौज की जानिब से अपने मज़मूम मक़ासिद के लिये इस्तेमाल करने पर शदीद तन्क़ीद करते हुए कहा है: "जम्हूरी हुकूमतों को अपनी पालीसियां बिल्कुल साफ़ और वाज़ेह रखनी चाहियें जबकि हमारे यहां ख़ास तौर पर मिलिट्री साइंस को सात पर्दों में छिपा कर रखा जाता है।" इस ख़तरनाक अमरीकी प्रोग्राम (जिसे राक़िमुल हुरूफ़ एक बार फिर दज्जाली प्रोग्राम क़रार देते हुए ज़रा भी नहीं हिचकिचाएगा) से मुतअ़ल्लिक़ दीगर अहम किताबों में "ऐरा वाशिंगटन" की तसनीफ़ कर्दा "हार्प - दी पाथ आफ़ डिस्ट्रिक्शन" और मुसन्निफ़ जैरी स्मिथ की दो किताबें "हार्प, दी अल्टीमेट वेपन आफ़ कांसपीरेसी" और "वेडर वारफ़ियर" शामिल हैं।

रूस के जंगलों से लेकर हेटी और चिली के ज़लज़ले तक और जद्दा के सैलाब से लेकर पाकिस्तान में आए तूफ़ान तक जो कुव्वत

कारफ़रमा है उसे मग़रिब में "तख़रीबी साइंस" कहा जाता है, जबकि हम उसे दज्जाली कुव्वतों की कारसतानियों का नाम देते हैं। आने वाला वक़्त बतायेगा कौनसी तअ़बीर हक़ीक़त के ज़्यादा क़रीब और वाक़िआ़त पर ज़्यादा मुंतबिक़ होती है?

☆☆☆

लार्ड के तख़्त की बुन्याद

मस्जिदे अक्सा के इंहिदाम और यहूदी बस्तियों के क़्याम का सहीवनी फ़ल्सफ़ा बेनक़ाब पहली और आख़िरी बारः

इस्राईल की तारीख़......शायद......अपनी "आख़िरी बार" की तरफ़ जारी है, तभी उसके सरपरस्ते आला अमरीका ने तारीख़ में "पहली बार" उन इस्राईली बस्तियों की तअ़मीर की मज़म्मत की है जो आज तक उसकी आशीरबाद से आबाद होती चली आई थीं। अमरीकी वज़ीरे ख़ारिजा मुहतरमा हैलरी किलिंटन साहिबा ने उसे अमरीकी नाइब सदर जौज़फ बाईडन की इहानत क़रार दिया है, क्योंकि इस्राईली वज़ीरे आज़म ने नई बस्तियों की तअ़मीर का एलान उस वक़्त किया जब अमरीकी नाइब सदर इस्राईल के दौरे के लिये "मसीहा की सरज़मीन" पर क़दम रंजा फ़रमा रहे थे। इस्राईली वज़ीरे आज़म ने हस्बे मअ़मूल रिवायती चर्ब ज़बानी से काम लेते हुए तअ़मीर के इस मंसूबे की "इन्क्वाइरी का हुक्म" दिया है। अमरीकी सदर ने उनकी मअ़ज़रत क़बूल करने से इंकार करते हुए उनके एलान को अमने अमल के लिये तबाहकुन और अपनी हितक क़रार दिया है। मुम्किन है अमरीकी सदर और वज़ीरे ख़ारिजा के बयानात "तजाहुले आरिफ़ाना" न हों, लेकिन यह बात यक़ीनी है कि बनी इस्राईल की रियासत के सरबराह का यह एतिज़ार और इंक्वाइरी "तग़ाफ़ुले मक्काराना" है। वह ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं कि बस्तियों की यह तअ़मीर "उस फ़रीक़" के ख़िलाफ़ "ततहीर" का "बातिनी मंसूबा" है जिसका तअ़ल्लुक़ "उलूही दाइरे" में शामिल होकर "नजात के हुसूल" से भी है और "मुतलक़े हाकिमियत" के

क़्याम के लिये "मसीहाना आइडियालोजी" से भी। यह एक ऐसा "ग़ैर मन्तक़ी अंजाम" है जो शैतान की कुव्वत और उसकी "अर्ज़ी तजसीम" को तोड़ कर "पाक करने का अमल" भी है और ख़ुदा की "मुन्तख़ब मख़्लूक़" के "क़दीम घर" को दोबारा रौशनी और ज़िंदगी की तरफ़ लाने का "उलूही अमल" भी है।

अबरानी अदब की गाढ़ी इस्तिलाहात:

राक़िम को एहसास है ऊपर की आख़िरी चंद सतरों में बहुत ज़्यादा गाढ़ी इस्तिलाहात इस्तेमाल हुई हैं जो अक्सर क़ारईन के लिये अजनबी और नामानूस होंगी। दरअसल जब तक क़ौमे यहूद और यहूदियत के बारे में ख़ुद कट्टर यहूदियों की इबरानी में अपने बारे में लिखी गई तहरीरों को न पढ़ा जाए तब तक उन हक़ाइक़ से वाक़फ़ियत हासिल नहीं की जा सकती जो इस्राईली यहूदी मुआशरे में मौजूद और मौजूदा बनी इस्राईल की नफ़्सियात पर असरअंदाज़ हैं। ग़ैर यहूदियों को रहने दीजिये, इस्राईल से बाहर रहने वाले यहूदी भी इस्राईल के यहूदी मुआशरे में पाए जाने वाली इस बुन्याद परस्ती से जो जुनून की आख़िरी हदों को छू रही है, नीज़ इसके पीछे कारफ़रमा "मावराउत्तबइयाती अवामिल" से इस लिये वाक़फ़ियत नहीं रखते कि वह जदीद यहूदी रुजहानात का मुतालआ इबरानी में लिखी गई यहूदी मुसन्निफ़ीन तहरीरों की रौशनी में नहीं कर सकते। अंग्रेज़ी में क़ौमे यहूद के नज़रियात व रुजहानात पर जो कुछ लिखा जाता है, वह बनी इस्राईल की हक़ीक़ी ज़हनियत के हवाले से बुन्यादी हक़ाइक़ को "बाक़ाएदगी से नज़र अंदाज़" करने पर मुशतमिल होता है।

इख़्तियारी और ग़ैर इख़्तियारी वुजूहात:

इसकी एक वजह तो यह है कि यह लिखने वाले (चाहे वह राबर्ट फ़िस्क जैसे मुअ़तदिल स्कालर क्यों न हो) इबरानी मआख़िज़ से

बराहे रास्त इस्तिफ़ादा नहीं कर पाते, न उनकी तवज्जोह इन असल मआख़िज़ के मुस्तनद तर्जुमों पर होती है, न वह इबरानी जानने वाले फ़लस्तीनी स्कालर्ज़ की तहरीरों को इंसाफ़ पर मब्नी तर्जुमानी क़रार देते हैं, लिहाज़ा वह बहुत छोटे छोटे मौज़ूआत पर सतही क़िस्म की इल्मियत तो बघार लेते हैं, लेकिन अपने पढ़ने वालों को यहूदी मुआशरे और क़ौमे यहूद की नफ़्सियात का रास्त फ़ह्म अता नहीं कर सकते। यह तो ग़ैर इख़्तियारी वजह हुई। दूसरी वजह इख़्तियारी है और हल्के से हल्के अलफ़ाज़ में इसकी तअ़बीर की जाए तो कहना पड़ता है कि अंग्रेज़ी बोलने वाले मुमालिक की किताबों की दुकानों की अलमारियां जिन मशहूर ज़माना मुसन्निफ़ीन की फ़लस्तीन पर लिखी गई किताबों के बोझ तले कराह रही हैं, उनकी अक्सरियत (अंग्रेज़ी ख़्वां तबक़े से मअ़ज़रत के साथ) मुनाफ़िक़ है। वह इस्राईल में ज़ुहूर पज़ीर होने वाले रुजहानात और इक़्दामात का जामेअ़ तज्ज़ियां नहीं करते और गुमराहकुन हद तक ग़ैर वाक़ई मअ़लूमात फ़राहम करते हैं।

अर्ज़े फ़लस्तीन पर इस्राईली बस्तियों की तअ़मीर की "यहूदी रूहानियत" के तनाज़ुर में "मुतसव्विफ़ाना तौजीह" इतनी हैरान कुन नहीं जितना कि नाइब अमरीकी सदर की आमद के मौक़ा को इस एलान के लिये मख़्सूस करना। हम कोशिश करेंगे कि इन मुब्हम बातों के हवाले से क़ारईन को ज़्यादा देर तजस्सुस व इस्रार में न रखें और यहूदी मआख़िज़ के हवाले से तरतीबवार उनकी तशरीह करें।

ग़ासिबाना कार्रवाइयों के दो पहलू:

फ़लस्तीन की बाबरकत ज़मीन पर यहूदी बस्तियों की तअ़मीर का एक तो माद्दी और सियासी पहलू है जो दुनिया के सामने वाज़ेह है और यहूदी बुन्याद परस्त राहनुमाओं के दर्ज ज़ेल बयानात से

मज़ीद वाज़ेह हो जाता है जो हम मग़रिबी और यहूदी प्रेस से नक़्ल करेंगे। दूसरा पहलू रूहानी या माबअ़दुत्तबइयाती है जिसे यहूदी दानिश्वरों की इस्तिलाह में "इस्राईल की बाज़याफ़्त की मसीहाना जिहत" कहा जाता है।

पहला पहलू - नस्ली बरतरी का जाहिलाना ज़अ़मः

इब्तिदा हम पहले नज़रिये से करते हैं। इसकी दो मिसालों पर इक्तिफ़ा काफ़ी होगा।

(1) ऐलियाज़र वाल्डमैन इस्राईल का मशहूर "रिबाई" है (यह लफ़्ज़ अस्ल में "रिब्बी" है बमअ़नी ख़ुदा परस्त मज़हबी पेशवा, लेकिन चूंकि इसका तलफ़्फ़ुज़ आम क़ारी "रिब्बी" करता है, इसलिये हम "रिबाई" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करेंगे।) यह दरयाए उर्दुन के मग़रिबी किनारे में ग़ासिबाना तौर पर क़ाइम की गई एक बस्ती "कुरैत अरबा" के मशहूर "पेशवा" यअ़नी मज़हबी तअ़लीमी इदारे का सरबराह है। यह अपनी मुक़्तदिर मज़हबी हैसियत के सबब मुख़्तलिफ़ यहूदी जराइद में वक़्तन फ़वक़्तन इस क़िस्म के मज़ामीन लिखता है जो दुनिया भर के यहूदी तवज्जोह और एहतिराम से पढ़ते और उसका दिया हुआ ज़ह्न लेते हैं। 21 जून 2002 ई0 को न्यूयार्क से शाए होने वाले मशहूर यहूदी जरीदे "ज्यूश प्रेस" में उसने अपने एक मज़मून में किसी क़िस्म का तकल्लुफ़ किये बग़ैर फ़लस्तीनी मुसलमानों की ज़मीनों पर क़ब्ज़े के हवाले से खुल कर लिखाः

"इस्राईल के फ़रज़ंदों का इस्राईल की सरज़मीन से मुन्फ़रिद तअ़ल्लुक़ है जिसका मुवाज़ना किसी भी क़ौम के उस वतन के साथ तअ़ल्लुक़ से नहीं किया जा सकता। हमारा तअ़ल्लुक़ तो ज़मीन आसमान की तख़्लीक़ के वक़्त वजूद पज़ीर हुआ था। हमारे हाथ का मुक़द्दर है कि यहूदियों को ज़िंदगी दें और यहूदियों का मुक़द्दर है कि

वह सरज़मीन को ज़िंदगी दें। जिस तरह जिलावतन यहूदियों को "कब्रिस्तान में मौजूद हड्डियों" से तश्बीह दिया गया है, उसी तरह यहूदियों से ख़ाली अर्ज़े इस्राईल को एक "वीरान मक़ाम" कहा गया है। यह फ़रमान रियासते इस्राईल के जनम का हक़ीक़ी सबब हैं। यह रौशनी रियासते इस्राईल को घेरे हुए मुल्कों की तारीख़ में दाख़िल हो जाएगी। हम जो जूडिया और समारिया में ग़ैर मुल्की इलाक़ों पर क़ाबिज़ नहीं हो रहे। यह तो हमारा क़दीम घर है। और ख़ुदा का शुक्र है कि हम इसे दोबारा ज़िंदगी की तरफ़ ले आएं हैं। बदक़िस्मती से यशा में हमारे कुछ क़दीम शह्राब भी ग़ैर मुल्कियों के ग़ैर क़ानूनी क़ब्ज़े में हैं (यअ़नी मक़ामी फ़लस्तीनी मुसलमानों की आबाई मिल्कियत में हैं: राक़िम) जो कि इस्राईल की नजात के "अलूही अमल" में ख़लल अंदाज़ हुए हैं। यहूदी अक़ीदे और नजात के हवाले से हमारी ज़िम्मादारी है कि हम मज़बूत और वाज़ेह आवाज़ में बात करें। हमारे लोगों को मुत्तहिद करने के "अलूही अमल" और हमारी सरज़मीन को "सलामती" और "डिप्लोमेसी" के बज़ाहिर मन्तक़ी तसव्वुरात से धुद लाना और कमज़ोर नहीं करना चाहिये। वह सिर्फ़ सच को मस्ख़ और हमारे काज़ के इंसाफ़ को कमज़ोर करते हैं। हम बाअक़ीदा लोग हैं। यह हमारी अबदी शनाख़्त का जौहर और हर तरह के हालात में हमारी बक़ा का राज़ है। हम अपनी शनाख़्त की पोशीदगी में ज़लील व ख़्वार हुए और लताड़े गए। हमें हमारे वतन में वापस लाने वाले नजात के अमल ने हमें हमारी ज़ात वापस दे दी है जिसको मज़ीद नहीं छिपाया जा सकता। हम आलमी स्टेज पर वपास आ चुके हैं, हम एक ज़िम्मादार हैसियत पा चुके हैं, जिसे हम दोबारा कभी नहीं गंवाएंगे। हमारे मौक़िफ़ का सिर्फ़ ऐसा ही वाज़ेह, जुर्अतमंदाना और मुसलसल इज़हार ही हमारे दोस्तों और दुशमनों को

यहूदियों और अर्ज़े इस्राईल की अबदी हकीकत का एहतिराम करने पर आमादा करेगा।"

(2) "कशईतज़ाइयून" एक और क़ाबिज़ बस्ती है। इसके आबादकारों यअ़नी क़ब्ज़ा गीर रिहाइशों का लीडर "मशाल गोल्डअस्टाइन" है। यह असकरियत पसंद आबादकार इतने जारिहियत पसंद हैं कि यह बदनाम ज़माना इस्राईली वज़ीरे आज़म ऐरियल शेरोन जैसे शिद्दत पसंद को भी हल्का हाथ रखने का तअ़ना देते थे और उसने जब 2003 ई0 में दुनिया को दिखावे के लिये कुछ छोटी छोटी बस्तियां ख़त्म करने का एलान किया ताकि उनके रिहाइशियों को बड़ी बस्तियों में मुंतकिल किया जा सके तो बहुत से बुन्याद परस्त क़ब्ज़ा कारों को यह भी बर्दाश्त न हुआ और उन्होंने "क़ब्ज़े" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करने पर एरियल शेरोन पर सख़्त तन्क़ीद की। उनके मुतज़क्किरा बाला लीडर ने कहाः "मैं वज़ीरे आज़म की बात पर बहुत ज़्यादा हैरान और गुस्से में हूं। मैं तो अपने आप को इस इलाक़े पर क़ाबिज़ नहीं समझता। यह तो हमारा इलाक़ा हमारा वतन है।"

यह दो मिसालें जिनसे उन इस्राईली काबज़ीन की इस मज्नूनाना और मुजरिमाना ज़ह्नियत को समझने में मदद मिल सकती है जिनका सामना निहत्ते और तन्हा फ़लस्तीनी मुसलमानों को है। न सिर्फ़ यह कि उन मज़लूमों से उनकी आबाद ज़रख़ेज़ ज़मीनें और अंगूर व ज़ैतून के बाग़ात से सजे हुई शादाब कतअ़े छीने जा रहे हैं, बल्कि शिद्दत पसंद और बदमिज़ाज व ख़र दिमाग़ यहूदी काबिज़ीन इसे अपना हक़ और कारे फ़ज़ीलत समझ रहे हैं। वाह मेरे मौला! तेरी यह अजीबुल ख़िल्क़त इस्राईली मख़्लूक कैसी बदबख़्त क़ौम है और यह कैसी जांगसल आज़माइश है जो फ़लस्तीन के मज़लूमों पर

आई है।

दूसरा पहलू - मसीह से तअल्लुक़ नजात का ज़ामिन हैः

नाजाइज़ यहूदी बस्तियों को जवाज़ फ़राहम करने के फ़ल्सफ़े का दूसरा पहलू रूहानी या मा बअ़दुत्तबइयाती तसव्वुरात पर मब्नी है। इन तसव्वुरात का तअल्लुक़ "मसीह परस्ती" या "मसीहाना आइडियालोजी" से है। यहां इस बात की वज़ाहत ज़रूरी नहीं होनी चाहिये कि यहूदी तहरीरात में जब भी "मसीह" या "ताक़तवर हस्ती" या "नजात दहिंदा" जैसे अलफ़ाज़ का ज़िक्र आए तो इससे मुराद काइनात का फ़ितनए अक्बर "दज्जाले मलऊन" होता है। लिहाज़ा आइंदा इन अलफ़ाज़ को खुद बखुद इस मअ़नी के तनाज़ुर में पढ़ा और समझा जाए। इस आइडियालोजी में यह फ़र्ज़ किया जाता हैः "मसीह की आमद मुतवक़्क़ो है और यहूदी खुदा की मदद से ग़ैर यहूदियों पर ग़ल्बा पा जाएंगे और हमेशा उन पर हुकूमत करेंगे। (और माशा अल्लाह यहूदी की ग़ैर यहूद पर यह हुकूमत खुद ग़ैर यहूदियों के लिये बेहतर बल्कि उनके हक़ में नेअ़मत होगी)

इस नज़रिये के मुताबिक़ः "नजात नज़दीक है, क्योंकि मसीह की आमद क़रीब हैं। और मसीह की आमद को जो चीज़ इल्तिवा में डाल सकती है, वह इस्राईल की विरासती सरज़मीन पर ऐसे लोगों का क़ब्ज़ा है जो रूहानी एतिबार से "ताक़तवर हस्ती" से तअ़ल्लुक़ नहीं रखते और इस ख़ामी की बिना पर वह नजात पाने की अह्लियत नहीं रखते। अगर कोई मसीह परस्त जिसका तअ़ल्लुक़ रूहानी एतिबार से "मुक़्तदिर तरीन हस्ती" के साथ क़ाइम है, किसी जानदार या बेजान चीज़ (मसलनः ज़न, ज़र या ज़मीन) को छू ले या अपनी मिल्कियत बना ले तो वह नजात पा जाएगी।"

"नजात" के इस तसव्वुर और मसीह से तअ़ल्लुक़ हासिल करके

"ततहीर बख़्शने" के इस नज़रिये का इतलाक़ अर्ज़े फ़लस्तीन पर भी होता है बल्कि इसका अव्वलीन इतलाक़ इसी मिस्दाक़ पर होता है। लिहाज़ा "मसीहाना आइडियालोजी" के मुताबिक़ जब कोई यहूदी काबिज़ किसी फ़लस्तीनी मुसलमान से उसकी आबाई मिल्कियती ज़मीन छीनता है तो यह कब्ज़ा गीरी नहीं, या धौंस धांदली से लेता है तो यह सीना ज़ोरी नहीं, यह तो "पाक करने का अमल" है। मसीह परस्तों के मुताबिक़ इस ज़मीन को "शैतानी हल्क़े" से निकाल कर "उलूही हल्क़े" में दाख़िल करके नजात दिलाई जाती है। नजात का मतलब यह कि जब ज़मीन या कोई कभी मन्क़ूलाना या ग़ैर मन्क़ूलाना चीज़ मसीह से अपनी निस्बत करने वाले यहूदी से मन्सूब हो जाती है तो वह इस काइनात की "कुल" और "वाहिद सदाक़त" तक रसाई हासिल करके शर से नजात पा जाती है। इस्राईल की "उलूही फ़तह" के लिये ज़मीन को शर अंगेज़ नापाकी से पाक करना ज़रूरी है। अगर्चे यह अमल इंतिहाई हलाकत ख़ेज़ क्यों न हो यअ़नी एटम बम जैसी इंतिहाई मुह्लिक चीज़ के इस्तेमाल की नौबत क्यों न आ जाए।

दर्ज बाला फ़ल्सफ़ा मुबालेग़ा आमेज़ ख़्याल या वह्म मअ़लूम होगा अगर हम यहां भी कुछ नामवर "रिबाइयों" के कम अज़ कम दो हवाले न दें। मुलाहज़ा फ़रमाइये:

"(1) शरमिया हू एरियली इस्राईल में मुक़ीम रिबाइयों में मुन्फ़रिद व मक़ाम और मंसब का हामिल है। वह 1967 ई0 की जंग जिसमें इस्राईली अफ़्वाज ने अलक़ुद्स समेत बहुत से मुस्लिम इलाक़े पर क़ब्ज़ा किये रखा, के मुतअ़ल्लिक़ लिखता है:

"1967 ई0 की जंग एक "माबअ़दुत्तबआती कायाकल्प" थी और इस्राईल की फ़तह ज़मीन को "शैतानी कुव्वतों के दाइरे" से

निकाल कर "उलूही दाइरे" में ले आई थी। इससे मफ़रूज़े की सतह पर यह साबित हो गया कि "मसीहाना दौर" शुरू हो चुका है।"

(2) "ई हिदाया" नामी रब्बी अपनी तअ़लीमात में इसी फ़ल्सफ़े की यूं तशरीह करता है:

"1967 ई0 की फ़ुतूहात ने ज़मीन को दूसरे फ़रीक़ (यह शैतान का मुहज़्ज़बाना नाम है) से आज़ाद करा लिया। एक बातिनी कुव्वत से जो शर, नापाकी और करप्शन से तजसीम है। यूं हम यहूदी एक ऐसे दौर में दाख़िल हो रहे हैं, जिसमें दुनिया पर "मुतलक़ हाकिमियत" क़ाइम हो जानी है।"

इन जुनूनियत पसंद और अल्लाह तआला की फटकार पड़े हुए इंतिहा पसंद यहूदियों के मुताबिक़ अगर इस्राईली हुकूमत ने मफ़तूहा इलाक़ों से इंख़िला किया तो उसके "माबअ़ुदत्तबइयाती" नताइज बरआमद होंगे यअ़नी ख़ुदा नाराज़ हो जाएगा, रूह नापाक हो जाएगी और ज़मीन पर शैतान का इक़्तिदार दोबारा क़ाइम हो सकता है। रहा जानों का ज़ियाअ़ तो शैतान की और बदी की हुकूमत ख़त्म करने और नजात का रुख़ तबदील करने से बचने के लिये हलाकत अंगेज़ वैसे भी ज़रूरी है।

आम क़ारईन को यह तौज़ीहात निहायत अजीब व ग़रीब दिखाई देती होंगी लेकिन शायद वह वक़्त क़रीब से क़रीबतर होता जा रहा है जब दुनिया इन मग़ज़ूब व मक़हूर जुनूनियों की बरपा कर्दा दज्जाली शोरिश के नताइज अपनी आंखों से देखेगी।

आख़िरी दो बातें:

आख़िर में हम एक बात अमरीकी और यूरपी अवाम से कहेंगे और एक आलमे इस्लाम के बाशिंदों से। यहूदी शिद्दत पसंदों की बरपा कर्दा शोरिश जो तीसरी जंगे अज़ीम का पेशख़ेमा साबित होगी,

सिर्फ़ अरबों या मुसलमानों के ख़िलाफ़ नहीं, तमाम ग़ैर यहूदियों बशमूल अमरीकियों के ख़िलाफ़ है। "मसीहा परस्तों" के नज़दीक तमाम ग़ैर यहूदी चाहे वह अमरीकी या यूरपी क्यों न हों, "जन्टाइल" हैं और तमाम जन्टाइल (ग़ैर यहूदियों के लिये सिक्का बंद यहूदी इस्तिलाह) शैतान के कब्ज़े में हैं। चूंकि शैतान मन्तिक़ खूब जानता है इसलिये शैतानी कुव्वत और उस कुव्वत की अर्ज़ी तजसीम यअ़नी ग़ैर यहूदियों को सिर्फ़ ग़ैर मन्तिकी अक़दाम के ज़रीए तोड़ा जा सकता है। यह अक़्दाम एक तरह का जादूई बातिनी मंसूबा हो सकता है। लिहाज़ा जो कुछ आज मार्च 2009 ई0 में अमरीकी नाइब सदर के साथ हुआ, यही कुछ पिछली सदी की आख़िरी दहाई में भी यहूद नवाज़ अमरीका के साथ हुआ था जब अमरीकी वज़ीरे ख़ारिजा जेम्ज़ बेकर इस्राईल आया तो एक शिद्दत पसंद यहूदी तन्ज़ीम "गश एमूनियम" यअ़नी "ईमान वालों की जमाअ़त" ने शैतान की कुव्वत और उसका अमरीकी रूप तोड़ने के लिये इस बातिनी मंसूबे पर अमल किया था कि अर्ज़ इस्राईल को शैतान के कब्ज़े से आज़ाद करवाने के लिये नई आबादियां क़ाइम करने का एलान किया। आज भी उन्होंने उस खुफ़िया बातिनी फ़ल्सफ़े के तहत हरकत की है जिसमें फ़लस्तीनी मुसलमान और अमरीकी ईसाई दोनों को यक्सां तौर पर शैतानी कुव्वतों का मज़हर समझते हुए एक तरह का सिफ़ली अमल किया गया है। इसे इत्तिफ़ाक़ या महज़ अपनी कुव्वत को सियासी इज़्हार समझना क़तअन ग़लत होगा। यअ़नी या यह जिहालत होगा और या निफ़ाक़......दोनों की तफ़सील हम मज़मून के आग़ाज़ में बयान कर चुके हैं। अमरीकियों को चाहिये न जाहिल बनें और न मुनाफ़िक़ीन के वरग़लाने में आएं। हक़ीक़त पसंदी का मुज़ाहरा करते हुए इस सांप को अपनी आसतीन से निकाल बाहर

करें।

बिरादराने इस्लाम से यह अर्ज़ करना है कि खुदारा! यहूदी बस्तियों के क़याम को हल्का न लें। यह "लार्ड के तहत की अर्ज़ी मदद" है। खुफ़िया यहूदी नज़रियात के मुताबिक़ रियासते इस्राईल इस दुनिया में "लार्ड के तख़्त की बुन्याद" है। यह ज़मीन पर "आसमानी बादशाहत की असास" है। इन बस्तियों के ज़रीए बनी इस्राईल की "मौरूसी ज़मीन की ततहीर" के बाद अगला नापाक कदम मस्जिदे अक़्सा के ख़िलाफ़ उठेगा और उसे दो या तीन हिस्सों में तक़सीम करके ततहीर के अमल का "हतमी आग़ाज़" किया जाएगा जो अल्लाह ने चाहा तो नफ़रत की इस रियासत के अंजाम का आग़ाज़ भी होगा।

अगर......अल्लाह न करे......बैतुल मुक़द्दस के दो हिस्से हुए तो निस्फ़ जुनूबी मुसलमानों के पास रहने दिया जाएगा जिसमें मस्जिदे अक़्सा का हाल है और निस्फ़े शुमाली यहूदी क़ब्ज़ा कर लेंगे जिसमें दुनिया की खूबसूरत तरीन इमारत "ज़र्द गुंबद" है। उसके नीचे मौजूद मुक़द्दस चट्टान पर बेदाग़ ज़र्द खाल वाले बछड़े की कुर्बानी होगी तो "मसीहा" खुरूज कर आएगा और जब मसीहा खुरूज करेगा वह "मुनज़्ज़ा अनिल ख़ता उलूही राहनुमाई" की बिना पर "अज़ली इंफ़िरादियत" की हामिल "खुदा की महबूब क़ौम" को "उलूही मक़्सद की तकमील" के लिये सारी दुनिया पर "मुतलकुल इनान बादशाहत" क़ाइम करके देगा। ऐसी बादशाहत जिसमें नापाक अरवाह के लिये कोई जगह न होगी।

और अगर खुदा नख़्वास्ता मस्जिदे अक़्सा के इब्तिदाई तौर पर तीन हिस्से होते हैं तो वह उस नक़्शे के मुताबिक़ होंगे ग़ामदी मक्तबे फ़िक्र के बअज़ इस्राईलियत ज़दा तहक़ीक़ कारों ने इस्लामी तारीख़

की अनोखी मन्तिक़ "अर्ज़े फ़लस्तीन की विरासत और मस्जिदे अक़्सा की तवल्लियत यहूद का हक़ है" के मक़ाले के साथ हमारे एक रिसाले (माहनामा अशरीआ गूजर अनवाला) के अंदरूनी टाइटल पर छापा था। उन हज़रात ने इसका हवाला नहीं दिया था, लेकिन जानने वाले जानते हैं कि यह रूस से नक़्ल मकानी करके इस्राईल जा बसने वाले एक यहूदी प्रोफ़ेसर "आशर कोफ़" का तजवीज़ कर्दा था जिसमें मौजूदा मस्जिदे अक़्सा के तीन हिस्से करके दायां या बायां हिस्सा यहूद को देने की "पुरखुलूस" तजवीज़ दी गई थी।

अलग़र्ज़ ख़ाकिम बदहन! मस्जिदे अक़्सा के दो हिस्से करने की तजवीज़ हो या तीन, आलमे इस्लाम को इस हवाले से यक जान व यक ज़बान हो जाना चाहिये कि वह दज्जाल और उसको "मसीहुस सलाम" समझने वाले इंसानियत दुशमन जुनूनियत पसंद यहूदियों के हाथ मस्जिदे अक़्सा की एक ईंट तक भी न पहुंचने देंगे। यह हमारे ईमान का तक़ाज़ा, हमारी ग़ैरत का इम्तिहान और मुस्तक़बिल क़रीब में हमारी बक़ा और नजात की कसौटी है। दज्जाल के पैरूकारों अगर झूटे वादों के मौऊदा लम्हात को क़रीब समझते हैं तो हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह के सच्चे वादों पर यक़ीन न करें और मुतह्हर व मुक़द्दस "अलकुद्स" की ततहीर व तक़दीस के लिये अपनी जान, माल, ज़बान और अल्लाह की दी हुई हर नेअ़मत या ताक़त को इस्तेमाल करने का अह्द न करें। "लाई के तख़्त की बुन्याद" रखने की तरफ़ तेज़ी से बढ़ने वाले अबदी ज़िल्लत का शिकार होंगे, तो हम क्यों न उन लोगों में शामिल होने का अह्द कर लें जो पूरे कुर्रहये अर्ज़ पर क़ाइम होने वाली ख़िलाफ़ते इलाहिया की ईंट या ज़र्रे के तौर पर इस्तेमाल होंगे।

☆☆☆

दज्जाली रियासत का ख़ातमाः वजह और वुजूहात

18 जून, 2010 ई0 को दो गर्मा गर्म ख़बरें क़ारईन की नज़र से गुज़री होंगी। एक ज़ेरे नज़र मज़मून के शुरू में और दूसरी आख़िर में मुलाहज़ा फ़रमाइये। पहली ख़बर कुछ यूं है:

"इस्राईल आईंदा 20 साल के दौरान दुनिया के नक़्शे से मिट जाएगा और लाखों फ़लस्तीनी मुहाजिरीन मक़्बूज़ा इलाक़ों में अपने घरों में वापस आ जाएंगे। यह पेशगोई अमरीकी ख़ुफ़िया इदारे सी आई ए की एक रिपोर्ट में की गई है। अमरीकी सेनेट की इंटीलीजिंस कमेटी के बअ़ज़ अरकान को भी इस रिपोर्ट के मंदरजात से आगाह किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है अमरीकी अवाम गुज़िश्ता 25 सालों से फ़लस्तीनी बाशिंदों पर इस्राईली मज़ालिम का मुशाहदा कर रहे हैं, वह अब मज़ीद ख़ामोश नहीं रहेंगे। जुनूबी अफ़्रीक़ा में नस्ल परस्त हुकूमत का ख़ातमा और साबिक़ सोवियत यूनियन की तहलील जैसे हक़ाइक़ यह वाज़ेह कर रहे हैं कि इस्राईल जो नो आबादियाती ताक़तों का एक मंसूबा था, तारीख़ के हाथों जल्द या बदेर अपने अंजाम को पहुंच जाएगा। रिपोर्ट में मज़ीद कहा गया है सूरते हाल तेज़ी के साथ मश्रिक़े वुस्ता के मस्ले के "दो रियासती हल" से "एक रियासती" हल की तरफ़ जा रही है जिसके नतीजे में आईंदा 15 साल के दौरान 20 लाख यहूदी अमरीका जबकि 15 लाख से ज़्यादा रूस और यूरप के दीगर हिस्सों को मुंतक़िल हो जाएंगे। रिपोर्ट में कहा गया है नस्ल परस्ती के उसूल पर क़ाइम इस्राईली हुकूमत के ख़िलाफ़ अमरीका में राए आम्मा तेज़ी से तबदील हो रही है। अमरीकी ज़राए अबलाग़ के मुताबिक़ इस वक़्त

अमरीका में 5 लाख के क़रीब यहूदी आबाद हैं।" (18 जून 2010 ई0 के क़ौमी अख़्बारात)

इस ख़बर में इस्राईल के टूटने और अर्ज़े मुक़द्दस के आज़ाद होने की एक ही वजह बयान की गई है: अमरीकी अवाम का ख़ामोश न रहना, लेकिन क्या अमरीकी अवाम की ख़ामोशी या नाराज़ी इतनी क़वी और मुअस्सिर वजह है जो दुनिया का जुग़राफ़िया तबदील कर सके? शायद नहीं। सी आइ ए की यह रिपोर्ट ग़ैर मुतवक़्क़ो होने के साथ साथ ग़ैर जामेअ़ भी है। अगर्चे इस रिपोर्ट का मक़्सद इस्राईली मज़ालिम की चक्की में पिसने वाले मुसलमानों से हमदर्दी या इस्राईल की मुख़ालिफ़त नहीं, इसकी वजह यहूदी मीडिया को इस जानिब मुतवज्जोह करना है कि वह अमरीकी अवाम को साथ मिलाए रखने पर मेहनत करे, वर्ना ले पालक का तियां पांचा हो सकता है, इस वजह का तदारुक भी सी आई ए और मूसाद मिल कर कर लेगी, लेकिन इन दीगर वुजूहात का क्या होगा जिनकी तवील फ़ेहरिस्त है? जी हां! पूरी फ़ेहरिस्त। क्योंकि अगर ग़ौर किया जाए तो इस्राईल को दरपेश ख़तरात और अलक़ुद्स की आज़ादी की और भी मुतअ़द्दद वुजूह हैं, बल्कि वुजूह की अनवाअ़ व अक़साम हैं जिनका हम ग़ैर जानिबदारी से जाइज़ा लेते हैं।

एक वजह तो तकवीनी है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दो मर्तबा यहूद की नाफ़रमानियों पर उन्हें सिर्फ़ जिला वतनी की सज़ा दी। पहली मर्तबा मूसवी शरीअ़त के इंकार पर इराक़ी बादशाह बुख़्त नस्सर के हाथों और दूसरी मर्तबा शरीअ़ते मुहम्मदी के इंकार पर उनको सिर्फ़ वतन से नहीं, दुनिया से ही जिलावतन कर दिया जाएगा। यह यहां अज़ ख़ुद इकट्ठे नहीं हुए, मशियते इलाही ने उन्हें इकट्ठा किया है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "फिर जब आख़िरत

का वादा पूरा होने का वक़्त आएगा तो हम तुम सबको जमा करके हाज़िर करेंगे।" (बनी इस्राईलः 104)

दूसरी वजह तीसरी जंगे अज़ीम का इमकान और उसमें दुनिया भर के मुजाहिदीन और मुसन्निफ मिज़ाज ईसाइयों का फ़लस्तीन के मज़लूमीन व महसूरीन की इम्दाद और फिर हर मजदून के मैदान में तारीख़ साज़ मअरका आराई हो सकती है। इस वजह का तअल्लुक चूंकि किसी दर्जे में आख़िर ज़माने की अलामत से जुड़ता है और इन अलामात में हद दर्जे का इबहाम है, इसलिये हम इस वजह की ततबीक़ या उसकी तशरीह पर इस्रार नहीं करते। अल्लाह ही अपने राज़ों को बेहतर जानता है। हम अगली वजह की तरफ़ चलते हैं।

एक बड़ी वजह यहूदियों में पाए जाने वाले हद दर्जा मुतशद्दिद और इंतिहा पसंद मज़हबी गिरोह और उनका बाहमी इख़्तिलाफ़ है। कुर्आने करीम फ़रमाता हैः "तुम इनको सरसरी नज़र से देखने में एक समझोगे लेकिन दर हक़ीक़त इनके दिल जुदा जुदा हैं।" (अलहश्रः14)

इस इंतिशार व इफ़्तिराक़ की हक़ीक़त का एहसास आज के इस्राईली मुआशरे का जाइज़ा लेने से हो सकता है। इस मुआशरे में मज़हबी बुन्याद पर तक़सीम दर तक़सीम का अमल रोज़े अव्वल से जारी व सारी है। हर मज़हबी गुरूप की अलग सियासी पार्टी और अपने अलग रिब्बी हैं। आगे की बात का तसव्वुर करना मुश्किल नहीं है कि दुनिया की सियासत की तरह आख़िरत में जन्नत का इस्तिहक़ाक़ भी इसी गिरोहबंदी की असास पर तक़सीम होता है।

एक बड़ा नस्ली इख़्तिलाफ़ इश्किनाज़ी और सैफ़र्डी यहूदियों का है। अबरानी में सैफ़र्डी का मतलब हैः "हिस्पानवी।" मुस्लिम हिस्पानवी सलतनत में रहने वाले यहूदी तारिकीने वतन मुसलमानों की अह्ले किताब से नर्म मिज़ाजी कीवजह से बहुत फले फूले। उनमें

नस्ली इफ़्तिख़ार इतना ज़्यादा है कि वह बक़िया यहूदियों को हद दर्जा हक़ीर समझते हैं। मसलनः मूसा बिन मैमून ने जो ख़िलाफ़ते हिस्पानिया के दौर में ख़ुलफ़ा के क़रीब रहा और अज़मिनए वुस्ता का एक मशहूर रिब्बी और फ़ल्सफ़ी था, ने अपने बेटे को हिदायत की थीः

"अपनी रूह की हिफ़ाज़त करना और इश्किनाज़ी रिब्बियों की लिखी हुई किताबें मत पढ़ना। यह लोग सिर्फ़ तब लार्ड पर ईमान लाते हैं जब सिरके और लहसुन में पकाया हुआ गोश्त खाते हैं। उनका ईक़ान है कि लार्ड उनके क़रीब है। ऐ मेरे बेटे! सिर्फ़ अपने सैफ़र्डी भाइयों की सुहबत इख़्तियार करना जो "इहालियाने उंदलिसिया" कहलाते हैं। सिर्फ़ यही लोग ज़हीन हैं।"

दूसरी तरफ़ इश्किनाज़ी यहूद अपने मुख़ालिफ़ सैफ़रडी यहूदियों से रिश्ता नाता न करने से लेकर उन पर जादू करने तक को अपने लिये जाइज़ समझते हैं। दोनों गिरोहों में नस्ली तअस्सुब व बरतरी का इज़हार इस्राईली मुआशरे के मुस्तक़िलाना इंतिशार और टूट फूट का शिकार रखता है।

एक तीसरी तक़सीम मज़हबी, रिवायत पसंद और सैकूलर यहूदियों की भी है। यह तक़सीम मज़हबी अहकामात पर अमल करने न करने के एतिबार से है। यूरप से आने वाले यहूदी आज़ाद ख़्याल और अबाहियत पसंद हैं। मश्रिक़ी मुमालिक से गए हुए यहूदी कट्टर क़दामत पसंद हैं। कुछ यहूदी मख़्सूस रिवायात और रुसूम की हद तक यहूदी हैं। इस तरह यह मुआशरा मज़हब पर अमल के लिहाज़ से भी तीन हिस्सों में तक़सीम हैः

(1) मज़हबी यहूदी आर्थोडक्स रिब्बियों की तशरीहों को तसलीम करते हुए यहूदी मज़हब के अहकामात पर अमल करते हैं। इनमें से

बहुत से यहूदी अक़ीदे से ज़्यादा अमल पर ज़ोर देते हैं। इस्राईल में इस्लाह पसंद और क़दामत पसंद यहूदी थोड़े हैं।

(2) रिवायत पसंद यहूदी कुछ ज़्यादा अहम अहकामात पर तो अमल करते हैं लेकिन ज़्यादा सख़्त अहकामात से रूगर्दानी करते हैं। ताहम वह रिब्बियों और मज़हब का एहतिराम ज़रूर करते हैं।

(३) जहां तक सैकूलर यहूदियों का तअल्लुक़ है तो मुम्किन है वह कभी कभी "सैनागोग" चले जाते हों ताहम वह रिब्बियों का एहतिराम करते हैं न मज़हबी इदारों का। अगर्चे रिवायती और सैकूलर यहूदियों के दर्मियान खींची हुई लकीर अक्सर ग़ैर हक़ीक़ी होती है, ताहम दस्तियाबे तहक़ीक़ात से पता चलता है कि 25 से 30 फ़ीसद तक इस्राईली यहूदी सैकूलर हैं। 50 से 55 फ़ीसद तक रिवायती हैं और तक़रीबन 20 फ़ीसद मज़हबी हैं।

इसके अलावा भी कई वुजूहात हैं जिनकी बिना पर इस्राईली मुआशरा कभी भी मुत्तहिद मुआशरा नहीं बन सकता। यह टूट फूट का शिकार होते हुए रेज़ा रेज़ा हो जाएगा और रहेगा नाम सिर्फ़ अल्लाह का। तभी तो इन इस्राईली बाशिंदों ने जो दूसरे मुमालिक से नक़्ल मकानी करके फ़लस्तीनी मुसलमानों की ज़मीन पर आ बसे हैं, अपने पुराने पासपोर्ट ज़ाए नहीं किये। वह दुहरी शोहरत के हामिल रहना चाहते हैं और "वापसी का सफ़र" या "मसीहा की आमद" दोनों के लिये तैयार रहते हैं।

यह तो अंदरूनी वुजूहात हो गईं। बैरूनी एतिबार से न सिर्फ़ यह कि इस्राईल पड़ोसी अरब मुमालिक से मुस्तक़िल और दाइमी वुजूहात पर मुशतमिल तनाज़ुआत बरपा किये हुए है, बल्कि उसकी नाइंसाफ़ी पर उससे वह मुमालिक भी नालां हैं जो कभी उसकी हिमायत में अक़वामे मुत्तहिदा में वोट देते रहे हैं। हाल ही में जिस शिद्दत और

वहशत भरे रवय्ये का मुज़ाहरा करते हुए उसने "फ्रीडम फ़्लूटीला" को रोका है, उसने इसके ख़ौफ़नाक चेहरे के सियाह धुंदले नुकूश दुनिया के सामने ज़ाहिर कर दिये हैं। इस तरह आहिस्ता आहिस्ता अमरीकी और मग़रिबी दुनिया उसके रिवायती शिद्दत पसंदाना नज़रियात से बेज़ार होती जा रही है और यह बेज़ारी जल्द या बदेर ज़रूर रंग लाएगी। इंशा अल्लाह!

दूसरी तरफ़ अफ़ग़ानिस्तान (यअ़नी ख़ुरासानः दरयाए आमू से इटक तक) में इस बेतहाशा मअ़दनी दौलत की दरयाफ़्त की ख़बरें आ गई हैं जिसका कई साल पहले इन्ही कालमों और नक़्शों में इज़्हार कर दिया गया था। उस वक़्त इस पर वैसे ही तअ़ज्जुब किया जाता था जैसे आज दज्जालियत पर मुशतमिल तहरीरों पर किया जाता है। हामिद करज़ई अपने घर की दौलत यहूद नवाज़ कुव्वतों को सिपुर्द करके ख़ुद ख़ैरात का कशकूल डोम्ज़ मुमालिक के सामने फैलाते रहें, लेकिन इस ख़ित्तए हिजरत व जिहाद की दौलत अगर अल्लाह तआला के हुक्म के तहत और इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह के उसूल के तहत ख़र्च हुई तो मश्रिक़ व मग़रिब के फ़ासले समेटने में देर नहीं लगेगी। सऊदी अरब ने मालदार होने के बाद अपनी सरहद "अलकुद्स" से हटा ली और फ़लस्तीन की सरहद से लगने वाली सरज़मीन उर्दुन के हवाले कर दी, लेकिन ज़न्ने ग़ालिब है अफ़ग़ानिस्तान जब सऊदिया जैसा मालदार हो जाएगा तो वह इस्लामी दुनिया का हक़ फ़रामोश न करेगा, क्योंकि इस्लामी दुनिया ने उसकी ग़ुर्बत के दिनों में उसे फ़रामोश नहीं किया था। अल्लाह करे कि रहमानी रियासत के उरूज के यह दिन और आलमे इस्लाम के इत्तिहाद व तरक़्क़ी का यह मंज़र हमें भी देखना नसीब हो। आमीन।

☆☆☆

दज्जाल (१) और दज्जाल (२) से मुतअ़ल्लिक़ क़ारईन के सवालात और उनके जवाबात

सूरए कह्फ़ की आयात की ख़ासियत

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि

उम्मीद है मिज़ाज बख़ैर होंगे। मुफ़्ती अबू लुबाबा शाह मंसूर साहब से यह मालूम करना था कि सूरए कह्फ़ में कौनसी ख़ासियत है जिसकी वजह से यह सूरत फ़ितनए दज्जाल से बचाने के लिये हुज़ूर सल्ल0 ने तजवीज़ फ़रमाया है?

वस्सलाम......अब्दुल्लाह

जवाबः

अगर हम हुज़ूर सल्ल0 से मन्कूल दुआओं और वज़ाइफ़ के अलफ़ाज़ पर ग़ौर करें तो मअ़लूम होगा हुज़ूर सल्ल0 ने उम्मत को उन दुआओं की तलक़ीन की है जिममें ख़ास रूहानी और तिकोनी तासीर है और उसको क़बूलियत में ख़ास दख़ल है। इन अलफ़ाज़ में भी कुछ ऐसी ही ग़ैबी बरकत है। अलबत्ता यह बात मद्दे नज़र रहे कि उम्मत को सिर्फ़ दुआ की तअ़लीम नहीं दी है बल्कि दुआओं के साथ साथ अमल की तलक़ीन भी की है। मसलनः हज़रत अबू उमामा रज़ि0 ने हुज़ूर सल्ल0 को शिकायत की कि "......लज़मतनी व हुमूम यअ़रिफून अल्लाह" तो हुज़ूर सल्ल0 ने एक दुआ तअ़लीम फ़रमाई जो न सिर्फ़ दुआ थी बल्कि शुजाअ़त, हिम्मत और सख़ावत की तअ़लीम भी थी। اللهم انی اعوذ بك من الهم والغم والحزن والكسل ومن غلبة الدين وقهر الرجال" सूरह कह्फ़ भी सिर्फ़ एक वज़ीफ़ा नहीं बल्कि इस सूरत में एक अहम पैग़ाम भी है कि फ़ितनए दज्जाल से बचने के लिये हमें अस्हाबे कह्फ़ का किर्दार भी दुहराना पड़ेगा। दीन की हिफ़ाज़त के लिये पहाड़ों को मस्कन बनाने का

जज़्बा पैदा करना होगा और साथ साथ सूरह कह्फ़ पढ़ कर अल्लाह तआला से मदद भी हासिल करना है क्योंकि ज़िक्रुल्लाह (तिलावत) रूह के लिये बमंज़िला आक्सीजन है।

ईमान की हिफ़ाज़त के लिये जब अस्हाबे कह्फ़ या अस्हाबे तोरा बोड़ा का जज़्बा भी हो और अल्लाह तआला से मदद की दरख़्वास्त भी तो फिर इंशा अल्लाह दज्जाली कुव्वतों का मुक़ाबला आसान होगा।

हरमैन में मख़्सूस अलामात

मुहतरम मुफ़्तीसाहब

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि

अल्लाह तआला ने अहक़र को इस साल हज का फ़रीज़ा अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। दुआ फ़रमाएं अल्लाह मेरे समेत तमाम मुसलमानों का हज क़बूल फ़रमाए और बार बार हरमैन की ज़ियारत नसीब फ़रमाए।

हज के बाबरकत सफ़र के दौरान एक अहम चीज़ की तरफ़ अल्लाह तआला ने नाचीज़ की तवज्जोह मबज़ूल करवाई। वह यह कि पुलिस, शहरी दिफ़ाअ़ और फ़ायर ब्रीगेड के तमाम अहलेकारों की वर्दियों और दफ़ातिर पर दज्जाली निशानात (तिकोन, इक्लौती आंख और शैतानी ताज) नुमायां तौर पर वाज़ेह थे। यहां तक कि मिना में शहरी दिफ़ाअ़ के दफ़्तर में जो क़ालीन बिछे हुए थे, उन पर भी दज्जाली तिकोन बनी हुई थी। इसके अलावा तमाम मेडीकल स्टोर्ज़ पर सांप का निशान बना हुआ था।

कुछ पम्फ़लेट अहक़र के हाथ मस्जिदे नबीवी सल्ल0 के साथ लगी हुई नुमाइश में लगे जो आपकी ख़िदमत में इर्साल हैं। पुलिस के कारकुन और शहरी दिफ़ाअ़ के लोग अपने फ़राइज़ हरमे मक्का और हरमे मदीना के अलावा मशाइरे (मिना, मुज़दल्फ़ा, अरफ़ात) में भी सरअंजाम दे रहे थे तो दज्जाली निशानात तमाम हरमैन में उनके साथ साथ गर्दिश कर रहे थे जो कि एक निहायत ही तशवीशनाक बात है। यह निशानात आप शहरी दिफ़ाअ़ की वेबसाइट (www.998.gov.sa) और ट्रेफ़िक कंट्रोल की वेब साइट

(www.saher.gov.sa) पर भी देख सकते हैं।

इसके अलावा गाड़ियों की नम्बर प्लेट पर भी दज्जाली तिकोन बनी हुई थी। दुआ फ़रमाएं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मुझे मेरे ख़ानदान और तमाम मुसलमानों को दज्जाल के फ़ितने से महफ़ूज़ रखे और अगर मेरी ज़िंदगी में हज़रत मेहदी का ख़ुरूज हो तो उसमें शामिल होने की तौफ़ीक़ दे। आमीन वस्सलाम......उस्मान अहमद

जवाबः

इन अलामात के हवाले से इस किताब में तफ़सीली बहस आ गई है। अल्लाह करे कि यह इंकिशाफ़ात आम्मतुल मुस्लिमीन की बेदारी, दज्जाली अलामात को मिटाने, हरमैन शरीफ़ैन को उनसे महफ़ूज़ बनाने और रहमानी शआइर व अलामात को फैलाने का ज़रीआ बने।

शिक्वा नहीं शुक्रिया!

मुहतरम मुफ़्ती साहब

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि

मेरे लिये इंतिहाई सआदत की घड़ी है कि आप से शर्फ़ ख़िताब से बहरहवर हो रहा हूं। बंदा ने जनाब की इल्मी काविश और अछूती तहरीर का बग़ौर मुतालआ किया। एक नामानूस और ग़ैर मशहूर बल्कि मुतवह्हिरा क़िस्म के उन्वान को आप ने उम्मत के ज़हनों के क़रीब से क़रीब तर लाने की एक मशकूर और लाइक़ तक़लीद सई फ़रमाई। इसकी जिस क़दर हौसला अफ़ज़ाई की जाए, वह हैच साबित होगी। इस पेचीदा और अमीक़ फ़न की बेशतर मअ़लूमात से आपने नक़ाब कुशाई फ़रमाई है। बंदा ने इस बारे में दो दर्जन से ज़ाइद कुतुब से इस्तिफ़ादा किया है -

है जुस्तजू कि खूब से है खूबतर कहां
अब देखते हैं ठहरती है जाकर नज़र कहां

(1) लंगड़े जरनैल का मिस्दाक़ः

आं मुहतरम ने अपनी किताब "दज्जाल कौन है?" के सफ़हा 197 पर "हरमजदून" किताब के हवाले से केनेडियन लंगड़े जरनैल का ज़िक्र किया और इससे मुराद "जनरल रिचर्ड माइनर" लिया। बंदा ने बहुत से अहबाब और इंटरनेट से इस बारे में मअ़लूमात लीं, लेकिन बात वाज़ेह नहीं हो सकी और नेट पर जो "रिचर्ड माइनर" दिखाया गया है, वह न लंगड़ा है और न ही बेसाखियों पर चलता है। अगर जनाबे वाला के पास कोई वज़ाहत और तफ़सील है तो बराहे करम उम्मत के सामने पेश करें ताकि यह बात मज़ीद आशकार हो

जाए और अहादीस व आसार पर ईमान व एतिमाद मज़ीद पुख़्ता हो जाए। मज़ीद यह कि "किताबुल फ़ितन" (हाफ़िज़ नईम बिन हम्माद अलमरूज़ी रह0) मेरे हाथ में है और बंदा इस का मुतालआ कर चुका है, मगर लंगड़े जरनैल का वस्फ़ इसमें कहीं नहीं मिला कि वह तमग़े वग़ैरा सजा कर ज़ाहिर होगा और बेसाख़्ता नाज़िर के मुंह से यह निकलेगाः "सुब्हानल्लाह! वाक़ई मेहदी का ज़ुहूर क़रीबतर है क्योंकि केनेडियन लंगड़ा जरनैल ज़ाहिर हो चुका है।"

अगर आं मुहतरम के पास इसका हवाला मौजूद हो तो बराह तआवुन इससे आगाह फ़रमाएं और "अलफ़ितन" में यह रिवायत हज़रत कअ़ब रज़ि0 से मरवी है जिसकी सनद मरफ़ूअ़ नहीं, यह बात अपनी जगह मुसल्लम है कि सहाबी की ग़ैर मुदरक बिल क़्यास बात हदीसे रसूल के हुक्म में है लेकिन नाक़िल की लिये ज़रूरी है कि वह इसको वाज़ेह करे कि यह असरे सहाबी है।

(2) क्या अस्हाबे कह्फ़ दोबारा ज़िंदा होंगे?

सय्यदना हज़रत ईसा अला नबीना अलैहिस्सलातु वस्सलाम के नुज़ूल के बाद उनकी मुआविन शख़्सियात का तज़किरा करते हुए "इमाम अबू अब्दुल्लाह अलक़ुर्तुबी" ने अपनी सनद के साथ "मुहम्मद बिन कअ़ब अलक़र्नी" के हवाले से अस्हाबे कह्फ़ का तज़किरा किया है कि वह दोबारा ज़िंदा होंगे और हज़रत ईसा अलै0 के साथ हज करेंगे। उन्होंने यह बात तौरात व इंजील के हवाले से नक़्ल की है।

(अत्तज़किरा लिलइमाम क़ुर्तुबी रह0, तारीख़ इब्ने कसीर, जि0:8, स0:130)

इसी सिलसिले में यह इस्तिफ़ार करना है क्या "لا تصدقوا أهل الكتاب ولا تكذبوه" के तहत ज़न्नी तौर पर इस बात को मान लेने में हमारे कोई शरई रुकावट तो नहीं? ताबीदन यह बात भी पेशे

ख़िदमत है कि हज़रत ईसा अलै0 के ताबिईन में से बअ़ज़ हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के ज़मानए ख़िलाफ़त तक मौजूद थे और "नुसला बिन मुआविया" से उनकी मुलाक़ात साबित है जिसमें उन्होंने अपना नाम "ज़रनब बिन यरतुम्ला" बतलाया और कहा हज़रत ईसा अलै0 ने मेरे लिये दुआ की थी की उनके आसमान से नाज़िल होने तक बाक़ी रहूं। इस वाक़िए की ख़बर सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 को दी गई तो उन्होंने ताईद फ़रमाई और फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्ल0 ने हमें ख़बर दी है कि हज़रत ईसा बिन मरयम के बअ़ज़ वसी इराक़ के किनारे उतरे थे।

(इबरत का सामान, उर्दू तर्जुमा, अत्तज़किरा लिलइमाम कुर्तुबी रह0, स0234, अज़ मौलाना डाक्टर हबीबुल्लाह मुख़्तार शहीद)

(3) दज्जाल 1 की अहादीस की तख़्रीजः

मुअद्दिबाना गुज़ारिश है आइंदा एडीशन में हवाला जात की तख़्रीज हो जाए तो अज़ीम काविश भी होगी और अह्ले ज़ौक़ के लिये बाइसे सहूलत भी।

(4) दज्जाल किस जिंस से तअ़ल्लुक़ रखता है?

आपने दज्जाल की हक़ीक़त को बयान करते हुए रक़्म फ़रमाया है: "यह तो सीधी सादी बात हुई कि दज्जाल जिन्नाती क़ुव्वतों का हामिल एक नीम इंसानी, नीम जिन्नाती क़िस्म की आज़माइशी मख़्लूक़ है।" (स0:147)

इस ज़िम्न में मज़ीद ताईद के तौर पर एक हवाला पेशे ख़िदमत है: "अल्लामा मुहम्मद बिन रसूल अलबर्ज़ख़ी अलहुसैनी रह0" ने अपनी मअ़रकतुल आरा किताब "अलइशाअतु लिशशातस्साअह" स0 217 दारुल हदीस क़ाहिरा तबअ़ 2002 में लिखा है: "وكانت أمه عشقت أباه، فأولدها شقا، وكانت الشياطين تعمل له العجائب،

"فحسبه سليمان النبي عليه السلام، ولقبه المسيح-

इससे यह बात वाज़ेह हो जाती है कि दज्जाल वाक़ई जिन्न और इंसान की मख़्लूत जिंस है। इससे दज्जाल की जिंस के साथ साथ उसका ज़माना भी वाज़ेह होता है।

(5) 2012 ई0 में क्या होगा?

आप ने अपनी किताब में ज़न्नी तौर पर तौरात के हवाले से इस्राईल के ख़ातमा या ख़ातमे के आग़ाज़ का साल 2012 ई0 लिखा है। आपकी बात ज़न और क़्यास की हद तक सही और दुरुस्त है, लेकिन अवाम इस बारे में 2012 ई0 को यक़ीनी तौर पर मुराद ले रहे हैं। अगर्चे आपने अपने क़ारईन को बार बार तवज्जोह दिलाई है कि यह बात ज़न्नी है, हतमी नहीं। लेकिन 2012 ई0 के नाम पर इंगलिश फ़िल्म (जिसमें इस साल आलमी जंग और दुनिया का इख़्तिताम दिखाया गया है) मंज़रे आम पर आने के बाद मुश्किल में इज़ाफ़ा हो गया है। नौजवान बार बार आप की किताब का हवाला देते हैं। बंदा इस सिलसिला में अर्ज़ गुज़ार है कि आप अगर इस बाबत मज़ीद कुछ रक़्म फ़रमा देंगे तो यह हवा जो चल पड़ी है, वह सही सिम्त इख़्तियार करेगी।

(6) मदारिस में "दज्जालियात" की तदरीसः

आख़िर में आपकी विसातत से अहले मदारिस से इल्तिमास है कि दज्जालियात के मौज़ूअ़ को निसाब का हिस्सा बना कर मुअल्लिम व मुअद्दिब के हवाले किया जाना चाहिये कि वह बाक़ाएदा तदरीस के उस्लूब में तलबा को पढ़ाए ताकि दज्जाल जैसे अज़ीम फ़ितना से उम्मत को मुकम्मल आगाही हासिल हो। बंदा इस बाबत एक ताईद भी रखता है। सुनन इब्ने माजा में दज्जाल के बारे में मज़कूरा तवील हदीस के बाद इमाम इब्ने माजा की बात पेश करता हूंः "قال أبو

عبد اللّه، سمعت أبا الحسن الطنافسي يقول، سمعت عبد الرحمن المحاربي يقول: "ينبغي أن يدفع هذا الحديث الى المؤدب، ليعلّمه الصبيان في الكُتّاب۔" (सुनन इब्ने माजा, बाब फ़ितनतुद्दज्जाल, स0:299, मतबूआ क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची)

यह मशवरा इमाम इब्ने माजा के दादा उस्ताद का उनके उस्ताद को था। आज तो इसकी ज़रूरत व अहमियत पहले से कहीं ज़्यादा है। इस सिलसिले में उलमा व अइम्मा को खूब तैयारी करना चाहिये ताकि वह अवामुन्नास को पूरी तरह ख़बर कर सकें। जितना यह फ़ितना अज़ीम और शदीद है, उम्मत बिलख़ुसूस उलमा व अइम्मा के तज़किरे और तैयारी से उतने ही ग़ाफ़िल हैं। मुस्नद अहमद में मज़कूर एक हदीस में है: "عن صعب بن جثامة قال: قال رسول اللّه صلى الله عليه وسلم: "لا يخرج الدجال حتى يذهل الناس عن ذكره، حتىٰ تترك الأئمة ذكره على المنابر۔" बंदा ने अपनी बिसात के बक़द्र अपने मदरसा में बाक़ाएदा दज्जालियात को पढ़ाना शुरू कर दिया है और मस्जिद में जुमा के ख़ुत्बा में दज्जाल का तज़किरा भी बाक़ाएदगी से करता है। नौजवानों को ख़ास तौर पर इस सिलसिले में सरे फ़ेहरिस्त रखा है। आप से दुआओं का तलबगार हूं। "تعاونوا على البر والتقوىٰ" के तहत चंद बेरबत बातें करने की जसारत की है। अगर मिज़ाज गिरां गुज़रीं तो बंदा मुआफ़ी का ख़्वास्तगार है।

वस्सलाम......मुहम्मद सऊद, फ़ैसलाबाद

जवाब:

वअलैकुम अस्सलाम वरहमतुल्लाहि वबरकातुहु!

याद आवरी और इज़्ज़त अफ़ज़ाई का शुक्रिया। अहक़र किसी अच्छे सवाल या इल्मी बहस मुबाहिसे का दिल से ख़ैर मक़दम करता

और इस पर शुक्र गुज़ार रहता है और उसे शिक्वा नहीं, शुक्रिये का मौक़ा समझता है। आं जनाब के सवालात के जवाबात पेशे ख़िदमत हैं।

(1) इन सुतूर को सियाक़ व सिबाक़ के साथ बग़ौर मुतालअ़े की ज़रूरत है। यह इबारत राक़िम की नहीं। न इसकी ततबीक़ी मुराद बंदा की मुतअ़य्यन कर्दा है। यह हवाला दुक्तूर अमीन जमालुद्दीन की किताब हरमजदून के तर्जुमे से बिअयनिही लिया गया है और यह उन बारह हवालाजात में से पहला हवाला है जो राक़िम ने बिला किसी ताईद व तरदीद के महज़ इसलिये नक़्ल किये कि उम्मते मुस्लिमा के ज़अ़्मा मुस्तक़बिल क़रीब को किस नज़र से देखते हैं? इनके शुरू में तसरीह है कि यह तमाम हवालाजात बिला तब्सिरा नक़्ल किये जा रहे हैं। जहां तक रिचर्ड माइर को लंगड़ा और बेसाखियों के सहारे चलने वाला कहा गया है, यह दुक्तूर अमीन का अपना मुशाहदा है कि मैंने उसे अफ़ग़ानिस्तान के ख़िलाफ़ जंग का एलान करने के लिये आते हुए देखा। मुम्किन है कि उस वक़्त उसका पांव मोच का शिकार हो और आर्ज़ी तौर पर बेसाखियों का सहारा लेने पर मजबूर हो। किताबुल फ़ितन के अलफ़ाज़ यह हैं: "ثم يظهر الكندى فى شارة حسنة" इसका तर्जुमा प्रोफ़ेसर ख़ुर्शीद अहमद ने यूं किया है: "फिर लंगड़ा केनेडियन ख़ूबसूरत बेज लगाकर ज़ाहिर होगा।" "शारह" के मअ़नी "لباس رائع جميل" के हैं। इस एतिबार से ख़ूबसूरत बेज की बनिस्बत ख़ूबसूरत वर्दी का तर्जुमा ज़्यादा क़रीबुल अलफ़ाज़ है। बेज तो फ़ौजी की वर्दी का हिस्सा होते ही हैं। इससे आगे इबारत जिसने आप को ख़लजान और तशवीश में मुब्तला किया: "और बेसाख़्ता तेरे मुंह से निकलेगा……" यह दुक्तूर अमीन की है। कअ़ब अहबार से मन्क़ूल असर का हिस्सा नहीं।

इसमें दुक्तूर अमीन ने अरब के मख़्सूस उस्लूब में क़ारी को मुख़ातब तसव्वुर करके बसीग़ाए ख़िताब यह जुम्ला लिखा है। आप वावीन को देखें। वह जहां ख़त्म होते हैं, हदीस का तर्जुमा वहीं ख़त्म हो जाता है। इसके बाद दक्तूर अमीन का तब्सिरा है। जहां तक हदीस और असर के फ़र्क़ को मलहूज़ रखने की बात है तो यह एहतियात करनी चाहिये। दुक्तूर मुहतरम की असल अरबी इबारत हमारे सामने नहीं, प्रोफ़ेसर ख़ुर्शीद अहमद का तर्जुमा है। अब नहीं मालूम कि यह फ़र्द गुज़ाश्त मुसन्निफ़ से हुई या मुतरज्जम से। अल्लाह तआला सबकी हसनात क़बूल फ़रमाए और लग़ज़िशों से दरगुज़र फ़रमाए।

(2) राक़िम ने यह हवाला तौरात व इंजील में तलाश किया, नहीं मिला। आपको या किसी और साहब को यह इबारत मिले तो मुतलअ़ फ़रमाकर एहसान फ़रमाएं। शरई तौर पर रुकावट से आप के ज़ह्न में क्या ख़दशा है? बयान फ़रमाएं तो ग़ौर किया जाएगा।

(3) अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी तौफ़ीक़ से "दज्जाल1" की तख़रीज अहादीस व मुराजअ़त का काम मुकम्मल हो चुका है। चंद हफ़्तों में इसका जो नया एडीशन आएगा, उसमें इंशा अल्लाह यह इज़ाफ़जात मौजूद होंगे।

(4) हज़रत सुलैमान अलै0 को अल्लाह तआला ने यह फ़ज़ीलत अता की थी कि वह इंसान और जिन्नात से बयक वक़्त काम लेते थे। उनके ज़माने में इंसान और जिन्नात का जैसा इख़्तिलात था, वैसा तारीख़े इंसानी में न पहले हुआ है न बाद में होगा। इसलिये कि हज़रत सुलैमान अलै0 को ही यह इम्तियाज़ी क़ुदरत और फ़ज़ीलत दी गई थी और चूंकि उन्होंने दुआ मांगी थी कि उनके बाद किसी को न मिले तो उनके बाद कोई इस मर्तबे तक न पहुंचा। सिवाए हुज़ूर पाक सल्ल0 के, लेकिन आप सल्ल0 तवाज़ुअन इसका इज़हार नहीं फ़रमाते

थे, लिहाज़ा इंसानों व जिन्नात का इख़्तिलात दौरे सुलैमानी का ख़ास्सा है। मज़्कूरा हवाले के मुताबिक़ उस दौर में एक जिन्निया इंसान पर आशिक़ हो गई और ख़ाक व आतिश के मिलाप से उस फ़ितने ने जनम लिया जो इंसानियत के लिये अज़ीम तरीन इब्तिला का सबब बनेगा। लेकिन यह एक क़ौल है। दूसरा क़ौल यह है कि दज्जाल की पैदाइश हज़रत नूह अलै0 से पहले हुई है तभी तो हदीस शरीफ़ में आता है कि हज़रत नूह अलै0 और उनके बाद आने वाले अंबियाए किराम अपनी उम्मतों को इस फ़ितने के मुज़मिरात से आगाह करते रहे। अगर दज्जाल उनके दौर में मौजूद न था तो उसके ख़ुरूज का इम्कान ही न था, फिर उससे डराने का क्या मतलब होगा? एक और हदीस में भी इस तरफ़ इशारा मिलता है। मज़ीद तफ़सील इसी किताब में पुरअस्रार अलामात में से तीसरी अलामत "तिकोन" के ज़ेल में मुलाहज़ा की जा सकती है।

(5) इस सवाल के जवाब से पहले तीन उसूली बातें समझ लें:

1-ग़ैब का यक़ीनी इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ाते आली को है। क़्यामत और अलामाते क़्यामत उमूरे ग़ैबिया में से हैं। इसके बारे में कोई क़तई दावा नहीं किया जा सकता, ज़न और क़्यास की बुन्याद पर तख़्मीना लगाया जा सकता है। यह तख़्मीना न तो ऐसा बेबुन्याद है कि उसे बिल्कुल नज़रअंदाज़ कर दिया जाए और न ऐसा हतमी है कि उसके सौ फ़ीसद दुरुस्त होने पर इस्रार किया जाए।

2- यह तख़्मीना इस आजिज़ का लगाया हुआ नहीं, सऊदी अरब के मशहूर आलिम डाक्टर अब्दुर्रहमान सफ़र अल हवाली ने अपनी मअ्रकतुल आरा किताब "रोज़े ग़ज़बः ज़वाले इस्राईल पर अंबिया की बशारतें, तौराती सहीफ़ों की अपनी शहादत" का पूरा एक बाब इसके लिये मुख़्तस किया है और 2012 ई0 का हिसाब

उनका लगाया हुआ है। वह किताब के आख़िरी पैरे में कहते हैं:

"अब इस बिला पर उस दौरे मुसीबत का इख़्तिताम या दौरे मुसीबत के इख़्तिताम का आग़ाज़ (सन 1967+45)=2012 ई0 बनता है, यअ़नी सन दो हज़ार बारह ईसवी। हिजरी लिहाज़ से 1387+45=1433 हिजरी। इसी की हम उम्मीद कर सकते हैं। मगर वुसूक़ से हरगिज़ नहीं कहेंगे, इल्ला यह कि वक़ाइअ़ से ही इसकी तसदीक़ हो जाए। ताहम ईसाई बुन्याद परस्त अगर हमारे साथ शर्त बदना चाहें जिस तरह कि क़ुरैश ने अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के साथ रूम की फ़तह की बात बांधी थी तो किसी अदनी तरीन शक के बग़ैर हम कह सकते हैं कि वह हम से ज़रूर शर्त हार जाएंगे, बग़ैर इसके कि हम कोई ख़ास सन या वक़्त बताने के पाबंद हों।" (स0:205, 206)

इस किताब का एक उर्दू तजुर्मा रज़िउद्दीन सय्यद ने और दूसरा हामिद कमालुद्दीन ने किया है और यह आम मिल जाती है।

3-अगर किसी को यह इल्म हो जाए कि मुस्तक़बिल में इस्लाम और इंसानियत के दुशमन कुछ करने जा रहे हैं तो इसका मतलब हरगिज़ यह नहीं होना चाहिये कि वह हाथ पर हाथ धर के आसमान की तरफ़ मुंह उठा के बैठा रह जाए। क्या यह चीज़ उसे इन फ़ितनों से बचा सकती है जो आलमगीर होंगे? हरगिज़ नहीं! हमें तो यह वसियत की गई है कि तुम में से कोई पौदा लगाने जा रहा हो और क़यामत का सूर फूंक दिया जाए तो भी वह इस पौदे को लगा ही डाले। इसका मतलब यह हुआ कि आख़िर ज़माना के फ़ितनों या अलामाते क़यामत पर इस किताबी सिलसिले से नेकी पर इस्तिक़ामत और बातिल के ख़िलाफ़ मुज़ाहमत का सबक़ लेना चाहिये। तन्ज़ीमे कार के बजाए तअ़तीले कार और बुलंद हौसलगी के बजाए मायूसी

का शिकार होना इंतिहाई बेतदबीरी और कम फ़ह्मी होगी। लिहाज़ा नौजवानों को इन फ़ितनों के ख़िलाफ़ कमर कस लेनी चाहिये ताकि रोज़े क़्यामत सुर्ख़रू हो सकें और फ़ितनों के इस दौर में सुर्ख़रू होने का एक ही तरीक़ा है जो हमारी इस पुकार के "ख़ुलासतुल ख़ुलासा" के तौर पर एक से ज़्यादा मर्तबा बयान किया जा चुका है। यअ़नी फ़ितनों से बचना उनके ख़िलाफ़ मुज़ाहमत करना जो इख़्लास व ईसार, तक़्वा और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह ही के ज़रीए मुम्किन है। दज्जालियात पर लिखी गई किताबों और 2012 ई0 के हवाले से मौहूम हौलनाकियों की पेशगोइयों का मक़्सद सिर्फ़ इतना है इंसान हाल के अम्र को पहुंचाने और ज़िंदगी की जितनी सांसें बाक़ी रह गई हैं, अल्लाह को राज़ी करने में लगा और इस हयाते फ़ानी के बक़िया दिन अल्लाह के दुशमनों के ख़िलाफ़ सीना सिपर होकर गुज़ारे। इसके अलावा कोई और मतलब लेने से यह आजिज़ बंदा बरी है।

अब आप के जवाब की तरफ़ आते हैं:

यह चीज़ ज़न्नी ही है। क़्यामत की तरह अलामाते क़्यामात में भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी हिक्मते बालिग़ा के तहत इबहाम रखा है। इस हवाले से यक़ीनी पेशगोई का दावा हरगिज़ हरगिज़ नहीं किया जा सकता। सोचने की बात यह है कि मग़रिब का मीडिया जिसके मुतअ़ल्लिक़ सब जानते हैं कि नस्ले इंसानी के एक मख़्सूस गिरोह के पास है, वह इतनी शिद्दत से इस चीज़ को यक़ीनी या क़रीब बयक़ीन बताने का प्रोपेगंडा क्यों कर रहा है? इस पर हमारे अह्ले इल्म व अस्हाबे फ़िक्र सोचें तो गुमान की परछाइयां छट कर बहुत सी गिर्हें खुलती चली जाएंगी। हम इस मौज़ूअ़ से इतने ग़ाफ़िल व ला तअ़ल्लुक़ क्यों हैं और वह इतने पुरजोश और मुतहर्रिक क्यों? यह सवाल तमाम अपने अंदर बज़ारते ख़ुद एक अलामत छिपाए हुए

है।

बात यह है कि 2012 ई० दज्जाल के खुरूज का साल तो हरगिज़ नहीं। दज्जाल हज़रत मेहदी रज़ि० के ज़ुहूर के सात या नौ साल बाद खुरूज करेगा और यह सब जानते हैं कि अभी तो उनका ज़ुहूर भी नहीं हुआ तो 2012 ई० में दज्जाल का खुरूज कैसे हो सकता है? 2012 ई० इस्राईल के ख़ातमे का आग़ाज़ इस तौर पर हो सकता है कि जुनूबी यहूदी जो अपने मसीहाए मुंतज़िर के खुरूज में मज़ीद ताख़ीर इसलिये बर्दाश्त नहीं कर सकते कि मुजाहिदीन की सख़्त मुज़ाहमत की बदौलत मुआमला उनके हाथ से निकला जा रहा है, वह बज़अ्म खुद उसके खुरूज का टोटका पूरा करने के लिये......मुम्किना तौर पर......इस साल कोई ऐसी ख़तरनाक हरकत करेंगे जिससे पूरी दुनिया में भूंचाल आ जाएगा। मसलन मस्जिदे अक़्सा पर बड़ा हमला, ज़र्द गुंबद को शहीद करने की कोशिश, कोई बड़ी जंग, मस्नूई तूफ़ान, सैलाब या ज़लज़ला वग़ैरा। उनके ख़्याल में यह सूरते हाल दज्जाले अक्बर को खुरूज पर मजबूर कर देगी। (इस यहूदी फ़लसफ़े की तशरीह के लिये इस किताब के आख़िर में दिया गया मज़मून "लार्ड के तख़्त की बुन्याद" मुलाहज़ा फ़रमाइये) आप दिलचस्प तमाशा मुलाहज़ा कीजिये। एक तरफ़ यहूद यह समझते हैं कि उनकी मुश्किलात वह मसीहा दूर करेगा जो खुद बेड़ियों में जकड़ा हुआ है, लेकिन साथ ही यह भी समझते हैं कि मसीहा के खुरूज में हाइल मुश्किल खुद उनको दूर करनी होगी। सुब्हानल्लाह! इंसान जब वह्य की हिदायत से रहनुमाई न ले और मनमानियों पर तुल जाए तो कैसे कैसे अजूबे ज़ुहूर में आते हैं? बहरहाल अपने तौर पर यहूदी इस साल "अज़ीमतर इस्राईल" के लिये फ़ैसलाकुन कार्रवाई का आग़ाज़ करेंगे, जबकि यह उनके हतमी अंजाम का आग़ाज़ होगा। इंशा

अल्लाह तआला। हमारी मुश्किल यह है कि मुआसिर फ़ितन पर बोलते नहीं या इस हवाले से दुशमन के ज़ह्न को भांपते नहीं, अगर कोई खोज लगाकर आने वाले ख़तरे से आगाह करे तो लाइहा अमल अपनाने के बजाए मज़ीद तग़ाफ़ुल व तकासुल का मुज़ाहरा करते हैं। आप ही बताइये इस जफ़ा कारी को क्या नाम दें? अल्लाह तआला ही हमें क़ल्बे सलीम और सिराते मुस्तक़ीम नसीब फ़रमाए, वर्ना हराम ग़िज़ाओं, हराम गुनाहों और हराम असरात ने ऐसी अक़्ल मारी है कि जब क़्याम का वक़्त आता है, हम सज्दे में गिर जाते हैं।

(6) सिर्फ़ दज्जाल ही नहीं, ''अलफ़ितन'' का पूरा मौज़ूअ़ तवज्जोह से पढ़ाया जाना चाहिये। दौरए हदीस में जब सिहाह सित्ता से ''किताबुल फ़ितन'' पढ़ाई जाए तो मुआसिर पुर फ़ितन दौर के तक़ाज़ों को मलहूज़ रखते हुए मुम्किना हद तक तफ़सील व तशरीह के साथ तावीले मक़्बूल की हुदूद में रहते हुए इन फ़ितनों की अस्री ततबीक़ पर गुफ़्तगू की जाए और अस्रे हाज़िर को हदीस शरीफ़ की रौशनी में परखा और समझाया जाए। किताब व सुन्नत में बयान कर्दा मुख़्तलिफ़ चीज़ें अपने अंदर ख़ास तासीर रखती हैं, फ़ितन की अहादीस रुजूअ़ इलल्लाह, आख़िरत की याद और मौत की फ़िक्र पैदा करने में जो तासीर रखती हैं, वह मुहताजे बयान नहीं। इसलिये यह इस्लाही दावत के हवाले से दावते तबलीग़ का बेहतरीन वसीला हैं। अगर अहले इल्म यह फ़रीज़ा न संभालेंगे तो अजाइबात के शौक़ीन अनपढ़ क़िस्म के नाम निहाद जुग़ादरी मुफ़क्किर मैदान में आ जाएंगे और ऐसी इफ़रात व तफरीत (अफ़रा तफ़री शायद इसी से माख़ूज़ है) मचाएंगे कि लोग फ़ित्ने को सामने देखकर भी अंधेरे में टामक टोइयां मारते रहेंगे। मुब्तदी या मुतवस्सित तलबा के लिये ''फ़ितन'' की चालीस चालीस अहादीस का मज्मूआ तैयार करके याद कराना

चाहिये। हज़रत मसीह अलै0, हज़रत मेहदी रज़ि0 और दज्जाल के बारे में चालीस मुस्तनद अहादीस का मज्मूआ भी मुफ़ीद रहेगा। ऐसा मज्मूआ इंशा अल्लाह ज़ेरे ग़ौर है। "दज्जाल 1" की सौ से ज़्यादा अहादीस कम अज़ कम दर्जए हसन की अहादीस हैं। उनसे चालीस अहादीस मुंतख़ब करके भी याद की जा सकती हैं। नीज़ दज्जाल 1 की तख़रीज के बाद दज्जाल 2 शाए हो चुकी है, दज्ज़ाल 3 अलहम्दु लिल्लाह आपके हाथों में है। यह इसी सिलसिले की आजिज़ाना काविशें हैं जिनकी मक़्बूलियत व नाफ़इयत, इस्तिदराज से हिफ़ाज़त और तर्ज़े का बरसे तमस्सुक के लिये तमाम क़ारईन से दुआओं की दरख़्वास्त है।

एन जी ओज़ और डेटा इंफ़ारमेशन

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि

मैं आप की तहरीरों को बाक़ाएदगी से पढ़ता हूं। मैंने इससे पहले भी आप के नाम एक ख़त लिखा था। इसमें आप की किताब "दज्जाल" के एक मौज़ूअ़ "डेटा इंफ़ारमेशन" या "डेटा कलेक्शन" के हवाले से कुछ तहरीर किया था, मगर मअ़लूम नहीं महकमए डाक की कारकर्दगी की नज़र हो गया। मैं काफ़ी अर्से से बेरोज़गार था और अभी हूं। किसी भी इदारे में अगर छोटी मोटी नौकरी मिल जाए तो कर लेता हूं। अच्छी प्राईवेट और सरकारी मुलाज़मत के लिये हर जगह रिश्वत, सिफ़ारिश और अक़रबा परवरी चल रही है। मैं मुलाज़मत का कोई भी इश्तिहार देखकर उस पर दरख़्वास्त दे देता हूं। इसी तरह मुझे एक एन जी ओ में मुलाज़मत मिल गई थी जिसके पास "यू ए ऐड" का ठेका था। उसका काम था मांसहरा के मख़्सूस इलाक़ों से डेटा जमा करना। मसलनः स्कूल, पानी की फ़राहमी की जगह, सड़कों और गावों का एक मुकम्मल नक़्शा बनाना था। उस वक़्त तो मुझे मअ़लूम न था मगर मुफ़्ती साहब की किताब पढ़ने से पता चला। यह काम सिर्फ़ एक महीने का था और वह गांव जिनका सर्वे किया गया था, वह ज़्यादातर दीनी माहौल के हामिल थे। जनाब मुफ़्ती साहब ही इन दज्जाली साज़िशों से उम्मते मुस्लिमा खुसूसन अहले पाकिस्तान का बता कर आगाह करके बचा सकते हैं। यह तन्ज़ीमें सिर्फ़ डेटा जमा करके उसे "यू एस ऐड" को दती हैं और फिर यह मअ़लूमात दज्जाली कुव्वतों के हाथ लग जाती हैं। मुझे इत्तिफ़ाक़ से उस Booklet के तीन सफ़हात मिल गए हैं जो मैं

आपको इर्साल कर रहा हूं। इनको मुलाहज़ा करके आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि हमारे मुल्क में इम्दाद के नाम पर क्या हो रहा है? यह एन जी ओ अब ग़ालिबन मांसहरह में ही इसी "डेटा कलेक्शन" का काम कर रही है। हर दफ़ा नया स्टाफ़ रखा जाता है। उम्मीद है मेरे इस और इससे पहले ख़त की वजह से हज़रत मुफ़्ती साहब से मज़ीद मअ़लूमात मिलेंगी और इसी मौज़ूअ़ पर हमारी राहनुमाई फ़रमा सकेंगे।

वस्सलाम......मुहम्मद रिज़वान, मांसहरह

जवाबः

पाकिस्तानी मुआशरे के मुख़्तलिफ़ पहलूओं से वाक़फ़ियत हासिल करने और इन मालूमात को थिंक टैंकस के हवाले करके उन पर मुख़्तलिफ़ तजज़ियाती रिपोर्टें तैयार करने और उनकी बुन्याद पर मुअस्सिर मंसूबे बना कर हम पर मुसल्लत करने का अमल ज़िला मांसहरह के दूर इफ़्तादह गांव में ही नहीं, मुल्क भर में जारी है। हस्पतालों से लेकर स्कूलों तक और मस्जिद में जाने वालों या मदारिस को अतिया देने वालों से लेकर पार्कों में दरख़्तों के नीचे मंडली जमा कर बैठने वाले जवारियों और नशइयों तक हर क़िस्म की नफ़सियात और सोचों का रुख़ मअ़लूम करने के लिये एन जी ओज़ की निगरानी में ग़ैर मुल्की सरमाए के बलबूते पर डेटा जमा किया जा रहा है। मुख़्तलिफ़ सवालनामे, सेमीनार्ज़, वर्क शाप्स इस मक़्सद के लिये किये जा रहे हैं कि बल्जियम के दारुल हुकूमत "बरसल्ज़" में क़ाइम डेटा इंफ़ारमेशन के आलमी मरकज़ को वक़ीअ़ बनाया जाए और मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम की तफ़रीक़ किये बग़ैर कुर्रहये अर्ज़ के बासियों को अपने बस में लाने की तदबीर की जाए। सिंध के पसमांदा दीहात हों या सरहद व पंजाब के क़स्बात, दज्जाली क़ुव्वतों

के नुमाइंदे मंडलाते फिर रहे हैं और हमारा कच्चा चिट्ठा "सयानों" तक पहुंचाकर उनसे हिदायत तरतीब दिलवा रहे हैं। अब बुन्यादी तौर पर यह हमारी हुकूमत की ज़िम्मादारी है कि वह इसका नोटिस ले। हमारे बच्चों का खून ले लेकर क्यों उन पर तर्जुबात किये जा रहे हैं? लेकिन हुकूमत ऐसा कर लेती तो फिर रोना ही किस चीज़ का था? उसने तो ऐसा करना नहीं। उसकी तरजीहात में बहुत कुछ करने के काम अभी तिशनए तकमील हैं। मुहिब्ब वतन जमाअतों, तन्ज़ीमों को दूसरे क़ौमी मसाइल की तरह इस पर तवज्जोह देनी चाहिये कि हम किसी के लिये तख़्तए मश्क़ न बनें। हम किसी के लिये लुक़मा तर न साबित हों वर्ना हमारी जड़ों तक उतरकर हक़ाइक़ व नफ़सियात से वाक़फ़ियत हासिल करने वाली यह सुंडियां हमारे मुआशरे को घुन की तरह चाट जाएंगी और हमें ख़बर होते बहुत देर हो चुकी होगी।

हिंदसों का फ़र्क़ और 2012 ई० का मतलब

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि

हज़रत मुफ़्ती अबू लुबाबा साहब की शोहरए आफ़ाक़ और मक़्बूले आम कताब "दज्जाल" की एक इबारत के बारे में सख़्त तज़बज़ुब का शिकार हूं। बराए करम वज़ाहत फ़रमाकर मशकूर फ़रमाएं। अल्लाह तआला आपको जज़ाए ख़ैत अता फ़रमाए। आमीन

"दज्जाल" किताब का वह नुस्ख़ा जो "मक्तबतुल फ़ज़ाह" कराची से छिपा है, उसमें लिखा है: "इसके बाद एक हज़ार दौ सौ 90 दिन बाक़ी रह जाएंगे। मुबारक हैं वह लोग जो एक हज़ार 3 सौ 35 के इख़्तिताम तक पहुंच जाएंगे, लेकिन (ऐ दानियाल) तुम अपना काम दुनिया के इख़्तिताम तक करते रहो। तुम्हें आराम दिया जाएगा।" (तौरात, स0: 847, ब:12, आयत:8-13)

यही इबारत "मक्तबतुस्सईद" कराची से छपने वाले नुस्ख़े में कुछ यूं है: "इसके बाद एक हज़ार 2 सौ 90 दिन बाक़ी रह जाएंगे। मुबारक हैं वह लोग जो एक हज़ार 2 सौ 35 के इख़्तिताम तक पहुंच जाएंगे।"

(1) इन दोनों इबारतों में तज़ाद है। पहली में 1335 है दूसरी में 1235 है।

(2) दोनों नुस्ख़ों में इस इबारत के बाद अअ़दाद कुछ यूं लिखे हुए हैं: "1290-1235=45 " यह अअ़दाद दूसरे नुस्ख़े के मुताबिक़ हैं, मगर इस सूरत में जवाब 45 नहीं आता, बल्कि "55" आता है। बराहे करम सही इबारत और 2012 ई० के सही मतलब की निशानदही फ़रमा दीजिये। अल्लाह तआला आपका हामी व नासिर

हो। आमीन

वस्सलाम......अब्दुर्रहमान, इस्लामाबाद

जवाबः

आपके अलावा और बहुत से अहबाब ने इस अम्र की तरफ़ तवज्जोह दिलाई। पहली इबारत दुरुस्त है। दूसरी इबारत में अअ़दाद ग़लत कम्पोज़ हो गए हैं। असल में यूं लिखने चाहिये थेः "1335-1290" इस सूरत में जवाब 45 ही आता है। दज्जाल 1 का नया एडीशन अहादीस की तख़्रीज के साथ शाए हो रहा है। इसमें यह तसीह कर दी गई है। नीज़ यह भी वज़ाहत कर दी गई है कि 2012 ई0 का साल न दज्जाल के ख़ुरूज का है न इस्राईल के कुल्लियतन ख़ातमे का, बात इतनी है कि इस साल......मुम्किना तौर पर......दज्जाली कुव्वतें और उनके आलए कार दुनिया में कोई बड़ा फ़ितना (मसलन आलमी जंग, मस्नूई ज़लज़ला, काइनात की तसख़ीर के लिये किये गए साइंसी तर्जुबात के नतीजे में तूफ़ान, सैलाब और ग़ैर मअ़मूली मौसमी तग़य्युरात वग़ैरा) इस नज़रिये के तहत बरपा करेंगे कि जब तक ऐसा कोई आलमी हादसा नहीं होता उस वक़्त तक मसीहाए मुंतज़िर (दज्जाले अक्बर) का ख़ुरूज मुम्किन नहीं होगा। ऐसा कोई भी हादसा......उनके ज़अ़म के मुताबिक़......बुराई की कुव्वतों के सरख़ील, मलऊने अअ़ज़म, दज्जाले अक्बर को ख़ुरूज पर मजबूर कर देगा और चूंकि उसके ख़ुरूज के बग़ैर अब मुआ़मला......मुजाहिदीन की कुर्बानियों की बदौलत......दज्जाली कुव्वतों के हाथ से निकला जा रहा है, इसलिये वह ऐसी किसी भी कार्रवाई चाहे वह (ख़ुदा नख़्वास्ता) मस्जिदे अक़्सा के इंहिदाम की शक्ल में क्यों न हो, के लिये बेताब हैं। मसीहाए मुक़य्यद (अद्दज्जालुल अअ़ज़म) के ख़ुरूज का वक़्त क़रीब लाने के लिये यह

दज्जाली कुव्वतें अपनी राह में मज़ाहम निहत्ते फ़लस्तीनी मुसलमानों के ख़िलाफ़ वहशियाना पागलपन का मुज़ाहरा कर रही हैं। मस्जिदे अक़्सा के नीचे सुरंगें खोदना, नमाज़ियों को नमाज़ से रोकना, इस्राईली फ़ौजियों का जूतों समेत मस्जिद में घुस जाना और पुरअमन नमाज़ियों का मुहासरा कर लेना, जुनूबी यहूदियों का हैकल सुलैमानी का संगे बुन्याद रखने की कोशिश करना......यह सब दज्जाल के ख़ुरूज के मुतअ़ल्लिक़ इसी यहूदी फ़ल्सफ़े का शाख़साना है जो ऊपर ज़िक्र हुआ। इसकी कुछ तफ़सील "2012 ई० में क्या होगा?" के उन्वान से तहरीर किये गए एक जवाब और "लार्ड के तख़्त की बुन्याद" नामी मज़मून में इसी किताब में मुलाहज़ा की जा सकती है। इस सूरते हाल के मुक़ाबले के लिये मुसलमानों को 2012 ई० की बहस में पड़े बग़ैर शरीअ़त व सुन्नत की इत्तिबा, जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह की तैयारी और मज़लूम फ़लस्तीनी व अफ़ग़ान मुसलमानों की मदद के लिये पुर अज़्म हो जाना चाहिये। इस आजिज़ का 2012 ई० के हवाले से हतमी और आख़िरी पैग़ाम यही है। इसके अलावा कोई और मतलब न लिया जाए, न इस आजिज़ की तरफ़ मन्सूब किया जाए।

☆☆☆